Barcode : 99999990319024
Title - Adyatma Ramayan Bhasha
Author - Pandit,Gulabchand
Language - hindi
Pages - 453
Publication Year - 1885
Barcode EAN.UCC-13



श्री

अध्यात्मरामायण भाषा

पंडित श्रीगुलाबसिंहजी विरचित

स्वामी श्रीमद्गुरुपतिजीके शिष्य

स्वामी श्रीसंगतिदासजी विसोधित

सर्व मुमुक्षुके हितार्थ

पुजारा. कालजी भीमजीने

ओ

नारायणजी उभाजीने

श्रीमुंबा पुरीमें

"गणपत कृष्णाजीके" छापखानेके मालिक आत्माराम कान्होबाके पास

छपायके प्रसिद्ध कीयाहे

संवत १९४२ सन १८८५

यह ग्रंथ १८६७ को आक्ट २५ के अनुसार रजीस्टर कीयाहे

LIBRARY

वेदांत ग्रंथ वेचनेकेहै



	कि. रु.	ट.
१ श्रीमदध्यात्मरामायण भाषा दोहा, चौपाई, आदि रसिक छंदोसहित चित्रित पुठ्ठका.	५	।=
२ श्रीमद्भागवत भाषा एकादशस्कंध चित्रित पुठ्ठसहित.	१॥	।-
३ ज्ञानप्रकाश आदि ग्रंथ पांच.	।=	-)॥
४ ब्रह्मज्ञानी अखा भक्तके छप्पे गुजर भाषामें,	॥।	-)॥
५ ब्रह्मज्ञानी बुल्लाशाहकी सीहरफी	-=	-)॥
६ गुरुकौमुदी	१	-)/॥
७ नानक स्तवन स्तोत्र.	-/	-)॥
८ गोविंदाष्टक स्तोत्र सटीक	।-	-)॥

उपर लिखेल्है पुस्तकादि नींचे लिखे ठिकानेपर मिलेंगे

मुंबाईमे

बडकी गादी दरिआस्थानमें

मुंबादेवी पास पंडीत जेष्टाराम मुकुंदजीके पुस्तकालयमें.

कालका देवी रोडपर हरिप्रसाद भागीरथके पुस्तकालयमें

मारवाडी बजारमे गंगाविष्णु खेमराजके दुकानपर

बहारसे मगानेवाले ग्रहाकोंकु सुचनायहहै के हमारे ठेकानेपर पत्र लिखणेसें ग्रहाकोंकेलिखे मुजब

अनरजिस्टर वेल्युपेबल पारशल भेजनेमे आवेगा

बोत पुस्तक लेने वाले ग्राहाकोंकुं किफायत भावसे मिलेगा

ला. पुजारा कानजीभीमजी

औ नारायणजी हरभजी,

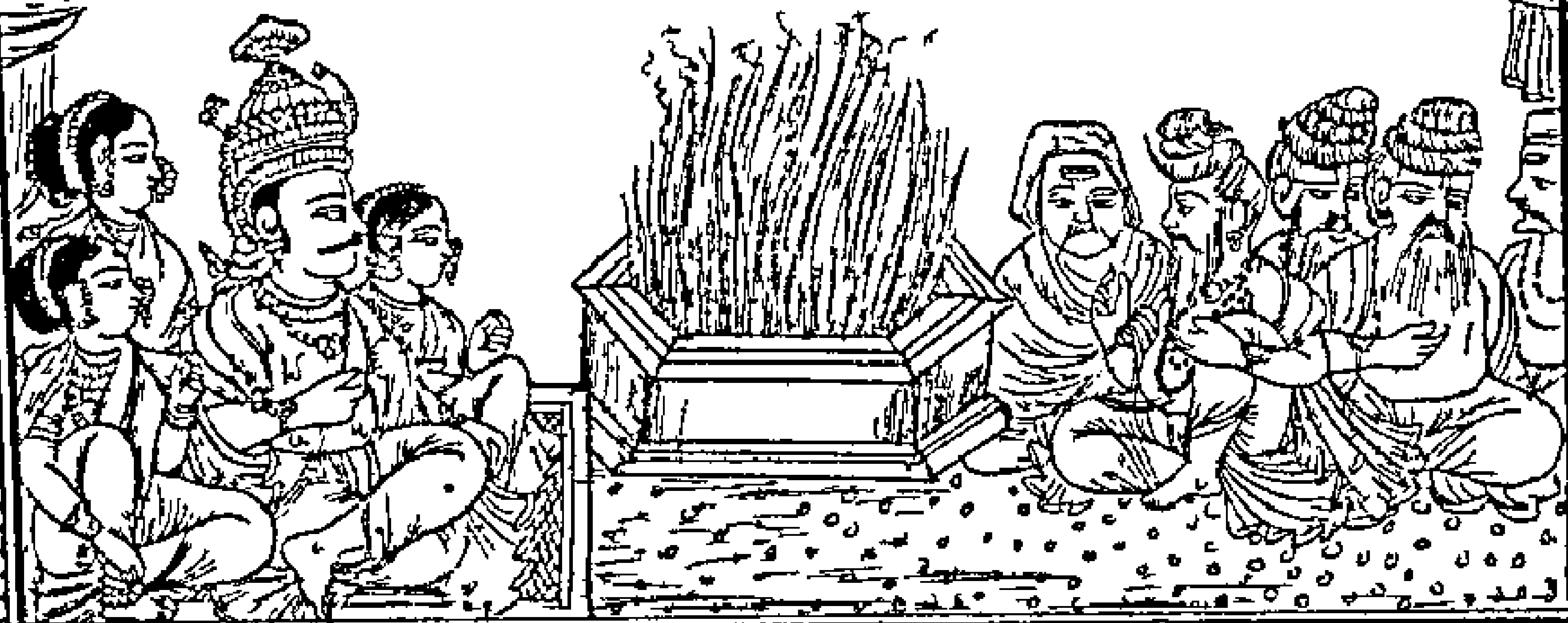
प्रस्तावना

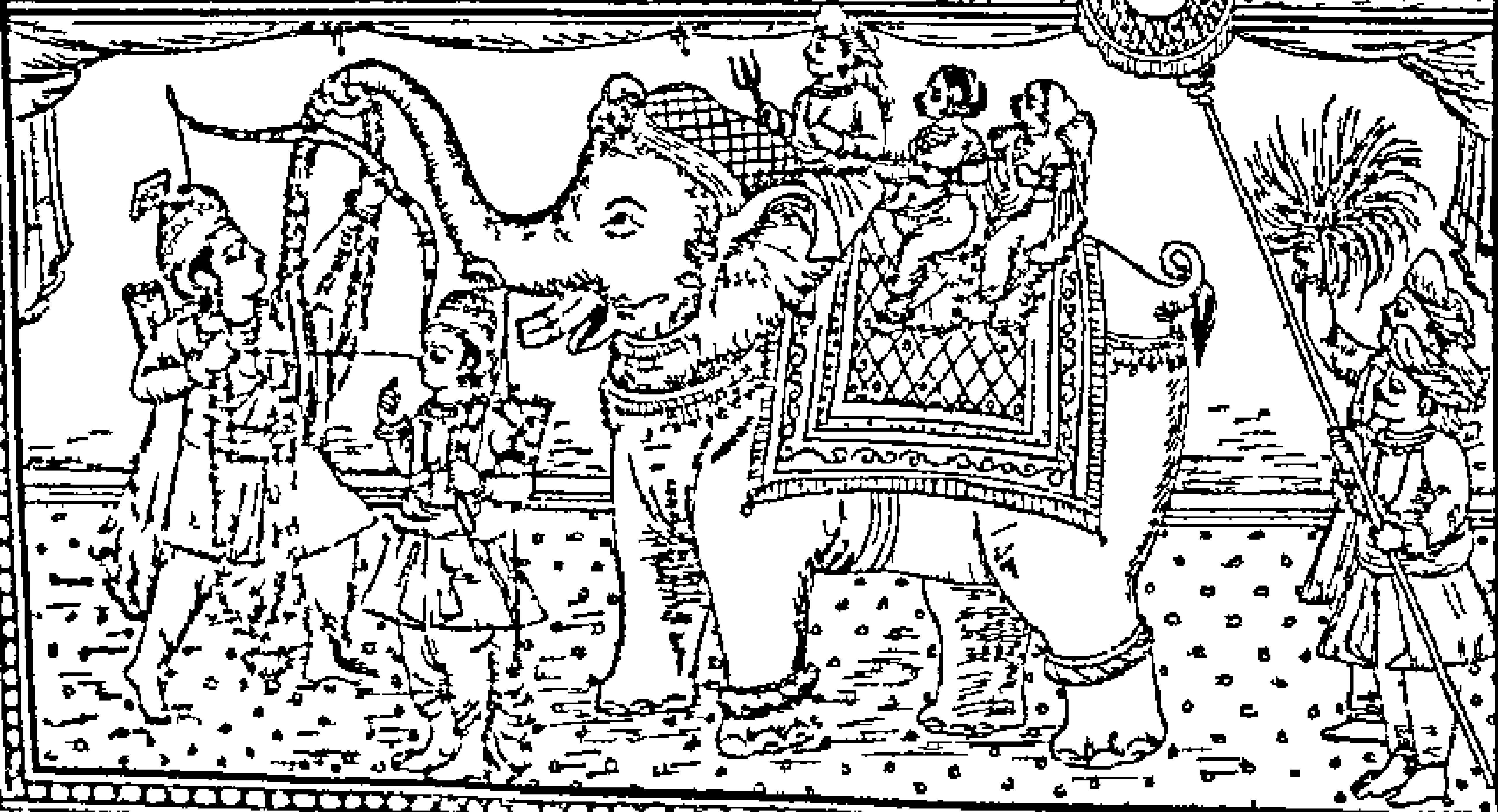
श्री रामो जयति।

श्री आदिकवि वाल्मिकिमुनिने श्रीरामचरित्ररूप महारामायण कीया है तिसविषे सर्वाधिष्ठानब्रह्मरूप श्रीरामजीके निजस्वरूपका निरूपण तहां तहां (स्तुतिआदिकके प्रसंगमें) गोप्यताकरिके कीया है ताकूं प्रगट करनेअर्थ परमदयालु श्रीवेदव्यासजीने ब्रह्मांडपुराणके अंतरगत श्रीअध्यात्मरामायण रच्या है सो ग्रंथ यद्यपिअल्प संस्कृत भाषाके वेत्ता जिज्ञासुजनोंकों आत्मज्ञानके उत्पादनविषे अत्युत्तम है तथापि संस्कृत अभ्यासरहित मंदबुद्धिवाले जनोकी तिसविषे प्रवृति होवे नही यह जानिके प्राकृतभाषामात्रके वेत्ताजिज्ञासुजनोंपर अनुग्रह करिके महाविद्वान् श्रीमानसिंहजीके शिष्य गुलाबसिंहजीने यह अध्यात्मरामायणरूप ग्रंथ दोहा चौपाई आदिक रसिकछंदनसैंअलंकृत प्राकृतभाषामै कीया है या ग्रंथमे प्रक्रियापूर्वक अध्यात्मविचार बहुत है औ भगवद्भक्तजनोकी श्रीरामचंद्रजीके चरित्रमै प्रवृत्तिके मिषते मणिप्रभाविषै मणिबुद्धिकरिके पुरुषकूं मणिकेलाभकीन्यायी रामजीके अनारोपित निजस्वरूप साक्षात्कारकाजनक है यातैं यह ग्रंथ अतिशय उत्कृष्ट है अरु सकलपुराणनमें सारभूत है यहजानिके देवनागरी (बालबोध) लीपीमे लिखायके औ प्रयत्नपूर्वक परमदयालु सकलजन हितधृतशरिर सकलसुभगुणाधिष्ठान विगताभिमान ब्रह्मनिष्ठ साधु उदासीन श्रीसंगतिदासजीसें तथापण्डित उदासीन जयरामदासजीसें शुद्धकरवायके हमने छपाया है तथापि दृष्टिदोषतै कछु अशुद्ध होवै तौ सज्जनोने सुधारके वाचना यह प्रार्थनाहै.

मुंबई बहारकोट बडकी गादी. दरीयास्थानमें. { ला. पुजारा कानजी भीमजी, औ नारायणजी इभजी,







श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ श्रीमद्‌अध्यात्मरामायण भाषा प्रारंभः

ॐश्रीगणेशायनमः॥ ॥**दोहा**॥ ॥देवीमाताशारदाशरदइंदु
समहास॥वंदौंपदपंकजसदाकरोसुमतिपरकाश॥१॥ ॥शंक
रछंद॥ ॥गणनाथदासनिवाइमस्तकवंदनापगधार॥करं
योचहौंउररामकोयशदेहिबुद्धिउदार॥सुरगुरुकरेसुरराजका
रयपादकंजमनाइ॥हेरंबनाथअनाथकेमैंधीरवीरसहाइ॥२॥
॥**सवैया**॥ ॥अजसूरयवंशविपेनिपजेऋपियज्ञविनाशक
प्राणनिकारे॥ऋपिनारिउधारकरीक्षिनमैंजिनवीचसुमुद्रभू
धरतारे॥रणरावणकेजिनसीसकटेजिनदासविभीपनकाज
सवारे॥जनकातमजापतिरामवहीमतिदाइकहैंअविलंबहृ
मारे॥३॥परमातमरामरतेजगजेसभलोकजिनेपगवंद
नधारे॥जिननाममुकुंदहिसेतुबनाइसुसेवककेगनपारउता
रे॥जिनकीरतिपूररहीअवनीगुनसिंधुकहांवरनेहमवारे॥गु
रुनानककेपदमंजुलकोकरजोरसदाअभिवंदहमारे॥४॥
अनंगशेखरछंद॥ ॥गुरुगुविंदसिंहकोनमोसुहाथजोरके

कुशानुतेजतोरजाहिंपालयोहिंदानकों ॥ रूपालसीसहायदेसु
कोटतेकरेमृगिंद्रइंद्रचापलाजपेखनाथकीकमानको ॥ अपार
दूखदारकैनिवारकैकलेशदासवासतोविकुंठतेजपूरयोजहान
को ॥ भुजाभुजंगराजसीविराजसीसकेशचंद्रसामतानहोइ
तामुखारविंदसानको ॥५॥ ॥छपैछंद॥ ॥निपजेपंकसुवी
चजरेकंटकतिनअंगा ॥ विधुअंचितपरमुंदभ्रमरमरंदसरवं
गा ॥ गुरपदकंजसुनखप्रभातिहहसेनिरंतर॥ खिरेरहैंदिनरैनि
सदानहिपरेसुअंतर ॥ श्रीमानसिंहगुरकेचरनभयभंजनउरत
महरण ॥ जनअरथभुक्तअपवरगकरसभलाइकसेवतचर
ण ॥६॥ ॥सवैया॥ ॥रघुवीरकिकीरतिसिंधुकहांहमसेम
तिमंदकहांबगवारे ॥ सुमरालहसैंकविमंडलजेतिहवीचफिरैं
नहिपावतपारे॥बगपेरनपेखमरालहसैंतुहसैंनहिहैकछुहानिह
मारे॥रसकीरतिअंमृतपाइभलेसमहंसनकेचगकालनिवारे॥
॥७॥ ॥सवैया॥ ॥वडबोलसुनेलघुवालजवेतिमबोलनको
मनमेउमगावैं॥वहयद्यपिनातिमवोलसकेंसुनबालकवैनवडे
विगसावैं॥ तिमहींममछंदनज्ञाननहीपुनजानतनालघुदीरघ
नावें ॥ करुणानिधिकोविदकानधरेंममवालकवैनसदाहरपा
वें ॥८॥ ॥नराजछंद॥ ॥कथैंकविंदपुंजजांअपारउज्जलंय
शं ॥ गनेशओमहेशशेपभापहैंदिवानिशं ॥ सुनेसुरामकाक
लोकपालुमोहिबालकी ॥ हसेंमुखारविंदतेकटेसुपाशकालकी
॥९॥ ॥अथकथाप्रसंग॥सूतउवाच॥चौपाई॥ ॥ए
कसमयनारदमुनियोगी॥सभलोकनकेहितउदयोगी ॥ क्रम

करसकललोकमेंगए॥सत्यलोकपुनजावतभए ॥ १० ॥ ॥ स
वैया॥ ॥ शुभमूरतिवंतसुवेदजहांचतुराननजूतिनमध्यविरा
जे ॥ रविबालप्रभासुलसग्रहसुंदरपेखतमिस्रसुदूरहिंभागे ॥
ऋपिमारकंडेलुसभेमिलकेचतुराननकेगुनगावतआगे॥सभ
गोचरज्ञानसदाजिनकोसभदेवसदाजिनकेपगलागे॥ ११ ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ सारस्वतिजिहसंगविराजे ॥ जगंनाथच
तुराननछाजे ॥ भक्तअभीष्टफलप्रदाता ॥ ब्रह्मात्रईलोकवि
ख्याता ॥ १२ ॥ तांकोपिखनारदमुनिज्ञानी ॥ दंडप्रणामभ
लीविधिठांनी ॥ पिखप्रसंनब्रह्माअतिखिरे ॥ नारदप्रतिपुन
बनउचरे ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौनबातपूछीचहोहेमुनि
देहुसुनाइ ॥ उत्तरतांकोहोइजोतोकोंदेउंबताइ ॥ १४ ॥ सुन
ब्रह्माकेवचनकोनारदहरपअपार ॥ ब्रह्माप्रतिकरजोरकेकी
नोप्रश्नउदार ॥ १५॥ ॥नारदउवाच॥ ॥चौपाई॥
शुभअरुअशुभअहेजगजोई ॥ तुमतेसुनेंप्रथममेंसोई ॥ सुर
सत्तमइकसंशयअहे ॥ मेरेउरअंतरकोदहे॥ १६ ॥ सुननेयो
ग्यवहीअवघाल ॥ तांकोउत्तरकहोविशाल ॥ गोपहोइजेसो
इतुमारे॥ तोभिकहोजेदयाहमारे॥१७॥ ॥सवैया॥ ॥जुग
जोकलिआंवहिंगोजगमैनरपुन्यतयागहिंपापपियारे ॥ सुख
झुठबकेंसगलेजगमैदुरचाररतेनहिसाचुउचारें ॥ परकोअप
वादकरेंसदहीपरद्रव्यसदामनमांहिविचारें॥ परनारिविपेरति
नीतकरेंअतिक्रूरबडेपरप्राणनिकारें॥१८॥ ॥चौपाई॥ ॥पं
चभूततनआतमजाने॥पशुबुद्धीनहिवेदनमाने॥मातपिताकी

करेंनसेव॥ कामदासनारीतिनदेवा॥१९॥विप्रसुलोभपिशा
चहिंगिरे॥ वेदबेचतनजीवनकरे॥ विद्यापढेंसुधनहिंनमित्ता
मदमोहेनाहिंहरिमेंचित्ता॥ २०॥ ॥दोहा॥ ॥त्यागेंगेनि
जजातिकेकरमपुरातनरीति॥ हरिविमुखपरवंचनाकरेंनिरंतर
चीत॥२१॥ ॥चौपाई॥ ॥प्रजानपालेंकलिमेंराजा॥दं
डप्रजानिजकरिहैंकाजा॥ वैश्यधर्मकोत्यागेंसारे॥शूद्रकलि
ककौनविचारे॥२२॥ ॥दोहा॥ ॥विप्रकर्मशूदरकरेंशूदर
केभूदेव ॥ घोरकलीजबआइगोमानेंगेनहिंदेव ॥ २३ ॥
॥चौपाई॥ ॥नारिहोंहिंगीभ्रष्टीसारी॥ भरताभजेंनक
लिमेनारी॥सामूद्रोहकरेंगीनारी॥जोकलिआवैगोयुगभारी
॥ २४ ॥ याविधिनष्टबुद्धजगजेते॥ स्वर्गजांहिंगेकिहिविधि
तेते॥ याचिंतासोंव्याकुलचित्ता॥ सदारहेममलोकनमित्ता
॥ २५ ॥ सुनियाविधिनारदकीबानी॥ बहुतभलीकमलास
नमानी॥ अबजासनपुनवेनउचरे ॥ नारदप्रश्नप्रसंसाकरे॥
॥ २६॥ ॥ब्रह्मोवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥ नारदधन्यध
न्यतवबानी॥ परहितप्रश्नकरेंजगज्ञानी॥ सुननारदअबतो
हिबतांऊं॥ तेरेसभसंदेहमिटाऊं॥२७॥ ॥दोहा॥ ॥पू
रवगिरिजाजोरकरकीनोप्रश्नसनेह॥ श्रीरामतत्वत्रिपुरारिजू
कहियेवांछाएह॥ २८॥ निजपत्नीप्रतिगूढजोकीनोशिवहिब
खान ॥ पुराणोत्तमअध्यात्महिरामायणपहिचान ॥ २९॥
॥सवैया॥ ॥ सोवहपारवतीदिनरेनसुपूजसदाकरजोरि
जुहारे॥ पारबतीमगनापुनआनंदरैनदिनानिततहिबिचारे॥

जीवनसुकृतपुंजजवैवहग्रंथमहीतलमाहिविथारे॥ केवलता
हिसुपाठकरेगतिऊत्तमपावहिंगेजनसारे॥३०॥ ॥चौपाई॥
ब्रह्महननलौंपापसुजेते॥ गरजेंयाजगतौलौंतेते॥जौलौंयहि
रामायणजोई॥ याजगमाहिउदेनहिहोई॥३१॥ विचरेंनिरभ
ययमभटतौलौं॥ नाहिरमायणउदसुजोलौं॥ कलिउतसाहर
हेगोतौलौं॥ नाहिरामायणउदेसुजौलौं॥ ३२॥ तौलौंशास्त्र
सुकरेविवादा॥ परसपरंमतमहाविपादा॥ रामायणसुउदे
जवहोई॥ वहुरविवादनहोसीकोई॥ ३३॥ ॥दोहा॥
तौलौंरामस्वरूपजोदुरविगयअतिआहि॥ जौलौंउदेनहोव
ईरामायणजगमाहि॥३४॥ ॥सवैया॥ ॥तांहिपठैनरजे
जगमैपुनितांहिसुनेनरजेजगमाही॥ जोफलवैजनपावतहैं
वहुनारदकौनकहेजगमाही॥ मैंचतुराननभापसकोंनहिंऔ
रनकोगणतीकिनमाही॥ किंचततोहिकहोंसुननारदजोशि
वमोहिकह्योसुरमाही॥३५॥ ॥सवैया॥ ॥एकशलोकरमा
यणकोपुनआधपठैउरप्रेमवडाए॥सोवहुपापसमूहनकोक्षि
नएकविपेजगमाहिमिटाए॥नित्यपठैजुरमायणकोमनलाइ
ज्ञितोपठयोतिहजाए॥ सोवहुवंधनतोरसभैजगभीतरजीव
नमोक्षकहाए॥३६॥ ॥नराजछंद॥ ॥जुअर्चतेरमायणं
निरंतरंमुनीवरे॥दिनदिनेतुरंगमेधयागपुंन्यसोकरे॥विनेच्छ
यासुनेरमायणंनरोअनादरे॥ अनेकपापपुंजकोक्षिणेकमा
हिसोदरे॥ ३७॥ करेसुवंदनारमायणंमुनेसमीपजो॥ सभे
सुदेवअर्चनाफलंअपारपाइसो॥लिखेसमस्तपुस्तकंसुब्राह्मणं

ददानिजो ॥ वदामिपुंन्यतांहिंकोफलंसुनोउदारसा ॥ ३८ ॥ पढे समस्तवेदकेअनेकग्रंथकेकहे ॥ सुजोफलंनपाइहैसुयांहिदान तेलहे ॥ इकादशीदिनेरमायणंपढेधरेव्रतं ॥ सुरामभक्तलोक मैसुनोसुतस्यसुकृतं ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुरसचर्य जोगायत्रीआपीवेदनजोइ ॥ प्रतिअक्षरयांपाठतेतांफलपावे सोइ ॥ ४० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ श्रीयुतरामनवमीदिनमांहीं ॥ करउपवासराममनमाही ॥ ४१ ॥ पठरमायणजागेरात ॥ तां हिपुंन्यफलसुनविष्यात ॥ ४२ ॥ कुरुक्षेत्रादितीर्थजगसारे ॥ सूर्यग्रहणखिरेंनभतारे ॥ आतमतुल्यधनंशरधीने ॥ व्यासादि कविप्रनकरेदीने ॥ ४३ ॥ जोफलताहिदानतेहोई ॥ सोफलसत्य लहेजनसोई ॥ होइप्रसन्नगाइमुखखिरे ॥ रामरमायणअंमृ तझरे ॥ ४४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इंद्रपुरोगमदेवजेहैंअमरापुरिमां हिं ॥ गाइकआइसुजोरकरेहैंरैंनिजमनमाहि ॥ ४५ ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ पढेरमायाणप्रतिदिनजोई ॥ जोजोकर्मकरेपुनसो ई ॥ सोसोकोटिगुणतजगहोवे ॥ यांभीतरसंशयनहिजोवे ॥ ॥ ४६ ॥ रामरिदेतिनभीतरजोई ॥ तांहिपढेसुमहातमकोई ॥ ब्र ह्महनीसुमहाअघजोई ॥ तीनदिनामहिटारसोई ॥ ४७ ॥ ॥ स वैया ॥ ॥ प्रतिमाहनुमानसमीपपढेपुनरामरिदेनरजोजगमां हीं ॥ मुखमौनसुपाठहतीनकरेसभवांछतभांजनसोजगमाहीं ॥ मुखपाठकरेअरुदेपरदक्षणजोतुलसीअरुपीपलमाही ॥ जग मेंसभपापनकीसिरदारजुब्रह्महनीसुमिटेंछिनमाही ॥ ४८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गीतारामहातमजोई ॥ निखलपछानेशं

करसोई ॥ तिहआधोगिरिजाउरआसे ॥ अर्धअर्धपुनमोहि प्रकासे ॥ ४९ ॥ तामोकिंचतदेउवताइ ॥ सर्वनमोपैभाष्यो जाइ ॥ तांहिमहातमजोक्षिणजावै ॥ भलीबुद्धिजनप्रापतहोवै ॥५० ॥ ॥दोहा॥ ॥रामगीतजिहपापकोनाहिंनिवारेलोइ ॥ नारदढुंढोमैसदापावोंनाहींसोइ ॥ ५१ ॥ वेदसिंधुमथरामजीसुधानिकारीजोइ ॥ गीतालक्ष्मणकोदईपीवैअमरभयेसोइ ॥ ५२ ॥ कार्त्तवीर्यकेनाशहितजामदग्नसुतराम ॥ धनुपसुविद्यापढनहितवसेमहेश्वरधाम ॥ ५३॥ ॥संखनारीछंद॥ ॥नहांरामगीतापढेएकचीत्ता ॥ भवानीसयानीतिहूंलोकमांनी ॥ ५४ ॥ ॥तोमरछंद ॥ ॥ ढिगरेणकासुतजाइ ॥ करजोरपादमनाइ ॥ गहिरामचंदहिगीत ॥ सुपढेतिसेइकचीत ॥५५॥ ॥नराजछंद॥ ॥कलानरायणीलहीतिनेसुतांहिपाठतें ॥ हनेरिपूकमानतानधामहीनवाटते ॥ सुभूमिदेवहत्तिआमिटसमाम्पाठते ॥ पढेसुरामगीतजोसमस्तपापकाटते ॥ ५६ ॥ ॥ मधुभारछंद ॥ ॥ जगगहिकुदान ॥ दुरअंनआन ॥ दुरवैनगोइ ॥ जोपापहोइ ॥ ५७ ॥ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ पढेरामगीतायदाएकवारं ॥ मिटैपापसारंलगेनासुवारं ॥ शिलाशालग्रामंपढेरांपआगे ॥ तुलस्याश्वत्थंकैयतीनासमाजे ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥फलजोनवाणीकहिसकेतिहपाइहैजनसोइ ॥ सुनरामगीताजोपढेयहिभांतियाजगकोइ ॥ करश्राद्धब्राह्मणदेइभोजनविष्णुभक्तउदार ॥ पुनपितरतांकेविष्णुकेपदजांहिहरपअपार ॥ ५९ ॥ ॥नरा

जछंद॥ ॥इकादशीदिनव्रतंसुनेतुद्वादशीदिन॥ अगस्तवृक्ष
मूलबैठरामगीतकाभनै ॥ तिसेसुरामचंद्रमैनभेदरंचआनिये
॥ समस्तदेवपूजहेसुरेशलोकमानिये॥ ६०॥ ॥सोरठा॥
विनादांनविनध्यानविनतीरथअवगाहनं॥ रामगीतकागान
सोअनंतफलपावई॥६१॥ ॥दोहा॥ ॥नारदवहुताक्याक
होंसुनियेतत्वप्रकाश॥स्मृतीवेदपुरानपुनऔआगमइतिहास
॥६२॥ याहिरमायणग्रंथकीकलासोलमीजोइ ॥ताहिसमा
ननवपुजेंजेसोआवैंसोइ॥६३॥ ॥सूतउवाच॥सवैया॥
याहिमहातमआपसुनामुनिनारदपैचतुराननगाये ॥ जोनर
याहिपढेजगमैपुनजोइसुनेमनप्रेमवढाये॥ पूजतताासुरब्रिंद
सदाहरकीपदवीसुखसोंवहपाये ॥रामकथाकविसिंहगुलाव
यथामतिगाइसभैसुखुनाये ॥ ६४ ॥ ॥इतिश्रीमदध्या
त्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेप्रथमोऽध्यायः॥ १॥ ॥९॥
॥सवैया॥ ॥सूर्यवंशविपेतनुमानुपजाहिलयोहरिजीअ
विनाशी ॥ अवनीबहुभारनिवारनकोसुरब्रिंदसभैचिनवैंसु
खरासी ॥ सभराक्षसमंडलकोहनकेजिहपावनकीरतिभूमि
प्रकासी ॥ वेजनकात्मजापतिकोउरमाहिभजोपरब्रह्मविला
सी॥ १॥ चौपाई॥ ॥जगउतपतिपालनसंहार॥ माया
आश्रेहअविकार ॥ अचिंतरूपआनंदस्वरूप ॥ सीतापति
निजबोधअनूप ॥२॥ विदितसुतत्वअमलतनजोई॥ रामभ
जोपरपूरणसोई ॥ पुराणोत्तमरामायणसार ॥ याहिपढेंजे
लोकउदार ॥३॥ अथवासुनेंनिरंतरजेई॥ धोइपापहरिपावें

सेई ॥ भवबंधनतेछुटयोचहे ॥ नित्यरमायणकोमुखकहे ॥
॥४॥ सोरठा॥ ॥धेनुसहस्रहदानआयुतकोटिसुजोकरे॥सुने
रमायणकानवैफलसोनरपावई ॥ ५ ॥ ॥दोहा॥ ॥ त्रि
पुरारीगिरितेभईमिलीरामनिधिवारि॥ अध्यात्मरामसुगंगय
हतीनभवनमलहारि॥ ६॥ ॥चौपाई॥ ॥एकसमैशिवगि
रिकैलाश॥ रतनपीठबैठेसुखरास ॥ रविशतविमलपीठवह
छाजे ॥ ध्याननिष्ठशिवतहांविराजे॥७॥ सेवेंसिद्धसदापदमं
जुल॥ वामअंगदेवीकरअंजुल॥ पारवतीसुभक्तभरभरी॥स
कलहितारथप्रश्नसुकरी॥८॥ ॥पारवतीउवाच॥ ॥अभि
वंदनतेदेवदयाल ॥ सर्वांतमत्रिकईशअकाल ॥ हेप्रभुतत्वस
नातनजोई ॥ सनातनमोहवतईयेसोई ॥ ९ ॥ गोप्यवस्तुज
गभीतरजोई॥ महानुभावजनभापेसोई॥ मैतुमरीअतिभक्त
सुदेव ॥ हेपतिमोहिवतईयेभेव ॥ १० ॥ सविज्ञानज्ञानहेजो
ई॥भक्तविरागयुक्तपुनसोई ॥ जांकरतेरसुभवनिधभारो ॥
करिसंक्षेपप्रभुमोहिउचारो ॥ ११ ॥ परमगोप्यइकपूछोंआ
न ॥ जलजनैनसोकरोवपान ॥ श्रीसुराममैभक्तिहमारी॥
हैप्रसिद्धसभजगतमझारी॥भक्तिमुक्तिकारणजगमाहीअव
रनसाधनकोभवमाहीं॥ तद्यपिमेसंशयइकआहि ॥ अमल
उक्तकरहनोसुनाहि ॥ १२ ॥ ॥सवैया॥ ॥ कंचितरामकहै
परमातममाइकनाहिछुहेगुनकेई॥ सिद्धनिरंतररामभजेपरपू
रणतांपदपावततेई॥ हेपरमातमसत्यसहीतमआवृतभापतहै
पुनकेई ॥ याहितेआनकहेपरमातमरामलखेनसुतेपिखलेई॥

॥ १४॥ ॥चौपाई॥ ॥जोपरमातमजानतआप॥सीताहि
तकिउकौनविलाप ॥ जोनहिजानततत्वसुसोई॥समसभजी
वनभजनकोई॥१५॥ यामेंकोउत्तरप्रभुकहो॥मेरेउरकोसं
शयदहो॥ औरसमर्थनकोजगआहि॥ विस्वहितारथपूछोंना
हि॥१६॥ ॥ईश्वरउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥रामतत्वजा
ननकीचाहि ॥धन्यधन्यतूयाजगमाहि॥परमगोप्ययहिआहि
भवानी ॥ किननपूछीनाहिबपानी॥ १७॥ तैंअबपूछीकरोंब
पान ॥ श्रीरामपदवंदनठान॥रामएकआनंदसरूपा॥ प्रकृति
परपुनपुरपअनूपा ॥ १८ ॥ निजमायाकरजगउपजाइ॥बा
हरभीतररह्योसमाइ ॥ हैसभअंतरआतमगूढ ॥ नाहिपिखे
ताकोनरमूढ ॥ १९ ॥ जिउचुंबकजगलोहचलावे॥ तिउव
हरामजगतभरमावे ॥ एहनजानेमूरखलोक ॥ अवरेअवि
द्यापावेंशोक ॥ २० ॥ निजअज्ञानेआहितिनजोई ॥ ईश्वर
माहिअरोपेंसोई ॥ पुत्रदारकरमअतिलाग॥ तेजामेंपुनमरे
अभाग ॥ २१ ॥चामीकरजिउकंठनजाने॥ह्रदेरामनहितथा
पछाने ॥ जोतिरुपरविमेंतमनाही ॥ तिउअज्ञाननशपवमा
हीं ॥ २२॥ शुद्धज्ञानपरमातमराम॥तामेंकथंअविद्यानाम॥
भ्रमकरभ्रमेंननजिहवारे ॥ भ्रमतानिहारेंवहुगृहसारे॥ २३॥
तिउकरतत्वतनइंद्रियमाही॥मूरखकहेपरातममाही॥प्रकाश
रुपसूर्यजगआहि ॥ दिनरात्रीतिहदोउनाहि॥ २४ ॥तिउअ
ज्ञानज्ञानदोनाही ॥ शुद्धज्ञानहरिरामसमाही॥तातिपरानंदहै
राम ॥ तामेंअहंनतमकोनाम ॥ २५॥ ॥दोहा॥ ॥सा

सोहैंअज्ञानके कमलनैनश्रीराम॥ मायाआश्रयआपहै मायामोहननाम ॥ २६ ॥ ब्रह्माजूविनतीकरीलीनोनरअवतार॥ अवनीभारउधरणहितकीडाकथाउदार॥ २७॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥पारवतीतेप्रस्नमैउत्तरएकअनूप॥ परमगोप्यदुर्लभमहासुनेमिटतमकूप॥ २८॥ ॥नराजछंद॥ ॥सुरामऔविदेहजाप्रभंजनंकुमारको॥ सुनोसंवादअद्भुतंसमस्तमोक्षकारको ॥ पुरारमायणसुरामरावणंविदारका॥ससैन्यपुत्रवाहनंरणेसमस्तमारकै॥२९॥ विदेहजाकपीशऔसुमित्रपूतकेसमं॥संकनआवतोभयोसमस्तवैरकोदमं॥हनूमतंसुआदिलैसमस्तवानरंवृता ॥ वसिष्टआदिविप्रतंसुभालटीकजाकृता॥ ३०॥ नृपासनेअसीनकोटसूरकीप्रभाधृतं॥ तदाहनूमतंनिहारअग्रअंजलीकृतं॥ कृतंसमस्तकारयंनचाहिताहिआनकी॥महामतीकुमारवायुचाहिताहिज्ञानकी॥३१॥ सुरामजानकीकह्योसुतत्वकोवखानिये॥ अपापज्ञानभाजनंसुभक्तहूंपछानिये ॥ विदेहजातथेतिप्राहरामतत्त्वनिश्चितं॥ हनूमतेप्रपंन्नकोसुलोकमोहनीसितं॥३२॥ ॥सूतउवाच॥ भुजंगप्रयातछंद॥ ॥परंब्रह्मरूपंविजानीहिरामं॥अनासीसदासच्चिदानंदनामं॥ विनोपाधिरूपंनवानीवपाने ॥ अनंदंसुशांतंमलंहीनमाने॥३३॥ ॥नराजछंद॥ ॥निरंजनंविकारहीनव्यापकंपछानिये॥ सुआतमाअकलमंपप्रकाशरूपजानिये॥जगत्तमूलकारणंप्रकृत्तिमोहिमानिये॥ उपाइपालसंहरोनरामहेतुठानिये॥३४॥सुरामसंनिधासतीस्रिजामिमै

निरालसा॥ अरोपरामचंद्रमैकथेसुजीवबालसा॥ सकेतज
न्मरामकोपतंगवंशनिर्मलं॥ सुगाधपूतयागपालशत्रुमंडलं
दलं॥ ३५ ॥निवारश्रापगोतमासुनारिपावनीकरी॥ महेश
चापतोडरामपाणिजानकीहरी॥ सुरेणकाप्रपूतरामरामजी
मदंहरं॥सकेतवासमेसमंसमासुद्वादशंकरे॥ ३६ ॥सुदंडका
वनंगमंविराधदैतमारणं ॥ मरीचप्राणछेदनंकुरंगरूपधार
णं॥ सुछाइसीअकीहरीजटायुमोक्षहूंलहे॥ कबंधदैतमोक्षके
सुभीलनीफलंगहे॥ ३७॥सुग्रीवसोंसमागमंसुबालिप्राण
हारणं॥विदेहजाप्रसोधनंसमुंद्रसेतुकारणं॥ निरोधलंकराव
णंरणंसपुत्रमारणं॥ विभीषणंबुलाइभालराजटीककारणं॥
॥ ३८ ॥ विमानपुस्पकंसुबैठमेसमंविजभरे॥ सकेतआवनं
सुभालराजटीकहूंकरे ॥ इनेसुआदिकर्मजेसमस्तजानकीक
रे॥ अरोपरामचंद्रमेसुलोकमूढहूंधरे॥ ३९॥ विकारहीनआ
तमासमस्तरामजानिये॥चलेनबैठतानहीनशंकरंचठानिये॥
नवांछहेनत्यागहेकरेनरंचकारयं॥ अनंतरूपआचलोप्रणाम
हीनधारयं॥ ४०॥ ॥दोहा॥ ॥मायागुणअनुगतभएली
लाविग्रहराम॥करताभासेंजगतमेतरेजाहिंभजनाम॥४१॥
॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥नराजछंद॥ ॥हनूमंततत्तोसुरा
मतत्वकोवखानियो॥ सुआतमाअनातमाप्रमातमाप्रभानि
यो॥अकाशकीयथाभिदात्रिधासुलोकमेपिखी॥जलाशयेनि
हारियेसमस्तलोकहूंदिखी॥४२॥ महाअकाशएकसोविछिन
आंनजानिये॥ अकाशभासतीसरोप्रतिबिंबनाममानिये॥

सुबुद्धिमोंविछिनएकचेतनंनिहारिये॥ सुपूरणंकहेंतिसेद्वितीय भासधारिये॥४३॥ सुविंयरूपतीसरोत्रिधाचितीसुयोंपिखे॥ सभाससुद्धिकारयोविछिनचेतनंविषे ॥ विकारहीनसाक्षणी अरोपतेभ्रमीयथा॥ अरोपहैसुजीवतासुसाक्षणीभ्रमीतथा ॥४४॥ अभासतोस्वपासदातमोंविकारभानिये॥ सुबुद्धिमोंव छिन्नसोपरातमापछानिये ॥ विछेदतोविकल्पतंनरंचभेदले खिये॥प्रपूरणंसमंतिसेइकत्वताप्रपेखिये॥४५॥सुतत्वमस्यवा क्यतेसभासजीवकीतथा॥इकत्वभेदभानहैसमस्तवेदमैकथा परातमासुजीवकोइकत्त्वज्ञानक्यैयदा॥ अविद्ययासकारयाम रेसुनोहनूतदा॥४६॥ विजानमोहिभक्तिजेसुमोहिभावकोल हें॥ विहीनभक्तियेनराक्रियाकलापमैवहें॥ जमैशतंसमानज्ञा नमोक्षतेसुपाइहें॥ जगत्तसिंधुर्नारमेंसदावहेसुजाइहें॥४७॥ सुगोपमेरिदेसुनोसुआपमोहिगाइयो ॥ अपापपुन्यशीलतेंह नूमतेसुनाइयो ॥ अभक्तमेसठंतथानताहिपेवपानिये ॥ सुरे शराजलक्ष्मीनतासमंपछानिये॥४८॥**श्रीमहादेवउवाच**॥ ॥**सवैया**॥ ॥पारवतीयहरामरिदेअतिगोप्यमयातुमपास उचारे ॥ आहिसुपावनऔरिदअंगमपापसुनेक्षिनमाहिनि वारे॥आपसुरामकहेमथकैसभवेदनमैजुअहेकछुसारे॥जो करप्रेमपढेनितहीनरसोभववंधनमूलउखारे॥४९॥ ॥**चौ पाई**॥ ॥ ब्रह्महनीलोपापहजार॥ बहुजनमीजोकरेअपार ॥विनसंदेहसभैतेमरहें॥ रामवचनजिउंसत्यउचरहे॥५०॥ जातिभ्रष्टपुनपापीजोई॥ परधनपरदारारतिहोई ॥ चोरीक

निरालसा॥ अरोपरामचंद्रमैकथेसुजीववालसा॥ सकेतज
न्मरामकोपतंगवंशनिर्मलः॥ सुगाधपूतयागपालशत्रुमंडलं
दले॥ ३५॥ निवारश्रापगोतमासुनारिपावनीकरी॥ महेश
चापतोडरामपाणिजानकीहरी॥ सुरेणकाप्रपूतरामरामजी
मदंहरे॥ सकेतवासमेंसमंसमासुद्वादशंकरे॥ ३६॥ सुदंडका
वनंगमंविराधदैतमारणं॥ मरीचप्राणछेदनंकुरंगरूपधार
णं॥ सुछाइसीअकीहरीजटायुमोक्षहूंलहे॥ कबंधदैतमोक्षके
सुभीलनीफलंगहे॥ ३७॥ सुग्रीवसोसमागमंसुबालिप्राण
हारणं॥ विदेहजाप्रसोधनंसमुद्रसेतुकारणं॥ निरोधलंकराव
णंरणेसपुत्रमारणं॥ विभीषणंबुलाइभालराजटीककारणं॥
॥ ३८॥ विमानपुस्पकंसुबैठमेंसमंविजेभरे॥ सकेतआवनं
सुभालराजटीकहूंकरे॥ इनेसुआदिकर्मजेसमस्तजानकीक
रे॥ अरोपरामचंद्रमैसुलोकमूढहूंधरे॥ ३९॥ विकारहीनआ
तमासमस्तरामजानिये॥ चलेनबैठतोनहीनशंकरंचठानिये॥
नवांछेहनत्यागहेकरेनरंचकार्यं॥ अनंतरूपआचलोप्रणाम
हीनधार्यं॥ ४०॥ ॥ दोहा॥ ॥ मायागुणअनुगतभएली
लाविग्रहराम॥ करताभासैंजगतमैतरेजाहिंभजनाम॥ ४१॥
॥ श्रीमहादेवउवाच॥ ॥ नराजछंद॥ ॥ हनूंमतंततोसुरा
मतत्वकोवखानियो॥ सुआतमाअनातमाप्रमातमाप्रभानि
यो॥ अकाशकीयथाभिदात्रिधासुलोकमैपिखी॥ जलाशयेनि
हारियेसमस्तलोकहूंदिखी॥ ४२॥ महाअकाशएकसोविछिन
आंनजानिये॥ अकाशभासतीसरोप्रतिबिंबनाममानिये॥

सुबुद्धिमोवछिंनएकचेतनंनिहारिये॥ सुपूरणंकहेंतिसेद्वितीय
भासधारिये॥४३॥सुचिंयरूपतीसरोत्रिधाचितीसुयोंपिखे॥
सभासबुद्धिकारयोविछिंनचेतनंविषे ॥ विकारहीनसाक्षणी
अरोपतेभ्रमीयथा॥ अरोपहैसुजीवतासुसाक्षणीभ्रमीतथा
॥४४॥ अभासतोम्रपासदातमोविकारभानिये॥ सुबुद्धिमोव
छिन्नसोपरातमापछानिये॥ विछेदतोविकल्पतंनरंचभेदल
खिये॥प्रपूरणंसमंतिसेइकत्वताप्रपेपिये॥४५॥सुतत्वमस्यवा
क्यतेसभासजीवकीतथा॥इकत्वभेदभानहैसमस्तवेदमैकथा
परातमासुजीवकोइकत्त्वज्ञानकैयदा॥ अविद्ययासकारयाम
रेसुनोहनूतदा॥४६॥ विजानमोहिभक्तिजेसुमोहिभावकोल
हैं॥ विहीनभक्तियनराक्रियाकलापमैवहैं॥ जमशतंसमानज्ञा
नमोक्षतेसुपाइहैं॥ जगत्तसिंधुनीरमेंसदावहेसुजाइहैं॥४७॥
सुगोपमेरिदेसुनोसुआपमोहिगाइयो॥ अपापपुन्यशीलतेंह
नूमतेसुनाइयो॥ अभक्तमेसठंतथानताहिपेवपानिये॥ सुरे
शराजलक्ष्मीनतासमंपछानिये॥४८॥**श्रीमहादेवउवाच॥**
॥**सवैया**॥ ॥पारवतीयहरामरिदेअतिगोप्यमयातुमपास
उचारे ॥ आहिसुपावनऔरिदअंगमपापसुनेक्षिनमाहिनि
वारे॥आपसुरामकहेमथकैसभवेदनमैजुअहेकछुसारे॥जो
करप्रेमपढेनितहीनरसोभववंधनमूलउखारे॥४९॥ ॥**चौ
पाई**॥ ॥ ब्रह्महनीलोपापहजार॥वहुजनमीजोकरेअपार
॥विनसंदेहसभैतेमरहें ॥ रामवचनजिउंसत्यउचरहै॥५०॥
जातिभ्रष्टपुनपापीजोई ॥ परधनपरदारारतिहोई ॥ चोरीक

रविप्रपुनमारे ॥ मातपिताकेप्राणनिकारे॥ ५१॥ योगिन्द्रि
दकोजाअपकारी ॥ याविधिकाजोमहाविकारी ॥ सोवहरा
मपूज्यजगमाही ॥ रामरिदेजुपढमुखमाही॥ ५२ ॥ जापद
कोयोगीशनपावें ॥ तापदकोसुखसोंबदुजावें ॥ पूजेतांअम
रेश्वरसोरे॥ रामभक्तगणवडोउदारे॥ ५३॥ ॥ **नराजछंद**॥
सुजानकीसमेतरामचंद्रजोप्रगाइयो ॥ महेशजामहातमोनि
जंप्रियासुनाइयो ॥ समेतसीयरामकेरिदेसुरामचंदको॥ गु
लाबसिंहदासकेमुखेवसोअनंदको ॥५३॥ ॥ इतिश्रीमदअ
ध्यात्मरामायणेउमामहेस्वरसंवादेश्रीरामल्हदयंनामद्वितीयो
ऽध्यायः॥ २॥ ॥ ७॥ ॥ **पारवतीउवाच**॥ ॥ **चौपाई**॥
धन्यआजुमैयाजगमाहि ॥ ईशअनुग्रहमोपरआहि॥ आज
कृतारथमैजगमाही॥ संदेहग्रंथटूटीउरमाही॥ १॥ रामतत्त्वअं
मृतरसजोई ॥ प्रभुभाष्योकरुणाकरसोई ॥ पीवतमेमनदेव
दयाल॥ त्रिसनहोवैरसहिविशाल॥ २॥ श्रीरामकीकथापुरा
नी॥सुनिसंक्षेपजुमोहवपानी॥ अवविसतारसुननकीचाहि॥
प्रगटवखानोमोप्रतिनाहि ॥ ३॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच**॥
॥ **चौपाई**॥ ॥ सुनोभवानीकरोंवखान॥ गोप्यनतेअतिगो
प्यपछान ॥ अध्यात्मरामचरित्रसुजोई॥ रामवखान्योभापों
सोई॥ ४॥ तीनतापकोकरेनिवार॥ सोअबदेवीकरोंउचार॥
जाहिसुनेसुमिटेभवभारो ॥ होइजीवकोभवनिसतारो॥ ५॥
परमरिद्धिकोप्रापतिहोवै ॥ दीरघआयुसुखीतनजोवें॥ पुत्रा
दिकशुभसंततिजोई ॥ ताहिनिरंतरहोवेसोई ॥ ६ ॥ ॥ स

वैया. ॥ ॥ ॥ रावणलौंसुमहागणराक्षसभारभरीधरणीज
वभारी ॥ गौतनुधारतवैंमुनिदेवनसंगमिलीविधिलोकसि
धारी ॥ जाइतहांउरकोदुखजोधरणीविधिपासमुरोइपुका
री ॥ ध्यानधरेतिनदोघटिकादुखकारणजोसुपिखेमुखचारी
॥ ७ ॥ निधिक्षीरगएसुरसंगलएधरणीकमलासनसंगलवा
ई ॥ श्रुतिसिद्धभलेपदउज्जलकेहरिईश्वरकीमुखकीरतिगाई ॥
ऋपिबोचपुराननभापतजोविधगाइसभाहरिगीतसुनाई ॥ ह
रिभावभरेद्रिगनीरढरेमुखआनंदवाक्यगदागदआई ॥ ८ ॥ त
वसूरहजारसमालसकेदिशपूरवमैप्रगटेहरिराई ॥ तमदूरकरे
दिगमंडलकोतनुदीपतिनावरनीमुखजाई ॥ कमलासनएकपि
खेहरिपावनऔरननाहिलखीगतिकाई ॥ समनीलमणीत
नुमंदहसेद्रिगकंजनसेजनकोसुखदाई ॥ ९ ॥ कुंडलअंगदहा
रमुकीटसुहैंकरकंकणसुंदरभारे ॥ श्रीभ्रिगुपादमणीलसकैउर
भ्राजतसुंदरतावरधारे ॥ हैंढिगनंदसुनंदखरेगुनगावनहैंसन
कादिकचारे ॥ शंखरथांगगदाकरनीरजहैवनमालगलेविस
तारे ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेमजनेऊउरमैसोहे ॥ स्वरण
वरणअंवरतनमोहे ॥ पदमांभूमिसहितहरिछाजे ॥ गरुडवि
हंगमऊपरराजे ॥ ११ ॥ हरखभरेउरगदगदवानी ॥ ब्रह्मदे
वतवअसतुतिठानी ॥ ॥ब्रह्मोवाच॥ ॥तेपदपंकजकोपरणा
म ॥ करोनिरंतरपूरणधाम ॥ १२ ॥ प्राणबुद्धिइंद्रियमनलाई ॥
मोक्षीजोचितवेंसुखदाई ॥ त्रिगुणीमायाकेअनुसार ॥ भवउत
पतिपालनसंहार ॥ १३ ॥ करोनिरंतरलेपनहाई ॥ निजानंद

अनुभवतुमसोई॥ दानअधनकर्मकोकरें ॥ दुष्टजीवतिउपाप
नहरें ॥ १४ ॥ तयसमैजिउभक्तिकमाइ ॥ संतदहिक्षिणपाप
मिटाइ॥ तेपदपंकजदप्योजोई ॥ मेउरदोषहरप्रभूसोई ॥ एसे
चरनतुमारदेव ॥ धारिरिदमुनिकरेंसुसेव ॥ तवपदपंकजपूजा
जोई ॥ तुलसीमालधरेजनकोई ॥ १५ ॥ सपत्नीजिउंपद
मातिहसाथ ॥ करेसपरधाहेहरिनाथ ॥ तेभक्तनमैभक्तवि
शाल ॥ श्रीसपरधेधरेंसुमाल ॥ १६ ॥ यांतभक्ततुमारजे
ई ॥ भक्तिनिरंतरचाहैतेई ॥ तेपदपंकजभक्तउदारी ॥ होइ
निरंतरमोहिमुरारी ॥ १७॥ भवआमयजेतपेसुभारू ॥ भक्ति
एकतिनकोजगदारू ॥ याविधब्रह्माभाष्योजवही ॥ वोले
श्रीनारायणतवही ॥ १८ ॥ किंकरोमिनारायणवानी ॥ सु
नीविधाताहरषवखानी ॥ भगवनरावणनामेष्याने ॥ पौल
स्तजसुरनरसभजाने ॥ १९ ॥ हैं भराक्षसकोवरपाई ॥ मै
वरकेगरव्योअधिकाई ॥ त्रिलोकीलोकपालसभजेते ॥ वि
श्वसमेतदुखाएतेते ॥ २० ॥ मानसकरमरणातिहजोई ॥ मैक
ल्याणकलपयोसोई ॥ यातेतुममानुपतनधारी॥ हनोदेवरिपु
जाइमुरारी॥२१॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥कश्यपमेहित
तपकोकीनो ॥ होइप्रसन्नमोहिवरदीनो ॥ मोसुतयाच्योति
नेउदार ॥ तथाकीयोमैअंगीकार ॥ २२॥ सोअवकश्यपदश
रथनामा ॥ भूतलमैंहैअजकेधामा॥ कुशल्यानामताहिपटरा
नी ॥ तासपुत्रतामैउरमानी॥२३॥चारप्रकारआपकोंकरों॥
एककुशल्याकेग्रहधरों ॥ तीनइतरदोनोमैधारों ॥ भूको

निफलसुभारउतारों ॥ २४॥ योगमायसीताइकनामा ॥उप
जेगीमिथलापतिधामा॥ तिहसमेतविधकारयथारो॥ करोंस
पूरणयोंउरधारो ॥ २५॥ याविधिविष्णुसुबैनवषान ॥ भयोत
हांपुनिअंतरधान ॥ ब्रह्मादेवनबैनउचारे॥ रघुकुलमेहरिनरत
नुधारे॥ २६॥ तुमसभअंशनकैजगमाही॥ वानरतनुधारोब
नमाही ॥ विष्णुसहायकरोजगतौलौ ॥ विष्णुरहैगोभूतलजौ
लौ॥२७॥ याविधविधिआश्वसनदीनो॥धरणीकोआश्वास
नकीनो ॥ कमलासननिजभवनेगयो ॥उरज्वरदूरसुखीअ
तिभयो॥ २८॥ ॥शंकरछंद॥ ॥धरदेववानररूपकोविच
रेंअरंननमाहि॰॥ सुसहायताजगदीसकीयोंधारनिजमनमा
हि॥ बलवंतभूधरपादपोंसंग्राममैपरवीन॥ यहकथापावनई
शकीशिवआदवर्णनकीन ॥ २९॥ ॥इतिश्रीमदअध्यात्मरा
मायणेउमामहेश्वरसंवादे-----कांडेनामतृतीयोऽध्यायः॥३॥
॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥अथराजादशरथ
वरजोई॥सत्यपराक्रमश्रीमतसोई॥कौशलपतीवीरइकआहि
विश्रुतसबलोकनकेमाहि॥ १॥ निहसंतानदूखतिहिभारा॥व
सिष्टसमीपगयोइकवारा॥ मुनिसरदूलबंदपदमंजुल॥ प्रश्नक
रीनृपवरकरअंजुल॥२॥ शुभलक्षणलक्षतसंतान॥किहविधि
होवेहेमुनिभान॥ संततहीनराजसभजेतो॥ केवलदुखकारण
हैतेतो॥ ३॥ वसिष्टकीएपुनबैनउचार॥ होवेंगेनृपवरसुतचा
र॥ मानोलोकपालतनुधारे॥होवेंगेबलबुद्धिउदारे॥ ४॥शृं
गीऋपिशांताकेभरता॥ नृपआनीजेतपतनुधरता॥ पुत्रकाम

यागजगजोई ॥ हमसमेतकरीयेनृपसोई ॥ ५ ॥ याविधिसु
निमुनिवरकीवानी ॥ मंत्रीप्रतिनृपवरहियपानी ॥ सुनमंत्रीश्रृं
गीऋपिल्याए ॥ पदवंदनबहुभांतिमनाए ॥ ६ ॥ सहतअमा
तयागनृपकरे ॥ अमलमुनीश्वरमंत्रउचरे ॥ श्रद्धाहवनक
रेनृपजबही ॥ हव्यवाटप्रगटेतिहितबही ॥ ७ ॥ तनजांबुनद
प्रभाउदारी ॥ पाइसस्वरणपात्रकरधारी ॥ पाइसलीजेहनरदे
वा ॥ तेपुत्रनहितरचीसुदेवा ॥ ८ ॥ निरसंदहपरातमजोई ॥ पुत्र
भावकरपावेसोई ॥ ऐसेनृपप्रतिवैनवपान ॥ अग्निभयोतहं
अंतरधान ॥ ९ ॥ मुनिशरदूलोंकेपदवारिज ॥ नृपवंदेनिजपा
इसुकारज ॥ गुरश्रृंगीऋपिआइसुकीनी ॥ नृपपाइसनिजभा
मिनिदीनी ॥ १० ॥ अर्धकुशल्याकेकरदयो ॥ केकईअर्धसुदे
वतभयो ॥ बहुरसुमित्राप्रापतिभई ॥ पुत्रहेतपाइसतिनलई ॥
॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुशल्याअर्धसुभागतिहदीनोप्रेमव
ढाइ ॥ केकईअर्धसुआपनोदयोप्रेममेंआइ ॥ १२ ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ खायोदिव्यचरूतिनजबही ॥ गर्भसमेतभईतेतबही ॥
देविनजिउंराजेंतेनारी ॥ नृपमंडलमैंकरउज्यारी ॥ १३ ॥ कौ
शल्यादशमासनभए ॥ अविनाशीनिजपुत्रसुजए ॥ नवमीशु
क्लपक्षमधुमास ॥ करकलग्नशुभभएप्रकास ॥ १४ ॥ पुनर्वसु
नामनक्षत्रआए ॥ ऊचठौरग्रहपंचसुहाए ॥ मेपविषेरविवृ
पमैंचंदा ॥ कंन्यामैंबुधमहाअनंदा ॥ १५ ॥ ॥ गीयामाल
तीछंद ॥ ॥ करकमैंगुरुमीनमैंभृगुदेवफूलवसावई ॥ प्रग
टेनरायणभूतलेपिखदेवबलबलजावई ॥ परमातमाजिहवेद

भाषैंआवहैनहिंध्यानमै॥वहुभक्तिकेवशनैनंगोचरआजुदश
रथधाममै॥१६॥नीलकंजसमानसुंदरस्यामभूरतिमोहिंनी॥
भुजचारपीतपटंबराजगभक्तकारयदोहनी॥अरुणकंजसमा
ननेतरश्रांतदेशविराजहीं॥ मकरकुंडलकानलसकैंहेरमकरसु
लाजहीं॥१७॥ सहससूरसमानलसकैंभूपमंदरजालमें॥कु
टिलअलककपोलसुंदरहेमकीटसुभालमें ॥धरगदापद्मसुच
क्रकरवनमालसुंदरशोभई॥सुविशालसोभाहेरकैमनदेवता
सभलोभई॥१८॥जनकृपाचंद्रहृदस्यजोमुसकावनातिहचां
दनी ॥ करुणारसीलेनैनशोभानीलकंजनमादनी ॥श्रीवत्स
हारकियूरनूपरपादमैछनछनकरे॥पिखतांकुशल्यारूपकोवि
समाकुलाउरमैठरे॥१९॥ ॥दोहा॥ ॥हरपनीरनैनाभरेक
रअंजुलहरिमान॥अद्भुतरूपकुशल्यापिखवालीभगवान॥
॥२०॥ ॥कौशल्याउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥देवदेवप
दवंदनथारे॥संखगदाकरचक्रसुधारे॥परमातमअच्युतअ
नंत॥पुरपोत्तमपूरणभगवंत॥ २१॥ ॥गीयामालतीछं
द॥ ॥वाणीअगोचरतोहकोमुनिवेदवादीगावहैं ॥मनवुद्धि
इंद्रीनापिखेंसतज्ञानरूपसुनावहैं॥तुमहीस्वमायाविश्वकोउप
जाइपालसंहारहो॥ सत्वादिगुणसंयुक्तहोनहिलेपरंचकधार
हो॥२२॥ ॥चौपाई॥ ॥नाहिकरोकरतासेभासो॥चलो
नाहिजनुचलतप्रकासो॥ नाहिसुनोजनुसुनतसमान॥ देषो
नादेखतसेभान॥ २३॥ अप्रमाणमनवुद्धिनिआरे॥रूपतु
मारोवेदउचारे ॥समसभभूतनमैंतुमदेव॥लखेनजावोंअल

खअभेव ॥ २४ ॥ अज्ञानअवरेचित्तजिनकेरे ॥ कैसेरूपतु
मारोहेरे ॥ शुद्धबुद्धिजिनकीजगअहे ॥
॥ २५ ॥ ब्रह्मांडप्रमांणूसेउरतेरे ॥ ध्यानधरेयोगीश्वरहेरे ॥ तूं
मेउदरविषेतनुधरे ॥ याविधलोकविडंवनकरे ॥ २६ ॥ भक्त
नमैपरवसतातेरी ॥ आजरघूतममैउरहेरी ॥ भवसमुद्रमेमेअ
तिमग्ना ॥ पतीपुत्रधनमाहिंसुलग्ना ॥ २७ ॥ तेमायाजराभ्रम
बहुभारा ॥ अवतेअंघ्रीमूलनिहारा ॥ देवतुमाराएहुस्वरूप
मेमानसनितरहेअनूप ॥ २८ ॥ विश्वविमोहनमायाधारी
नाहिअवरेसुमोहिमुरारी ॥ एततरूपअलौकिकजोइ ॥
हरोसनातनसोइ ॥ २९ ॥ वालभावअतिकोमलअंगा ॥ रू
पदिपावोमहाअनंदा ॥ वोलअलिंगनललनसुधार ॥ उतक
टतममैतरोंसुपार॥३०॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥
जोइएतुमारे॥ सोईसोनहिऔरनिहारे॥भूमिभार नि
मित्त॥ब्रह्माविनतीकरीसुचित्त ॥ ३१ ॥रावणमारणहेतसुमा
त॥धारयोमैभूतलनरगात॥दशरथतेममहितत पकीनो॥होइप्र
संन्नमोहिवरदीनो॥३२॥मोहिपुत्रकरयाच्योजोई॥पूरणकी
योआजमैसोई॥यहमेरूपनिहारोजोई॥पूरवतपफलजानोसो
ई॥३३॥दुरलभमोहिदर्शजगआहि॥मोक्षनमित्तपछानोता
हि॥संवादहमारोधारोजोई॥पढेसुनेयांकोनरकोई॥३
नरममस्वरूपतापावे॥मरणसमेममस्मृतीआवे॥ मातापति
यौंरामउचार॥रोवतभएवालतनुधार॥३५॥इंद्रनीलमणित
नुद्युतिसोहे॥विशालनैनसुंदरसबमोहे॥वालअरुणसमप्रभा

उदार ॥ लालतलोकपालवलिधार ॥ ३६ ॥ सुतकोजनमसुन्यो
नृपजवेही ॥ सुखसमुद्रमग्नभेतवही ॥ गुरुसमेतआयोपुनतहां ॥
कमलपत्रद्रिगरामसुजहां ॥ ३७ ॥ पिखआनंदनीरद्रिगआए ॥
गुरुसोजातकर्मकरवाए ॥ केकईजनेसुभरतकुमार ॥ कमलनै
नतनुप्रभाअपार ॥ ३८ ॥ सुमित्राजूसयुगलसुतजाए ॥ पूर्णइं
दुसमवदनसुहाए ॥ ताहिंसमेराजाहरपाना ॥ ग्रामहजारद
एदिजदाना ॥ ३९ ॥ हेमरत्नसुरभीपटघने ॥ ब्राह्मणपाइअसी
साभने ॥ विद्याज्ञानसंपूरणभरे ॥ जाहिविपेमुनिरमणसुकरे
॥ ४० ॥ तांकोगुरुपुनरामउचारा ॥ रमणरूपतेरामनिहारा ॥ भर
तभरणतकीयोउचारा ॥ लक्ष्मणसुभलक्षणआधारा ॥ ४१ ॥ श
त्रुहननशत्रूघनभाने ॥ याविधगुरसभनामवखाने ॥ लक्ष्मण
रामचंद्रकेसंगी ॥ शत्रूघनभयेभरतप्रसंगी ॥ ४२ ॥ प्रायसअ
शनकेअनुसारी ॥ इंदीभूंमिफिरैवहचारी ॥ लक्ष्मणसंगमिले
श्रीरामा ॥ लीलावालकरेंसुखधामा ॥ ४३ ॥ ॥ सवैया ॥
मातपितासुनकाकलवैनसुपेखमुखांबुजकोविगसाए ॥ भा
लविपैमुकतामणिहेमसुपीपलपातअनुपसुहाए ॥ कंठविपे
मणिव्रातधेरत्रिककोनखताहिसुबीचजराए ॥ कांचनकुडल
कानलसैंरतनांगणसुंदरपूरलगाये ॥ ४४ ॥ ॥ चौपाई ॥
सब्दाइमानमणिपरमउदारे ॥ पदभूपणतिहसंगसवारे ॥ कटी
सूत्रअंगदभुजधरे ॥ अल्पदशनहसतमुखपिरे ॥ ४५ ॥ इंद्र
नीलमणिदेहसुहाए ॥ अंडणरिंङ्मानविकसाए ॥ आगेवाले
कृपाछेरामा ॥ देखकुशल्यादशरथधामा ॥ ४६ ॥ परमअनं

स्वअभेव ॥ २४ ॥ अज्ञानअवरेचित्तजिनकेरे ॥ कैसेरूपतु
मारोहेरे ॥ शुद्धबुद्धिजिनकीजगअहे ॥ वैजनरूपतुमारोलहे
॥ २५ ॥ ब्रह्मांडप्रमांणूसेउरतेरे ॥ ध्यानधरेयोगीश्वरहेरे ॥ तूं
मेउदरविषेतनुधरे ॥ याविधलोकविडंबनकरे ॥ २६ ॥ भक्त
नमैपरवसतातेरी ॥ आजरघूतममैउरहेरी ॥ भवसमुद्रमैमैअ
तिमग्ना ॥ पतीपुत्रधनमाहिसुलग्ना ॥ २७ ॥ तेमायाजगभ्रम
चक्रभारा ॥ अवतेअंघ्रीमूलनिहारा ॥ देवतुमाराएहुस्वरूप ॥
मेमानसनितरहेअनूप ॥ २८ ॥ विश्वविमोहनमायाधारी ॥
नाहिअवरेसुमोहिमुरारी ॥ एततरूपअलौकिकजोइ ॥ उपसं
हरोसनातनसोइ ॥ २९ ॥ बालभावअतिकोमलअंगा ॥ रू
पदिपावोमहाअनंदा ॥ बोलअलिंगनललनसुधार ॥ उतक
ठतममैतरेंसुपार॥३०॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥माताजो
जोइएतुमारे॥ सोईसोनहिऔरनिहारे॥भूमिभारअपनयननि
मित्त॥ब्रह्माविनतीकरीसुचित्त ॥ ३१ ॥रावणमारणहतसुमा
त॥धारयोमैभूतलनरगात॥दशरथतेममहिततपकीनो॥होइप्र
सन्नमोहिवरदीनो ॥३२ ॥मोहिपुत्रकरयाच्योजोई ॥ पूरणकी
योआजमैसोई॥यहमेरूपनिहारोजोई॥पूरवतपफलजानोसो
ई ॥ ३३ ॥दुरलभमोहिदर्शजगआहि ॥मोक्षनमित्तपछानोता
हि॥संवादहमारोथारोजोई ॥ पढेसुनेयांकोनरकोई ॥३४॥सो
नरममस्वरूपतापावे ॥ मरणसमेममस्मृतीआवे ॥ माताप्रति
यौंरामउचार॥रोवतभएबालतनुधार ॥ ३५ ॥ इंद्रनीलमणित
नुद्युतिसोहे॥ विशालनैनसुंदरसबमोहे ॥ बालअरुणसमप्रभा

उदार ॥ लालतलोकपालवलिधार ॥३६॥ सुतकोजनमसुन्यो
नृपजवही॥ सुखसमुद्रमग्नभेतवही॥ गुरुसमेतआयोपुनतहां॥
कमलपत्रद्रिगरामसुजेहां ॥३७॥ पिखआनंदनीरद्रिगआए॥
गुरुसोजातकर्मकरवाए॥ केकईजनेसुभरतकुमार॥ कमलने
नतनुप्रभाअपार ॥३८॥ सुमित्राजूसयुगलसुतजाए॥ पूर्णइं
दुसमवदनसुहाए ॥ ताहिंसमेराजाहरपाना ॥ ग्रामहजारद
एदिजदाना ॥ ३९ ॥ हेमरतसुरभीपटघने ॥ ब्राह्मणपाइअसी
साभने ॥ विद्याज्ञानसंपूरणभरे ॥ जाहिविषेमुनिरमणसुकरे
॥४०॥ तांकोगुरुपुनरामउचारा॥रमणरूपतेरामनिहारा ॥भर
तभरणतेकीयोउचारा॥ लक्ष्मणसुभलक्षणआधारा॥४१॥श
त्रुहननशत्रूघनभाने ॥ याविधगुरसभनामवखाने ॥ लक्ष्मण
रामचंद्रकेसंगी॥ शत्रूघनभयेभरतप्रसंगी ॥ ४२ ॥ पायसअं
शनकेअनुसारी ॥ द्वंद्वीभूंमिफिरैवहचारी ॥ लक्ष्मणसंगमिले
श्रीरामा ॥ लीलाबालकरैंसुखधामा ॥ ४३ ॥ ॥ सवैया ॥
मातपितासुनकाकलैवैनसुपेखमुखांबुजकोविगसाए ॥ भा
लविषैमुकतामणिहेमसुपीपलपातअनुपसुहाए ॥ कंठविषे
मणिव्रातधरेत्रिककोनखताहिसुबीचजराए ॥ कांचनकुडल
कानलसैंरतनागणसुंदरपूरलगाये ॥ ४४ ॥ ॥ चौपाई ॥
सब्दाइमानमणिपरमउदारे॥ पदभूपणतिहसंगसवारे॥ कटी
सूत्रअंगदभुजधरे ॥ अल्पदशनहसतमुखपिरे॥ ४५ ॥ इंद्र
नीलमणिदेहसुहाए ॥ अंङ्गणरिंङ्मानविकसाए॥ आगेवाल
कृपाछेरामा ॥ देखकुशल्यादशरथधामा ॥ ४६ ॥ परमअनं

दभयेमनमाही ॥ तांसुखकीगिनतीकछुनाही ॥दशरथभोज
नकरेसुजवही ॥ रामवुलायेभूपतितवही ॥ ४७ ॥ लीलास
क्तभएसुखधामा ॥ नाहिवुलाएआवहिंरामा ॥ आनकुश
ल्याभूपवखानी ॥ वहुतभलीकौशल्यामानी ॥ ४८ ॥ हसत
मानदौरीरघुनाथ ॥आएनाजननीहरिहाथ ॥ महायत्नकरयो
गीध्यावें ॥ वहुकैसेकरभीतरआवें ॥ ४९ ॥ हसतनरायण
आपेआए ॥ करदमदक्षणपाणिलगाए॥ किंचितग्रासगहे
मुखमाहि ॥ दौरिचलेलीलामनमाहि ॥ ५० ॥ याविधपरानं
दश्रीरामा ॥ सभजीवनकेसुखकोधामा॥ मायावालशरीर
हलीनो ॥ जननीतातपरमसुखदीनो ॥ ५१ ॥ मासमासकौ
शल्यामाता॥ वापनवहुविधिकरेसुताता॥ धरसुतभूपनवहु
तलडावे॥ वहुविधिमंगलसोमूखगावे ॥५२॥ मोदकऔरअ
पूपवनाए ॥करणशशकुलीअतिसुखदाए ॥ करणपूरपुनवि
विधप्रकारे॥वरपत्रिधअतिमंगलधारे॥ ५३ ॥ग्रहकार्यसभ
तांहीत्यागे॥ रामजवैवहुखेलनलागे॥ मातसमीपगएइकवा
रा॥ भोजनदेरघुनाथउच्चारा ॥ ५४ ॥ कारजसकततांहिक्षि
नहोई॥ सुन्योनरामवखान्योजोई ॥ क्रोधभरेकरदंडउठाए॥
छीकेभांजनधरतगिराए ॥ ५५ ॥ लक्ष्मणकोनवनीतसुद
यो ॥ भरतवहुरशत्रूघनलयो ॥ दूधदहींवहुभांतिखवाए ॥
सूदतवैतिनमातवताए ॥ दौरीमातसुमुखविकसाने ॥ तांहि
विलोकतसर्वपलाने ॥ पदपदहुटीकुशल्याजवही ॥ भएनरा
यणलघुगततवही॥ ५६ ॥ रघुनाथहकरभीतरगहे॥ किंचित

भामनिवेनसुकहे ॥ बालकभावसुअंगीकरे ॥ मंदमंदरोवेंह
रिखरे ॥ ५७ ॥ तवमातासवकंठलगाये ॥ शिरचूंमेवहुभांति
लडाए ॥ बालकतेपुनभएकुमारे ॥ वसिष्टसभनसुजनऊंडारे
॥ ५८ ॥ सर्वसुविद्यामाहिविशारद ॥ धनुरवेदमैपरमसुसा
रद ॥ लीलाकरहरिनरतनुधारे ॥ सभशास्त्रनकेअर्थविचारे
॥ ६९ ॥ लक्ष्मणरघुवरकेअनुसारी ॥ सेव्यजानसेवाउरधारी ॥
शत्रुघ्नभरतकेपरमपियारे ॥ सेवकभाईसुशीलउदारे ॥ ६० ॥
॥ **सवैया** ॥ ॥ रामलयेकरचांपमहांवलतूणिकसेकटिबालसु
धारे ॥ संगलएलघुवीरतुरंगमरूढमहावनमाहिसिधारे ॥ खे
लशिकारतहांवलधारसोव्याघरसिंहघनेचुनिमारे ॥ आननिवे
दकरेंवनवातनरामदोऊकरतातजुहारे ॥ ६१ ॥ उठप्रातसमेकर
मज्जनजूपितमातनकोअभिवंदनधारे ॥ पुरकारयफेरकरेंसग
लेअतिनम्मरभावसुरामसुरारे ॥ मिलिबांधवसंगकरेंपुनभो
जनसंगमुनीश्वरग्रंथविचारे ॥ मुनिपुंगवतेसुनआपभलेलघु
भ्रातनमैपुनआपउचारे ॥ ६२ ॥ ॥ **तोमरछंद** ॥ ॥ धररामजी
अवतार ॥ इहभांनकारजसार ॥ नरलोकमैसुखकार ॥ परिणाम
हीननिहार ॥ ६३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सनकादिकजांकोभजेमुनिजन
औमुखचार ॥ वैपरमातमलोकमैभएमनुजअवतार ॥ ६४ ॥
इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेच
तुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥
एकसमेमुनिकौशिकजेपुरऔधविपेवनतेचलआए ॥ जानइ
हेमनमध्यमुनीपरमातमभूपतिमंदरजाए ॥ पावककेसमतेज

लसेपिखतांअजनंदनजूहरपाए॥आसनतेउठलेनचलेगुरुसं
गवसिष्ठसुऔरवुलाए॥१॥पूजनकैविधसोंतिनकोमुनिपुंग
वसोंनृपवैनउचारे॥जोरदुऊकरआजकृतारथधन्यभएमुनि
भागहमारे॥संपतिआइवसेतिनकेघरजांघरमेतुमरेपगधारे॥
जांहितआवनसाचकहोवहकाजकरोंहमसेवकथारे॥२॥सुन
भूपतिवैनप्रसंन्नभयेमुनिआपमहामतिवैनअलाए॥जवया
गलगोंकरनेवनमैसुरपित्रनकेहितपुंन्नसमाए॥नृपदैंतविध्वं
शकरेंतवहीतहश्रोणितकीवरपावरपाए॥तिननाममरीचसु
वाहुकहैंपुनऔरघनेतिनसंगिलवाए॥३॥ममकाजइहैंनृपतां
वधकेहितरामदिजेअहिनाथसुसंगे॥इहकाजकरेंकलिआण
तुमेंनृपहोवहगीपुनवंशपतंगे॥मिलसंगवसिष्टविचारकरोनृप
रामकहोमुनिकौसिकर्मगे॥नृपजौरुचिहोइतुदेहहमैममयाग
करायकरेअरिजंगे॥४॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥दोहा॥
भूपतिकोचिंताभईगुरुइकांतढिगजाइ॥पूछनलाग्योजोरकर
वहुविधिपादमनाइ॥५॥ ॥दशरथउवाच॥ ॥सवैया॥गु
रुकौनउपायकरोंअवमैमुनिकौसकरामसुलेवनआए॥नहि
रामविछोहसहारसकोंमुनिवर्पहजारगयेसुतपाए॥सुतचार
सुरेश्वरतुल्यभयेअतिरामविषेमनमोहलगाए॥अजनंदनतां
क्षिणप्राणतजेरघुनंदनजोमुनिकेसंगजाए॥६॥गीयामाल
तीछंद॥मुनिकौनदेवोंरामजौवहिश्रापमोहिलगाइहै॥मम
संगसूरयवंशकोक्षिणएकमाहिजलाइहै॥किहभांतमेकल्या
णहोवेसोउपावेभाषिए॥जिहभांतझूठनमैछुहेगुरुसत्यमेरो

राखिए॥ ७॥ ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॥ सवैया॥ सुनराजनबात
बखानतगोपनऔरनपैइहबातबतैये ॥ सुतमानुपनाहिपिखो
मनमैपरमातमरामसनातनहैये॥ अवनीबहुभारनिवारनकी
बिनतीचतुराननकीइनपैये ॥ भगवानजयेमहिपीतुमरीसुन
भूपतिशंकनरंचकरैये ॥ ८ ॥ तूंचतुराननकोसुतपूरवकश्यपना
मकहेंसुरसारे॥ आदितिदेवनकीजननीयहराघवमातमहाय
शधारे ॥ ताहिसमेबहुकालकरीतपसापुनपूजननीतमुरारे ॥
ध्यानसदाहरिकोमनमैबिषसेविपियासभदूरनिवारे॥ ९॥भग
वानप्रसन्नभएतबहीवरमांगइहैमुखमाहिउचारे॥तबतेमुखते
इहभांतकह्योहरितूंसुतहोहुसुआपहमारे॥ सुनयाबिनतीभग
वानतबैसुतहोवहिंगेहमआइतुमारे॥अबरामबहीतवपूतभए
मुरसेजिनदानवकोटिपछारे॥ १०॥ ॥गीयामालतीछंद॥
रामकोअनुयाईजोउरशेपलक्ष्मणजानीए ॥ भरतऔशत्रुघ्न
कोपुनशंखचक्रसुमानिये॥ योगमायाजानिकीउपजीसुजन
कविदेहके॥मुनिरामब्याहनआइओमिसयागवचनसनेहके॥
॥ ११ ॥ यहगोप्यबातसुधारमननृपऔरपैनहिभापिये ॥ क
रप्रीतपूजसुकौशिकेसुतरामदैसतराखिये ॥ तिनसंगदीजेल
क्ष्मणेकल्याणहोवेगीसही ॥ इहभांतभूपतिदशरथेपुनिगुरुव
सिष्टहजोकही॥ १२॥ ॥चौपई॥ ॥तवभूपतिक्रत्तारथमा
न्यो ॥ मनआनंदबदनविगशान्यो ॥ रामलखननृपआपबु
लाए ॥ अतिआदरकरकंठलगाए॥ १३॥ ॥सवैया॥ ॥ सि
रचूंमदुहूंसुतवारनकोमुनिकौशिककोनृपआपमिलाए ॥ तव

पाइमहाबलवीरनकोभगवानकृपीअतिशैहरपाए॥ सुअसी
संदईअजनंदनकोयुगवीरनकेकटितूणिकशाए॥ धरचापअ
सीपितवंदपदांबुजवीरबलीमुनिसंगसिधाए॥ १४॥ ॥शंक
रछंद॥ ॥ कछुदूरदेसहिंजोगएपुरतेमुनीवरसोइ॥ बलाचा
तिबलाविद्यादईरामसुदोइ॥ देवताढोनारचीतितिहिंगहेयांजग
कोइ॥ तिहक्षुधाऔपुनक्षामतादिकदुखकदापिनहोइ॥ १५॥
तबपारगंगातेगएमुनिसंगलक्ष्मणराम॥ तहंघोरविपननिहा
रियोजगताडिकावननाम॥ मुनिरामकोतबभापियोइहराक्ष
सीइकआहि॥ कामरूपीताडकाइहनामभाप्योताहि॥ १६॥
॥नराजछंद॥ ॥ समस्तलोककंटकाहनोसुरामतांअवै॥
तथेतिरामचापलैगुणंअरोपयेतवै॥ टणंतकारचापलैबनंस
मस्तपूरयो॥ सुनंतताडिकातवैकरैसुनैनक्रूरयो॥ १७॥ सु
घोरकामरूपणीप्रकोपघोरमैभरी॥ परीसुरामदौरकैसुअंग
अंगमैजरी॥ सुएकबानरामकोसुताहिकोलग्योजवै॥ गिरी
सघोरकाननेसुश्रोणितंवमैतवै॥ १८॥ ततोसुसुंदरीभईसु
यक्षणीअभूपिता॥ रूपासुरामचंद्रकीछुटीसुश्रापदूपिता॥
प्रणामरामपादकैकरीसुतांप्रदक्षणा॥ विधूयपापपुंजकोग
ईदिवंविचक्षणा॥ १९॥ प्रसन्नतोभएमुनीसुरामकंठलाइयो॥
सुचूमराममस्तकंहुलासचित्तआइयो॥ समस्तअस्त्रजालजो
सुरामकोवताइयो॥ सुगोप्यमंत्रपुंजकोसुकानमैसुनाइयो॥
॥ २०॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबाल
कांडेपंचमोऽध्यायः॥ ५॥ **श्रीमहादेवउवाच॥ ॥सवैया॥**

रतिकेपतिकाननरातिवसेपरभातभएतहितेसुसिधाए॥ सिध
चारणसेवतजोसिधआश्रमतांहिविपकरुणाकरआए॥ मुनि
कौशिकतांमुनिमंडलकोअजनंदनकेसुतरामजनाए॥ तवपू
जनकैयुगभ्रातनकोमुनिमंडलजूबहुभांतिमनाए॥१॥तवरा
मकत्योमुनिकौशिककोअवयागअरंभकरोवलधारे॥ वहरा
क्षसनीचसुआंहिकहांमुनिदेहिदयाकरमोहिदिखारे॥ सुनिके
इहवातप्रसंन्नभएमुनिहोइतथायहवैनउचारे॥तवयागअरंभ
कस्योमुनिमंडलवैठिभलेमपभूमिसवारे॥ २॥ मुनिरित्वजतां
मपमांहिकरेगनकेसगलेइकवीसहजारे॥ सुकुलीनवडेभुवि
मंडलमैसभवेदनकोजुलत्योजिहसारे॥ दिनमध्यभयेवहरा
क्षसजेअतिसैंविकरालसुरामनिहारे॥ सुमरीचसुवाहुधरेक
रहाडसुश्रोणितकीवरपावरपारे॥ ३॥ रामसुधीकरचापलयो
युगवाणभलेतिनमाहिलगाए॥ कांनहिंलौतवपैंचकमानसुरा
मदुऊसरतांहिचलाए॥ एकमरीचभ्रमायभलेशतयोजनवी
चसमुद्रगिराए॥ दूसरपावकवाणतवैसुसुवाहुवलीक्षिनमा
हिजलाए॥ ४॥ अपरेअहिनाथकमानलिहाथसभैक्षिणमा
हिसुमारगिराए॥ तहितांहिसमेयुगवीरनकैसिरदेवनजूबहु
फूलवसाए॥ सभचारणसिद्धसराहकरेंअरदेवनजूनिजदुंद
भिवाए॥ करयागमुनीरघुवीरनपूजसुअंकविप्रेकरप्रेमवढा
ए५॥ पक्कफलादिकभोजनदेसुतगाधतवैइहवैनउचारे॥राम
सुनोजगनाथअवैसिधिदाइकजूइहवाक्यहमारे॥आजभयो
मखपूरणमेवलतेभुजदंडसुकाजसवारे॥ वासकरेंकछुकालइ

ह्यांहमसंगभलेपदपावनथारे॥६॥ ॥श्रीरामउवाच॥ ॥दे
वसमीपपदांबुजतेहमवासकरेंकरणाबहुथारी ॥रामबखान
सुयोंमुखतेतहंवासकीयोमुनिसंगमुरारी॥ वासकरेदिनतीन
तहांमुनिनीतपुराणकथाविसतारी॥कौशकरामतुरीदिनमैढि
गबैठअपूरवबातउचारी॥७॥ ॥चित्रपदाछंद॥ ॥राममहां
मखदेपनकेहितजावहगेंमिथलापतिदेश ॥ रामविदेहपुरेइक
चांपसुआपनियासधरेसुमहेशा ॥ देखहुचांपमहांभुजरांमसु
पूजहिंगेतुमकोमिथलेश॥वाक्यबखानचलेमुनिपुंगवसंगच
लेयुगपूतनरेश॥८॥ गंगसमीपगएमुनिपुंगवरामपिखेऋपि
गोतमठांम ॥ नारितहांऋपिगोतमकीनितवासकरेतपकोनि
जधाम॥ फूलफलादिकपादपमैबहुपूररहेनिवडीअतिछाम॥
नाहिविहंगमनाम्रगवाकछुनापिखियेतहिजीवननाम॥ ९॥
वारिजनैनसुरामपुछेकिहआश्रममोहकहोमुनिद्याल ॥ फूल
फलादिकपूररहेकिहठोरगईइहजंतनमाल॥ चित्तप्रसन्नभये
हमरेयहआश्रमपेखसुपुन्यविशाल ॥ राघवबैनसुनेमुनिकौ
शिकआपकहेपुनवाक्यरसाल॥१०॥ विश्वामित्रउवाच॥
सवैया॥ ॥ सुनरामवृतांतसुपूरवलोइकगोतमनामहुतोऋ
पिभारी॥बहुलोकप्रसिद्धमहाधरमानमतांहरिकीतपसाविस
तारी॥ पिखतांतपसासुप्रसन्नभएऋपिसेवनकीचतुराननधा
री॥ अहल्यासुनामकहेंजिहंकोपुनतांहिदईदुहितामुखचारी॥
॥११॥मिलितांपतनीऋपिगोतमजोइहवासकियोतपदीरघ
धारे॥ऋपिकीपतनीउपभोगनकोउरऔसरनीतसुरेशनिहारे

मुनिएकसमैघरतेनिकसेसुरनाथतबैमुनिभेपसवारे॥ वहतां
उपभोगचलेजबहीमुनिताक्षिणमैघरमैपगधारे ॥ १२ ॥ पि
खतांमुनिपुंगवकोपभरेसुरनाइककोइहवाक्यउचारे ॥ सुन
नीचमहाअपकारकरेतुमकौनअहोममरूपसवारे ॥ मुखसा
चकहोनहिभस्मकरोंकहिजाहुचलेअतिसैंअधमारे ॥ मुनि
पाहितबैसुरनाथकह्योहमेंहैंसभदेवनकेसिरदारे ॥ १३ ॥
मुनिदासमनोजसुमोहिपिखोहमकश्यपकेग्रहनीचजए ॥ मु
हिनीचमनोरथहोहिंसदाअतिनीचकुकाजसुमोहकए ॥ ल
खदेवपतीद्रिगलालकरेमुनिताक्षिणमैअतिकोपभए॥ भगलं
पटहोहहजारभगातबयौंमुनिपुंगवश्रापदए ॥ १४ ॥ इहभां
तपुरंदरश्रापदएपुनपर्णकुटीमुनिबेगसुआए ॥ तहंकांपतिअं
जुलिभीतमहामुनिहेरअहिल्यासुबैनअलाए॥ हुपटदुरचारर
तेअपकारणिहोहशिलामुनिश्रापलगाए ॥ दिनरातअहारबि
नातपदारुणआतपतेतनुनीततपाए॥१५॥ ॥दोहा॥ ॥वा
तवरपतनमैसहोध्यावोईश्वरनीत ॥ रामकमलदलनैनजोधा
ररिदेइकचीत ॥ १६ ॥ बहुरअहिल्याजोरकरपूछेश्रापसुअं
त ॥ पिखप्रसन्नगोतमतिनेअंतबपानेकंत॥१७॥ ॥गोतम
उवाच॥ ॥सवैया॥ ॥ अजनंदनकोसुतहोइजबैहरिरामब
लीभवभूतलआवे ॥ तबहोइगोश्रापसुअंतसुनोजबरामतुमे
निजपादछुहावे॥सभजंतविहीनसुआश्रममेयहहोवहिगोसु
नितांहिचतावे॥ विधियाहिहजारबितेवरषासमुदाइघनोजुग
नोनहिजावे ॥ १८ ॥ तबसानुजरामसुआवहिंगेपिखआश्र

मपुन्यमंहाविगसावें॥पिखरामशिलामम आस्रममैजवपाव
नवैंपदकंजछुहावें॥ तवपापमिटेसगलोतुमरोममस्रापकोअं
तसुतांक्षिणपावें॥ पुनपूजप्रणांमप्रदक्षणगाइसुरांमवलीपि
खमोपहिआवें॥१९॥ ॥शंकरछंद॥ ॥छुटश्रापतेसुनभामि
नीपूरवजिमेममसेव॥ करेंगीमिलसंगमेरेयोंकह्योमुनिदेव॥
वहआपहिमवंतपरवतेंकपिगयोहोइउदास॥ यहिआहिआ
श्रमतांहिकोजोपूछयोमुहिपास॥२०॥ लैतांदिनासुअहल्या
शिलरूपयावनमाहि ॥ अद्रिश्यभूतनकैगईनहिहरहैकोतां
हि॥रजतेपदांवुजपावनीउरचाहतीसुनराम॥करपादकंजस
परसैंरघुनाथपूरणकाम॥२१॥वहिहैविधाताकीसुतामुनि
भारयासुनराम ॥ इमभापरामहिहाथगहिमुनिवैदिपावैंठां
म॥ जिहठांअहल्याथीशिलातपसावडीतनुधार॥ छुहाइरा
मतपोधनापदकंजकिलविपहार॥२२॥रामतापरणांमकैमै
रामकीनउचार॥तनुपीतरामपटंवराभुजचारलीनीधार॥शं
खचक्रधरेगदाकरधारकमलविशाल॥धनुरवाणविराजईपु
नभ्रातलक्ष्मणनाल॥२३॥भृगुलताकोअनिचिह्नसुंदरवक्षश्री
रघुवीर॥मंदहास्यसुकंजनैनानासिकामुखकीर॥नीलमणिसं
काशऔदशदिशाद्योतीदेह॥निहाररामशरीरकोसभमाधुरी
कोगेह॥२४॥ ॥चौपाई॥ ॥रामरमापतितांहिपछाने॥भ
ईप्रसंन्ननैनविगसाने ॥ गौतमकोतववचनचितारा॥ रामन
रायणउरमैधारा ॥ २५॥ अरघादिकविधिपूजाकरी॥ हरप
नैनजलआयोखरी॥वहुरिकरीतिनदंडप्रणामा॥हेरेकंजनैन

श्रीरामा॥ २६॥ ॥दोहा॥ ॥उठीसुचहुंरअहिल्यापुलकित
सभअंगहोइ॥ रामवडाईतांकरीगदगदवाणीसोइ ॥ २७॥
॥ आहिल्याउवाच ॥ ॥सवैया ॥ ॥आजकृतारथरा
मअहोवलितेपदपंकजकीरजपाए ॥ शंकरऔचतुराननलौ
जिहंढूंडननीतसमाधलगाए ॥ आहिविचित्रततेचरयानरको
तनुयाजगमाहिवनाए ॥ मोहतहोसभलोकनकोनहितोहिवि
डंवनकोजगपाए॥२८॥ ॥नराजछंद॥ ॥नपादआदितेअ
हेंचलोनिरंतरंसही॥ अनंदकंदपूरणंअमाइमाइतेनही ॥ भगी
रथीपदारविंदतेरजंसुहावनी ॥ विरंचशंभूआदिदैकरोसमस्त
पावनी ॥ २९॥ प्रत्यक्षअक्षगोचरायदासुराममेभए॥ वखा
ननाथकोपुरासुकौनपुंनमैकए ॥ नरावतारजोहरीसुरामनाम
कोधरे ॥ सुश्यामसुंदरीमहाकुदंडवाणजांकरे॥ ३०॥ विशा
लनैनकंजसेभजोंसुतांनिरंतरं ॥ नऔरकोभजोंकदीपरेनरंच
अंतरं॥ श्रुतीविमृग्यहैसदासुरेणपादकंजको ॥ सुजाहिंनाभि
कंजतेभयोविरंचरंजको॥३१॥ सुजाहिंनामसारकोरसीपुरा
रिशंकरा॥ भजोंसुरामचंद्रकोरिदसदानिरंतरा ॥ सुजांवतार
कीकथाविरंचिलोकगायहें॥ सुनारदंविरंचिशंभुप्रेमकेंसुना
यहें ॥ ३२ ॥ अनंदनीरनैनकैसुसिंचतीकुचागरा ॥ वगीश्व
रीप्रगाइहैगुणंसुजांइकागरा ॥ शरंनताहिरामकीअहिल्या
सदागहे ॥ पुराणऔपरातमासुवेदवाक्यजांकहे ॥ ३३ ॥स्व
यंप्रकाशअंतनाअनंतवेदगाइहै ॥ धरीसुमानवीतनूस्वमाय
यासुहाइहै ॥ कृपासमस्तऊपरेशरंननाथतोरिया ॥ कटीसु

आपश्रिंपलानिवांहलाजमोरिया ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ निखिलविश्वउपजावेजोई ॥ पालवहुरसंहारेसोई ॥ मा
यागुणचिंवितसुखधामा ॥ विश्वविरंचिविष्णुधरनामा ॥
॥ ३५ ॥ आहिसुतंतरपूरणरूपा ॥ नमोनमोपदकंजअनूपा ॥
जोपदपंकजश्रीसुलडाए ॥ धरवक्षस्थलप्रेमजनाए ॥ ३६ ॥
पूरवजांहित्रिलोकीसारी ॥ एकपादकरमिनीमुरारी ॥ मुनिश्वर
जोपदध्यावेंनीत ॥ तजअभीमानइकागरचीत ॥ ३७ ॥ रामतु
हींजगआदिमुरारे ॥ जगतरूपपुनिजगलअधारे ॥ सभभूतन
मैतुमपरकासौं ॥ विनविवेकनहिलोकनभासौं ॥ ३८ ॥ हरिॐ
कारवाच्यतूंआहि ॥ वाणीकोपुनगोचरनाहि ॥ वाचकवाच्यभे
दइहजोई ॥ तुमैजगतमैऔरनकोई ॥ ३९ ॥ कारयकारणज
गतमझार ॥ फलसाधनकरतत्वविकार ॥ तुमसमस्तनहितु
मबिनआन ॥ निजमायाकरहोवोभान ॥ ४० ॥ तवमायाक
रजामतिहाने ॥ तेनहितत्वतुमाराजाने ॥ मानुपतवमानेमति
मंदा ॥ तुमपरमेश्वरएकअनंदा ॥ ४१ ॥ तुमसभअंतरबाह
रदेव ॥ नभजिउअमलअनंतअभेव ॥ अचलअसंगनित्य
अतिशुद्धा ॥ सदाअनासीसदाप्रबुद्धाधा ॥ ४२ ॥ जोपितआ
ग्यामैअतिमूढा ॥ तत्वतुमाराअतिशयगूढा ॥ किहिविधिनाथ
पछानोंनांहि ॥ मनबाणीकोगोचरनांहि ॥ ४३ ॥ तांतेतोमै
बुद्धिलगाइ ॥ वारंवारनमोलेपाइ ॥ जहांजहांजावोंमैदेव ॥
तुमरीरहेनिरंतरशेव ॥ ४४ ॥ तेरेपादकंजजगजोइ ॥ तांकी
भक्तिसदामममहोइ ॥ नमोनमोहेपुरुषअध्यक्ष ॥ नमोनमोभक्त

तकेरक्ष ॥ ४५ ॥ ऋषीकेशतोकोंपरणाम ॥ नमस्कारनारायण
नाम ॥ भवभयनिखिलकरेजगनाश ॥ कोटिभानुसमआहिप्र
काश ॥ ४६ ॥ करधृतशरअरुचापउदारा ॥ कालमेघसमप्रभा
अपारा ॥ कनकरुचिरअंबरतनधरे ॥ कुंडलकानरत्नअतिजरे
॥ ४७ ॥ कमलनैनसानुजश्रीराम ॥ हैसभऊपरसभसुखधाम ॥
यौंउस्तुतिकरजोरेहाथ ॥ आगेखरेसुश्रीरघुनाथ ॥ ४८ ॥ करप्र
णामपरिदक्षणदई ॥ हरिआयसगहिपतिपहिगई ॥ गौतमसंग
मिलीपुनजाइ ॥ श्रीरघुवीरपादरजपाइ ॥ ४९ ॥ अहल्याकृत
अस्तोतरजोई ॥ भक्तिसमेतपठेतिहंकोई ॥ जीवतनिखलसुपा
पमिटावै ॥ अंतसमेपरब्रह्मसुपावे ॥ ५० ॥ पुत्रअर्थजोपठेनिरं
तर ॥ श्रीरघुनाथधारउरअंतर ॥ यद्यपिवंध्यासाजगहोइ ॥ वरख
मांहिसुतपावेसोइ ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पावेंसर्वसुकामना
जेजेचांहेंधीर ॥ होइप्रसंन्नसुजगतमेंसीतापतिरघुवीर ॥ ५२ ॥
॥ नराजछंद ॥ ॥ हनेसुब्राह्मणंहठीगुरोसुनारिसेवई ॥ महाकु
रीतरीतकैधनंचुराइलेवई ॥ सुमातभ्रातहिंसकोकुभोगएक
आतरो ॥ कल्याजुयाहिभांतिकोजगत्तमैकुपातरो ॥ ५३ ॥ पढे
सुतोतरंजिसोसुरामचित्तधारकै ॥ प्रपाइसोइमोक्षकोसमस्त
पापडारकै ॥ अचारयुक्तजोनरोपढेसुतोतरंयथा ॥ लहेउदार
मोक्षकोगुलाबसिंहकोकथा ॥ ५४ ॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरा
मायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेपष्टमोऽध्यायः ॥ ६ ॥
॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामलखनदोनो
तिहिखरे ॥ विश्वामित्रसुवैनउचरे ॥ मिथिलानामजनकरज

धानी॥तेहांचलेंइमसुनीवखानी॥१॥प्रथमैंक्रतुवरदेखोराम॥
पाछेजाहुअयोध्याधाम ॥ राममुनीपुनलक्ष्मणभ्राता॥ शो
भेजिउघनरविविबुधताता॥ २॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इममुनिभाप
सुजोचलेगंगाउतरनपार ॥ देवीनावकतांसमेरामहिंकह्योपु
कार॥३ ॥ ॥नावकउवाच ॥ सवैया॥ ॥ दूररहोरघुवीर
खरेममनावननाहिसुपादछुहावो॥ दारुनमैंपुनशैलनमैंकछु
अंतरहोइसुनाथबतावो ॥ मानुषचूरननावलगाइसुदीनदया
लनकाजगवावो॥राजकुमारपपारलिवोंपदतौममनावनकी
ढिगआवो ॥४॥इहभांतउचारपखारदुऊपदनावचढाइकेपार
उतारे॥ रघुनाथमहांमुनिभ्रातभलेमिथिलापुरकीपुनओरसि
धारे॥ पुरकीढिगआयखरेजबहीमिथलेशकिदूतनवाक्यउचा
रे ॥ मुनिकौशिकपावकतेजलसेनृपआजुकरेपुरपावनथारे॥
॥५॥सुनिकैयहवातप्रसंन्नभएमिथलेशसुपूजनद्रव्यमंगाए॥
सुपरोहतसंगलएतवहीमुनिपुंगवपूजनकेहितआएं ॥ करदंड
प्रणामसुपूजनकैकरजोरदुऊइहवैनअलाए॥ पिखभ्रातदुऊ
सुमनोदिशिकेतमवारनकोविधिसूरसुहाए॥ ६॥ ॥ जनक
उवाच॥ ॥सवैया॥ ॥किनकेयहपूतसुपूतदुऊममभासतदे
वनपूतसमाने ॥ नरऔरनरायणकेसमहैंइनपेखनतेमनमेंवि
गसाने ॥सुनकैयहवातप्रसंन्नभएमिथिलापतिकोमुनिवैनव
पाने॥अजनंदनकेसुतभ्रातदुऊमखपालनकेहितमैंनृपआने॥
॥७॥ शरएकहनीपथिताडकरामसुवाक्यजवैनृपमोहिउचारे॥
ममआश्रमआइसुयागविनाशकसंगसुबाहुसुराक्षसमारे ॥

पुनऔरमरीचमहाबलिजोइकबानउडाइसुसागरडारे॥ तटगं
गसुआश्रमगौतमकेइनगौतमनारिकेश्रापनिवारे॥८॥शिल
रूपहुतीऋपिगोतमकीपतनीतिहिंकोपदकंजछुहाए॥ इनमा
नुपरूपकरीक्षिनमैऋपिश्रापमहाबलिराममिटाए॥ पिखराम
सुताहिप्रणामकरीचलिसापदबंदतराममनाए॥ नृपतेग्रहमै
रविवंशमणीसुनचापमहेश्वरदेखनआए॥९॥ पूजनराजसमू
हसभैनउठाइसकैंसुनकैमुसकाने॥ राजनकौतकदेखहिभ्रात
महेश्वरचापदिखावहुआने॥ फेरसुकौसलजाहिचलेपितपेख
नकौबहुतेउमगाने॥जोमुनिरीतिकहीनिनकीनृपतोवहपूजन
योग्यपछानें॥१०॥ विधिसोंतिनपूजनभूपकीयोपुनमंत्रिन
सोंतिनमंत्रसुनाए॥ शिवचापलिआवहुजाइअबेनृपधीम
तिवैकरवेगपठाए॥ आपतवैमिथिलापतिजूमुनिकौशिकको
इहवैनअलाए॥ मुनिरामजबैशिवचापउठाइसुकोटिनमैगु
णदेइचढाए॥११॥ तवनामसियाममजोदुहितामुनिरास
हिहाथधरोंसुवही॥ मुनिकौशिकमानसुबातभलीहसरामकी
ओरसुबातकही॥ नृपचापदिखावहुरामअबेबलवंतगुणीक
छुढीलनहीं॥ इहभांतकहेमुनिपुंगवजोतबचापलएजनआए
तहीं॥१२॥पंचहजारजुआनबलीवहुचापउठाइसुपीडतआ
ए॥ पाटमणीबहुभांतिलसपुनघंटकसोतिनसंगसुहाए॥राम
समीपसुआनधरशिवचापइहैनृपरामदिखाए॥ देखप्रसंन्नसु
रामभयेकसपीतपटंबरतांकटलाए॥१३॥ वामकरेधनराम
लयोहसतोलनताधनकौहरिकीनो॥ रामनिवाईसुकोटिदुऊह

सतांहिकवाचतनेगुणदीनो ॥ दक्षणपाणिसुअंचतजोरघुवीर क्योतवहीधनुछीनो॥चापविभंजनकीधुनकैतिनपूरदएसग लेपुरतीनो॥ १४॥ भूमिअकाशरसातललौसुनितांधुनिकोस गलेविसमाए ॥ देवसराहकरेंनभमैकरफूलनकीवरपावरपा ए ॥ रीझकिअप्सरनाचकरेंअरदेवनकेकुलदुंदभिवाए ॥पेख दुटूकपरेहरचापसुरांमतवेनृपकंठलगाए॥ १५॥ ॥कवित अंतहपुररानीसीयमातविसमानीयहईशकीकमानीलघुवाल तोरडारीहै॥जानकीसुहेममालदक्षकरलईवालभालहेममुक्त जालदामचमकारीहै ॥ हेमहीसुगातहेमहेमहीकेकानपातहेम जलजातकीप्रफुल्लकंजवारीहै॥ मुक्तहारगरेपाइनेवरासुसब्द करेंपाटकेदुकूलधरेमंदमुसकारीहै॥ १६॥ ॥ सवैया ॥मा लदईहसरामगलेपिखराघवरूपसुसीविगसानी॥वैठिगवाक्ष सुरामनिहारप्रसंन्नभईमिथिलापतिरानी॥ कौशिककोमिथ लेशतवैअभिवंदनकैइकवातवपानी॥ आजसितावसुकाज वनेलिखपत्रपठोअजकीरजधानी॥१७॥वेगकुमारसुसंगल एअजनंदनजूमिथिलापुरआवें ॥ संगसुदारनआइइहांसुकु मारनकेइहव्याहकरावें ॥ तौमुनिदूतपठेनवहीपुनिऔरकहीनृ पढीलनलावें॥ दूतकहींअजनंदनकोमुनिकौशिकतोहिसुवेग वुलावें ॥ १८ ॥ ॥कवित॥ ॥ दूतवेगगएदौरजाइखरेभू पपौरकौररामचंद्रकीअनंदवातगाईहै ॥ राइसुवुलाइकैवैठा इपासदूतपूतरामचंद्रकेरीभूपरीतीसुनपाईहै॥ हीयेंहरपाइभूप मंत्रिनवुलाइरामचंद्रकीकहानीतांहिकानमैसुनाईहै॥चलेंमि

१ जलदी

थलेशदेशदेखियेनरेशएसगाधकेसुपूतमोहिपत्रिकापठाईहै॥
॥१९॥ ॥**चौपाई**॥ ॥अथसुचलेमिथलापतिगेहा॥जहंरा
जाहैजनकविदेहा॥ गजवाजीरथऔरपदाती॥वेगचलेंवन
रामवराती॥ २०॥ वसिष्टगुरूभगवानहमारा ॥आगेचलेंसं
गनिजदारा॥ अग्नीअग्नहोत्रकोजोई ॥ लेवेंसंगमुनीवरसो
ई ॥ २१ ॥ राममातहैंयेपुनजेती ॥ संगवसिष्टचलेंसवतेती
याविधिसभप्रस्थानाकीनो॥भूपतिआपवडोरथलीनो॥२२॥
सैनालईवडीतिनसाथ॥स्यंदनवैठचलेनरनाथा॥दशरथआ
योपुरढिगजवही॥भूपविदेहसुनीगतितवही॥२३॥ आगेव्है
लेनेकोआयो ॥ प्रोहितसदानंदसंगल्यायो ॥ दशरथकोनृप
पूजनकरयो ॥ धंन्यभागयोंमुखोंउचरयो ॥ २४ ॥ रामलख
नदोनोचलआए ॥ पदवंदेपितकंठलगाए ॥ दशरथमनमैंअ
तिहरपाने ॥ रामचंद्रप्रतिवैनवखाने ॥ २५ ॥ आजअनंदभ
योसुतमेरे ॥ फुल्लकमलसमपिखमुखतेरे॥ मुनीअनुग्रहभयो
उदारा॥शोभनभयोसुकाजहमारा॥२६॥याविधभापवहुरग
रलाए॥शिरचूंमैअतिशयसुखपाए॥हरपभयोनृपवरकोऐसे
ब्रह्मानंदमगनकोजैसे ॥ २७ ॥ वहुरजनकनृपग्रहलैगयो ॥
डेरातिनेकरावतभयो॥सुखशोभाजांग्रहकेमाहिं॥ दारासहित
वसेनरनाहि ॥ २८ ॥ दिनअरुलग्नजवैशुभआए॥ जनकतवै
ग्रहिरामलिआए॥ भाईमातपितारघुनाथ॥ जनकलिआएस
भकोसाथ॥ २९ ॥ रतथंभजामंदरलाए॥ वहुतचंदोआतहा
तनाए ॥ तोरणवांधवहुतप्रकारा॥ सभशोभाजहवनीउदारा

॥ ३० ॥ हेमसूतमुक्तावलिजाली ॥ मंदरद्वारप्रभासुविशा
ली॥हेमजनेऊजिनकेगरे॥ब्राह्मणतहांवेदधुनिकरे॥ ३१ ॥अ
लेपटंवरतनमैलाए॥निशककंठअतिभूपणपाए॥ याविधिकी
तरणीसुखभरी ॥ सुरतरुणीसमजाग्रहस्वरी ॥ ३२ ॥ भेरीदुंद
भिगीतउदारा॥ नृत्यहोइजहंवहुतप्रकारा॥ दिव्यरत्नजांमाहि
जराए ॥ स्वर्णपीठनृपजनकलिआए॥ ३४॥ ताऊपररघुनाथ
विठाए॥शोभाकछुवरनीनहींजाए॥उभेपासमुनिवैठेदोऊ॥गु
रुवसिष्टमुनकौशिकजोऊ॥ ३४ ॥ सतानंदक्रमकरवैपूजै॥ मु
निवसिष्टपुनकौशिकदूजे ॥ अग्निस्थापनतवतहकरी॥ वेदीत
होयंनाईखरी॥ ३५॥ ॥ कवित ॥ आनीजानकीकुरंगनैनी
अलकैहैंभुजंगहेमरंगरत्नअंगभूपनसुहावनी॥ जनकदारसंग
औपखाररामपादकंजगंगनीरशीशधारकरीदेहपावनी ॥ जो
ईरामपादवारिशीशईशगंगधारब्रह्मऔमुनीशककुपापको
मिटावनी ॥ सोईजनकशीशधरेजानकीकोलीयोकरेअक्षतउ
दकजोईरीतहैसुहावनी ॥ ३६॥ जानकीसुरामदीनीपानीग्रह
रीतकीनीमिलीनिधिनीरमीनीभाष्योहैनरेशजू॥ सीअरूपकी
अगारनैनपातपूतवारिगेरेहेममुक्तहारसारवांहैदिनेशजू ॥ प्र
संन्नरामहोइतोहिदईसीयसाइजोइपाणिकैविदारयोसुचाप
जौमहेशजू ॥ प्रसंन्नभूपभएसभेशोकदूरगएमानोविष्णुको
दईरमाविचारकैसुरेशजू ॥ ३७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ और
सुकंन्याउरमिलनामा ॥ लक्ष्मणदईजनकसुखधामा ॥ श्रुति
कीरतिपुनमाडविजोई॥भ्रातसुतासुभलक्षणदोई॥ ३८ ॥ ए

कभरतकोअरपनकीनी ॥ द्वितीयाशत्रुघ्नहिंनृपदीनी ॥ चा
रोभएसुदारसमेता ॥ शुभलक्षणकेचारनिकेता ॥ ३९ ॥ चा
रोरूपविराजेऐसे ॥ लोकपालभवभीतरजैसे ॥ मुनिवसिष्टपु
निकौशिकओरे ॥ मैथिलजनकदुऊकरजोरे ॥ ४० ॥ सुताउदं
तभापयोसोइ ॥ नारदमुनिभाष्योथोजोइ ॥ मुनिलांगललैमैइ
कवारी॥यज्ञनिमित्तसुभूमिसवारी॥ ४१ ॥ सीतामुखतेउपजी
कंन्या॥ जिहिसमानदूजीनहिअन्या ॥ ताहिदेखमुनिआनंदभ
यो ॥ पुत्रीभावताहिमैकयो॥प्रियनारीसोंअरपनकरी ॥ शरद
चंद्रशोभामुखवरी ॥ मैइकंतबैठोइककाल ॥ तहंआएनारद
मुनिघाल ॥ ४२ ॥ महतीवीणाकरेवजावें ॥ नारायणगु
णमुखतेगावें ॥ मैपूजनतिंनकोतवकीनो ॥ आदरकरसुख
आसनदीनो ॥ ४४ ॥ तवमोप्रतितिनवैनउचारे ॥ गोप्य
वचनसुनभूपहमारे ॥ होवेजांकरतकल्यान ॥ मेरोवचनभ
लोउरमान ॥ ४५ ॥ हृषीकेशपरमातमजोई ॥ भक्तअनुग्रह
कारकसोई ॥ वेउपजेरावणवधकाजा ॥ भापेंरामनामसुन
राजा ॥ ४६ ॥ मायाकरनरतनजिनधारे ॥ दाशरथीवहभए
मुरारे ॥ चारप्रकारभएहरिसोई ॥ योगमायतिनकीपुनजो
इ ॥ ४७ ॥ सीतानामभईघरतेरे ॥ राजविदेहसंभारसवेरे ॥
यांतेसीतारामहिदीजो ॥ यत्नवहुतयांभीतरकीजो ॥ ४८ ॥
कवित ॥ पूर्वनारिरामकीसुहेरभूपजानकीनआनकीपछान
वातकहीतोहिकानमै ॥ योंवपानकैमुनीशदेवऋपिजागुनंव
जाइवीनकीधुनीगयोसुरेशथानमै ॥ लैनांदिनतेविचारसंअ

लक्ष्मीनिहारआहिविष्णुनारिजगकारणीसुमानमै ॥ कौन भांतज़ानकीसुदेंउंराममानकीमहानकोनिहारचिंतबडीगलतानमै ॥ ४९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कार्यएकविचारणकरयो ॥ मेदादाग्रहशिवधनुधरयो ॥ त्रिपुरदैतकोदाहनकरयो ॥ धनुपअमानहमारेघरयो ॥ ५० ॥ धनुपविचारसुप्रणठहरायो योंविचारमेरेमनआयो ॥ सीतापाणिग्रहणकोकारण ॥ सभभूपनकोमानविदारण ॥ ५१ ॥ तोहिकृपाकरहेमुनिघाल ॥ रामकमलदलनैनविशाल ॥ आएधनुपनिहारणकाज ॥ भयोमनोरथमेरोआज ॥ ५२ ॥ सफलजन्महोएअबमेरे ॥ रामसीयाइकआसनहेरे ॥ आसनरामसीयादुइऐसे ॥ दीप्तिमानसूरजजगजैसे ॥ ५३ ॥ तेपदअंबुजवारिसुधरता ॥ ब्रह्माभयोजगतकोकरता ॥ तेपदसलिलधारबलिराजा ॥ देवनकोहोयोअधिराजा ॥ ५४ ॥ अहिल्यातेपदकीरजपाए ॥ भरताकोतनश्रापमिटाए ॥ मेटतश्रापनवारलगाई ॥ रामकौनतुमतेअधिकाई ॥ ५५ ॥ तेपदपंकजरेणसनेहा ॥ करयोगेश्वरआनंदगेहा ॥ भवभयजिनेजिनेनिजकाला ॥ विचरेआनंदरूपविशाला ॥ ५६ ॥ तेभजनाम्नतजेंसभशोका ॥ सुरगमाहिसुरपाएओका ॥ ऐसोचरणतुमारोगायो ॥ तांकीशरणजनकअबआयो ॥ ५७ ॥ याविधिकोस्तुतीभूपतिकरी ॥ मूरतिरामसुउरमैधरी ॥ सौकरोडदीनारनराशी ॥ दशहजाररथहेमप्रकाशी ॥ ५८ ॥ दशहिलाखदीनोनृपवाजी ॥ दसहजारहेमगजबाजी ॥ एकलक्षपैदलचलधारी ॥ ऐसेदासीदईसु

खकारी ॥ ५९ ॥ दिव्यपटंबरहारअपारा ॥ रत्नमणीमयप्र
भाउदारा ॥ सीताकोयाविधिदयोदाजा ॥ जनकविदेहमहा
बलिराजा ॥ ६० ॥ वसिष्टादिकजिब्रह्मऋपिसारे ॥ भरतसौ
मित्रीरूपअपारे ॥राजादशरथलौथेजेते॥जनकविदेहसुपूजे
तेते ॥६१॥ बहुरोजनकविदाइसुदीने॥ चलेरघुतमआनंदभी
ने॥ सजलनैनसियकंठलगाई॥मातानेमिलदईविदाई॥६२॥
सासुससुरकीकीजोसेवा ॥ रामनिरंतरमानोदेवा ॥ पतिव्र
तकोउरअंतरगहो॥पुत्रीसुखसेतीतुमरहो॥६३॥ ॥सवैया॥
रामचलेमिथिलापुरतेतबवाजनकीधुनिहोतअपारा ॥ भेरि
मृदंगसुआनकतूरगरूरबडेकछुआहिनपारा ॥ देवपुरीघनभे
रितुरीधुनिमंगलरूपभयोजगसारा ॥ भूमिअकाशकेवादमि
लेधुनिपूररहीसुभयंकरभारा॥६४॥इतिश्रीमद्अध्यात्मरामा
यणेउमामहेश्वरसंवादबालकांडसप्तमोऽध्यायः॥७॥ ॥श्री
महादेवउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥मिथिलातेजबरामजीगएऐसु
योजनतीन॥नमित्तसुभावीभीतकेहेरेनृपपरवीन॥१॥अनंग
शेखरछंद॥ ॥प्रणामकेवशिष्टकोसुपूछयोनरेशदेवदखिये
नमित्तघोरचीतदेविचारिये ॥ वसिष्टतोविचारकेबखानयोम
हीपकोअगामिभीतहोयगोनरेशजूनिहारिये ॥ अभीतफेरहो
यगोसुवेगभूपमैकहों अनंदसोंरहोसदानशंकचित्तडारिये॥मृ
गाप्रदक्षणाकरेंसुपेखताहिभूपतेशुभंसुसूचतेसदासुनैनकेनि
हारिये॥ २ ॥ जबैवसिष्टयोंकह्योबवातिघोरतोनिलासुनैन
सर्बकेमुदेसुधूरधारयोंवही ॥ ततोजगामअग्रतासुतेजराशि

केसमंनिहारपरशुरामकोप्रतापपुंजहैसही ॥ सुनीलमेघकेस मंजटाकलापसीसमैकुठारऔकमानपाणिकोपदाहनेगही ॥ मनोसुप्रेतराटकोपक्रूरद्रिष्टदंडलैहनेसमस्तलोककोस्वरूपासुरेंच हूंनही ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कारतवीरयजिहहनेकाटीभुजा हजार ॥ त्रिसप्तवारक्षत्रीहनेवैआएवलधार ॥ ४ ॥ दशरथ कोसनमुखगयोकाढकठनकुठार ॥ कालमृत्युआईमनोदशरथ डरउरभार ॥ ५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ देखसुभूपडरेतिनकोसुअभू लगईअरघादिकपूजा ॥ त्राहिसुत्राहिवकैमुखतेनृपकेमुखवो लनआवतदूजा ॥ दंडप्रणामसुभूपकरीतनकांपतपेखसुराममें हूजा ॥ औरहनोतोहनोद्विजराजसुदानकरोमंमरामतनूजा ॥ ६ ॥ इहभांतवपानतभूपतिकोसुअनादरकैकरधारकुठारा ॥ द्रिग कोपसुलालकरेअतसैतिनरामसुनिष्ठुरवाक्यउचारा ॥ तुमवा हुजनीचसुरामइहैममनामकहोतनमैकिमधारा ॥ यदिवाहु जहैंकरयुद्धहमैसंगसीससहोसुकुठारकिधारा ॥ ७ ॥ चापपु रातनशंकरकोतुमतोरकहामनमैगरवावो ॥ विष्णुसुचापइ हेपिखरामसुजोगुनयांहिकेवीचचढावो ॥ तौतुमसंगसुयुद्धक रोंभिरमोसंगरामनजीवनजावो ॥ नाहिचढैतोहनोसभकाय मकेपुरकीअवसासनपावो ॥ ८ ॥ इहभांतकह्योजवतांद्विज राजसुकांपउठीवसुधातवसारी ॥ द्रिगमूंदगएसभलोकनकेत मभूरभयोसुमनोनिशिकारी ॥ पिखरामसुतांभृगुनंदनकोअ तिकोपभरेसुमहावलधारी ॥ धनुतांकरतेहरिछीनलयोगुणरो पदयोनलगीकछुवारी ॥ ९ ॥ काढनिखंगुनेवानलयोधनुवीच

दयोपुनऐंचक्रमाना ॥ रामकह्योद्विजराजसुनोयहपेखतहो धनुर्वोचसुबाना ॥ आहिअमोघसुसाइकरामसितावदिपाइ सुयांहिनिसाना ॥ पादहनोतवलोकहनोवदवेगसुवामनदील निमाना ॥ १० ॥ ॥ संकरछंद ॥ ॥ सुनरामकोयहबातको द्विजभयोबदनमलान ॥ करयादपूरबकथाकोद्विजरामकीनव खान ॥ सुनरामबाहुविशालनैनाजानयोतवभेव ॥ हरिपुरप पूरणविष्णुतूंजगकारणोसुनदेव ॥ ११ ॥ मैबालतपसाविष्णु कीकरराधयाहरिनाथ ॥ चक्रतीर्थजाइकैप्रभुविष्णुश्रीरघुना थ ॥ मम भएतुष्टनरायणाआनंन्यकीनीसेव ॥ शंखपंकजचक्र कोकरगदाधारीदेव ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥मोप्रतिवचनवखा नयोसुनोरामदैकान ॥ मुखपंकजअतिसैखिरेभवभंजनभग वान ॥ १३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ चौपाई ॥ ब्रह्मनउठो तपस्याधारी ॥ सफलभईतपसाअवथारी ॥ मेचिदअंसयुक्तनु मभए ॥ हनोरिपूतवकिलविपगए ॥ १४ ॥ कारतवीर्यअर्जुन भारा ॥ ताततुमाराजानेसारा ॥ तांकोहनोतोहिवरदीना ॥ जां हिनमित्तमहांतपकीना ॥ १५ ॥ वारइकीशहनोसभक्षत्री ॥ भू मीहोइसुनिपलअक्षत्री ॥ भूंमिनिखिलकश्यपदेदाना ॥ वहु रशांतिहोवहुवलवाना ॥ १६ ॥ त्रेतायुगआवेगोजवहीं ॥ दा शरथीहोवोंमैतवही ॥ रामनामआपेंगसारे ॥ तवद्विजवरपुन मोहिनिहारे ॥ १७ ॥ मैतोकोंदयोतेजसुजोई ॥ देवैंगोमोकोपुन सोई ॥ पुनतपधरतनमाहिसुभारा ॥ तिष्टब्रह्मदिनजगतमंझा रा ॥ १८ ॥ योंव्रखानभएअंतरधाना ॥ परपूरणवैपुरपपुराना ॥

जोजोहरिआइसमुहिदीनी ॥ सोमोरामसकलमैकीनी ॥ १९ ॥
सोईविष्णुरामतुमहरी ॥ जन्मलियोविधिविनतीकरी ॥ मोमै
तेजहुतोतवजाइ ॥ तोहिलियोपुनतेजसुसोई ॥ २० ॥ आज
सफलभयोजन्महमारा ॥ प्रभुपूरणहरिनैननिहारा ॥ ब्रह्मादिक
जांकोनहिपावै ॥ प्रकृतपरेजिहंवेदवतावें ॥ २१ ॥ जन्मादिकपट
भावविकारा ॥ तोमैनहिअज्ञानविकारा ॥ निरविकारपरिपूर
णराम ॥ गमनादिकनहितोमैनाम ॥ २२ ॥ जिउजलभीतरफ
नअपारा ॥ धूंमहोइजिउअगनमझारा ॥ तिउभवभीतरमाया
आहि ॥ निपलसुजगतवनायोताहि ॥ २३ ॥ मायाकरअवरे
जेलोका ॥ तोहिनजानेंपावेंसोका ॥ विनविचारयहमायाअ
है ॥ कीएविचारनरंचकरहे ॥ २४ ॥ अविद्यानामसुयांहिवखा
नें ॥ विद्यासाथविरोधजुठानें ॥ अविद्याकृतसंघातविकारा ॥
चितप्रतिबिंबसुतांहिमझारा ॥ २५ ॥ जीवनामसोतांहिकहा
यो ॥ आपभुलाइजगतदुखपायो ॥ देहबुद्धिमनप्रानन्वीच ॥
जौलौहैअभिमानसुनीच ॥ २६ ॥ तौलौकरेकरतत्वविका
रा ॥ भोगेसुखदुखजगतमझारा ॥ आत्मकानहिजन्मसुहैये ॥
बुद्धिमाहिनहिज्ञानसुपैये ॥ २२७ ॥ विनविवेकदोनोमिलि
गए ॥ संसारअनरथसुयांतिभए ॥ जडकोचेतनजोगसुजब
ही ॥ चेतनतांतिहंहोवेतवही ॥ २८ ॥ चेतनजोजडसंगतपा
ई ॥ तौजडनाचेतनमैआई ॥ जलअग्नीकोमेलनजैसे ॥ मि
लेसुचेतनजडपुनतैसे ॥ २९ ॥ तवपदभक्तिसंगसुखजौलो ॥
पावहिनाहिसंसरेतौलौ ॥ तवभक्तनकीसंगतपाए ॥ बहुरोते

पदभक्तकमाए ॥ ३० ॥ तययहमायाहियेजोई ॥ सनेसनेतनुहोवेसोई ॥ पुनतवज्ञानसपन्नअचारय ॥ पावेजोमतिहोवेआरय ॥ ३१ ॥ असज्ञानशुभगुरतेलहे ॥ तोहिकृपाकरबंधनदहे ॥ जेजनभक्तितुमारीहीना ॥ सदारहेंतेयाजगदीना ॥ ३२ ॥ कल्पकोटिजोजाहिंअनेका ॥ नातिनमुक्तिनहोइविवेका ॥ सुखनहिलहेंकदाचिततेई ॥ भक्तिविहीनअहेंजनजेई ॥ ३३ ॥ यांतेतवपदकंजसुजोई ॥ तांकीभक्तिसदाममहोई ॥ जहंजहंहोवेजनमहमारा ॥ सेवोंतहंपदकंजतुमारा ॥ ३४ ॥ तवभक्तनकासंगउदारा ॥ जांकरमिटेअविद्याभारा ॥ तेरीभक्तिनिरंतजनजेई ॥ धर्मअमृतकोवरखेंतेई ॥ ३५ ॥ अखिललोकवैपावनकरें ॥ निजकुलमलनहिकिउंपरहरें ॥ जगंनाथतोकोपरिणामा ॥ भक्तनभावनहेसुखधामा ॥ ३६ ॥ कर्णाकांतनमोपदथारे ॥ रामचंद्रपरणामहमारे ॥ जोजोपुन्यकीएमैनाथ ॥ लोकजिगीषाकेरघुनाथ ॥ ३७ ॥ सोहोवेतवबाणनिसाना ॥ यंदनकेंद्विजराजवषाना ॥ भएप्रसंन्नतवैभगवाना शिरीरामकरुणासुप्रधान ॥ ३८ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ तोपेतुष्टभयोमैब्रासन ॥ मागोवरभीतरजोहेमन ॥ देवोंअखिलवस्तुहेजोई ॥ संसैयामेकरेंनकोई ॥ ३९ ॥ प्रीतमनाभृगुनंदनभए ॥ पुनराघवप्रतिबैनअलए ॥ यदिमोपरहैदयातुमारी मधुसूदनहरिराममुरारी ॥ ४० ॥ नीतवभक्तनकोसतसंग ॥ मोकोहोइसुसदाअभंग ॥ तवपदपंकजपरमरसाल ॥ तांकोभक्तिहोइममयाल ॥ ४१ ॥ स्तोत्रसुयांहिपठेजनजोई ॥ भक्तिहीनय

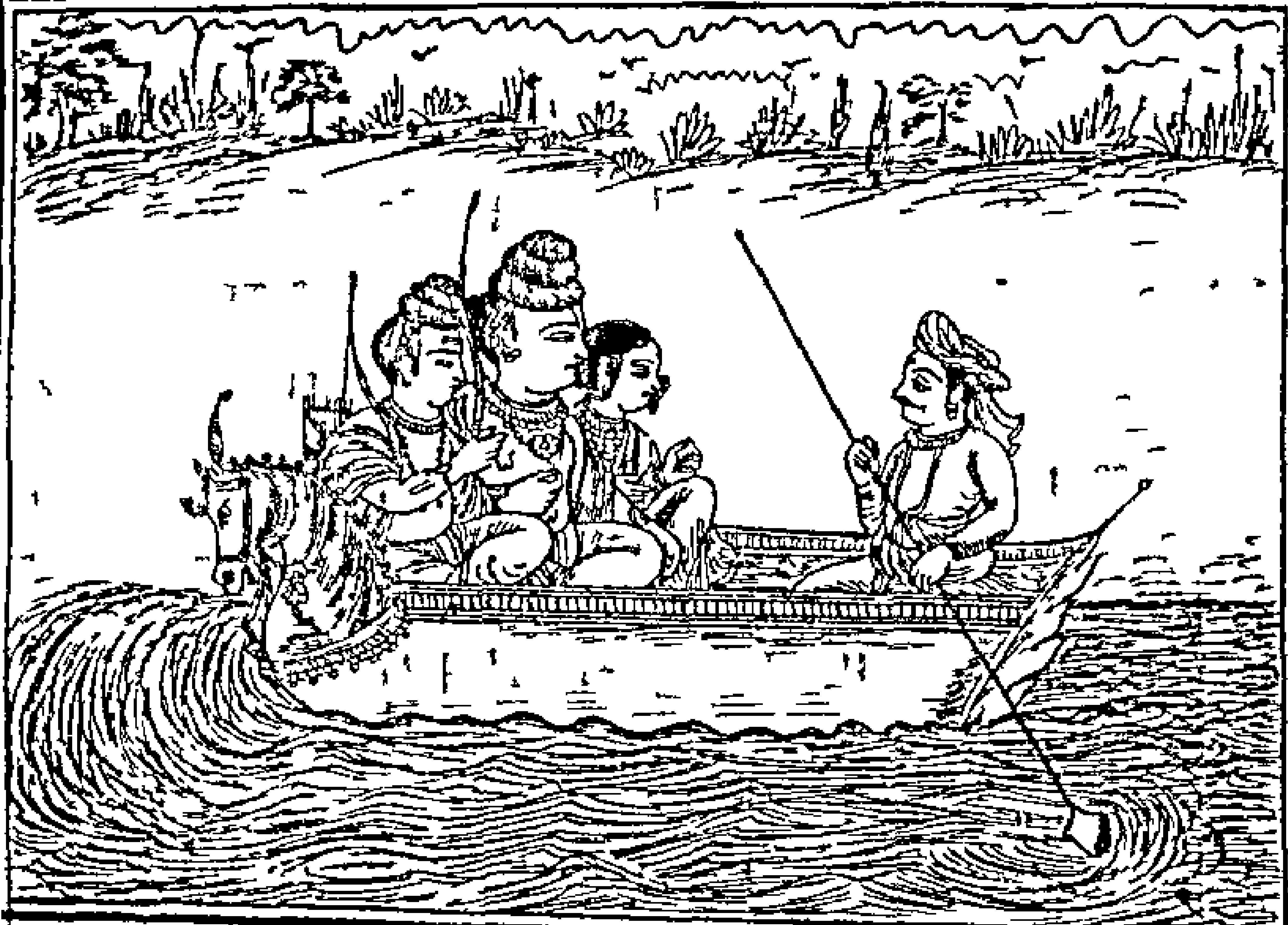
अपिवहहोई ॥ ताकोभक्तितुमारीहोवे॥ज्ञानपाइदुखसगलेखो
वे ॥ ४२ ॥ मरणांताकोहोवेजवही ॥ तेरीस्मृतिसुआवेतवही॥
मोकोदीजेयहवरदाना ॥ रामचंद्रपूर्णभगवाना ॥ ४३ ॥ तथा
होइरघुवीरवपाती ॥ तवद्विजवरपरिकमांठानी ॥ वहुरप्रणा
मरामकोकरी॥ तवरघुवरपूजेद्विजवरी ॥ ४४ ॥ वहुररामते
आज्ञापाई ॥ गयोमहेंद्राचलद्विजराई ॥ पिखराघवदशरथह
रखाए॥ मानोम्रतकभएपुनआए ॥ ४५ ॥ पुनपुनरामसुकंठेल
गाए॥ आनंदनैनचल्योजलजाए ॥ अतिप्रसन्नतृपमनमैभ
ए॥ स्वस्तचित्तपुरभीतरगए ॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामसुल
क्ष्मणशत्रुघनभरथमहावलवान॥अदभुतरूपविराजईनरवर
अमरसमान ॥ ४७ ॥ अपनीअपनीदारलैनिजनिजमंदरमा
हि ॥ रमैअयोध्यानगरमैमहानंदमनमाहि ॥ ४८ ॥ चौपई ॥
मातपिताहरपानेपेख ॥ रामसीयलखमिलेवसेप॥ सीतारामर
मेपुरऐसे ॥ वैकुंठभवनमैश्रीहरिजैसे ॥ ४९ ॥ युधाजितनाम
कैकईभाई ॥ भरतमातुलाअतिसुखदाई ॥ आयोभरतलैन
हितसोई ॥ प्रीतवडीमनभीतरहोई ॥ ५० ॥ राजादशरथभर
तपठाए ॥ भ्रातसत्रुघनसंगलवाए ॥ युधाजीतकोपूजनकी
नो ॥ दशरथभूपविदाइसदीनो ॥ ५१ ॥ रामपूतसीतानुपपाई
कौसल्यादेवीपरमसुहाई॥ शक्रसपूतपुलोमीरानी[1] ॥ पाइयथा
सुरमातसुहानी ॥ ५२ ॥ ॥ सवैया ॥ जांगुणपूररहीअवनी
अरुकीरतिजाहिसभैजनगावें ॥ औरनकीअववातकहांसुर
जांहिंअलंवनतेसुखपावें ॥ नामउचारतजांजगमैशुभसंतस

1 इंद्रकी स्री.

भैदुखबंधमिटावें॥रामबहीपुरऔधविषेमिलजानकिसंगवि
नोदकमावें॥५३॥ नीतरहेजिनकेलक्ष्मीपुनिनाहिविकारक
दीजिनमांही ॥ पूरणवैभवजांहिसदाघनचेतनमूरतियाजग
मांही॥ माइककारयकेअनुसारसुमानवसेजगमाहिदिखांही
हैंअखिलेशपरातमरामसुदेवनमैंजिनकेसरनाही ॥ ५४ ॥
नराजछंद॥ ॥ सुवेदव्यासजांहिकोअनंतभांतगावही॥ म
हेशऔहिमालजासदासुजांहिध्यावही ॥ सुतांहिरामचंदकी
सुबाललीलकीकथा ॥ गुलाबसिंहदासपापहारणीकहीतथा
॥५५॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबाल
कांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥इतिश्रीबालकांडंसमाप्तम्॥

॥इति बालकांडंसमाप्तम्॥

अयोध्याकांडम्.





श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ अयोध्याकांड प्रारंभः

॥ सवैया ॥ ॥ तजराजविभूतिलयोवनवाससुतातकोवा
क्यअखंडितकीनो ॥ वनेजाइसुभ्रातमनाइरहेनहिराजविषे
मनरंचकदीनो ॥ भवभारमिटेजिहिनामभजेभवफेरनहोवत
बंधनजीनो ॥ बहुबंदनवैरघुनाइककोजिनकोयशपूरस्यो
पुरतीनो ॥ १ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ चौपा
ई ॥ ॥ एकसमैसुखबैठरामा ॥ रत्नसिंहासननिजवरधामा ॥
सर्वसुभूषनतनमैधारे ॥ नीलकमलतनप्रभाअपारे ॥ २ ॥
कौस्तुभकंठविषेअतिसोहे ॥ मुकताहारप्रभासुरमोहे ॥ रत्न
दंडचामरसुखकारी ॥ सीसफिरावेजनककुमारी ॥ ३ ॥ क
रेंविनोदतंबोलसुखावें ॥ हेरपरस्परअतिमुसकावें ॥ दशर
थग्रहलखहरिअवतार ॥ नारदआयोऋषीउदार ॥ ४ ॥ राम
रघूत्तमदेखनकाजे ॥ स्फटिकमणीसमप्रभाविराजे ॥ मानो
शरदचंदतनधारे ॥ ऋषिवरआयोपरमउदारे ॥ ५ ॥ उतर
तअंबरपंथसुआए ॥ नारददिव्यज्ञानसुखदाए ॥ तिनकोदे
खउभारघुनाथ ॥ शीघ्रसुउठजोरनिजहस्थ ॥ ६ ॥ सीतासहित

सुदंडप्रणाम ॥ मुनिकोकरीभवानीराम ॥ नारदप्रतिपुनबैनउ
चारे ॥ प्रीतिभक्तिरघुवरउरधारे ॥ ७ ॥ संसारीजनकोमुनि
घाल ॥ दुर्लभतेरोदरशविशाल ॥ हमजेहैंविषयनकेप्यारे ॥
तिनकोकहांसुदरशतुमारे ॥ ८ ॥ अथवामेपूरवकृतभाग ॥ भए
सुमुनिवरआजुसुजाग ॥ जगतअवस्थामाहिसुघोर ॥ मुनि
वरपायोदर्शनतोर ॥ ९ ॥ मुनितेदर्शनपरमपदारथ ॥ तां
कोपाइसुभएकृतारथ ॥ कार्यकौनसोकरोंतुमारो ॥ मुनि
आपोमैसेवकथारो ॥ १० ॥ पुननारदमुनिरामबषाने ॥ भ
क्तपियारेरघुवरजाने ॥ लोकनजिउंहरिवचनवषान ॥ कि
उंमोहोमोकोंभगवान ॥ ११ ॥ संसारीसुवंपान्योजोइ ॥ स
त्यतुमारावचनसुसोइ ॥ सभजगतनकोजोहैआदि ॥ ग्रहिणी
तुमरीसीयअनादि ॥ १२ ॥ तवसबंधकररामउदार ॥ ब्रह्मा
दिकसुतजनेअपार ॥ त्रैगुणमायारघुवरजोई ॥ तवआश्रे
नितभासेसोई ॥ १३ ॥ शुक्लकृष्णअरुलोहितरूप ॥ त्रैवि
धपरजाजनेअनूप ॥ लोकतीनमयमहिलसुमंदर ॥ रामग्र
हीतुमतिनकेअंदर ॥ १४ ॥ विष्णुमहेश्वरतुमरघुराम ॥ प
ग्राउमाजनकजानाम ॥ ब्रह्मातुंहीजानकीवाणी ॥ रवितुम
सीताप्रभावपाणी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ रोहिणिसीयसुजानिये
तुमशशांकरघुनाथ ॥ आहिपुलोमीजानकोशक्रसुतुमसुरना
थ ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तुमअग्नीसीतापुनस्वाहा ॥ यमिनी
सीयसुयमतुमआहा ॥ निर्ऋतितुमजगनाथसुराम ॥ ताम
सिहैसीताकोनाम ॥ १७ ॥ वरुणरामतुमजगमैपैए ॥ भार्गवी

सुदंडप्रणाम ॥ मुनिकोकरीभवानीराम ॥ नारदप्रतिपुनवैनउ
चारे ॥ प्रीतिभक्तिरघुवरउरधारे ॥ ७ ॥ संसारीजनकोमुनि
चाल ॥ दुर्लभतेरोदरशविशाल ॥ हमजेहैंविषयनकेप्यारे ॥
तिनकोकहांसुदरशतुमारे ॥ ८ ॥ अथवामेपूरबकृतभाग ॥ भए
सुमुनिवरआजुसुजाग ॥ जगतअवस्थामाहिसुघोर ॥ मुनि
वरपायोदर्शनतोर ॥ ९ ॥ मुनितेदर्शनपरमपदारथ ॥ तां
कोपाइसुभएकृतारथ ॥ कार्यकौनसोकरोंतुमारो ॥ मुनि
आपोमेसेवकथारो ॥ १० ॥ पुननारदमुनिरामवषाने ॥ भ
क्तपियारेरघुवरजाने ॥ लोकनजिंउंहरिवचनवषान ॥ कि
उंमोहेमोकोंभगवान ॥ ११ ॥ संसारीसुवंपान्योजोइ ॥ स
त्यतुमारावचनसुसोइ ॥ सप्तजगतनकोजाहैआदि ॥ ग्रहिणी
तुमरीसीयअनादि ॥ १२ ॥ तवसंबंधकररामउदार ॥ ब्रह्मा
दिकसुतजनअपार ॥ त्रैगुणमायारघुवरजोई ॥ तवआश्रे
नितभासेसोई ॥ १३ ॥ शुक्लकृष्णअरुलोहितरूप ॥ त्रैवि
धपरजाजनेअनूप ॥ लोकतीनमयमहिलसुमंदर ॥ रामग्र
हीतुमतिनकेअंदर ॥ १४ ॥ विष्णुमहेश्वरतुमरघुराम ॥ प
ब्राउमाजनकजानाम ॥ ब्रह्मातुंहीजानकीवाणी ॥ गं

सीयजनकजाहैए॥ वायुसुतुमसीताहैगती॥ कुवररामसंपति
सिय मंती॥ १८॥ ॥दोहा॥ ॥रुद्राणिसियवखानयेस
भगुणसीलप्रधान॥ लोकविनाशकरुद्रतुमभवभंजनभगवा
न॥ १९॥ इस्त्रीवाचकलोकमैसभीजानकीआहि॥ पुरपंना
मजोजगतमैरामतुमेविननाहि॥ २०॥ ॥चौपाई॥
तांतेलोकतीनकेमाही॥ रामसियाविनऔरसुनाही॥ तुमरे
भासयुक्तअज्ञाना॥ अव्याकृतसुआहिपरधाना॥ २१॥ तांतेव्है
महतत्वउदारा॥ सूत्रभयोपुनजांहिविकारा॥ अहंकारबुधिपां
चोप्रान॥ दशइंद्रियजगकरेबपान॥ २२॥ याकोंलिंगसरीरभ
नीजे॥ जन्मम्रत्युपुनतांहिकहीजे॥ सोईजगमैजीवकहावे॥
नानारूपजगतदिखलावे॥ २३॥ अवाच्यअविद्यानादिजो
ई॥ कारणकहीउपाधीसोई॥ स्थूलसूक्ष्मअरुकारणनाम॥
तीनउपाधीसंस्रतिधाम॥ २४॥ इनविशिष्टचितजीवबपा
नें॥ इनविमुक्तपरमेश्वरभानें॥ जाग्रतस्वप्नसुपोपतिनाम॥
तीनअवस्थासंस्रतिधाम॥ २५॥ ताहिविलक्षणसाक्षीजोई॥
रामरघूत्तमवैतुमसोई॥ तुमतेंभयोजगतयहसारा॥ तुमही
निखिलजगतआधारा॥ २६॥ तुमरेविपेलीनपुनहोई॥ राम
सर्वकारणतुमसोई॥ रज्जुमाहिंजिउसर्पसुमान॥ होवेंलोक
महाभयमान॥ २७॥ तिमाज्ञानकरजीवसुहोवै॥ आपभुला
इमहादुखजोवै॥ परमातमआपजानहैजवही॥ भयदुःखोंते
छूटैतवही॥ २८॥ चिन्मयज्योतिरामतुमजोई॥ सभतनु
बुद्धिप्रकाशकसोई॥ तांतेतुमसरवातमहैए॥ तुमबिनऔर

१ मानि.

नकोईपैए ॥ २९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रज्जूमाहिभुजंगजिउतिं
उयहसभसंसार ॥ भयोसुतवअज्ञानतेंनिखिलसुतवआधार
॥ ३० ॥ तवजानेजांतमिटेतातेतेरोज्ञान ॥ सेवेनित्यसुजोत्व
हेयांभववंधनहान ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तवपदभक्ति
युक्तजनजेई ॥ ज्ञानलहेंक्रमकरजनतेई ॥ तांतेजेतवभक्तिसु
युक्ता ॥ तेईहैंभववंधनमुक्ता ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवभ
क्तनकेभक्तजेपुनतिनभक्तसुनाथ ॥ तांकिंकरनारदसदाजा
नोश्रीरघुनाथ ॥ ३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मोपैकरहुअनुग्र
हराम ॥ मोहनकोनहिमोमैकाम ॥ नाभिकमलकमलास
नभए ॥ जिनतेनाथमोहिभवलए ॥ ३४ ॥ यांतेतव नाती जन
नारद ॥ रक्षाकरोसुमोहिविशारद ॥ यौंनारदवहुभापभवा
नी ॥ दंडप्रणामसुसानंदठानी ॥ ३५ ॥ पुननारदइहवचनउ
चारे ॥ ब्रह्माजेहैंजनकहमारे ॥ तिनकेसुनोसंदेसेराम ॥ क
रोजननकेपूरणकाम ॥ ३६ ॥ रावणवधहितनरतनुधारे ॥ भू
मिविपेरघुवीरउदारे ॥ अवतवपिताराजकेकाजा ॥ कीनोत
वअभिपकसुसाजा ॥ ३७ ॥ जोतुमराजविपेमनधारौ ॥ रा
वणकोंरघुवरनहिमारौ ॥ क्षीरनिधीहरिवचनतिहारो ॥ भूको
भारहरोंगोसारो ॥ ३८ ॥ तांकोकरोसत्यनरदेव ॥ सत्यसंधि
तुमअलपअभेव ॥ सुनयाविधिनारदकीवानी ॥ हसवोलेपु
नरामभवानी ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ सुननारदयालोकमैमो
प्रतिकछुअज्ञात ॥ सवजान्योउरआपनेमैजानोविख्यात ॥
॥ ४० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ क्षीरनिधीमैंभाष्योजोई ॥ सत्यप्र

१ पौत्र.

तिन्ह्यांकरिहोंसोई॥नारदहोईसमयअनुसार॥निखिलनिवारों
भूकोभार ॥ ४१ ॥ क्रमकरमारोंराक्षससारे॥ जेजगहैंधरणी
काभारे॥ नारदमारणहेतदशानन॥प्रातजांउमैदंडककानन॥
॥४२॥ चौदांब्रपवासवनकरों॥फलभक्षणतनवलकलधरों॥
कुलसमेतरावणहैजोई ॥ सीतामिपकरहनोंसुसोई ॥ ४३॥
याविधिरामबखान्योजवही ॥ भयोप्रसन्नसुनारदतवही ॥
तीनप्रदक्षिणकरीभवानी ॥ दंडप्रणांमरामप्रतिठानी॥४४॥
रामदईतिनआग्याजवही ॥ गयोसुस्वर्गलोकमुनितवही॥
नारदरामसंवादसुजोई ॥ तांहिपढेजगमैनरकोई॥४५॥अ
थवासुनसिमरणमनकरे॥ रामभक्तिउरभीतरभरे॥ दुर्लभपद
वीमोक्षसुजोई॥ करवैराग्यलहेनरसोई॥ ४६ ॥ इतिश्रीमद्
अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेप्रथमोऽ
ध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **स
वैया** ॥ ॥ अजनंदनभूपसुएकसमैकुलचारयआपवसिष्टबु
लाए॥मुनिरामसराहकरेंसभहीपुरलोकहईहैगुरुवैनसुनाए॥पु
न नैगं मवृद्धअमात्यसभेगुनगावतभूपविशेषजनाए॥अवरा
जदिऊंसुतराममहीगुणपुंजसभैइनभीतरआए॥ १ ॥ ॥**चौ
पाई**॥ ॥वृद्धभयोमुनिदेहहमारा ॥ कमलनैनसुतरामउदा
रा॥तांतेतांकोतिलकसुदीजे ॥ मंगलकारयवेरनकीजे॥ २॥
सहशत्रुघ्नभरतथोजोई ॥ मातुलदेखनगयोसुसोई ॥ मैअभि
पेकसुकरोंसकारे ॥ मुनिअनमोदनचाहोंथारे ॥ ३ ॥ सभसं
भारकरोइकठारे ॥ जाइनिमंत्रोरामपियारे ॥ नानावर्णपता

१ वणिक अथवा वेदवेत्ता २ मन्त्री (प्रधान)

काजेती॥ करोस्थापनासगलीतेती॥ ४॥ वंदनवारसवारोसा
रे॥स्वर्णमुक्तमयसर्वदुआरे॥ यांविधिभूपवसिष्टअलाए॥ मं
त्रीवहुरसुमंतवुलाए॥ ५॥ आज्ञाकरेमुनीवरजोई॥ ल्यावो
वस्तुसकलनुमसोई॥ यौवराज्यमेंरामसुटीको॥ प्रातकरोमं
त्रीमैनीको॥ ६॥सुनिमंत्रीभूपतिकीबाता॥ पुल्कितभयोसर्व
तिनगाता॥ भापेमंत्रीदोकरजोरे॥ आज्ञाकरोमुनीवरमोरे
॥ ७॥ तबवसिष्टमुनिबोलेज्ञानी॥ आग्यायांविधिकरीभवा
नी॥ कंन्यास्वर्णमंडजिनगाता॥ मध्यकक्षठांढीकरप्राता॥
॥ ८॥ स्वर्णरत्नजिनकेतनुधारे॥ पोडशल्यावहुगजसुउदारे॥
ऐरावतकीकुलमोजाए॥ चतुरदंतजिनतुंडसुहाए॥ ९॥ ना
नातीरथकेजलजेते॥ स्वर्णकुंभआनीजेतेते॥ बहुतसहस्त्रकुं
भजलल्यावो॥ करोस्थापनाबेरनलावो॥ १०॥ ॥शंकर
छंद॥ ॥तीनव्याघ्रसुचरममंत्रीआनियेमनलाइ॥ शुभछत्र
रत्नसुदंडमोतीमणीबहुसुखदाइ॥ दिव्यमालसुआनीएपुन
दिव्यपाटअपार॥ विविधभूपनआनियेपुनजांहिकांतउदा
र॥ ११॥ मुनिहोंहिंठाढेतहांसादरलैकुशानिजपान॥ वारमु
ख्यानर्त्तकीपुनगाइकाकरगान॥ नानावजंत्रीकुशलजेसुव
जांहिंनृपआगार॥ गजअश्वरथपादातसायुधरहैंबाहरवा
र॥ १२॥ नगरमैजेदेवताकेआंहिआयतनानि॥ करोसुपू
जातांहिंकीदेवलीवहुसनमान॥ बेगराजाआवईपुनलैउपा
यनहाथ॥ दैउमाइहभांतआइसश्रेष्टजोमुनिनाथ॥ १३॥
रथबैठभगवानमुनिपुनिगयोरामअगार॥ तीनकक्षालांघके

पुनभयोमुनिपदचार ॥ रामगुरुमुनिजानिकैनहिकीनद्वारप
वार॥इहभांतआपमुनीश्वरापुनगएभौनमझार॥ १४॥ आ
एगुरुउरजानकेपुनरामजोरसुहाथ॥जाइसनमुखदंडवत्तप्र
णामकैरघुनाथ॥स्वर्णपात्रसुनीरकोकरजानकीअनिवाइ ॥
करभक्तिवैरत्नासनेपुनरामगुरुवैठाइ ॥ १५॥ सीतासंयुक्तसु
धोयपदजलसीसरघुवरधार ॥ मैधन्यरामवखानियोमुनिपा
इतेपदवार॥ रामकेयहवचनसुनिमुनिकीनआपवपान ॥ ते
पदांवुजसलिलधरगिरिजापतीभगवान ॥ १६ ॥ धन्यहोयो
लोकमैब्रह्माजितातहमार॥तेपादतीरथसलिलकरतिनकरेकि
ल्विपतार ॥ अंववपानेंरामजोवहकरेजनउपदेश ॥ हैपरात
मरांमतूपुनिभक्तहरणकलेश ॥ १७ ॥ देवकारयसिद्धहितपु
नभक्तिभक्तकमाहि ॥ रावणवधारथतूभयोमैजानयोउरमा
हि ॥ तद्यपिनदेवसुभापहोंयहगोप्यअमरसुकाज ॥ जैसेतु
मेविसतारयोयहनिखिलमायासाज ॥ १८ ॥ जोकरेंतूंरघु
नाथपूरवमैकरोंपुनसोइ॥तूंसिष्यमैगुरुहोययोनहिकरेमालम
कोइ ॥ गुरुनकोगुरुदेवतूंपुनपिताकोपितआहि॥ जगतयंत्र
सुवाहकोपुनरामतुमविननाहि॥१९॥शुद्धसात्विकदेहतूंपुनि
धारनिजआधीन॥ निजशक्तिनरंजिउंभासहैंनहिसकंकोतव
चीन ॥ होनोपुरोहितजगतमैयहिआहिनिंद्यमहान॥ इक्ष्वा
कुकुलपरमातमाहरिउपजहैभगवान ॥ २० ॥ ॥ चौ
ई॥ यांविधिरामप्रथममैजानी॥ ब्रह्मामोप्रतिआपवखानी॥
निंदतकर्मपुरोहतजोई ॥ तवगुरुआसकरयोमैसोई ॥ २१ ॥

तातेभयोमनोरथमेरा॥भयोअचारयजगमैतेरा॥सभलोक
नकेमोहनहारी ॥ मायाशक्तिजुआहितुमारी ॥ २२ ॥ यथा
नमोहमोकोराम॥करोतथाविधिपूरणकाम ॥ गुरुनिस्कृतिइ
च्छाजोतोरी॥यहीदक्षिणादीजेमोरी ॥ २३॥प्रसंगिकतोहिव
पानीवात ॥ औरठोरनहिंभापोंतात ॥ राजादशरथमोहिप
ठायो ॥ रामनिमंत्रणतोकोंआयो॥ २४ ॥ कालहसवेरेतोकों
राजा ॥ देवेगेंदशरथसिरताजा॥ अबतूंसीयसहितभूजाई॥
करउपवासरहोरघुराई ॥ २५ ॥ सुचिपुनइंद्रियजीतोराम॥
मैजावोंदशरथनृपधाम ॥ मंगलहोसीकालसकारे ॥ तवआ
वोंगोरामपियारे ॥ २६ ॥ राजगुरुइहभांतवपान ॥ स्यंदने
वैठगयोभगवान ॥ उमाहेरलक्ष्मणनिजवीर ॥ हसवोलेपुन
श्रीरघुवीर ॥ २७ ॥ लक्ष्मणसुनोहमारीवात ॥ यौवराज्यहो
सीमुहिप्रात॥ निमितमात्रहैनामहमारो ॥ करनोकामनिखि
लहैथारो॥ २८ ॥ मेरोबहिरप्राणतूंआहि ॥ संशययामेरंच
कनाहि ॥ याविधलक्ष्मणप्रतिहरिभान्यो ॥ बहुरकरयोजोमु
नीवखान्यो ॥ २९ ॥ सीयसमेतभएभूशायी ॥ मनोधरेमुनि
रीतिवनाई॥वसिष्टगएपुननृपवरपास॥ कहीरीतसोकरीप्रका
स ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥रामतिलकजवभापियोनृपवर
मुनिवरपास ॥ सुनआयोकोइकपुरुपराजभवनधरआस ॥
॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ कौशल्यारुसुमित्रासुंदर ॥ रामलख
नमातानृपमंदर ॥ तिनकेपासवपानीवात॥ सुनहरपानीपु
ल्कितगात ॥ ३२ ॥ जनकोउत्तमहमसुदयो ॥ कौशल्यासु

हर्षउरभयो ॥ लक्ष्मीकीपूजाविस्तारी ॥ रामराजउरअंतर
धारी ॥ ३३ ॥ सत्यवाक्यदशरथवरराजा ॥ करहैसत्यक
त्योमुखकाजा ॥ कैकईवशनृपकामुकसोई ॥ क्याकरहैनहि
जानेकोई ॥ ३४ ॥ यांविधिव्याकुलचित्तसुभई ॥ पुनदुर्गापू
जानिरमई ॥ यांअंतरपुनअमरभवानी ॥ मिलवाणीप्रतिया
तवषानी ॥ ३५ ॥ भूमंडलवाणीतुमजावो ॥ औधपुरीमैनि
जपदपावो ॥ ब्रह्मवाक्यउरअंतरधरो ॥ रामतिलकविध्वंसन
करो ३६ ॥ प्रथममंथराकरोप्रवेश ॥ बहुरकैकईहृदेनिवेश
होवेविघ्नतिलकमोजवही ॥ आवोस्वर्गलोकपुनतबही ॥ ३७ ॥
याविधिदेवनकीनउचार ॥ वाणीकरउरअंगीकार ॥ कर्योप्रवे
शमंथरामाही ॥ भयोहुलासकुब्जमनमाही ॥ ३८ ॥ कुब्ज
चढीमहलपुनदौरे ॥ नगरअलंकृतहैचहुंओरे ॥ नानातोरणजा
मोंधरी ॥ बहुतपताकाकीनीखरी ॥ ३९ ॥ सभउत्सवकरनगरसु
हायो ॥ कुब्जाहृदयअचंभाआयो ॥ उतरीवेगमहलतेधाइ ॥
धात्रीकोपुनपूछ्योजाइ ॥ ४० ॥ मातानगरअलंकृतसारो ॥ का
हिनमित्तसुमोहिउचारो ॥ नानाउत्सवहरपअपारी ॥ करेकुश
ल्यारामसतारी ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणकोदेवेबहुदाना ॥ रत्नपटंबरहेम
सुनाना ॥ धात्रीहरषकहीतबबाता ॥ रामतिलकहोवेगोप्राता
॥ ४२ ॥ यातिनगरअलंकृतकरिओ ॥ भूपतिआपसुवचनउचरि
ओ ॥ सुनयहबातमंथरावौरी ॥ कैकयीढिगआईदौरी ॥ ४३ ॥
सेजकैकईसोईपरी ॥ नैनजांहिम्रगद्रिगमदहरी ॥ तांप्रतिकुबरी
कीयोवषान ॥ किंसोवेंमूढसुखमान ॥ ४४ ॥ दुरभागेभयआ

योभारी॥नाजानैंतनुरूपखुमारी॥रामराजकोतिलकउदारे॥
भूपअनुग्रहहोइसेकारे॥४५॥सुनियहिबातककईरानी॥वेग
उठीउरमेहरषानी॥रलजडीनूपुरपदेतारा॥दईमंथराहरपअ
पारा॥४६॥वहुरकैकईबातवषानी॥तुमनीकेवहसुनोभवानी
हरषस्थानवडोयहआयो॥तेंमोकोकिउभैदिपलायो॥४७॥
भरतहुतेमुहिअधिकसुराम॥प्रियवादीमुहिकरेसुकाम॥मो
हकुसल्यासमउरपेख॥मेरीसेवाकरेविसेख॥४८॥मूढमं
थराभापोमोहि॥रामकहांभयदीनोतोहि॥सुनीबातयहकु
बरीजवही॥भयोदुःखमनभीतरतवही॥४९॥सुनरानीयहव
चनहमारे॥जांतेभययहभयोतुमारे॥राजाप्रियवाणीतवक
हे॥कामुकअरथआपनोगहे॥५०॥तोकोंबातनसहिसंतोषे॥
कारयकौसल्याकोपोपे॥रामराजमनभीतरआए॥तातवपेकें
भरतपठाए॥५१॥अनुजताहिकेसाथलवाए॥मातुलंकु
लमेवेगपठाए॥आजसुमित्राहरषप्रसंगा॥रामराजलक्ष्म
णतिनसंगा॥५२॥रामलखनलियराजसुसारो॥दास
होइगोपूततुमारो॥कैदेवेंगेनगरनिकार॥कैप्राननतेंडारेंमा
र॥५३॥तूंदासीकौसल्याकेरी॥होवेंगीजिउंऔरसुचेरी॥
शोकनकरेंपराभवथारा॥तांतेभलोसुमरणतुमारा॥५४॥
॥गीयामालतीछंद॥ ॥ करसतभामिनिवेगतूंजिउंभ
रतराजसुहोवई॥ दशचारवरषसुवासवनमैरामनीकिजोव
ई॥पुनभरतरूढसुहोइगोवहराजपालेभुजवला॥सुउपाइतो
कोंआपहोंमनमैधराजोमैभला॥५५॥ ॥चौपाई॥ ॥पूरव

१ सवमें २ पगमें उतारा. ३ तब ४ तेरे पिताके ग्रहमें

देवअसुरसंग्रामा ॥ भयोअपारसुभैरवनामा ॥सुरपतिभूप तियाच्योआइ ॥दशरथभयोसुतांहिसहाइ॥५६॥ लैकरधनु पचल्योरथभारे ॥ सैनासहितवजाइनगारे ॥ तूंतांकेपुनसंग सिधानी॥सवहूंमाहिमनोहररानी॥५७॥ रणआसक्तभयो नृपजवही ॥ अक्षकीलटूट्योपुनतवही॥ राजेकीलनजान्योटू टा ॥ लैकरधनुपअसुरसंगजूटा ॥५८॥ तैंरणमैअतिधीरज करयो॥कीलछेकमैनिजकरधरयो॥नीलकमलनैनीतूंप्यारी॥ पतिप्राननरछाउरधारी ॥५९॥ असुरसंघनृपरणमैमारयो॥ वहुर अरिंदम तोहिनिहारयो॥ अचरजतोहिपेखनृपआयो॥ प्रेमभरेतोकोंगललायो॥६०॥वरमागोमोतेतुमदोई॥जोते रेमनभीतरहोई॥यांविधिभूपतिकीसुनवानी ॥तुमभामनिपुन आपवपानी॥६१॥भूपतितुमवरदोइवखानें॥मोहिदएसुसभ सुरजानें॥सोमेरीआमानतहोई॥तामैरहेंचिरंवरसोई॥६२॥ अवसरहोइहमारोजवही॥ मांगोंगीदेवोवरतवही॥राजामु खततथावपानी ॥चलिआयोअपनीरजधानी॥६३॥यहमैं कथाकहीतवजोई॥तुमतेसुनीप्रथममैसोई॥ सिमरणभईआ जतहमोकों॥ करोउपायवल्योजोतोकों॥६४॥क्रोधागारवेग तुमजावो ॥ निजमनभीतररोपवढावो॥ त्यागोतनकेभूपन सारे॥ चारोओरसुदेहखिलारे॥६५॥भूमिसैनमुखमौनगही जे॥पूंछेभूपनउत्तरदीजे॥ करेप्रतिज्ञाजौलौंराजा॥ सत्यकरों गोवांछितकाजा॥६६॥ तौपाछेवोलोकेकेई॥मेरीसिक्षाजा नसुएई॥गिरिजासुनयहिकुवरीवानी॥सत्यकैकेईउरमैमानी

१ भयकर. २ शत्रुनकानाशक. राजा.

॥६७॥खोटनसंगतिजिउंभरमाए॥ तिउंकैकेईलीयोभुलाए॥पु
नकैकेईवचनउचारे॥यहिमतिकहतेभइतुमारे ॥६८॥ तेरीबु
द्धिनमोहिपछानी ॥ तूंहैंकुबरीपरमसियानी ॥ भरतहोइगोरा
जाजवही ॥ सौपुनगाउदेंउतवतवही ॥ ६९ ॥ तूंमेरीहिप्राण
पियारी ॥ यहतोकोंमैसत्यउचारी ॥ याविधितांकोभाषभवा
नी ॥ क्रोधागारधसीरुपमानी ॥ ७० ॥ भूपनतनकेसभपर
हरे॥चारोओरविकीरणकरे॥सोईभूमिमलिनतनअंवर॥भ
रतराजहितकियोअडंबर ॥ ७१ ॥ कुब्जेसुनयेवचनहमारे ॥
जौलैरामनवनसिधारे॥ तौलौभूमिविषेमैसोवों॥नातरअ
पनेप्राननखोवों॥७२॥निश्चययहतूंकरकल्यानी॥तवकल्या
नहोइगोरानी ॥ यांविधिभाषकुब्जग्रहगई ॥ रानीवहिविधि
करतसुभई॥७३॥ ॥सवैया॥ ॥ धीरवडोउरमाहिदयागु
णऔरअचारसुनीतउदारी॥ जोविधिवादनकोउपदेशकऔ
रविवेकसुजाहिअपारी॥जोवहखोटनसंगकरेपुनपापवडोजि
निआहिअपारी॥ सोतिनकेसमहोवतहैंक्रमकैजगमैगिरिना
थकुमारी॥७४॥ ॥इतिश्रीमत्अध्यात्मरामायणेउमामहे
श्वरसंवादेअयोध्याकांडेद्वितीयोऽध्यायः॥२॥ ॥७॥ ॥
॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥वहुरभवानीदश
रथराई॥ निजमंत्रीकोलीयोवुलाई॥ गुरुनवखान्योतुमको
जोई॥ रामराजहितसुनियोसोई॥१॥ सोवहवस्तुवेगलैआ
वो॥मंत्रीवरकछुढीलनलावो॥ यांविधिमंत्रीआइसदयो॥
सानंदभूपसुनिजग्रहगयो॥ ॥दोहा॥ ॥भावीमृत्युअधी

१ बिगरे हुवे

नकैउमाचलेग्रहराइ ॥ होनीमेटनकोसकेकौनहटावेजाइ ॥
॥ ३ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ भूपतिगएसुजबनिजधामा ॥ देखी
नहीतहांनिजभामा ॥ व्याकुलमनभूपतिइहुआई ॥ आजकै
कइकहांसिधाई ॥ ४ ॥ आगेजोआवोंमैमंदिर ॥ हसतसमी
पआइबहिसुंदर॥आजुनवहिग्रहभीतरदेखी॥ भूपतिमनयह
चिंतविसेखी ॥ ५ ॥ भूपतिमनकांपेजिमदामनि ॥ दासीभाषक
हांतुमस्वामिनि ॥ मेरीप्यारी किंउनहिआवे ॥ पूर्वजिउनहिवदन
दिखावे ॥ ६ ॥ दासीवचनवखानेआप ॥ सुनियेभूपतिभानुप्र
ताप ॥ क्रोधागारधंसीरुषमाने ॥ कारणदेवनहमकछुजाने ॥
॥ ७ ॥ तुमभूपतिवरलेहुविचार ॥ कारणतहांनिकटपगधार ॥
दासीगनयोंभाष्योजवही ॥ त्रसतभयोभूपतिवरतवही ॥ ८ ॥ रा
जातांहिसमीपेंगयो ॥ तांहिंनिहारदुखीअतिभयो ॥ निजहाथ
नकरतांकोदेह ॥ कन्योविमर्दनभूपसनेह ॥ ९ ॥ राजातांकोवच
नवखाने ॥ किंउंसोईभूमैरुषमाने ॥ शुक्कसेजतेंदुरहित्यागे ॥ तो
कोंहेरमोहिदुखलागे ॥ १० ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ भामनिक्योंनहि
बोलतमोहसुभूषनकिंउधरभीतरडारे ॥ डारकिपाटपटंवरतैंम
लिनांवरकिंउतनऊपरधारे ॥ साचकहोतववांछितजोवहका
जकरोंइहनेमहमारे ॥ नारिकिंधोंनरहोइसुनोकहुसुंदरिजांतव
काजविगारे ॥ ११ ॥ दंडकरोंतिनकोगजगामिनिकैतिनप्रानन
देंउनिकारे ॥ जांपरतूंअतिकोपभईवरपीनपयोधरदेहिदिखा
रे ॥ जोदुर्लभअहेजगकारयसोवहकाजकरोंक्षणथारे ॥ चंद्रमु
खीउरजानतहैंयहभूपतिआहिअधीनतुमारे ॥ १२ ॥ नराजछं

१ मवेशकू मानभद २ रोष ३ मोस् ४ पृथ्वी ५ किंवा.

द॥ ॥नखेदमोहिकीजियेवतायवातजोअहे॥धनीकंगालको
करौंप्रसन्नहोइतूकहें॥जिनेहनेसुतोहिकाजहोइजेधनीघनो॥
क्लिनैकमाहितांहिकोसमस्तमैधनंहनो॥१३॥कहेंअवध्यकोव
धावंधाइकोविमोक्षहों॥कहाबखानहोंघनोस्वप्राणतोहितोप
हों॥स्वप्राणप्रीतमोसुराममोहिलोकमैअहे॥करौंसुगंदतांहि
कीकरौंसुकाजजोकहे॥१४॥जवैसुभूपनेकह्योसुगंदरामकी
करी॥तवैविमृज्यनैनकोंउठीमनोलताहरी॥कहेसुभूमिपालं
कोसुनोसुवातमेरिया॥सुसत्यवाक्यभूपतूंसुगंदरामकेरिया
॥१५॥चौपाई॥ ॥मेरीवाणीसफलसुकीजा॥भूपतिवेगसु
आपभनीजे॥पूरवदेवअसुरअतिसंगर॥भयाभूपभुवमंडल
अंदर॥१६॥मैतेतनुंनवरक्षणकीने॥तोहितुष्टमेद्वैवरदीने॥तेदो
नोवरआहिनिआस॥सत्यव्रत्तराखेतवपास॥१७॥तिनमै
एकसुयहवरदीजे॥राजापूतहमाराकीजे॥यहजोकरेइकत्र
सुभारा॥तांकरटीकोभरतहमारा॥१८॥दूजोयहमांगोंतेवपा
स॥रामकरेंदंडकवनवास॥सुंदरतेमुनिभेपसुकरें॥सीसिजं
टालनुवलक्कलधरें॥१९॥चौदांवरपवसैंवनभारे॥कंदमूल
फलकरैंअहारे॥यहुरोवसैंअयोध्यामांही॥कैरुचिहोइंरहेंव
नमांही॥२०॥वनकाजावैवैपरभातं॥रामकंजद्रिगसुंदरगा
त॥जोकछुतहांविलंवहिजोवों॥तौभूपतिमैप्राणसुखोवों
॥२१॥सत्यप्रतिग्यातेंजगअहें॥दीजभूपसुजेवरकहे॥सु
नीकैकइंदारुणवानी॥भूमिगिरेनृपहोइमलानी॥२२॥जिउं
तरुगिरवज्रकेमारे॥तिउंभूपतिनहिरहीसंभारे॥शनेशनेनृप

१ वधकरनेके अयोग्यको. २ वधकरने योग्यको ३ पाँचके. ४ तेरी.

आंखउघारी॥ मनकेमाहिभयोभयभारी ॥२३॥ किंवादुहस्वु
पनाभ्रमभाने॥ किंवाचित्तसुमोहिभ्रमाने॥ इमभनभीतरकी
नविचारी ॥ बाघनिजिउंपुननारिनिहारी ॥ २४ ॥ क्याक
ल्याणीवाक्यबखानें ॥ जांकरहोहिंप्राणममहानें ॥ रामकि
कीनोतेअपराधू॥कमलेक्षणअतिरामसुसाधू॥ २५ ॥ तूंमम
आगेकरेंबडाई ॥ रामगुननकीहैंसुखदाई ॥ मोहिकुसल्याके
समहेरी ॥ करेंनिरंतरसेवामेरी ॥ २६ ॥ यांविधिपूरवतूंमम
भाने॥अबकोहेतूंव्यथाबखाने॥राजगहीजेसुतहितसुंदर॥राम
रहेंपुनअपनेमंदर॥ २७॥ मोपैयहैअनुग्रहकीजे॥रामभीखमेरे
करदीजे॥रामहितेनहितेडरकोई॥रामनंहीदुखदाताहोई॥ २८॥
॥ दोहा ॥ ॥ यांविधिभूपबर्यानियोचल्योनीरहगेजाइ॥ कर
जोरेअतिदीनव्हैपरकैकैकईपाइ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बहु
रकैकईवचनउचरे ॥ कोपभईद्रिगलालखुकरे ॥ भूपतिक्या
भ्रमभयोतुमारे॥ तुमैव्यर्थकिमवाक्यउचारे॥ ३०॥ मिथ्याकरें
प्रतिग्याकरी॥नरकहोइतोकोंनरवरी॥जोवनजाइनरामप्रभा
ता॥अजिनचीरधरसुंदरगाता ॥ ३१ ॥ तौउद्बंधनमेतनकरों॥
कैविषखाइअग्रतेमरों ॥ सत्यप्रतिग्यासेंजगराजा॥ ठागेस
र्वसभांतरकाजा॥ ३२॥ करीसुगंदरामसुतकरी॥ मिथ्याअहे
प्रतिग्यातेरी॥नरकहोइतोकोंनृपभारा॥योंकैकेयीजबैउचारा
॥ ३३॥भूपतिदीनमनातबभयो ॥ दुःखसमुद्रेगोतालयो॥ मू
छितहोइगिर्योधरमाही॥मत्तापरेंशवस्वासंसुनाही॥ ३४॥सवै
या॥इहभांतवितीतभईनृपरातिसुदुःखवडेजनेंवर्षसमानी॥ पु

१ दुखके २ नेत्रनसें. ३ १ रुहामा.

नजोपरभातभयोजगमेंमिलवंदिनगाइककीरतिठानी॥सुन
केवहुवादकथित्तनकोउरकोपभईनृपकीवहिरानी॥जलजाहु
यजाहुनवाघघनेइहभांलनिवारसुताहिंभवानी॥३५॥ ॥चौ
पाई॥मध्यहवेलीभयेप्रभात॥ठाढेभयेसुजनविख्यात॥ब्राह्म
णक्षत्रीवैश्यसुधनिवर॥ऋषिकन्यापुनछत्रसुचामर॥३६॥ग
जवाजीपुनऔरपदाती॥वारविलासिनिपौरजनाती॥गुरुव
सिष्टजिउविधिहिंबताई॥मंत्रीतिउतिउसकलवनाई॥३७॥
इस्रीवालवृद्धपुरमांहीं॥रात्रीनिद्रालहीनकांहीं॥रामचंद्र
कोकदोंनिहारे॥पीतपटंवरतनमेधारे॥३८॥सर्वअभरणध
रेमनमोहे॥हेमकीटकरकंकणसोहे॥कौस्तुभमणिगलल्रशे
उदारे॥सौमनोजसुंदरतनुधारे॥३९॥राजतिलकसोंभाल
सुहावे॥गजारूढमुसकावतआवे॥लक्ष्मणकेकरछत्रसुहा
ए॥सीसरामकेभ्रातझुलाए॥४०॥ ॥सवैया॥ ॥कवहो
इप्रभातसुयांजगमैंकयआवतरामसुनैननिहारे॥इमरातिवि
तीतभईसगलीउत्कंठितहैंपुरकेजनसारे॥ अवलौंनहिभूपउ
ठघरतेइहकारणकौनसुमंतविचारे॥हेरुएहेरुएजहंभूपहुतोसु
सुमंततहांघरमाहिंसिधारे॥४१॥जयशब्दउचारनिवाइ
सुनारसुभूपतिकोतिनवंदनठांनी॥अतिखेदनिहारसुभूपति
कोकरजोरउभेपुनपूछतरांनी॥वधदेविसुकैकइनीततुमूकहु
भूपतिकोमुखकाहिमलांनी॥वलआहिचलाचलभूपवलीम
नविक्रिलआजभयोमुहिभांनी॥४२॥कैकइवोलसुमंतकं
स्योनृपरातिनिनींदकरीद्रिगमांही॥औरनभापतहैमुखतेइक

रामहिरामवकेमुखमाही॥जाग्रतरात्रिरह्योसगलीइहकारण भूपचलाचलआही॥ भूपपिखेसुतरामभलेतुमजाइसुमंतलि याउइहाही॥४३॥ ॥सुमंतउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥रा नीभूपनआपियोकिंहंविधिजांवोलैन॥ तौमैंल्यावौंरामको भूपवखानेवैन॥ ४४ ॥ सुनिमंत्रीकेवोलकोवोलेदशरथ राइ॥ तातनिहारोंरामकोवेगसुल्यावोजाइ॥४५॥यांविधि भूपवखानियोचलेसुमंतसुदौर॥ रामभवननीकेगएकिनेन वारेपौर॥४६॥ ॥चौपाई॥ ॥रामकंजद्रिगतेकल्यान॥ वेगचलोन्टपग्रहकरयान॥राजातवदेपनकोचहे॥चलोवेगक छुढीलनअहे॥४७॥ याविधिकह्योसुमंतसुजवही॥राम चलेरथवैठसुतवही॥लक्ष्मणसंगसुलएवुलाइ॥मध्यदेवढीप हुचेआइ॥ ४८॥ गुरुसमीपनहिढीललगाई॥ देखतचलेग एरघुराई॥पितासमीपसुजाइभवानी॥वेगरामपदवंदनठा नी॥४९॥ ॥दोहा॥ ॥रामअलिंगतहेतन्टपउठसुजवहु लसाइ॥वाहुपसारसुवीचहीगिरेमूरछाखाइ॥५०॥चौपा ई॥ ॥हाहारामआपमुखमाही॥वेगभूपलीनेअंगमाही॥ भूपतिपेखमूरछाभारी॥रोवनलगीसकलतहनारी॥५१॥ रोवनकैसोग्रहमैभयो॥सुनतवसिष्टतहांपुनगयो॥पूछतभये रामसुततारण॥कौनभयोभूपतिदुखकारण॥५२॥ यावि धिरामपूछयोजवही॥ उत्तरदयोकैकईतवही॥तुमहींकारण होसुनराम॥तवअधीनकछुभूपतिकाम॥५३॥ पितादुःख रघुवरपरहरो॥ भूपतिकोवहुकारयकरो॥ सत्यप्रतिज्ञरामत

वतात ॥ सत्यप्रतिज्ञाकरविख्यात ॥ ५४ ॥ राजादोवरमो
कोदए ॥ तुष्टचित्तजौमोपरभए ॥ तवअधीनदोनोतेअ
हे ॥ तवश्रापतनृपलज्जागहे ॥ ५५ ॥ सत्यफासिमेंभूपति
परो ॥ रामतुमेतिनमोचनकरो ॥ पुत्रकहीजेसाचोसोइ ॥ पि
तानरकतेराखेजोइ ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसेकैकईश्राप
योभूपतिकोदुखमूल ॥ सुनतरामदुखउरभयोमनोहनेकरशू
ल ॥ ५७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दुखतरामकैकेयीश्राने ॥ मोप्रति
किंउइंउवचनवखानें ॥ पिताहितजीवनपरहरों ॥ घोरहलाहल
पीवनकरों ॥ ५८ ॥ सीयकुसल्याकरोंसुत्याग ॥ तजोंराज
नहिकरोंखुराग ॥ विनश्रापेपितकारयकरे ॥ उत्तमपूतसुव
हीउचरे ॥ ५९ ॥ श्रापेकरेपिताकोकारय ॥ मध्यमपूतकहेंवह
आरय ॥ श्रापेकरेनकारयजोई ॥ पितापूतमलश्राप्योसोई ॥
॥ ६० ॥ यांतेकरोंसकलनृपकारय ॥ जोसोप्रतिश्रापेजगआर
य ॥ सत्यकरोंगोशंकनमाने ॥ रामवचननहिदोइवपाने ॥ ६१ ॥
॥ दोहा ॥ रामप्रतिज्ञायांहिविधिसुनीकैकईकांन ॥ उमाहर
पउरवैठकेलागीकरनवखान ॥ ६२ ॥ कैकेयीउवाच ॥ रामसु
तरेतिलकहिनकरेइकछत्रसुभार ॥ तिनहीकरअवटीकीये भरत
सुपूतहमार ॥ ६३ ॥ एकसुयहवरजानियेदूजोसुननिरधार ॥ तु
मवनजावोवेगअवचीरवसनजटधार ॥ ६४ ॥ पितुआइससि
रपरधरोचौदांवरपसुआहि ॥ वनोवासतनुमेंधरोमुनिभोज
नमुखखाहि ॥ ६५ ॥ यहीकाजहैपिताकोकरोरामउरमान ॥
राजाउरलज्जावढीकरेनतोहिवपान ॥ ६६ ॥ श्रीरामउवाच ॥

१ विष २ सज्जन ३ सामर्थ्य ४ अभिशापकरिये

दोहा ॥ भरतलएसभराजकोमैंआवोंवनमांहि ॥ पररजाआभा
पेनहींकारणजांनोनाहिं ॥ ६७ ॥ सुनतरामकेवचनकोदश
रथनैनउघार ॥ चंद्रवदनद्रिगकंजसेठाढेरामनिहार ॥ ६८ ॥
दुखीसुदुःखतवचनतवभूपतिकीनवपान ॥ मैनारीवशिभ्रांत
सुतउनमारगगतिमान ॥ ६९ ॥ खिलसेपगडारकैराजक
रोपुरमाहि ॥ मोकोझूठसुनाछुहेतोकोपापसुनांहि ॥ ७० ॥
याविधिभूपवखानियोउरमैदुखसंताप ॥ तमरिदेअतिहोगयो
लागोकर्नविलाप ॥ ७१ ॥ हाइरामहानाथउदारे ॥ हामेरेसु
तप्राणनप्यारे ॥ मोकोत्यागघोरवनमांही ॥ जावनकिंचाहो
मनमाही ॥ ७२ ॥ याविधिभापरामगललाए ॥ राजारोइ
नैनजलजाए ॥ निजपाननकररामउदारे ॥ भूपतिकेद्रिगनीर
निवारे ॥ ७३ ॥ नयकोविदसुतधीरजधरयो ॥ भूपतिकोआ
श्वासनकरयो ॥ किउनृपदुखउरभयोउदारे ॥ राजकरेंगेअनु
जहमारे ॥ ७४ ॥ तेरोवचनपालवनमाही ॥ मैआवोंबहुरो
पुरमाही ॥ राजकोटिगुणसुखमनमाही ॥ राजनहोइसुमेव
नमाही ॥ ७५ ॥ तेरोसत्यपालतहँकरें ॥ देवकाजसभयावि
धिसरें ॥ मातकैकईदैवनवास ॥ मेरोहैबहुगुणनप्रकास ॥
॥ ७६ ॥ अवहीवनजांनोमैचहों ॥ ढीलनहीउरअंतरगहों ॥
तिलकहेतजेआनेभार ॥ तेसभधरोसुभवनमझार ॥ ७७ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ जनकनंदिनीतोपकरमाताकोआश्वास ॥ तवपद
पंकजवंदकैमैजावोंवनवास ॥ ७८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यावि
धिरामउच्चारणकीनो ॥ भूपतिकोपरिक्रमादीनो ॥ मातकुसल्या

१ नीतिनिपुण. २ समाधान ३ मेरेकू. ४ जानेकू.

देखनहेत ॥ आवतभयोसुधर्मनिकेत ॥ ७९॥ शंकरछंद॥ कौ
सल्ययाहरिपूजहैउररामकारयधार ॥ धनब्राह्मणनबहुदानदे
पुनहोमकीनअपार॥करमनइकाग्रसुआपनोउरविष्णुध्यानउ
दार॥तिननैनदोनोमीचकैमुखमौनलै,नोधार ॥८०॥ हैसुअंत
रसर्वकेपुनएकरूपअनूप ॥ घनचित्प्रकाशअनंदसतपुनस
र्वअधिकस्वरूप ॥ याविधिअनूपस्वरूपजोहरिधारयोउरधा
म ॥ नैनदोनोंहैंमिलेतिनना हिपेखेराम ॥८१॥ इतिश्रीमद्अ
ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेतृतीयोऽध्या
यः॥ ३॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥शंकरछंद॥ ॥पिखसु
मित्रारामकोद्रिगकंजशोभअपार॥ कौसल्ययाकोभापयोपि
खरामखरेउदार ॥ सुनरामनामकुसल्ययाद्रिगलएतांहिउघा
र ॥ विशालनैनसुरामकोपिखगोदलीनविठार॥ १॥ ॥गी
यामालतीछंद ॥ ॥ शिरचूंमकंठलगाइकेसुतजोचहोसो
लीजीए ॥ उपवासकीउरभूखहैमिष्टान्नभोजनकीजीये॥सु
नरामआपवखानयोनहिकालभोजनकोअहे॥अबवेगमाइ
सुमैचलोंमैवासदंडकवनगहे ॥ २॥ कैकईकोवरदानदैपुन
सत्यवादीभूपती ॥ भरतकोदियराजपुरकोमम अरण्यमहाम
ती॥वरपचौदांवासकैमुनिसंगनीकेजीजीये॥पुनवेगआवों
माइमैरिदचिंतरंचनकीजिये॥३॥ ॥सवैया॥ ॥सुनरामे
किबातसुदुःखवध्योतनुमूर्छितजाइपरीधरमांही ॥ उठिफेर
सुरामहिबातकहीमनडूबततांदुखसागरमांही ॥ वनंजाहुसु
जोतुमरामवलीसुतसंगचलोंतवमैवनमांही ॥ विछरीतुमते

1 जल्दी

ई॥ जोलक्ष्मणयहसाचोहोई॥ तौताहितसुयतनुमारा॥ सफलहोइयाजगतमंझारा॥११॥ मेघनमाहिसुविजलीजैसे॥ भोगसभैजगचंचलतैसे॥ तपतलोहजलविंदुसुजैसी॥ आयुपिखोक्षिणभंगुरतैसी॥१२॥ जिममेंडुककाअहिमुखगहे॥ वहिअतिमूरखदंशनचहे॥ कालसर्पतिमलोकनग्रासे॥ मूरखकरेभोगउरआसे॥१३॥ जाकरमनतेअतिदुखपावे॥ तनुसुखहितवैकरमकमावे॥ सोतनुआतमतेअतिन्यारो॥ भोगसुकिहविधिहोइविचारो॥१४॥ मातपिताभाईसुतदारा॥ जासंगकर्मसुकरेविकारा॥ प्रपोजंतुजिउंनदीयनकाठ॥ तिउंक्षिणचंचलसंगमठाठ॥१५॥ पद्मछाया जिउंअतिचला॥ तरुणअवस्थाउर्मिजला॥ स्वप्नतुल्यइस्त्रीसुखअहे॥ तद्यपिनरअभिमानहिंगहे॥१६॥ स्वप्नतुल्यसभयहसंसारा॥ सदारोगदुखजाहिमंझारा॥ गंधर्वनगरकेसमजगगरे॥ मूरखतांअनुवर्त्तनकरे॥१७॥ रविकीगतिआगतीअधीना॥ आयूहोइनिरंतरक्षीना॥ जरामरणऔरनिकोदेखे॥ मूरखअपनोनाहिसुलेखे॥१८॥ सोईदिनअरुसोईरात॥ मूढधैरमनमैविख्यात॥ भोगनकोअनुधावनकरे॥ कालवेगकीसुद्धिनपरे॥१९॥ काचेघटकोनीरसुजैसे॥ आयूजाइसुक्षिणक्षिणतैसे॥ सफलवानजिउंकरेप्रहारा॥ तिउंतनुरोगसुकरेंसंहारा॥२०॥ वाघनजिउंजगजराडरावे॥ समोनिहारमृत्युसंगआवे॥ तुचपुनमासहाडअरुविष्टा॥ मूत्ररेतरक्तजिहनिष्टा॥२१॥ ऐसेतनुमेंकरअभिमान॥ मैराजायौलेवेमान॥

१ मक्षिकाकों. २ पानीकीशाला. (पर्व) मेंमानमाणी. ३ नदीप्रवाहमेंमामकाष्ठ:

अंतसमैतनुविशाहोई ॥ कैभस्मीकृमिआदिकसोई ॥ २२ ॥
औविकारिपरिणामीजोई ॥ आत्मादेहकदापिनहोई ॥ लक्ष्म
णजोतनुआतममान ॥ लोकदहनकोंपहेंभवान ॥ २३ ॥ दुःख
अहेंजगभीतरजेते ॥ तनुअभिमानहोंहिंसभतेते ॥ देहोहंयह
बुद्धिसुजोई ॥ नामअविद्याभाखीसोई ॥ २४ ॥ नाहंदेहचि
दात्माहैंये ॥ याविधिकीमतिविद्याकैये ॥ अविद्याकरहोवेसं
सारा ॥ विद्यातांहिसुदएनिवारा ॥ २५ ॥ तांतेभ्रातमोक्षउरध
रो ॥ विद्याभ्यासयत्नबहुकरो ॥ कामक्रोधादिकहेंजेते ॥ मो
क्षपंथकेवैरीतेते ॥ २६ ॥ शत्रूसूदनतांहिनिवारो ॥ मेरेवचनभले
उरधारो ॥ तिनमैक्रोधअहेजगजोई ॥ मोक्षविनाशकएकोसोई ॥ २७ ॥ क्रोधसंगजगजोनरकरे ॥ सौत्हदभ्राततातसंह
रे ॥ क्रोधमूलमनतापपछानो ॥ क्रोधमूलजगबंधनजानो ॥
॥ २८ ॥ क्रोधकरेनिजधर्मसुघात ॥ तांतेक्रोधतजोममभ्रात ॥
क्रोधवडोजगशत्रुसुहेए ॥ वैतरुणीनदित्रिष्णापैए ॥ २९ ॥ सं
तोषनामनंदनवनजानो ॥ शांतिसुकामधेनुपहिचानो ॥ तांते
शांतिभजोउरमाही ॥ शत्रूतेरोकोइकनांही ॥ ३० ॥ प्रज्ञातनु
मनइंद्रियप्रान ॥ आपसुइनतेभिन्नपछान ॥ स्वयंज्योतिअति
शुद्धसुआहि ॥ हीनविकारआकृतिनाहिं ॥ ३१ ॥ तनुइंद्रियपु
नप्राणनियारे ॥ जौलौनहिंआत्मनिरधारे ॥ तौलौपावेदुःख
अपारा ॥ माहिसुजगतमरेबहुवारा ॥ ३२ ॥ तांतेप्राणादिकतेंन्यारो ॥ लक्ष्मणउरआत्मनिरधारो ॥ बाहिरकरोसर्वव्यव
हारे ॥ खेदनहोइसुरंचतुमारे ॥ ३३ ॥ प्रारब्धंसोभोगोभ्रात ॥ सु

१ तुप. २ बुद्धि.

खदुखजोजगमैविख्यात ॥ कार्यसुकरोअहेजगजोई ॥ लेपन तोकोरंचकहोई ॥ ३४ ॥ बाहिरकरकर्तत्वविकार ॥ अंतरशुद्ध स्वभावनिहार ॥ कर्मअहेजगभीतरजेई ॥ तोमैलेपकरेंनहिते ई ॥ ३५ ॥ मेरोकथ्योज्ञानयहसार ॥ तुमलक्ष्मणउरअंतरधार ॥ जगतदुःखकीपीडाजोई ॥ तोमैनाहिकदाचितहोई ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गिरिजायाविधिरामजीकथ्योभ्रातप्रतिज्ञान ॥ पुनमाताप्रतिभाषयोसुनोसकलदैकान ॥ ३७ ॥ ॥ चौपाई ॥ मातायहमैभाष्योजोई ॥ तुमउरअंतरधारोसोई ॥ ममआग मनप्रतीक्षनकरो ॥ दुःखसकलउरकेपरहरो ॥ ३८ ॥ कर्मपंथमै आएजेई ॥ सदाइकत्ररहेंनहितेई ॥ नदीप्रवाहयथासरभारे ॥ कबीमिलेकबिजाहनिआरे ॥ ३९ ॥ चौदावर्षकालहैजेतो ॥ आधेक्षिणजिउंजावेतेतो ॥ दुःखसकलउरकेपरहरो ॥ मायमो हिअनुमोदनधरो ॥ ४० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यांविधिकरोसुमा तंअबमोपरकरुणाधार ॥ तौबनवाससुमोहिकोहोवेगोसुख कार ॥ ४१ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ इमरामउचारउमामुखतेतवदंड प्रणामकरीधरमांही ॥ चिरकालपरेधरऊपरवैअरमातकिपाद गहेकरमांहीं ॥ तबमाइउठाइसुगोदलएशिरचूमतनीरवहेद्रिग मांहीं ॥ बनरामचलेपिखमाततबैसुअसीसकहेअपनेमुखमां हीं ॥ ४२ ॥ सुरसाध्यकहैंजिनकोजगमैअरुहैंपितरांभवमैवि खिआता ॥ पुनऔरमहारिपिपूषभयोयमऔवरुणापुनजेवसु धाता ॥ दिशिमित्रअदित्यक्षिपादिनसंवतमाससमेतसुइंद्रवि धाता ॥ सुततेवनमैकलिआनकरेंइमभाषतहैरघुवीरकिमाता

१ साध्यनामकदेवा २ पितृदेव. ३ पूषानामकदेव. ४ अष्टवसु

॥४३॥ वृतरासुरमारनकोजबहीगजराजचढेसुरराजपधारे॥ सुरमंगलजोहिततांहिंकरेवहमंगलहेसुतहोइतुमारे॥ सुसुधारसलेनचलेविनतासुत सीसजनैविनतापगधारे॥ विनतातब मंगलजोइकरेवहमंगलतेरघुवीरपियारे॥ ४४॥ श्रुतिसिम्रिति वेदसुविद्यासभैपुनवेदनकेऋषि अंगउचारे॥ ऋषिदेवसुमंत्र अथर्वणजूसभहीयहिरक्षकहोहिंतुमारे॥ ऋषिसातसुनारद सिद्धमहासुरचारयशाऋसुसोमउदारे॥ ग्रहऔरनक्षत्रसुदेव सभैवनमैसुतपालकहोहिंतिहारे॥४५॥सुमहाविपनागपिशाचवडेपुनराक्षसयक्षभयानकसारे॥गजासिंहवियाघरकोलव डेपुनकीटपतंगरसु गैंडेउचारे॥तरखा रिछदंसमहाविछूआअतिक्रूरसुभावसुजांहितिहारे॥ सभक्रूरसुभावतजैवनमैसुतते हितसोमसुभावसवारे॥४६॥ ॥चौपाई॥ ॥अंतरिक्षवासीहैंजेते॥ तकल्यानकरेंसुततेते॥ भूतलऔरपतालनिवासी॥ स्वस्तिकरेतुमकोसुखरासी॥४७॥ ॥दोहा॥ ॥ब्रह्माविष्णु महेसजेदेवनमैपरधान॥ सोएवैठेपथचलेकरेंसुतवकल्यान ॥४८॥ ॥नराजछंद॥ ॥सदासुखीरहोवनेनपूतदुःखकोलहो॥अरातिपुंजजीतकैविभूतितेजकोगहो॥सकेतशंखदुंदभीवजाइफेरकैवरो॥सुमाततातदासकेकलेशपुंजकोहरो॥४९॥ ॥सवैया॥ ॥इहभांतअसीसदईजननीतवरामचलेवनसीसनिवाए॥ तवरोइसुमातलगागलमैशिरचूमसुअक्षतभाललगाए॥ इहरामअसीसपठेनरजोउठप्रातसमैमनप्रेमवढाए॥ कविसिंहगुलावसदासुखसोंतनअंतसमैंहरिकेपुरजाए॥

१ गरुड़. २ व्याघ्र. ३ वनसूकर. ४ गैंडा. ५ चराख. ६ समोदय. ७ सत्रु. ८ ग्रह. ९ प्रवेश करो.

॥५०॥ ॥चौपाई॥ ॥ लक्ष्मणतांहिंसमैंरघुनाथे॥ करीप्र
णामजोरनिजहाथे॥ हरपनैनजलगदगदवानी॥रामचंद्रप्र
तिकह्योभवानी॥५१॥राममोहिउरसंशयजोई॥तुमकाट्यो
करुणाकरसोई ॥ मैसेवाहितचालोंसाथ ॥ आग्यादीजेमम
रघुनाथ॥५२॥ ॥दोहा॥ ॥मोहिअनुग्रहकीजीयेसंगच
लोंवडभाग॥नांतरअपनेप्राणजोदेवोंसनमुखत्याग॥५३॥
लक्ष्मणकोहठपेखकैरामकह्योचलवीर॥सीताकेसमझानको
वहुरगएरघुवीर॥५४॥ ॥भुजंगप्रयातछंद ॥ ॥जवेरा
मआएतवेसीअजाने॥लयोहेमभांडेजलंआपताने ॥ भले
पादधोएपुनावैठआगे॥ पुछेसीयवातैंवडेभागजागे॥५४॥
कहानाथसेनाविनासेनआए॥ शशीस्वेतछत्रंनहीसीसछाए॥
नहीवादवाजेभयोकौनहेतू ॥ नहीकीटसीसंकहाधर्मकेतू॥
॥५६॥वडोराजपायोभयोहर्पतोकों ॥ चलेवेगआएकहोस
र्वमोकों ॥ हसेरामवोलेकहोंसीयतोकों॥दयोदंडकारंण्यको
राजमोकों ॥ महासत्यवादीसुराजादयालं ॥ दयोराजजो
ईकरोंजाइपालं ॥५७॥ अवैवेगजाऊंवनंसीयप्यारी ॥ क
हीवातसाचीनझूठीहमारी ॥ जहांमातमेरीरहेतातराजा ॥त
हांनीतठाढीरहोसेवकाजा॥५८॥ ॥शंकरछंद॥ ॥
सुनरामकीयहवातसीताभईउरमैभीत ॥ वोलीतवैपुनआप
सीताव्याकुलाअतिचीत ॥ किहंहेतुतेवनवासभूपतिदयोआ
पउदार ॥ इहराममोहिवखानियेमनतनभयोहमार ॥५९॥
तवरामआपवखानयोसुनजानकींदेकान॥संतुष्टभूपतकैकई

लमूलजोभोजनवनेतुमखाइछोडोजोइ॥ तिहखाइकेविचरों
सुखीपुनमेसुधासमसोइ॥तवसाथविचरोंराममैकुशकाशकं
टकजोइ॥ समफूलकेसुविछावनेममहोंहिगेवनसोइ॥६८॥
सवैया॥ ॥रामकलेशनदेंउतुमैतवकारयमैकरहोंवनमां
हीं॥ औरसुनोजववालहुतीइकज्योतशिआइपिताघरमां
हीं॥रामकह्योममपेखतिनेपतिसंगवसेंकवहींवनमांही॥वा
क्यसुब्राह्मणहोइतवैतुमसंगचलोंजवमैवनमांही॥६९॥ क
छुऔरकहोंममसंगगहोसुनकैमनभीतरआइजवी॥ सुरमा
यणजेवहुवारसुनेंतिनब्राह्मणकोतुमपूछअवी॥ द्विजराजक
होपुरऔधहुतेवनरामगएविनसीयकवी॥ द्विजराजवखान
हिजोमुखतेतुमरामत्यागहुमोहितवी॥ ७०॥ तवसंगचलो
सुनरामअवैतवकारयकीवननीतसहाई॥ जवमोतजरामसु
जाहुचलेतवप्राणदियोंछिनमाहिवहाई॥ इहभांतहठीउरसीय
जवैतवज्ञानलयोमनमैरघुराई॥ममसंगचलोतवरामकह्यो
अवकाजवनेनहिढीलगाइ॥ ७१॥ ॥**चौपाई**॥ हारअ
भरणअहैंतवजेते॥ वेगअरुंधतिदोजेतेते॥ ब्राह्मणकोदेधनहुं
अपार॥हमचालेंअवविपिनमझार॥७२॥ लक्ष्मणतुमअववे
गसुजावो॥ भक्तिसहिततुमद्विजवरल्यावो॥ अपनोधनअ
वदेवेंताहिं॥ हमसोचलेंअवीवनमांहिं॥७३॥ ॥**दोहा**॥
योंविधिरामहिजोकह्योतौलक्ष्मणतिहिंकाल॥ भक्तिसमेतवु
लाइकैआनेविप्रविशाल॥ ७४॥ ॥**चौपाई**॥ गोशतवं
दधनंवहुअंवर॥ दिव्यअभरणहुतेजेमंदर॥ कुटंवीशीलवंत

१ वनम

द्विजजेतू ॥ तिनकोंदयोसुरघुकुलकेतू ॥ ७५ ॥ मुख्यअभरण आंहितिहिंजेई ॥ दएअरुंधतीसीतातेई ॥ राममातसेवकजे आंहिं ॥ रामदयोधनवहुविधितांहिं ॥ ७६ ॥ ॥ शंकरछंद आपनेपुनसेवकनधनदयोरामअपार ॥ पुरवासिऔपुनदेश केजेहुतेविप्रहजार ॥ देतांहिकोधनवहुविधाउरप्रीतिचित्तउ दास ॥ पुरराजरामसुत्यागकैपुनेलयोवैवनवास ॥ ७७ ॥ लक्ष्म णतवैनिजमातकोकौसल्लिआढिगंआणि ॥ समर्पमातातांहि कोपुनचापलैनिजपाणि ॥ आइरामसुसनमुखंपुनरत्योठाढो होइ ॥ रामसीतालक्ष्मणोनृपधामचालेसोइ ॥ ७८ ॥ ॥ छपैछंद सानुजरामसुसीयचलेंनृपपंथमैसोहैं ॥ सभलोकनकीओररा मपुनसानंदजोहैं ॥ श्यामवरणतनुकामकोटिद्युतिअतिसुखदा ई ॥ हनेअंधेरोकांतिकरेगतिमंदसुहाई ॥ सुपादन्यासजगपाव नोपदपदमैरघुवरकरे ॥ इहभांतभवानीरामजीसतपितमंदरमै वरे ॥ ७९ ॥ इतिश्रीमदअध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवा देअयोध्याकांडेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ श्रीम हादेवउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सानुजसीयसमेतहरिआवत पिखपथमांहि ॥ वोलेनागरपरस्परमनमैअतिविस्मांहि ॥ ॥ १ ॥ कैकेयीवरदानसुनभएदुखतसभलोई ॥ सत्यसंधभूप तिभनेयाजगमैसभकोइ ॥ २ ॥ इस्त्रीहेततज्योजिनेरामसुप्यारो कौर ॥ सत्यसंधभूपतिनहीभयोकामवशवौर ॥ ३ ॥ कथंकक ईदुष्टनेरामदयोवनवास ॥ क्रूरकर्मअतिमूढधीकरेसकेलसु खनाश ॥ ४ ॥ हेजनईहांनेहिंवसैंचलेंअवैवनमांहिं ॥ रामसुसी

१ पास. २ नगरकलोक. ३ लोक.

तासानुजोजहाँजानकोचाहिं ॥५॥ ॥सवैया॥ ॥देखहुसी
यचलेपदसोंकवहूंनहिलोकननैननिहारी ॥ रामचलेपदसोंप
थिमैअर्जुनागजवाजिनकीअसवारी॥जावतरामपिखोद्रिग
कैतनुकोटिमनोजनकीछविवारी॥ जाइनकोवनवासदयोव
हहैजगक्रूरमहान्रपनारी ॥ ६॥ ॥चौपाई॥ ॥कैकईनाम
राक्षसीआहि॥सर्वविनाशकीयेपुनताहि॥ सीतापदसोंचलै
कुमारी॥ रामपेखदुखहोसीभारी॥ ७ ॥ वलवानविधिहैजग
माही ॥ पुंप्रयत्नकोवलकछुनाही ॥ याविधिदुखव्याकुलजन
भए॥ वामदेवतवबैनअलए॥८॥ रामसीयलक्ष्मणपथिपेख॥
मतनुमशोचकरोसुविशेख॥रामपिखोतुमपथिमैजोई ॥ आ
दिनरायणविष्णुसुसोई ॥ ९ ॥ जनकनंदनीलक्ष्मीआहि॥
योगमायआपेंरिपिताहि॥ श्रीपतिकोअनुगामीजोई॥ शेषपै
छानोलक्ष्मणसोई॥१०॥ रामसुमायागुणअनुसार॥ भासत
हैनानाआकार॥रजगुणयुक्तरामविधिभए॥ निखिलजगतपु
नजोनिरमए॥११॥सतगुणसहितविष्णुतनुधारे॥तीनलोकभु
जवलप्रतिपारे ॥ तमसंयुक्तरुद्रवपुधरे॥ अंतसमैसभजग
संहरे॥१२॥ ॥सवैया॥ ॥ मनुसूरयकोसुतसेवकथोतिंहँ
आपदपेखसुमीनभए॥ तिनपालनरामसुकीनतवीपरलैजल
नावचढाइलए॥ सुरनीरधपूरवजोमथएगिरिमंदरडूवपताल
गए॥गिरिपीठसुधारलयोतवहीइनकूरमरूपतवैसुकए॥१३॥
धरणीजवडूवपतालगईइनसूकररूपसुरामसवारे॥ रघुनंदन
तोलनकीनतवीधरणीपुनरोपसुदाढकिनारे॥नरसिंहभयेभव

पूरवएप्रहलाददएवरकैप्रतिपारे॥ सभलोकहकंटकराक्षसजो जगरामवहीनखसाथविदारे॥१४॥सुतराजहरेपिखआदिति जोअतिदीनभईहरियाचनकीनो॥ वनवामनराजलयेवलते तिंहिकेसुतकोइनफेरसुदीनो॥जववांहुजनीचभएजगमैधर णीपरभारकच्योतिनपीनो॥ भृगुवंशविपेतवरामजएधरवा हुजभारकरयोसभक्षीनो॥ १५॥ ॥ शंकरछंद॥ ॥ वही इश्वररामजीअवभयेनरअवतार॥रावणादिककोटिराक्षसह नेंगेवलधार॥मानुष्यकैमरणातिसेविधिआपकीनवखान॥ यांतेभयेहरिआपमानुपनासमर्थसुआन॥ १६॥ भूपदशर थकीनतपसाराधयोहरिराइ॥ पुत्रकीइछाकरीहरिभयोपूत सुआइ॥ सोइविष्णुसुरामजीदशकंधकेवधकाज॥ संगल क्ष्मणजांहिंगेवनलोकपेखोआज॥ १७॥ विष्णुमायाजान कीकरपालवहुरसंहार॥ राजकैकईकारणोवननाहिकीनवि चार॥ कालपूरवनारदोकहिगयोआपविचार॥ वनजाइके अवरामजीतुमहरोधरणीभार॥१८॥रामआपवखानयोव नजांउप्रातसुकाल॥ रामहितचितातजोतुमसुनोलोकसुवा ल॥ रामरामसुजेजपेंपुनलोकयाजगमाहि॥ तिनजन्ममृत्यु भयादिकोजगकदेहोवेनाहि॥१९॥कैसेपरातमरामकोपुनदुः खशंकाहोइ॥रामनामसुमुक्तिदेवेऔरकलूनकोइ॥ मायाम नुष्यस्वरूपकैविचरेसुलोकनमांहिं॥ सुविंदवहैसभलोककोन हिजानहैकोतांहि॥२०॥सात्विकोंकैंभजनहितदशकंधकेवध काज॥भूपवांछितदैनहितइनलयोमानुपसाज॥इहभांतभाप

१ क्षत्रिय २ परशुराम ३ नटकीठगंताहै ४ भक्तजनोंके

सुमैनलीनीवामदेवक्पीश॥ सुनविप्रकेमुखकथालोकनरा
मजान्योईश॥२१॥ ॥दोहा॥ ॥जवलोकनसंशयगयोचितवें
हरिउरराम ॥ तवैमुनीश्वरऔरकछुभाषेकरुणाधाम॥२२॥
रहेंससुसीतारामकोजोचितवैनरकोइ॥ रामभक्तितिनकोंस
दाज्ञानसहितपुनहोइ ॥२३॥ तुमराघवकेपरमप्रियपरमगो
प्यग्रहजान ॥ राखोपरमदुराइकैकोजोनाहिंवपान ॥२४॥
इहिविधितहांवपानकैगयेमुनीश्वरधाम॥ लोकननेपुनतांसमे
लपेपरातमराम ॥ २५॥ ॥सवैया॥ ॥ तवरामगयेपितुकें
निजमंदरनाहितहांकिनजातहटाये ॥ वहिसानुजसीयसमेत
तहांढिगजायविमातकिवैनअलाये ॥ वनवासकल्योहमको
जननीतहँजावनकेहितहैंहमआये ॥ अवभूपकहेअपनेमुख
तेहमजांहिंशितावनढीलसहाये॥ २६॥ ॥दोहा॥ ॥ गिर
जायाविधिरामजीजवैसुकीनवखान ॥ तवैकैकईवेगकैउठी
हरपउरमान॥ २७॥ ॥ सवैया॥ ॥ सानुजरामसुचीरद
येतिनजानकिकोपुनचीरफराये ॥ रामपटंवरतारतवैवनची
रभलीविधिसोंतनलाये॥ श्रातकरीलघुरीतवहैनहिजानकि
जानतरीतसुकाये॥ राममुखांवुजओरपिखेकरचीरमहांउर
माहिलजाये ॥ २८ ॥ रामलयेकरचीरवहीधरजानकीअंग
नआपमुरारी॥ देखसुचीरधरेतिनकेपुनरोइउठीसगरीनृपना
री॥वैसुनआपवसिष्टतवैपुनकैकईसोंरुपवाक्यउचारी॥ दुष्ट
वनवाससुरामदयेकिमसीयकुदेवतचीरसँवारी ॥ २९॥ प
तिसंगपतिव्रतधारचलेसियआपवडेजवप्रेमवढाये॥ तवधा

१ एकांतमें २ उतार.

रदिवांवरभूपणसोंअतिभूपितहीवनभीतरजाये ॥ पतिसंग
फिरेवनभीतरएगमकाननकेसभदूरमिटाये॥इमभापवसिष्ट
सुमौनगहीनृपआंपतवैसुसुमंतवुलाये॥३०॥ रथआनसुमं
तसुरोइकहीचढजाँहिंवनेवनजीवनप्यारे ॥ इहभाँतिउचार
सुरामपिखेपुनसीयसुमित्रजओरनिहारे॥ द्रिगनीरवहेअति
रोवतहैदुखभारभयोसुगिरेधरभारे ॥ रथसीयचढीपतिराम
पिखेकरजोरसुभूपतिसीयजुहारे॥३१॥शंकरछंद॥॥पुन
रामकरीप्रदक्षिणाभूपतिचढेरथमाँहिं ॥ लक्ष्मणदोऊधनुख
ङ्गतूणीधारनिजभुजमाँहिं ॥ रथवैठकेपुनवोलिओसुनसार
थीमनमाँहिं ॥ वेगरथकोहाँकीयेअवढीलकीजेनाँहिं॥३२॥
॥ सवैया॥ ॥रथठाँढकरोरथठाँढकरोइमभूपतिआपसुमं
तउचारे ॥ सुचलाइचलाइसुरामकरीरथताँहिंहकेअतिसैह
ठधारे॥कछुदूरगयेहरिजोपुरितेनृपखाइतवारगिरेभुविभारे॥
पुरिवालकवृद्धयुवाद्विजसत्तमवेरथकेपुनसंगसिधारे॥३३॥
॥ ॥गीयामालतीछंद॥ ॥तिष्टतिष्टसुरामजीमुखभापते
जनजावहीं॥रथवेगरामचलाइओनहिंताँहिंसंगतिपावहीं॥
राज्ञासुवहुचिररोइकैपुनसेवकिनकोयोंकही॥ राममातकुस
ल्याघरलेचलोमांकोंसही ॥ ३४ ॥ कछुकालमेरोजीवनोंतहँ
होइप्राणउडाँनियो॥ अवनाँजियोंचिरकालमेंविनरामयाँज
गजाँनियो ॥ जववरेभूपतिमंदिरेधरगिरेव्याकुलव्हैसही ॥
चिरकालसंज्ञापाइकैवैठेमहीवोलेनहीं ॥३५॥ ॥दोहा॥ ॥
याँविधिभूपतिधरपरेव्याकुलउरपछुताँहिं ॥ रामकथागिरि

१ दिव्यांवर. ५ शोक. ३ मूर्च्छा.

जासुनोंसुनतपापमिटजाँहिं ॥ ३६ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तव
रामगयेतमसातटमैंसुखसंगवसेतरुकीपरिछाँहीं ॥ जलपान
करेनहिंअन्नगहेधरसोइरहेहरिसीयसमाँहीं ॥ लघुभ्रातसुमं
तसमेततहाँनिशिपालकरीधनुलैकरमाँहीं ॥ पुरिलोकसभेढिग
रामहिंकीनिशिवासकीयोपुनजाइतहाँहीं ॥ ३७ ॥ रामलिजा
वहिंगेपुरिमैनहिंजाउतवैहमहूँवनजाँवें ॥ लोकनकीमतियोंल
खकैरघुवीरमहाँउरमेंविसमाँवें ॥ नाँहिंचलोंजवमैंपुरिमैंतव
लोकसभेउरमैंदुखपाँवें ॥ रामसुमंतवुलाइकहीरथआनसु
मंतअवैवनजाँवें ॥ ३८ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सोयेजनसभहेरकै
रामसुआज्ञादीन ॥ जोड्योतवैंतुरंगसिउँरथसुमंतअतिदी
न ॥ ३९ ॥ रामसीयलक्ष्मणचढेवेगचलायोसोइ ॥ लोकन
छलवनकोगयेअवधप्रतीकछुहोइ ॥ ४० ॥ प्रातउठेजन
दुःखउररामनिहारेनाँहिं ॥ रथनेमीमारगपिखतगयेसुपुरिके
माँहिं ॥ ४१ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इतलोकचिंतारतरामसियाउ
तस्यंदनवेगसुमंतचलाये ॥ वडदेशनिहारतरामसियावल
जाइकवीतटगंगसुआये ॥ जगपावनगंगनिहारतहींहरिरा
मसियानिंजशीशनिवाये ॥ मनसानंदतीरनिवासकरेजल
पावनकैसगलेपुननाये ॥ ४२ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ गंगाकेत
टशिंशेपातरुतलकीननिवास ॥ रामलखनसीताभलेश्रिंग
वेरकेपास ॥ ४३ ॥ आयेरामसुगुहसुनेलोकनकह्योसुजाइ ॥
सखासुस्वामीजानकैढिगआयोगुहधाइ ॥ ४४ ॥ **चौपाई** ॥
भक्तिसहितउरमैंउमगायो ॥ फलमूलादिउपांइनल्यायो ॥

१ धितत. २ शशाम ३ भेट.

आगेआनधरीगुहराम ॥ बहुरकरीतिहंदंडप्रणाम ॥ ४५ ॥
॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥ उठाइरामसुवेगहीकरप्रेमनि
जगललाइयो ॥ रामकुशलसुपूछयोगुहहाथजोरसुनाइयो ॥
मैंधन्यमेरोजन्मआजनिषादलोकसुपावनो ॥ भयोपरमानं
दतेरअंगसंगसुहावनो ॥ ४६ ॥ निषादराजसुरामजीतवदास
कोउरजानिये ॥ इहआहितेरोरामजीहमपालवालसुमानिये ॥
नगरमैंचलदेवलंकरदासकोग्रहपावनं ॥ फलफूललीजेराम
जीतवअर्थराखेभावनं ॥ ४७ ॥ मैंदासतेरोरामजीभगवान
किरपाकीजीये ॥ इहठौरकरोसुवासनीकेनीरपावनपीजीये ॥
रामतांकोभाषियोममसखेवचनसुनीजिये ॥ प्रसंन्नअतिसैं
मैंभयोकछुकहोंबातसुकीजिये ॥ ४८ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ ग्रह
नगरमाहिनमैंवरोंसोवरपचौदहजान ॥ फलफूलपांवोंनाकदी
जोऔरदेवैआन ॥ अतिसखातूंममवल्लभोतवराजआहिसु
जोइ ॥ वहुसगलमेरोमैंपिखोंनहिआहिअंतरकोइ ॥ ४९ ॥ वट
क्षीरल्यावोजाइकैइमभापियोरघुराइ ॥ वटक्षीरसुंदरसंपुटति
नलयोतुरतमगाइ ॥ वटक्षीरकैकचकुंचितांकीजटालीनवना
इ ॥ रामलक्ष्मणभ्रातनेतिहहेरगुहविसमाइ ॥ ५० ॥ जलपानकै
सहसीतयात्रिणकुशापातविछाइ ॥ रचसेजलक्ष्मणनेदईतह
सोरहैरघुराइ ॥ जैसेसुसोवैंनगरमैंपर्यंकमहलउदार ॥ तैसे
सुसोयेसीयसोंतहंजाइकविवलिहार ॥ ५१ ॥ ॥ सवैया ॥
लक्षमंननवैधनुलैकरमैकरवाननिषंगकसेकटिमाही ॥ द्रिग
चारनिहारतचारदिशारघुवीरसुपालकरीनिशिमाही ॥ गुहसं

गभयेतिनकेनिशिमैपुनआपसरासनलैकरमाही ॥ निधिनी
रसवेंअहिऊपरजेसुरकाजपरेगिरिजाधरमाही ॥ ॥५२॥॥
॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकां
डेपंचमोऽध्यायः॥५॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥दोहा॥
॥गिरिजारामनिहारकेगुहनैनोंजलजाइ॥ लक्ष्मणकोंतवबो
लियोपरमसुनिम्रतभाइ॥१॥ ॥शंकरछंद॥ ॥ तुमभ्रा
तदेखोरामकोसहसीयसुंदरश्याम ॥ धरकुशापल्लवसेजमैंअ
वरेहसोइसुरांम ॥ जोसोवतेपर्यंकहेमसुभवनपाटविछाइ ॥
कैकईकारणदुःखकोविधिदईरामवनाइ ॥ २ ॥ भलमंथराम
तिमानकेकैकईपापसुकीन ॥ पुनउमासुनगुहकोमतोलक्ष
मंनप्राहप्रवीन॥सुनसखेमेरेवाक्यकोगुहआपनेमनमाहि॥
सुखदुःखकारणजगतमैसुनऔरकोईनाहि॥३॥निजकरमपृ
रवजोकरेनरलाइनीकेप्रीत॥सुखदुःखकारणहोइसोजगधा
रमनमैंमीत॥सुखदुःखदाताऔरकोयहहैकुबुद्धिअपार॥मै
करोंयहअभिमानझूठोजनेसगलविकार॥४॥निजकर्मसूत्र
सुमैफसेइहजंतजगमैआप॥निजसुहृदमीतउदासवैरीलये
आपसुथाप॥ जोकरमकरेसुजगतमैफलभोगहेपुनसोइ॥
यहनेमनीतपछानियेनहिअन्यथाइहहोइ॥ ॥५॥ ॥चौ
पाई॥ ॥सुखदुखयाजगभीतरजोई॥ करमअधीनसदा
नरहोई ॥ जोजोफलआवेजगमाहीं ॥ भोगेताहिस्वस्थ
मनमांही ॥ ६ ॥ भोगागमनविवरजनजोई ॥ चाहेनहि
मनभीतरदोई॥आगछतुगछतुवासोई॥भोगविरसजगभी

तरहोई ॥ ७ ॥ देशकालकीसंगतिपाइ ॥ जांविधिकेनरक
र्मकमाइ ॥ शुभाशुभतांफलभोगेसोई ॥ नाहिकदाचितउ
लटोहोई ॥ ८ ॥ भलोबुरोफलजोकछुहोई ॥ हरपविपादकरेन
हिकोई ॥ धातानेरचदीनोंजोई ॥ सोनउलंघसुरासुरहोई ॥
॥ ९ ॥ सुखरदुःखजगभीतरभारे ॥ सदाहोहिनरदेहमझारे ॥
पुन्यपापतेउपजेदेह ॥ सोहैसुखअरुदुखकोगेह ॥ १० ॥ सूखअ
नंतरहोवेदूप ॥ दुःखअनंतरहोइसुसूख ॥ दोनअलंघसर्वकोअ
हे ॥ दिनरात्रीजिमनरउरगहे ॥ ११ ॥ सुखकेबीचरहेदुखमी
त ॥ दुखकेबीचसुसुखधरचीत ॥ दोऊपरस्परमिलेसुऐसे ॥ ज
लअरपंकमिलेंजगजैसे ॥ १२ ॥ ज्ञानीधरधीर्यउरमांहीं ॥
इष्टअनिष्टपाइजगमांहीं ॥ हरपविपादनतांमैकरे ॥ मायासर्व
सुयौंमनधरे ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुहलक्ष्मणइहभापते ॥
भयोसुविमलअकाश ॥ रामसुनीरस्पर्शकैभएसुचेतउदास
॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ रामकह्योद्रिढनावअवैगुहजाइलि
आवसुमीतहमारे ॥ जावहिंवेगसुप्रातभयोचढिनावभलो
विधिगंगसुपारे ॥ सुनरामकेवाक्यनिपादपतीचलिआपगए
नलगीकछुवारे ॥ शुभलक्षणनावसुबीनलईतिंहिलपहुतोज
हरामसुरारे ॥ १५ ॥ ममनाथसुसानुजसीयसमांवलिनावच
ढोइहनावसुआई ॥ अवआपचलावहुंमैविधिसोंपुनऔरच
लावहिंगेममभाई ॥ गुहरामतथेतिवखानतवैभुजथांभसुजा
नकीआपचढाई ॥ गुहहाथअलंवनकैगिरजापुनअच्युतनाव
चढेरघुराई ॥ १६ ॥ सभआयुधलैअपनेकरमैपुननावचढेरघु

वीरकेभाई॥ गुहजातिसमेंतसुनावभलेअतिपावननीरमैआ
पचलाई॥ करजोरकरीविनतीतवसीअधवीचजवैचलनाव
सुआई॥ अभिवंदनतेपदपंकजकोसुनगंगभलेविनतीमम
माई॥ १७॥ ॥दोहा॥ ॥॥ वनोवासतेमैजवैआवोंगीघर
माइ॥रामलखनकेसंगपुनपूजोंगीतवपाइ॥ १८॥ सुरामां
सउपहारकैनानावलीअपार॥ पूजोंगीमैगंगतवपरमसुआ
दरधार॥ १९॥ यांविधिभाष्योजानकीगएसुपरतटमाहि॥पां
वनकरेसुभूंमिपदसनेसनेपथिजांहि॥ २०॥ गुहरघुपतिप्रति
भापयोसंगचलोंश्रीराम॥ आज्ञामोकोदीजिएसुराजेंद्ररघु
रांम॥२१॥देहुनआइसरामजवतजोंप्राणसुखदैन॥सुननि
पादकोवचनयहवोलेकरुणाऐन॥२२॥ ॥सवैया॥ ॥घर
वीचरहोसुनिपादपतीममआवनपंथसुनीतनिहारो॥दर्शचा
रसमावसदंडकमैपुनआवहुंवेगसुमैउरधारो॥नहिरांमसुझू
ठवखानतहैयहसत्यभलेउरमाहिविचारो॥ इमभापसुराम
मिलेगलमैभरधीरसखेनहिफेरउचारो॥२३॥ इहभांतवखांन
हटाइदएगुहसोदुखसोंघरमाहिगए॥ तिंहिठौरविपेम्रगपावन
एकेसुरांमसरांसनतांनहए॥ वनपावकमाहिप्रकाइतिनेपुनदे
वनकेहितहोमकए॥ करभोजनशेपसुतीनजनेतरुमूलसुखी
निशिकालनए॥ २४॥ ॥दोहा॥ ॥लक्ष्मनरामसुजान
कीपरमरूपकीरास॥ भारद्वाजआश्रमगयेवाहिरखरेसुपास
॥२५॥ तहंइकवटूनिहारकैरामकह्योतिहंवोल॥ दाशरथीइ
कुरामहैसीतालक्ष्मणनाल॥२६॥ वाहिरवनकेहैंखडेजाइकहो

मुनिपास ॥ सुनरघुवरकीबातकोबटुउरभयोउलास ॥ २७॥
वेगगयोमुनिपासवहुपदवंदेअभिराम ॥स्वामिनबाहिरहैंखरे
लक्ष्मनसीताराम ॥ २८॥ मोप्रतितोंहिवखानयोहेबटुवेगसु
जाइ॥ भारद्वाजमुनिपासतूंममब्रित्तांतसुनाइ ॥ २९॥ ॥स
वैया ॥ ॥सुनकैयहबातमुनीशगुणीउठआसनतेहरिकीढि
गआए॥ मुनिरामनिहारसुपूजनकैउरप्रेमभरेपुनबैनअलाए
करपावनपर्णकुटीचलकैंहगवारिजपाइनकीरजलाए ॥ इम
भाषमुनीश्वररामसीयालघुभ्रातसमाघरभीतरआए ॥३०॥
चौपाई ॥ ॥भक्तिभरेपुनपूजनकर्यो॥ कीयोअतिथ्यहर
पउरभरयो॥ तवसंगतितेरामउदार॥ आजुलख्योमैतमकोपा
र ॥ ३१॥ तेराआहिब्रतांतसुजोई॥ पूर्वभयोवहुरकछुहोई॥
सोमैजान्योसगलोराम ॥ तुमपरमात्मपूरणधाम ॥ ३२ ॥
मायाकरजगमनुजअकार ॥ जाहिततेरोहैअवतार ॥ ब्रह्मा
करीसुविनतीथारी ॥ तातेआयोभूमिमझारी ॥ ३३ ॥ जाहि
ततैलीनोवनवास॥ सोमेरेउरभयोप्रकाश॥ आगेकरोरामतु
मजोई ॥ मैजानोसगलोपुनसोई ॥ ३४ ॥ तेरीकरीउपासन
जाते ॥ ज्ञानदृष्टिकरजानोताते ॥ इतहपरंकिभनोमहार्थ ॥
आजुभयोमैरामकृतार्थ ॥ ३५ ॥ प्रकृतिपरेत्वंपुरुषपुरान ॥
रामभयोममनैननभान ॥ याविधिमुनिवरभाख्योजवही ॥
वोलतभयेरामपुनतवही ॥ ३६ ॥ सीतालक्ष्मणसंयुतराम ॥
प्रथमकरीमुनिपदप्रणाम ॥ करुणाभाजनहेमुनिथारे॥ हम
हैंक्षत्रीवंधुविचारे॥ ३७॥ ॥ शंकरछंद॥ ॥इमभाषमुनिहरि

परस्परमुनिपासरामनिवास॥निशिमाहिकीनोप्रातऊठभये अरुणप्रकाश ॥ मुनिसिष्यकीनेपल्लवनकररामयमुनापार॥ मुनिदृष्टमारगरामजीगयेचित्रकूटपहार॥३८॥ वालमीकिमुनीशकोजहंआहिपरमस्थान॥वहपरमआश्रमसुंदरोघनरहैं मुनिसुमहान॥सरकमलफूलेमालतीमृगऔविहंगहजार॥फलपुष्पजामैनीतहैंमनहरणउज्जलवारि॥३९॥ तहँपेखबैठेरामजीमुनिवाल्मीकिविशाल॥शिरसोंकरीअभिवंदनाश्रीभ्रातलक्ष्मणनाल ॥ रमानाथसुरामजीत्रईलोकसुंदररूप ॥ जानकीलक्ष्मणमिलेशिरजटामुकटअनूप ॥ ४० ॥ कंदर्पसुंदरवैतनूदृगकमलशोभअपार॥ तिहपेखमुनिसहसाउठेउरविस्मनैनउघार ॥ गललाइपरमानंदरामसुहर्षदृगजलजाइ ॥ अरघादिपूजनभक्तिकैमुनिकरेरामवठाइ ॥ ४१ ॥ लालनकीयोवहुभांतिमुनिफलमूलमिष्टखवाइ॥ तवरामनिजकरजोरकैमुनिकह्योआपसुनाइ ॥ वनदंडकाआयेहमेपितुआगयाउरमान॥तुमजानहोमुनिआपकारणकहाकरोंवखान॥४२॥ सवैया॥ ॥ किंचतकालसुसीयसमेतजहांसुखवाससुमेमुनिहोई ॥ आपविचारकहोमुनिपुंगवमोप्रतिसुंदरठौरसुसोई ॥ सुनिकैयहवातहसेमुनिपुंगवउत्तमठौरसुनोअवजोई॥ तुमहीसभलोकनिवासजगांजगभीतरऔरनभासतकोई ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जीवअहैंजगभीतरजेते॥ सदनतुमारोरामसुतेते ॥ यहसुसथानसधारणजोई ॥ रघुनंदनमैभाष्योसोई ॥ ४४ ॥ सीतासहितजहांसुखहोई ॥ रामविशे

षसुपूछ्योजोई॥ सोअवतोहिवखानोंराम॥ सीतासहितसुजो तवधामं ॥ ४५ ॥ समदृष्टीउरशांतिउदारे ॥ जीवनमाहिसु द्वैपनधारे ॥ तोकोंभजेंनिरंतरनीत ॥ रामतुमारोग्रहतिनची त॥ ४६॥ धर्माधर्मदोऊजिनत्यागे ॥ तेरेभजनविखेनितला गे ॥ सीतासहितरामतिनचीत ॥ तेरोमंदरअहेसुनीत ॥ ४७॥ तेरोमंत्रजपेशुभजोई ॥ तेरीशर्णसदाउरहोई ॥ निरद्वंद्वीनिर वासउदार ॥ तांकोरिदेसुतोहिअगार ॥ ४८ ॥ ॥ नराजछं द ॥ ॥ अहंभिमाननाजिनेसुशांतिचीतजेधरें ॥ अकामलो कसर्वमैनद्वेपरंचजेकरें ॥ डिलंसिलंसुकांचनंनिहारहैंवरोव रं ॥ समेतसीयरामतेहृदेसुतांहिकोघरं ॥ ४९ ॥ सुबुद्धि औमनंसदाजुतोहिमैलगाइहें ॥ सुतोहिध्यानधारकैसदाअ नंदपाइहें ॥ समस्तकर्मतेहितंकरेंनिरंतरंजनो ॥ ग्रहंसुतेनि हारहोंससीयरामतांमनो ॥ ५० ॥ अनिष्टवस्तुपाइकेनद्वेषजो फदेकरें ॥ सुइष्टवस्तुपाइकेनहर्षचितमैधरें ॥ सुमाइआसम स्तहेरतेभजेंनिरंतरं ॥ वसोसुरामचंदत्वंसुतांजनोमनोंतरं ॥ ५१ ॥ विकारसर्वदेहमैनआत्माविखेपिखें ॥ क्षुधात्रिपासु खंभयंसुप्राणवुद्धिमैलखें ॥ विमुक्तजोजगत्ततेसदाअसंग जोरहें ॥ ग्रिहंसुरामतांमनोसुवेदआपतेकहें ॥ ५२ ॥ पि खेंसुसर्वभूतकेगुहाशयंसुचेतनं ॥ अलेपकंअनंतसत्यसर्वगं सुएकनं ॥ इसेजिभक्तथारेयासुतांरिदांवुजेग्रहे ॥ ससीतया वसोसदाविशालमंदिरंअहे ॥ ५३ ॥ द्रिढातमासदाअभ्या सजेकरेंनिरंतरं ॥ सदासुतोहिसेवहेंकरेंनरंचअंतरं ॥ सुतोहि

नामकेजपेमिटेंसुपापजांहिके ॥ सुखीवसोससीयरामनीत
चित्ततांहिके ॥५४॥ ॥दोहा॥ ॥रामतुमारेनामकीमहिमा
कहीनजाइ ॥ जांप्रभावतेमैंऋपीभयोरामसुखदाइ ॥५५॥
॥ चौपाई ॥ ॥ प्रथममेमैंसुकिरातनमाही ॥ संगकिराति
वव्योजगमाही ॥ जनममात्रमैंद्विजतेभयो ॥ औरअ
चारशूद्रकोकथो ॥ ५६ ॥ वहुसुतशूद्रीमैंउपजाये ॥ चोरन
मिलपरद्रव्यचुराये ॥धनुपवाणकरभीतरधरों ॥ जीवनको
अंतकसमहरों ॥ ५७ ॥ एकसमेमुनिसप्तउदारे ॥ कानन
माहिंसुमोहिनिहारे ॥ तत्त्वंज्ञानीदीपतिमान ॥ अग्निअर
कसीप्रभामहान ॥ ५८ ॥ तिनकेपाछेमैंउठधायो ॥ लोभ
वडोमेरेउरआयो ॥ तिनकेथेतनवस्त्रसुजेते ॥ उरमैंचहोंउ
तारेतेते ॥ ५९ ॥ तिष्टंतिष्टंकहंजाहुसुभागे ॥ मोकोपिखमु
निपूछनलागे ॥ त्वंकिंआवद्विजाधमधाइ ॥ तवमैंतिनप्रति
दयोसुनाइ ॥ ६० ॥ मुनिसत्तमकछुतुमतेलेवों ॥सुतदारा
प्रतिमैंग्रहिदेवों ॥ वहुतेहैंमेरेसुतदारा ॥ भूखेकरेंसुभवनपु
कारा ॥ ६१ ॥ तिनकीरक्षधारउरमांही ॥ विचरोंमुनिमैं
काननमाही ॥ तवमेरेप्रतिवैंमुनिवोले ॥ सावधाननहिंअंत
रडोले ॥ ६२ ॥ जाइकुटंवपुछोतुमनीच ॥ जोजोपापकरों
दिनवीच ॥ तुमतिनभागीहोहुकिनाही ॥ भिंनभिंनपूछोघ
रमाही ॥ ६३ ॥ हमनहियाहिठौरतेजावें ॥ जवलगत्वंनहिघ
रतेआवें ॥ तवमैंकथ्योतथामुनिजावों ॥ पूछसभनकोघरते
आवों ॥ ६४ ॥ सुतदारामैंपूछेजवही ॥ मोप्रतिकथ्योराम

तिनलखही ॥ पापसर्वहैंतेरेमांही ॥ फलभागीहमहैंजगमां
ही ॥ ६५ ॥ सोसुनमेउरवढ्योविराग ॥ जाग्योकोपूरवकृत
भाग ॥ करविचारमनतहँचलआयो ॥ जहँतेमोकोमुनिनप
ठायो ॥ ६६ ॥ करुणापूरणमनमुनिसारे ॥ तहँठाढेमुनिमोहि
निहारे ॥ मुनिकोदरसनपायोजवही ॥ शुद्धभयोमेरामनतवही
॥ ६७ ॥ करतेत्यागेमेधनुवान ॥ मुनिपदपर्योसुदंडसमान ॥
नरकसमुंद्रगिर्योमैभारी ॥ हेमुनिलीजेमोहिउवारी ॥ ६८ ॥
आगेगिर्योदेखमुनिग्वाल ॥ मोप्रतिवोलेवचनरसाल ॥ उठो
उठोतेरीकल्यान ॥ सफलभयोसतसंगमहान ॥ ६९ ॥ क
छुतोकोहममंत्रवतावें ॥ तांहीकरतूंमुक्तिसुपावें ॥ पुनिमुनि
परस्परंसुनिहार ॥ ममदुरवत्तद्विजातमधार ॥ ७० ॥ उपेक्ष्या
योग्यअहेयहनीच ॥ एकसुभापर्योमुखवीच ॥ अपरकहेंशर
णागतिआयो ॥ मोक्षपंथकहंवनेछुडायो ॥ ७१ ॥ याविधिभा
पपरस्परराम ॥ भयेकृपालुमुनीनिहकाम ॥ तेरारामनामहैजो
ई ॥ व्यत्ययवर्णसुभाष्योसोई ॥ ७२ ॥ यहीठौरमनकरोइका
गर ॥ मरामरायोंजपोसुसादर ॥ वहुरोहमआवेंगेजौलौ ॥
जपोनिरंतरयहतुमतौलौ ॥ ७३ ॥ दिव्यज्ञानयुतवैमुनिजेई ॥
यौंममभापगयेपुनतेई ॥ तिनकीयोउपदेशसुजैसे ॥ जपोंनिरं
तरमैपुनतैसे ॥ ७४ ॥ जपतैकागरमेमनभयो ॥ वाहिरज्ञानभू
लसभगयो ॥ याविधिकालवहुतविगतए ॥ मेरेतनमनानिह
चलभए ॥ ७५ ॥ जनसंगतिमेरीमिटगई ॥ वल्मीकीममऊपरि
भई ॥ युगसहस्रशुभवीत्योजवही ॥ आएमुनिकरुणाकरतव

ही ॥ ७६ ॥ निकसोयोंमुनिभाप्योजवही ॥ सुनिकेवेगउठ्योमै
तवही ॥ वल्मीकीतेनिकस्योऔसे ॥ फोरकुहीरतरुणरविजै
से ॥ ७७ ॥ मोकोपेखब्रह्मुरमुनिभाख्यो ॥ वाल्मीकिममनाम
सुराख्यो ॥ वल्मीकिहुंतेनिकस्योजाते ॥ दूसरजनमभयोतव
ताते ॥ ७८ ॥ योंममभापगएसुरलोक ॥ रघुवंशोत्तममुनी
अशोक ॥ मैतेरामनामइकलयो ॥ जाप्रभावतेऐसोभयो ॥
॥ ७९ ॥ अबसाक्ष्यातनिहारोंराम ॥ सानुजसीयसमंसुखधा
म ॥ वारिजनैनमुक्तमैभयो ॥ याहिविपेनहिसंशयरह्यो ॥
॥ ८० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ योंपरमारथभापकैपुनिबोलेमुनि
राम ॥ भक्तहितारथनरभएपूछोठौरअकाम ॥ ८१ ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ आवोरामदिखावोसोइ ॥ नीकीठौरअहेपुनिजो
इ ॥ नीकेजहांवासुतुमहोई ॥ निजनैनोकरहेरोसोई ॥ ८२ ॥
॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ इमभापमुनिवरजाइकैपुनवीचपर
वतगंग ॥ रामकोलघुभ्रातऔपुनशिष्यलीनेसंग ॥ शाला
वढीइकतंत्रकरीऋपिनीठभूमिसवार ॥ मंदिरबनाएदोतहां
शोभासुजाहिंअपार ॥ ८३ ॥ मुखएककोपूर्वकरेपश्चमदि
शाकरिपीठ ॥ दक्षणपिछावरउत्तरेमुखआनकीनसुनीठ ॥
तवसीयलक्ष्मणसोंमिलेतहंवासकीनसुराम ॥ समदेवतावै
तीनंहेपुनवनेसुंदरधांम ॥ ८४ ॥ वाल्मीकिसुपूजतोरघुनाथ
हरणकलेश ॥ सहसीयनीकेतहंवसेशिरजटामुनिवरवेप ॥
देवमुनिगणपूजतोसुरलोकसुंदरदेश ॥ सुपुलोमिजाकेसंग
मिलजिमवसआपसुरेश ॥ ८५ ॥ ॥ इतिश्रीमत्अध्यात्म

करामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेषष्ठमोऽध्यायः ॥
॥६॥ ॥७॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥ दोहा ॥ ॥
इतसुमंतसाथंसमेवरेअयोध्यामाहि ॥ मुखसुवस्त्रकरढाकि
योनीरवहेदृगतांहि ॥ १ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ रथबाहिरथा
पसुमंततबेनृपभौनगयेनहिबेरलगाई ॥ जयभापमुखोंनृप
कीरतिकैसुप्रणामकरीनृपकेढिगजाई ॥ अजनंदनतांअभि
वंदतकोमनव्याकुलएकसुबातअलाई ॥ किहिंठौरसुमंतरहेर
घुवीरसुजानकीभ्रातसुजांहिसहाई ॥ २ ॥ ॥ गीयामा
लतीछंद ॥ ॥ किहंठौरछोडेरामतुमक्याकहेंथेमेपापि
नं ॥ क्याकहेथीमेजानकीसुसुमंतदूपउतापिनं ॥ निरदईमे
अघवंतकोलक्ष्मणवखान्योक्याकहो ॥ इमभापभूपतिरोव
ईकिंहठौरश्रीरघुवररहो ॥ ३ ॥ ॥शंकरछंद ॥ ॥ हाराम
हागुणसागरोहासीयप्रियवचतोर ॥ दुखसिंधुडूबोमैमरों
किंनापिखोममओर ॥ इहभांतिभूपविलापकैदुखसिंधुमैग
लतान ॥ पिखतांसुमंतसुभूपतंकरजोरकीनवखान ॥ ४ ॥
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सीतारामसुलक्ष्मणभाई ॥ मैतीनोंतेर
थेचढाई ॥ श्रिंगवेरकेढिगलेगयो ॥ गंगातीरउतारतभयो
॥ ५ ॥ फलमूलादिकगुहलेआए ॥ रामगहेनहिंपाणिछुहा
ए ॥ परमप्रसंन्नरामतवभये ॥ फलमूलादिविसर्जनकये ॥
॥ ६ ॥ वटक्षीरगुहहाथमंगायो ॥ जटामुकटरघुनाथवना
यो ॥ वहुरकहीसुमंततुमजावो ॥ राजाप्रतिममकुशलवता
वो ॥ ७ ॥ ममनमित्तनहिंशोककरीजे ॥ ममवंदनकरिभूप

कहीजे ॥ औधपुरीतेममनमाही ॥ सुखहैअधिकविपन
केमाही ॥ ८ ॥ ममसातकोकहोसंदेस ॥ ममनमित्तनहिंक
रोकलेस ॥ राजावृद्धशोकनिधिपरो ॥ तांकोतुमआश्वासन
करो ॥ ९ ॥ सीतानैनभरेबहुवारा ॥ नृपसत्तमतिनमोहिउ
चारा ॥ दुखसोंवाणीगदगदभई ॥ रामओरकिंचितनिरख
ई ॥ १० ॥ सासुससुरपदकमलमझारा ॥ कहोसुमंतप्रणा
महमारा ॥ यांविधिभापरुदतिअतिभई ॥ किंचितपंथअधो
मुखगई ॥ ११ ॥ तीनोनैनभरेजलधारा ॥ भूपचढेवैनावम
झारा ॥ जौलौगंगापारसुगए ॥ तौलौभूपतिमैनिरखए ॥
॥ १२ ॥ वैतीनोवनपंथपधारे ॥ मैदुखसोंपुरआयोथारे ॥ सु
नरोईकौशल्यारानी ॥ भूपतिप्रतिपुनकह्योभवानी ॥ १३ ॥
नृपकेकेईप्यारीरानी ॥ व्हैप्रसन्नवरकीनवखानी ॥ तुमदेवो
तिंहराजअपारा ॥ ममपुत्रहिंकिंवनेनिकारा ॥ १४ ॥ निख
लकर्मयहकीनोतोही ॥ अवकिंरोइसुनावतमोही ॥ कौश
ल्यावचसुनदुखभयो ॥ मनोघावमैपावकदयो ॥ १५ ॥
॥ **दशरथोवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ क्यातूंभापेममक
ल्यानी ॥ होवनहारनकिनेमिटानी ॥ मैअतिदुखितभयोसु
नरानी ॥ तुमकोयोगनयेहवखानी ॥ १६ ॥ कोइकपापसु
मोहिकमायो ॥ जांकरयहसंतापसुपायो ॥ शोकनीरदृग
पूरणभए ॥ कौसल्याप्रतिभूपअलए ॥ १७ ॥ दुखकर
मर्णभयोअवमेरो ॥ तूंममदुःखनदेहिघनेरो ॥ पुनिकौस
ल्याभूपतिभने ॥ कार्णदुखकेयुगमसुगने ॥ १८ ॥ तुमकेके

इदोनोहेतू ॥ तांकरममसुतवनेनिकेतू ॥ सुनिभूपतिकौसल्या
वानी ॥ परमदुखीयहकीनवखानी ॥ १९ ॥ अवनिकसैंगे
प्राणहमारे ॥ सुणदेवीमैंहेतुविचारे ॥ पूर्वमुनिममश्रापसुद
यो ॥ तांकारणमेमर्णसुभयो ॥ २० ॥ पूर्वमैयोवनवनमांही ॥
वानसरासनलैकरमांही ॥ म्रगमारनहितनदीकिनारे ॥ विचरों
निशिमैविपनमझारे ॥ २१ ॥ आधीरात्रिसमैइकवारा ॥ त्रिपा
वंतइकमुनीकुमारा ॥ मातपितातिहंपरमतपाए ॥ तांहितवैज
ललेनेआए ॥ २२ ॥ जलमैकुंभडुबायोजवही ॥ सब्दभयो
तांतेपुनतवही ॥ मैजान्योगजपीवतपानी ॥ वानदयोमुख
माहिकमानी ॥ २३ ॥ सब्दवेधवडुवानउदारा ॥ मोहिचला
योनिशामझारा ॥ हामैमुयोसब्दतहंभयो ॥ मानुपलक्षणसू
चनकयो ॥ २४ ॥ गीयामालतीछंद ॥ मैनाकीयोअपराध
काहूंमारयोविधिकिंउंकिने ॥ पितमातमेरीवोटदेखैंनीरदेवेको
तिने ॥ सुनशब्दमानुपसूचकोभयभीतहोयोमैमने ॥ कौसल्ल
यातिहंठाउंमैनिशिमैगयोसुसनेसने ॥ २५ ॥ भोस्वामिदशरथ
भूपमैढिगजाइतांव्याकुलकही ॥ अनजानमैअपराधकीनो
त्राहिमोकोमुनिसही ॥ इमभापतांपदमैगिर्योमुखबोलगदग
दहैतमा ॥ पुनतांहिमोप्रतिभापिओमतडरोभूपतिसत्तमा ॥
॥ २६ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ तवब्रह्महत्यानाछुहेमैवैस्यतप
मोआंहिं ॥ पितमातमोहिअपेक्षतेतपभूखतांतनमांहि ॥ तज
चिंतवेगसुजाइकैतूंनीरतिनकोदेहि ॥ नहिदेहिमेपितकोपके
तनकरेतेरोखेह ॥ २७ ॥ जलतांहिदैपदवंदकैनिजकरमकरो

वखान॥सरकाढमेरीदेहतेतनपीडत्यागोंप्रान ॥इहभांतिमेमु
निजबकह्योमैकीनवानउधार ॥पुनगयोजहंवहदंपतीलैकुंभ
पूरतवारि॥२८॥ अतिश्रांतवृद्धसुअंधभूखेनीरकीतनचाहि॥
कोभयोकारणनीरलेअबपूतआयोनाहि॥ सुअनंन्यगतिहम
वृद्धहैंतनुत्रिपापीडअपार ॥ किंवाउपेक्षातिनकरीनहिभक्ति
वानहमार॥ २९॥ इहभांतचिंताथेकरेंममपादधुनिसुनलीन
॥ सुनतांपितापुनभापयोसुतकिंविलंबसुकीन ॥ भोदेहपूत
सुनीरहमकोआपनीकेपीव ॥ इहभांततांहिंविलापसुनअति
कंपयोममजीव ॥ ३० ॥ ढिगजायतांपदवंदकैपुनिमुखोंकी
नवखान ॥ मैनांहितवसुतऔधकोपतिभूपदशरथमान॥मै
रात्रिम्रगनविहिंसकोवहुकरोंपापअपार॥ जलघाटदूरेथोप
डोधुनिभईभीतरवारि ॥ ३१ ॥ गजजानमैशरछोडयोतन
माहिगाड्योजाइ ॥ मैमुयोमानुपशव्दसुनमैडरतआयोधा
इ॥ शिरजटाफैलोकिरणसीपिखपरेमुनीकुमार॥ मनभीत
मैपदतांगहेमुखरक्षरक्षउचार॥ ३२॥ मतडरोईवममभाप
योमुनिपरमकरुणाधार॥ ब्रह्महत्याभयनहीतवकह्योमानह
मार॥ ममभाततातसुनीरदैकरजोरतांपदवंद ॥ नवनूतनो
यहदेहकोलैजीवनोतूंमंग॥ ३३ ॥ चौपई॥ ॥ यांविधि
तिनमुनिमोहिवताया॥ मुनिहिंसकमैतुमपहिआयो॥ दया
युक्ततुमपरमउदार ॥ शरणागतिममलेहुउवार ॥ ३४ ॥
याविधिसुन्योसुमोतेजवही ॥ दुःखारतिशोचतभएतवही॥
पयोंजहांसुनपूतहमारो ॥ तहंलेचलोविलंबनधारो ॥ ३५॥

तवलेगयोजहासुतआहि ॥ वृद्धदंपतीदुखमनमाहि ॥ सुत
कोछुहनिजहाथनसंगा ॥ बहुविलापकरव्याकुलअंगा॥३६
हाहारुदनकरेंतेभारी ॥ पूतपूतमुखमाहिउचारी ॥ जलदीजेह
मकोसुतसोइ ॥ नहिदेवैंअबकारणकोइ॥ ३७॥ पुनिमोप्रति
तिनकीनउचार॥ चितारचोनृपवेगसवार॥ मैतबहीतहंचिता
बनाई॥ बहुनीनोतहंदएबिठाई॥३८॥ ॥शंकरछंद॥ ॥पुन
अग्नितिनकेकहेतेमैंदईतहांलगाइ ॥ दिवलोकतीनोवैंगयेतनु
भूमिमाहिजलाइ॥ पुनजानअवसरतांपितामम्दयोएहीशा
प ॥ ममवचनतेसुतशोककैतूंमरेंगोनृपआप॥३९॥ बहुश्राप
अवसरभयोअबममवारहैनहिकोइ ॥ इहभांतभापविलाप
कीनोशोकव्याकुलहोइ ॥ हारामसुतहाजानकीहालक्ष्मणागु
णधाम॥ सुवियोगथारेमैमरोंकैकईकाढेप्रान॥४०॥ इमवद
तभूपतिप्राणतजपुनगएसुरपतिलोक॥ पिखरामलक्ष्मणमा
तलोंनृपनारिकरेंसुशोक॥करताडछातीरोवहीमुखभूपकेगुण
गाइ॥पुरऔधअंम्रतकुंभमैविधिदइहलाहलपाइ ॥४१॥ सुव
सिष्टलैमंत्रीसकलतहंप्रातपहुंचेजाइ॥धरतैलद्रोणीभूपतनुपु
नदूतकहेबुलाइ॥नृपयुधाजितकेनगरप्रतितुमदूतवेगसुजाहु
चढघोरेंयोंपरभलीविधितहंभरतसानुजल्याहु॥४२॥तिहंकहो
मेरेवचनतेगुरवेगआइसुकीन॥निजनगरआवोवेगतुमजग
भरतबुद्धिप्रवीन॥पुरऔधदशरथराजकोनिजमातुपेखोआ
इ॥सुवसिष्टकेयहवाक्यसुनपुनगएदूतसुधाइ॥४३॥नृपयुधा
जितपुनभरतकोसुप्रणामकीनोजाइ ॥ राजनवसिष्टबुलाइ

१ अश्व.

वखान ॥ सरकाढमेरोदेहतेतनपीडत्यागोंप्रान ॥ इहभांतिमेंमु
निजवकत्योमैकीनवानउधार ॥ पुनगयोजहेंवहदंपतीलैकुंभ
पूरतवारि ॥ २८ ॥ अतिश्रांतवृद्धसुअंधभूखेनीरकीतनचाहि ॥
कोभयोकारणनीरलैअबपूतआयोनाहि ॥ सुअनंन्यगतिहम
वृद्धहेंतनुत्रिपापीडअपार ॥ किंवाउपेक्षातिनकरीनहिभक्ति
वानहमार ॥ २९ ॥ इहभांतचिंताथेकरेंममपादधुनिसुनलीन
॥ सुनतांपितापुनभापयोसुतकिंविलंवसुकीन ॥ भोदेहपूत
सुनीरहमकोआपनीकेपीव ॥ इहभांततांहिविलापसुनअति
कंपयोममजीव ॥ ३० ॥ ढिगजायतांपदवंदकैपुनिमुखोंकी
नवखान ॥ मैनांहितवसुतऔधकोपतिभूपदशरथमान ॥ मैं
रात्रिमृगनविहिंसकोवहुकरोंपापअपार ॥ जलघाटदूरेथोप
डोधुनिभईभीतरवारि ॥ ३१ ॥ गजजानमैंशरछोडयोतन
माहिगाज्योजाइ ॥ मैमुयोमानुपशब्दसुनमैंडरतआयोधा
इ ॥ शिरजटाफैलीकिरणसीपिखपरेमुनीकुमार ॥ मनभीत
मैंपदतोगहेमुखरक्षरक्षउचार ॥ ३२ ॥ मतडरोइंवममभाप
योमुनिपरमकरुणाधार ॥ ब्रह्महत्याभयनहीतवकत्योमानह
मार ॥ ममप्रातवातसुनीरदैकरजोरतांपदवंद ॥ नवनूतनो
यहदेहकोलैजीवनोतूंमंग ॥ ३३ ॥ चौपई ॥ ॥ यांविधि
तिनमुनिमोहिवतायो ॥ मुनिहिंसकमैतुमपहिआयो ॥ दया
युक्ततुमपरमउदार ॥ शरणागतिममलेहुउवार ॥ ३४ ॥
यांविधिसुन्योसुमातेजवही ॥ दुःखारतिशोचतभएतवही ॥
पयोजहांसुनपूतहमारो ॥ तहंलेचलोविलंवनधारो ॥ ३५ ॥

तबलेगयोजहासुतआहि ॥ वृद्धदंपतीदुखमनमाहि ॥ सुत
कोछुहनिजहाथनसंगा ॥ बहुविलापकरव्याकुलअंगा॥३६
हाहारुदनकरेंतेभारी ॥ पूतपूतमुखमाहिउचारी ॥ जलदीजेह
मकोसुतसोइ॥ नहिदेवेंअबकारणकोइ॥ ३७॥ पुनिमोप्रति
तिनकीनउचार॥ चितारचोनृपवेगसवार॥ मैतवहीतहंचिता
बनाई॥ वहुनीनोतहंदएबिठाई॥३८॥ ॥शंकरछंद॥ ॥ पुन
अग्नितिनकेकहेतेमैंदईतहांलगाइ ॥ दिवलोकतीनोवैगयेतनु
भूमिमाहिजलाइ॥ पुनजानअवसरतांपितामम दयोएहीशा
प॥ ममवचनतेसुतशोककैतूंमरेंगोनृपआप॥३९॥ वहुश्राप
अवसरभयोअबममवारहैनहिकोइ ॥ इहभांतभापविलाप
कीनोशोकव्याकुलहोइ॥ हारामसुतहाजानकीहालक्ष्मणागु
णधाम॥ सुवियोगथारेमैमरोंकैकईकाढेप्रान॥४०॥ इमवद
तभूपतिप्राणतजपुनगएसुरपतिलोक॥ पिखरामलक्ष्मणमा
तलौनृपनारिकरेंसुशोक॥करताडछातीरोवहीमुखभूपकेगुण
गाइ॥पुरऔधअंन्तकुंभमैविधिदइहलाहलपाइ॥४१॥ सुव
सिष्टलैमंत्रीसकलतहंप्रातपहुचेजाइ॥धरतैलद्रोणीभूपतनुपु
नदूतकहेवुलाइ॥नृपयुधाजितकेनगरप्रतितुमदूतबेगसुजाहु
चढघोरेंयोंपरभलीविधितहंभरतसानुजल्याहु॥४२॥तिहंकहो
मेरेवचनतेगुरवेगआइसुकीन॥निजनगरआवोवेगतुमजग
भरतबुद्धिप्रवीन॥पुरऔधदशरथराजकोनिजमातुपेखोआ
इ॥सुवसिष्टकेयहवाक्यसुनपुनगएदूतसुधाइ॥४३॥नृपयुधा
जितपुनभरतकोसुप्रणामकीनोजाइ ॥ राजनवसिष्टवुलाइ

१ अश्व.

योपुरभरतऔतिनभाइ ॥ आवोअयोध्यापुरीमैनहिकरोरंच विचार ॥ यहवाक्यसुनरोमांचभरतसुभयोभयउरभार ॥ ॥४४॥गुरवचनसानुजसंगदूतनभरतचालेदेश॥श्रीभूपऔ रघुनाथकोकछुभयोनगरकलेश॥इहभांतिचितवतमारगेपु ननगरपहुतोआइ ॥जनभीरनाकछुनगरमैसभप्रभागईवि लाइ॥४५॥उतसवनहीकोनगरमैपिखभरतचितअपार॥पु नगयोनृपकेभवनमैनहिशोभनृपकेद्वार ॥कैकईदेखीएकली वैठीसुपलंघविछाइ ॥ शिरसौंप्रणामसुमातकेपुनभरतकी नोपाइ ॥ ४६ ॥ आयोनिहारसुभरतकोकैकईआदरकीन॥ सुउठाइभरतलगाइगरपुनगोदभीतरलीन॥शिरचूमकैनिज वंशकोपुनकुशलपूछ्योतांहि॥शुभपिताभ्रातामातमेसभकु शलहैंपुरमांहि॥४७॥भलआजममआनंदसुततवकुशलडी ठनिहार॥इहभांतितांहिसुपूछ्योनिजपेवकोपरवार॥कहभ रतव्याकुलचितअतिमनकंपपूछीमाइ॥मेमाततुमविनमेपि ताकिंहठौरआहिवताइ॥४८॥तुमविनाजोमेपितानहिंएकंत वैठसोइ॥अवनादिखाईदेतहैकहुभयोकारणकोइ॥श्रीतात केसुअदेखनेममदुःखभयअतिआहि॥किंदुःखसोंतेअनघसु तकैकईआपेतांहि॥४९॥हैधर्मशीलीजोगतीकृतअश्वमेधीयां हि॥ सुततांगतीकोताततेरोगयोयांजगमांहि ॥ इहभांतसुन भूभरतगिरेसुशोकव्याकुलहोइ ॥ हातातकहतुमगयेमोकों दुखसमुद्रविगोइ ॥५०॥ नसमर्पयोममरामराजेआपगए सिधाइ ॥ इहभांतभरतविलापकरशिरकेशदीनखिलाइ ॥उ

१ शाके.

ठाइकैकईतांहिकोनिजपाटकैद्रिगपोच ॥ पुनसमाधानसुतांक
रेसुतकिंकरेंत्वंशोच ॥ ५१ ॥ कल्याणतेरीपूतमैंसभसिद्धकीनो
काज ॥ करतव्यतोकोंनाकछूसुतरह्योशेपसुआज ॥ तबभरत
तांकोभाषयोपुनमरणअवसरमांहि ॥ ममपिताभूपशिरोम
णीतिनक्याकह्योमुखमांहि ॥ ५२ ॥ श्रीरामकोपुनक्याकह्यो
वहुनिखलभाषोमोहि ॥ कैकईनिर्भयतांकहेसुतसुनोभाषोंतो
हि ॥ हारामसीतेलक्ष्मणाइहभांतिवारंवार ॥ विललापचिरकर
त्यागतनुकोगयोसुरगमझार ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरतवखा
नेतांहिकोरामलखनसियमात ॥ नहिसमीपतवकहंगयेजौंवि
लपेममतात ॥ ५४ ॥ ॥ कैकेय्युवाच ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥
सुतरामकेयुवराजहिततवतातउद्यमकीन ॥ तवराजकेहितपू
तमैंतिहमाहिविघनसुकीन ॥ प्रथमेकवीवरदोनमोकोवरदभू
पतिदीन ॥ सोइहइदानीदोनहीमैंमांगनृपतेलीन ॥ ५५ ॥ सुतए
ककैतवराजदूसररामकोवनवास ॥ तवसत्यवादीभूपतेतवरा
ज्ञकीनप्रकाश ॥ पुनरामकोवनभेजिओतवपिताधरमउदार ॥
तवरामपाछेसियगईजगपतिव्रत्तसुधार ॥ ५६ ॥ शुभभ्रातभा
वदिखावनेहितगयोलक्ष्मणआप ॥ वनगएसर्वसुयांविधीपुन
भूपकीनविलाप ॥ भलरामरामसुभाषयौंमुखमुयोभूपतिसो
इ ॥ गिरजासुनोइहभांतमरणोभागविननहिहोइ ॥ ५७ ॥ इह
भांतमातावचनसुनसुतगिरयोभूमिमझार ॥ भूवज्रहतद्रुमजिं
उंगिरेकछुरहीनाहिसंभार ॥ सुपेखकैकईतांदुखीद्वैवहुरकीनउ
चार ॥ किंशोकमेरेसुतकरेंअवभयोराजतिहार ॥ ५८ ॥ सुतदुः

खअवसरनाकछूइहभांतिभाष्योमाइ॥ कहिकोपभरतविलो
कतांप्रतिमनोदेतजलाइ॥ मेअसंभाप्यापापनीतैंकीनभर्त्ता
घात॥ दुर्भागनीतेजन्मलीनोअघीमैंविक्षात॥ ५९॥ हाअ
ग्निमेंमेपरोंगोकेमरोंगोविषखाइ॥कैखडगसोंतनकाटअपनो
जांउंयमपुरधाइ॥ हेभर्तघातिनिदुष्टितेरोकुंभिपाकसुगौन॥
केकईडाटसुयोंगयोपुनकौसल्याकेभौन॥६०॥ सापेखभरत
अपाररोईमुक्तकंठपुकार॥ अतिभरततैंसेरोवईतिहंपादमस्त
कधार॥आलिग्यभरतसुधर्मशीलाराममातसुहाइ॥ कृशदी
नवदनाभापईवहुनैननेतजलजाइ॥६१॥गैदूरतेरपूतयौंसभंग
योकारणहोइ॥सभसुन्योमातवखानयोतवमातकोनोजोइ॥
सहजानकीसहलक्ष्मणोसुतरामचंद्रहमार॥दुखसिंधुमगना
मैरहीवनगएचीरसुधार॥६२॥ ॥चौपाई॥ ॥हाइरामरघुवं
शसुनायक॥त्वंपरमात्मासभवरदायक॥ यद्यपित्वंममउदर
सुभयो॥ तद्यपिनहिदुखमेरोगयो॥६३॥ तांतेविधिहैवहुवल
वान॥ यहमोकोउरभयोसुभान॥ यौंविलापकौसल्याकीन॥
तांपिखभरतभयोअतिदीन॥६४॥ पादगहेकरभाखेएहु॥ मा
तावचनसुमेसुनलेहु॥ रामराजअभिषेचनवीच ॥ कैकई
कर्मकर्योजोनीच॥ ६५॥ अन्यतवातिनकीनसुजोइ॥ भर
तसुजोउरजानतहोइ॥ अथवामैप्रेरीजेसोइ ॥ तौमोकौयां
विधिअघहोइ॥६६॥ ब्राह्मणकेमारेतेजैस॥ मोकोहोइपाप
पुनतैस॥ सहअरुंधतीगुरुकोमार॥ जोहोवेतिहंपापअपा
र॥ ६७॥ मैजौजानतहोवोंसोइ॥ तौमोकोवहुसगलोहो

इ ॥ यांविधिभरतशपथवहुभाख ॥ रोयोमातचरणशिरराख ॥ ६८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनकौसल्यातांहिकोलीनोकंठलगाइ ॥ सुतजानोमैंसकलविधिमतशोचोसुखदाइ ॥ ६९ ॥ ॥ महादेवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ पुनतांहिंसमेभरतागमंकोसुनआपवसिष्टतहांचलआए ॥ नृपमंदिरमैवहुराजगुरूसहमंत्रिनकेवहुभांतिसुहाए ॥ पिखरोवतराजकुमारमहांतिहंसादरआपवसिष्टअलाऐ ॥ वहुभूपतिथेअतितज्ञवडेपुनसत्यपराक्रमथेजरठाए ॥ ७० ॥ मानवकेसुखभोगसभैहयमेधन

[illegible] ॥ दैदक्षणावहुयज्ञनमैहरिराममहांसुतसुं

[illegible]

मोक्षकिभाजनवैनृपथेसुटथातुमशोचतनीरवहाए ॥ ७१ ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आत्मानित्यअनाशीजान ॥ जन्मनाशनहितांमैमान ॥ तनुजडअतिअपवित्रसुअहे ॥ प्राणविनाशसुक्षणक्षणगहे ॥ ७२ ॥ भलेप्रकारविचारसुकरे ॥ शोकठौरकहिंनदरनपरे ॥ पितातनुजजगभीतरमरे ॥ मू [illegible] करे ॥ ७३ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ निःसारखलुसंसारमैविवियोगजवैसुहोइ ॥ तवतज्ञकोवैरागऔसुखशांतिदेवेसोइ ॥ जनजन्मवानसुजोअहेतिहमृत्युचालेसंग ॥ परिहारनहिकरकोसकेयहजन्ममरणप्रसंग ॥ ७४ ॥ निजकर्मकेस्वाधीनजंतूजन्ममरणसुपांहि ॥ इमजानकैअविवेकिजनकिमशोचहैपुनतांहि ॥ ब्रह्मांडकोटिसुनष्टहोएगईसृष्टिअपार ॥ सूकेसुसागरनीरकेकाआसथातनक्षार ॥ ७५ ॥ चलपत्रअंतलग्नजिमजलविंदुभंगुर

होइ॥ तिमआयुजावेलोककीतवभयोनिश्चैकोइ॥७६॥ जग
जीवपूर्वसुकर्मकरजिमलईदेहसुएह॥ तिमवर्त्तमानसुकरम
करपुनऔरलेवेदेह॥७७॥ जिमतजेजीर्णसुपाटकोपुनगहेनू
तनचीर॥ तिमतजेजीर्णसुदेहकोपुनगहेनयोशरीर॥ सुतशो
कअवसरहैकहांइहभांततनुशतहोइ॥ नहिमरेआत्मानाजमे
पुनवर्धहैनहिकोइ॥७८॥ ॥चौपाई॥ ॥जिहंपड्भावविका
रनकोइ॥ सत्यज्ञानविग्रहपुनसोइ॥सुखस्वरूपबुध्यादिकसा
क्षी॥लयविहीनइकश्रुतिसुसाक्षी॥७९॥ आत्मापरअद्विती
अनूप॥ समसुस्थितहैजाकोरूप॥ यांविधिआत्माद्रिडउरध
रो॥ शोकतजोसुतक्रियासुकरो॥ तैलद्रोणमैपितुतनपरो॥
सचवनसहितउधारणकरो॥ हमसोंमिलरघुनंदनवीर॥ यथा
न्याइकृतकरोसुधीर॥८०॥ ॥दोहा॥ ॥दिनअठताली
हैंभएमरणअनंतरभूप॥ यांविधिउमाजनाययोभरतवसिष्ट
अनूप॥८१॥तजअज्ञानजशोककोविधिवतक्रियासुकीन
आहितअगनीकीविधीजोगुरआइसुदीन॥८२॥ सुसंस्कार
विधिवतकरेदीनीअग्निलगाइ॥ दिनएकादशकेभयेलीनेविप्र
बुलाइ॥८३॥ पितोद्दशकरतिनहुंकोभोजनदयेअपार॥ वि
धिवत्ब्राह्मणजेवहीसैसैकईहजार॥८४॥ विप्रनकोधन
बहुदयेगोदइकईहजार॥ रत्नपटंबरबहुदयेग्रामसुदएउदार
॥८५॥ ॥सवैया॥ ॥इहभांतिक्रियाकरकैसगलीपितकोरि
णयोवहंतांहिउतारे॥मिलसंगपुरोहितसानुजसोपुनकैकईनंद
नआइअगारे॥ निशिवासकीयोघरभीतरतांउरभीतररामहि

रामचितारे ॥ गुरुभ्रातअमातसभैढिगहैंसुमनोनिशिमैशशि
हैपरवारे ॥ ८६ ॥ सुखनाहिलख्योउरभीतरतांइहचिंतवदीतिहं
केउरमाही ॥ मिलजानकिऔलछमंनसमंरघुनाथगयेसुवडे
वनमांही ॥ ममभातसुराक्षसिकेसमचीतदहेमुखपेखनतेक्षण
माही ॥ वनजांउंअवैमतिएद्दुकरोंतजराजसभोन्टपकोघर
माही ॥ ८७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मंदहासमुखसुंदरोसीयसमं
श्रीराम ॥ तांपदपंकजसेवसीभरतसुआठोजाम ॥ ८८ ॥
॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकां
डेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥
॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ प्रातवसिष्टसजे
मुनिसंगसुमंत्रिसभेपुरवासिवुलाए ॥ राजसभाजनुदेवस
भातिहंमांहिवसिश्मुनीचलआए ॥ मध्यसिंहासनकेमुनि
सोजनुहैचतुराननजूसुखदाए ॥ आनसुभूपतिकेसुतकोपुन
सानुजतांहिकेवीचविठाए ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ देशकाल
कोजोगसुजोइ ॥ मुनिवरवचनवखान्योसोइ ॥ भरतअहै
तववपितुअनुशासन ॥ तिलककरेंहमचहोसिंहासन ॥ २ ॥ कैक
इयाचनराजसुकीन ॥ भरतसुतवहितयौंउरचीन ॥ सत्यसं
धदशरथवरराइ ॥ राजदयोतिनमुखांअलाइ ॥ ३ ॥ अवदे
वेंतवतिलकवनाइ ॥ मुनिवरमंत्रवदमुखगाइ ॥ सुनकैभर
तसुधांविधिवानी ॥ ममनहिराजसाथकछुज्ञानी ॥ ४ ॥ राजा
रामसुअहेउदारे ॥ हमतिनकेहेंदासविचारे ॥ प्रातकाल्हमु
निवरमैजावों ॥ रामचंद्रकोनगरलिआवों ॥ ५ ॥ तुमसभ

मातहमारीजेती ॥ विनकैकेईचलेंसुतेती ॥ मातगंधर्नीनाम सुएही ॥ अवहीहनोआइमनएही ॥ ६ ॥ परमोकोंरघुवरन् हिंदेखें ॥ इस्त्रीवधनकलंकसुपेखें ॥ पादचारिदंडकवनजावों ॥ कालहप्रातनहिविलमलगावों ॥ ७ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥ सत्रुघ्नसहितसुमैचलोंतुमचलहुचाहेमतचलो ॥ ॥ रामजिमवनमैगयेतिमधारमैतनवलकलो ॥ फलमूलभोजनमैकरोंसत्रुघ्ननीकेल्यावई ॥ शिरजटाअवनीमैसवोंनहिरामजवलगआवई ॥ ८ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ इहभांतिभरतसुधारमनमैमौनलीनोधार ॥ सभलोकभरतसराहहींमुखसाधुसाधुउचार॥शुभधर्मशीलप्रभातवर्नप्रतिभरतकीनपयान ॥ सुसुमंतसभैबुलाइसैनिकएहकीनवखान ॥ ९ ॥ चतुरंगनीसभसैनजेतीभरतकेअनुगाम ॥ शुभअश्वकुंजररथपदातीरहेंआठोजाम ॥ सभराममाताआदिरानीगुरूलौद्विजराज ॥ सभओरचालेछाइभूमीरामदर्शनकाज ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गंगातटस्रंगवेरपुरसेनाकीननिवास ॥ रिपुहनभाप्योसर्वकोंईहांकरोनिवास ॥ ११ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ सुनकैभरतागमकोमनमैअतिशंकभईगुहएहुविचारे ॥ बहुसैनसमेतसुकैकईनंदनआइपरोयहंगंगकिनारे ॥ नहिजानपरेसंगसैनलईयहरामपरातमकोनहिमारे॥ सभलोकनकोइहवातकहीचलसायुधयांमनलेहिंनिहारे ॥ १२ ॥ जोमनभीतरशुद्धअहैतवलेममनावनसैनउतारे ॥ जोमनभीतरपापकछूतवनावनखैंचसुलाहुकिनारे ॥ जातिसभैममसंगचलैंगह

आयुधऔदिशिचारनिहारे ॥ इहभांतिवखानसुलोकनकोगु
हनूणकसेकरमैधनुधारे ॥ १३ ॥ वहुभांतिउपाइनतांहिलईपु
नसंगचलेवहुसायुधवीरा ॥ भरतैंपिखतांहिउपाइनलैगुह
आनधरीलखरामसुवीरा ॥ पिखमंत्रिसमंपुनसानुजतां
शिरमैजटहैंतनमैवनचीरा ॥ उरभीतररामकीशोचकरेमुख
रामभनेदृगजावतनीरा ॥ १४ ॥ अभिवंदनकैसुनिपाद
पतीगुहहोंमुखमाहिसुएहुवखाने ॥ तवकैकइनंदनवेगउठा
इसुसादरवेगलिमांहिलगाने ॥ कलिआनपुछीगुहकीमुख
तेपिखभ्रातसखामनसैविगसाने ॥ यहरामसखापुनकैकइ
नंदनलोगनकोमुखआपवखाने ॥ १५ ॥ ॥ भरतउवा
च ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ भ्राततुमेरघुनाथकिसंगसुवास
कियोइहठौरसुहाई ॥ रामपरातमप्रेमभरेविगसेतुमकोग
लिमाहिलगाई ॥ धन्यभयोकृतकृत्यभयोमुखरापवसोंतु
मभ्रातअलाई॥रामसियालछमंनसमंजिहिंठौरपिखेवहुदेहु
दिखाई ॥ १६ ॥ ॥ अवसुव्रतलेचलमोहितहांजहँसैनकि
योसीयसोंममवीरा ॥ तुमसेवकरामसुप्रीयतमातवभाग्य
महांजगमाहिगंभीरा ॥ इमरामसमारसमारतहीक्रिगकैकइ
नंदनजावतनीरा ॥ गुहसंगमिलेतहँठौरगएजहँरामवसेनि
शिगंगसुतीरा ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शयनस्थानपिखे
तिनजाई ॥ जहँसोएथेकुशाविछाई ॥ सीताभरणविंदुअ
तिसुंदर ॥ अंचितभूमिभईगुणमंदिर ॥ १८ ॥ दुखसंतभ
रिदअतिहोया ॥ भरतव्याकुलउरअतिरोया ॥ अहोसीय

अतिशयसकुमारी ॥ जनकनंदनीगुणनअगारी ॥ १९ ॥
रत्नपलंघपुनमहलउदारे ॥ कोमलऊपरपाटसवारे ॥ रामस
हितसोवतथींतैसे ॥ सोकुशविष्टरसोईकैसे ॥ २० ॥ ॥ दो
हा ॥ ॥ सीतारामसुदुखभरे वनकुशपातनमाहि ॥ मेरो
हीअपराधहै औरसुकारणनाहि ॥ २१ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥
धृगमोहिपापनराशिकैकइजन्मयोउरमाहिं ॥ अतिममनिमि
त्तकलेशवनमैरामसीतापाहिं ॥ अतिधन्यलक्ष्मणजनमहैज
गरामकेसंगजोइ ॥ वनगयोहरपउदारउरनहिरत्योघरमैसो
इ ॥ २२ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥ मैरामदासनदासको
पुनदासहोवोंगोजवी ॥ तवजनममेरोसफलहोवेशंकनहि
यामैकवी ॥ हेभ्रातजहँरघुनाथहैंवकुठौरजानतहोजबै ॥ कहु
मोहिरामानैनकेहितवेगजावोंमैअवै ॥ २३ ॥ ॥ सवैया ॥
गुहपेखतिनेअतिशुद्धमहामनप्रेमभरेइहवातउचारी ॥ तुमध
न्यभएजगमाहिसुनोरघुवीरविपेइहप्रीतितुमारी ॥ जनका
तमजालछमंनविपेअतिआहिसनेहतुमैसुउदारी ॥ गिरिचित्र
सुकूटविराजतहैंजहँहैकदलीपनसाफुलवारी ॥ २४ ॥ ॥ नरा
जछंद ॥ ॥ मंदाकिनीसमीपरामसीयसानुजोरहें ॥ अनंदकं
दपूरणोअपारसूखहूंलहें ॥ तहांचलेंसमस्तहूंससैनगंगकोत
रो ॥ निपादराजभापयोकल्योविलंवनाकरो ॥ २५ ॥ अना
इनावपांचसैमहानदीतरावनी ॥ निपादराजआपराजनाव
आनपावनी ॥ चढाइराममातभ्रातसानुजंउदारधी ॥ वसि
ष्टकोचढाइयोंनिपादराजशीलधी ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥

कैकईओरजोपिताजेती ॥ औरेनावचढाइसुतेती ॥ यांविधि
गंगाउत्तरेपार ॥ भरतनिपादपतीसुउदार ॥ २७ ॥ भरद्वाज
कोआश्रमजहां ॥ वेगगएवहुसगलेतहां ॥ सैनादूरसुथापपि
छारी ॥ सानुजभरतसुगयोअगारी ॥ २८ ॥ आश्रममाहि
सुमुनीविराजे ॥ तपोकांतिपिखपावकलाजे ॥ पेखभरतस
हभक्तउदारी ॥ सहाशंगपदवंदनधारी ॥ २९ ॥ दशरथको
सुतजानमुनीश्वर ॥ पूजनकीयोतांहियोगीश्वर ॥ शीशज
टातनुवलकलधारी ॥ भरतपेखऋषिकीनउचारी ॥ ३० ॥ कुश
लक्षेमतुमभरतकुमारे ॥ राजपाइकिंउंवलकलधारे ॥ कांहि
निमित्तविपनतुमआए ॥ मुनिआश्रमशिरजटावनाए ॥ ३१ ॥
भारद्वाजवचनसुनपायो ॥ भरतनैनभीतरजलआयो ॥
भगवनसभभूतनउरजोइ ॥ तुमजानतहोसगलोसोइ ॥ ३२ ॥
तद्यपितुमपूछ्योप्रभुजोइ ॥ भयोअनुग्रहमोपरसोइ ॥ तु
मसर्वज्ञसभैविधिअहो ॥ भापनतेजनकेअघदहो ॥ ३३ ॥
॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ प्रभुरामराजविघातलौकैकईकीनोजो
इ ॥ वनवासपुनसहसोयकोमैनाहिजानोकोइ ॥ तवपादयुग
लसुगंदमोकोहेमुनीवरआहि ॥ इमभापभरतसुपादपकरेभ
योदुखउरमाहि ॥ ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तुमहीजाननयोग्यहो
हेमुनिपरमदयाल ॥ शुद्धअशुद्धसुमेमनो तुमहोज्ञानविशा
ल ॥ ३५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ ममराजसुनाहिंप्रयोजनहेरघु
नाथप्रभूजगराजनराई ॥ हमकिंकरहैंमुनिपुंगवजूरघुनाथ
वलीपदकेसुसदाई ॥ इहतेहमजावतहैंवनमेंमुनिरामपदां

बुजकोशिरनाई ॥ तहँराजसंभारनिवेदभलेहमल्यावहंराम सुपादमनाई ॥ ३६ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ सुवसिष्ठऔपुरवासिजेपुनदेशलोकअपार ॥ मिलकैसभैहमरामकोदैंभालतिलकसवार ॥ तिनऔधनगरीलेचलौंपदसेवहोंपुरमांहि ॥ इहभांतिवानीभरतसुनमुनिहरपयोउरमांहि ॥ ३७ ॥ गरलाइभरतसुचूममस्तकमुनिवडाईकीन ॥ मैजानियोसुभविष्यपूरवकिंउभयोमनदीन ॥ सुनत्वंसुमित्रापूततेहैंरामभक्तउदार ॥ आतिथ्यकीनोमैचहोंसहसैन्यसहपरवार ॥ ३८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सैनासहसुनभरतकुमार ॥ अवतुमभोजनकरोहमार ॥ रात्रिवसोतुमइहांहमारे ॥ रामसमीपसुजाहुसकारे ॥ ३९ ॥ मुनिवरजिंउंआइसहैथारे ॥ तिंउंकरहैंहमदासतुहारे ॥ भरद्वाजसुनभरतसुवानी ॥ जाइछुत्योघरभीतरपानी ॥ ४० ॥ मौनगहीघरहोममझारी ॥ कामधेनुकोध्यानसुधारी ॥ सिमरनकर्योसुमुनिवरजवही ॥ आईकामधेनुतहँतवही ॥ ४१ ॥ दिव्यसुसर्वकामथेजेई ॥ धेनुरचेतिंहठौरसुतेई ॥ सैनासहितभरतकोजोजो ॥ वांछतरच्योरच्योतिनसोसो ॥ ४२ ॥ विंजनगीतनृत्यवहुभांती ॥ मानोस्वर्गवसेवहुराती ॥ भूपतिसुतपुनसैनिकजेई ॥ त्रिसिभएमुनिआश्रमतेई ॥ ४३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रथमवसिष्ठसुपूजकैमुनिवरभारद्वाज ॥ सैनासहितसुभरतकोपुनपूज्योमुनिराज ॥ ४४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मुनिआश्रमनाकसमानविषेदिनरात्रिसुखीइहभांतिविताई ॥ अभिवंदपदांबुजभ्रातसमेसुचलेसगलेमुनिआइसुपाई ॥ गिरिचि

त्रसुकूटगएसगलेतहंसैन्यसभाकछदूरठराई ॥ गुहऔरसुमं
तसुभ्रातउभेसुअगारिगएवनभूमिसुहाई ॥ ४५ ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ मुनिमंडलपेखतसुउदारी ॥ ढूंढेरामतहांवनचा
री ॥ रामभवननहिनदरसुपर्यो ॥ मुनिमंडलकोपूछनकर्यो
॥ ४६ ॥ हेमुनिसीतासहितसुरामा ॥ लक्ष्मणसंगवसैंकिह
धामा ॥ तवबोलेमुनियौंमुखमाहि ॥ गंगाकेउत्तरतटमाहि
॥ ४७॥ रामभवनएकांतसुहाए ॥ सुंदरकाननचहुंदिशिछा
ए॥ कदलीआम्रपनसफलवारे ॥ भूमिविपेलटकेंजिनडारे ॥
चंपककोविदारफुलवारी ॥ पुंनागादिविपुलपरवारी ॥ ४८ ॥
यांविधिमुनिनजंबैदिखराए ॥ भरतअगारीगयेसुधाए ॥
मंत्रीसहितअनुजपुनसंगा ॥ भरतभयेअतिपुलकतअंगा ॥
॥ ४९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ आश्रमसुंदरराघवकोअतिसेवत
तांहिमहांमुनिज्ञानी ॥ रूखनमैवनचीरसुकेंन्हगछालभलेतरु
सोंलपटानी ॥ फूललतातरुसोंलपटीजनुहैपतिनीपतिसोंलप
टानी ॥ कैकइनंदनसानुजवैअतिदूरतिहेरलयेसुभवानी ॥
॥ ५० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मादिकजांकोभजेंमुनिजनऔस
नकादि ॥ वैसोयेतरुतरपिखेभ्रातपलोटपाद ॥ ५१ ॥ इतिश्री
मद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेअष्ट
मोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥
रामकिआश्रमकीढिगजाइसुकैकइनंदनरामपिआरे॥व्रजध्व
जांकुशवारिजसेंपदचिन्हभलेधरमाहिनिहारे॥सानुजतांरज
लेटपरेसुअहोहमधंन्यसुआपउचारे ॥ रामपदांबुजचिन्हत

जेवहभूतलयांवनमाहिदिखारे ॥ १ ॥ जांपदपंकजकीरज
कोचतुराननलौसुरढूंढतसारे ॥ वेदविचारतनीतिफिरेंपुनढूंढ
तहैंसनकादिकचारे ॥ प्रेमभरेइहभांतिउमाअतिकैकइनंदन
रामपिआरे ॥ जातभयेढिगआश्रमकीउरआनंदनीरकेजां
हिपनारे ॥ २॥ तहँपेखरमापतिरामवलीतनुश्यामभलेद्रिगवा
रिजसे॥ शुभशीशजटातरुछालनईतनुअंवरऔमुखवारिज
से ॥तरुणारुणश्रीपतिशोभितहेंमरंदपदसीयसुवारिजसे॥ज
नकातमजासुविनोदकरेसुखिरेमुखपंकजवारिजसे ॥ ३ ॥
॥**चौपाई**॥ ॥लक्ष्मणसेवतजांपदवारिज॥भरतहेरतिंहदौरे
आरज॥हरपशोचयुगपदतिनआयो॥रामपदांवुजमैलपटा
यो ॥ ४ ॥ रामभुजागहिकीनउधार ॥ गरलायेद्रिगजावेवा
रि ॥ अंकवीचपुनभरतविठाए ॥ पुनपुनरामगरेनिजलाए ॥
॥ ५ ॥ वहुररामकीमाताजेती ॥ जाइपहूनीवेगसुतेती ॥ त्रि
पावंतगऊआंजगजैसे ॥ रामपिखनहितगईसुतैसे ॥ ६ ॥ रा
मसुमातनिहारीजवही ॥ उठवंदेतिनचरणसुतवही ॥ माता
सुतकोकंठलगाए ॥ कीनविलापद्रिगनजलजाए ॥ ७ ॥ इत
रमातकोलेनिजनामा ॥ सीयसहिततिनकीनप्रणामा ॥ वहु
रवसिष्टतहांचलआए ॥ रामपेखगुरअतिहरपाए ॥ ८ ॥
सहाष्टांगपदकरीप्रणामा ॥ आजधंन्यहमभनेसुरामा ॥ य
थायोग्यआसनबैठाए ॥ पुनरघुवरइहवैनअलाए ॥ ९ ॥ ॥
॥ **सवैया** ॥ ॥ हैममतातमहाकुशलीअतिदुःखतकिंपुनमो
हियखाने ॥रामकीवातसुनीजवहीतवआपवसिष्टसुवाक्यअ

लाने ॥ विरहेतवरामसुभूपतपेतवचिंतसुसिंधुभएगलताने॥
रामसियालखंमंनभनेमुखभूपतिप्रानभएपुरहाने॥१०॥सुन
केगुरुवाक्यसुरामवलीजनुकानत्रिशूललगोअतिभारी ॥ अ
तिरोइसभ्रातकह्योमुखहाधरमाहिंगिरेअतिखाइतवारी॥त
वरामविहालसुपेखतहींसभरोतभईनृपकीतहँनारी ॥ पुनरा
मवखानसुहामुखतेकहँतातगयेतजमेघ्रिणकारी ॥११॥ता
तअनाथकियोहमकोअवकोधरगोदसुमोहिलडावे ॥ सी
यसुमित्रजरोवतहैंतनविआकुलऔद्रिगतेजलजावे ॥ तव
आपवसिष्टसुशांतकरेमुखशांतहिंकेवहुवाक्यसुनावे ॥ सुन
तातकीमृत्युसपूतवलीधरधैरयतांहिकीकृत्यकरावे ॥ १२ ॥
॥ **चौपाई** ॥ ॥ यांविधिमुनिवरभाख्योजवही ॥ मंदाकि
नीगएहरितवही ॥ करेस्नानसभकलमपटारि ॥ रामलियोक
रभीतरवारि ॥१३॥ जलकांक्षीराजाकोतवही ॥ दियोरा
मलक्ष्मणपुनसवही ॥ लक्ष्मणसहिनरामवलधारी ॥ पिंड
वनायेआपसवारी ॥ १४ ॥ इंगुदफलपिंन्याकनकरे ॥ मधु
सुधारअतिसैंसंचरे ॥हमरोअंन्नअहैजगजोई ॥ पितरनको
पुनभाख्योसोई ॥ १५॥ यांविधिदूखनीरद्रिगजाए ॥ करसु
स्नानवहुरगृहआए ॥ चिरंरोइसभआएतहां ॥ रामचंद्रको
आश्रमजहां ॥ १६ ॥ तादिनमैंकीनोउपवास ॥ अग्रमंदि
नसुगयेजलपास ॥ मंदाकिनिउज्जलजलमाही ॥ नाइराम
वैठतटमाही॥ १७॥ भरतसमीपरामकेगए ॥ हाथजोरयह
वचनअलए ॥ रामरामहेप्रज्ञाधारी ॥ राजतिलकतुमगहो

मुरारी ॥ १८ ॥ तातराजयहआहितुमारो ॥ तुमसुज्येष्ठजिउं
पिताहमारो ॥ क्षत्रिनकोयहधर्मकहीजे ॥ जोनिजप्रजासु
पालनकीजे ॥ १९ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ बहुभांतियागसु
तुमकरोपुनपूतनिजउपजाहु ॥ राजमैसुनथापकेपुनरामतुम
वनजाहु ॥ वनवासकोअबकालनाहीरामहोहुदयालु ॥ म
ममातदुःकृतजोकरेमनमाहिंनाहिंसमाल ॥ २० ॥ इहभांतभ
रतवखानकेशिररामचरणनदीन ॥करजोरसभकेपखतेअष्टां
गवंदनकीन ॥ तवरामतांहिंउठाइकैनिजगोदलीनबिठरि ॥पु
नरामभरतवखानयोद्रिगवहेप्रेमसुवारि ॥ २१ ॥ ॥ चौपा
ई ॥ ॥ सुनोवत्सअवतोहिबखानो ॥ जोतूंकहेसत्यमैजा
नो ॥ किंतुतातमुहआपबखानी ॥ चौदावरपअवधउरठानी
॥ २२ ॥ ॥शंकरछंद ॥ ॥ अबदंडकावनवासकरतुमआउ
पाछेग्राम ॥ मैभरतकोद्योराजसगलोजोअहेधनधाम ॥ इ
मआपभूपवखानयोतवराजहोयोसोइ ॥ यहदंडकावनमुहि
दयोयहजानेहैसभकोइ ॥ २३ ॥ ॥नराजछंद ॥ ॥ सुता
तवाक्यदोनकोअलंघ्यभ्रातजानिये ॥ कस्योकरेंसुतातकोहठं
नभ्रातठानिये ॥ सुतातवाक्यलंघ्यकेसुतंतरंकरेसुजो ॥ सुजी
वतोमृतंभयोमुयोनरकपाइसो ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
तांतेराजकरोतुमभाई ॥ हमदंडकवनपालेंजाई ॥ वहुरंरा
मप्रतिभरतवखानी ॥ सोतुमनीकेसुनोभवानी ॥ २५ ॥
तातमूढमतिकामुकआहि ॥ इस्त्रीजीतभ्रांतउरतांहि ॥ मत्त
तातभापेजगजोई ॥ सत्यगहीजनाउरसोई ॥ २६ ॥ ॥दो

हा ॥ ॥भ्रांतवाक्यजिमनागेहलोकविपधीमान ॥ तिमभूपतिकोवाक्ययहहमकोनांहिंप्रमान ॥ ३० ॥ ॥ **श्रीरामोवाच** ॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ नतातनारिजीतिओनभ्रांतहोइतांकही ॥ नकामकोनमूढधीसुपूरवंपिताकही ॥ सुसत्यवाक्यभूपतीवरंसुदोनतांदये ॥ असत्यतेडरेवडेनरकतेअधिक्कये ॥ ३१ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ करोंसत्ययौंमोहिउचारी ॥ भूपतिसुनतसुभवनमझारी ॥ मैरघुवंशविपेजगजयो ॥ वनेअसत्यनवाक्यसुकयो ॥ ३२ ॥ यांविधिरामवखान्याजवही ॥ वोलतभयेभरतपुनतवही ॥ जौवनवासअवश्यकअहे ॥ तौतुमसुनोभरतजोकहे ॥ ३३ ॥ मैवनजांउंधीरतनुधरों ॥ चौदावर्पवासवनकरों ॥ तुमपुरराजकरोसुखजाई ॥ सुनवोलेगिरिजारघुराई ॥ ३४ ॥ ॥ **श्रीरामोवाच** ॥ ॥ पिताराजतोकोंहैदयो ॥ वनोवासतिनमोहिअलयो ॥ उलटोकयोंवनेअवनाही ॥ होइअसत्यवचनपुनतांही ॥ ३५ ॥ ॥ **भरतोवाच** ॥ ॥ मैभीचलोंसंगवनवास ॥ सेवोंलक्ष्मणजिउंतवपास ॥ संगलेचलोनजोरघुराई तौमैतजोंकलेवरभाई ॥ ३६ ॥ यौंउरभीतरभरतसुधारि ॥ लैकरकुशासुधरणिखिलारि ॥ मरणआपनोउरमैधर्यो ॥ वैठकुशापूरवमुखकर्यो ॥ ३७ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ हेरहठीलेभरतकोरामहियेविस्माहिं ॥ नेत्रांतकसैननकरीगुरवसिष्टप्रतितांहिं ॥ ३८ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ अहेवसिष्टमुनीश्वरज्ञानी ॥ रहेभरतप्रतितांहिंवखानी ॥ अज्ञासनजोकीनवखान ॥ सो

तुमसुनउरअंतरमान॥३९॥ ॥सवैया॥ ॥ कमलासनकी
विनतीवसव्हैंयहरामनरायणभूतलआए ॥ सुतरावणकेव
धकाजजयेअजनंदनकेसुतरामकहाए॥ सुविदेहसुतायहजा
नकिजोसभलोकनकीजननीयहमाए ॥ ढिगरामकिजोलघु
भ्रातअहैयहशेषवलीनितरामसहाए ॥ ४० ॥ ॥ सवैया ॥
रावणकेवधकाजचलेवनकैकइकोअपराधनहै ॥ जोवरयां
चनतांहिंकरेकछुनिघुरवाक्यसुतांहिंकहै ॥ देवनकोकृतआ
हिसभोनहिरामकुभाषतएववहै ॥ रामहटावनकोहठजोतु
मदूरतजोउरमानकहै ॥ ४१ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ कुलसं
गसुरावणमाररणेयहवेगसुआवहिंगेपुरमांही ॥ सुनकै
गुरवाक्यसुकैकइनंदनहोइरहेविसमैउरमाही ॥ ढिगरामकि
जाइसुवातकहीउरआनंदनैनखिरेमुखमाही ॥ निजपादुकदे
हिसुरामवलीतिनपूजहुंराजासिंहासनमाही ॥ ४२ ॥ ॥ स
वैया ॥ ॥ तिनकोतहिंसेवननीतकरोंउरकालपिखोतवआव
नको ॥ इहभांतिउचारसुपादुकवैतिनजोरदईपदपावनको ॥
पदरामउत्तारसुआपदईअतिसुंदरतांमनभावनको ॥ गहि
कैकइनंदनपादुकवैउरआसकरीपुरजावनको ॥ ४३ ॥ कर
रामप्रदक्षणवंदनजूपुनकैकइनंदनएहुवखानी ॥ उरप्रेमभरे
द्रिगवारिवहेमुखमाहिभईसुगदागदवानी ॥ कृतऔधसमा
पतिआदिदिनानहिआवहुजोमनुकीरजधानी ॥ मखसाच
कहोंसुनरामवलीजरपावकदेहकरोंनिजर [illegible] ॥
मुखनेमकरेरघुवीरवलीकरप्रेमभलेलघुवं [illegible]

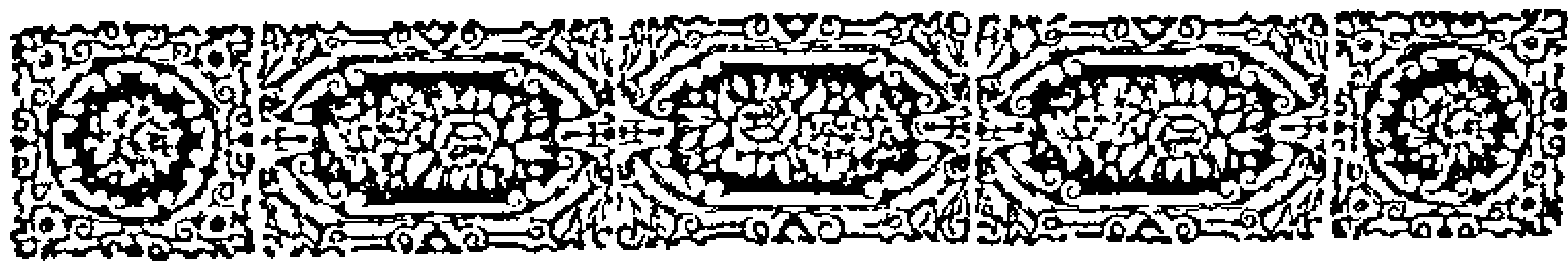
न्यवसिपसुभ्रातसमंविनकैकइऔरसभेतिनमाए ॥ पुनऔ
रअमातवजीरवडेपुरिजावनकेहिततांहिंचलाए ॥ द्रिगनीर
सुव्याकुलजोरउभेकरकैकइरामइकंतसुजाए ॥ ४५ ॥
॥ **कैकेईउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तवराजविघातनरा
मकियोममदुष्टमतीतवमोहितमाया॥क्षममेअपराधसुराम
बलीसुक्षमागुणतेजगसाधनगाया ॥ तवब्रह्मसनातनवेद
कहेंनहिंवापनहीतवरामसुमाया ॥धरमानुपरूपसुमायकए
हरिमोहितहोइहलोकसवाया॥ ४६ ॥ जिमप्रेरतरामसुतूंज
गमैतिमलोकशुभाशुभनीठकमावे ॥ तवनीतिअधीनसुवि
श्वअहैयहनाहिंसुतंतरहोनसुपावे ॥ कृतकंचनिर्जिउंजगना
चकरेकपटीजिहभांतिसुतांहिनचावे॥तवलोकउपावनकीश
कतीतिमनाचकरेवहुरूपदिखावे॥ ४७॥ देवनकेहितकाज
तुमैममप्रेरइहैमुखवातकहाई ॥ मैमनपापनिपापकियोवर
मांगलईशिरमैवुरिआई॥देवनपेखसकैंतुमकोअजुमेउरमैप
रतीतिसुआई॥पाहिनरायणत्वंजगमैजगनाथनमोममतेश
रणाई ॥ ४८ ॥ कटमोहसनेहसुपाशमहासुतऔगृहगोचर
जोअधिकाई॥तवज्ञानअसीअतिउज्वलकैरघुनाथगहोतुम
रीशरणाई ॥ सुनकैकइकीयहवाततवैगिरजामुखभीतरराम
अलाई ॥ तुमसाचकहीनहिझूठअहैइहरीतिसभाजगमोहिव
नाई ॥ ४९ ॥ ममप्रेरतसारसुतीजगमैसुनतेमुखतेनिकसीइ
हभांती ॥ हितदेवनकेइहकाजकरेइहमैतवदोपनहीममधा
ती ॥ घरजाहुरिदेममध्यानधरोउरभावनमोहिकरोदिनराती

सभठौरसनेहमिटेतुमरोमुकतीतुमहोवहिगीसुखदाती॥५०॥
॥ ॥चौपाई॥ ॥ मैसमद्रिश्ससर्वमैरहों ॥ द्वेपीपियारोना
हिनगहों॥ कल्पकअनुसारीमेरीति ॥ जिउंममभजभजों
तिंउंचीति॥५१॥ मममायाकरमोहितज्ञान ॥ मनुजाकृत
मुहिलेहिंसुमान॥ सुखदुखकोअनुसारीजाने॥ तेनहिमेरो
तत्वपछाने ॥ ५२ ॥ भलोभयोममगोचरज्ञान ॥ तोहिभ
योभवबंधनहान॥ गृहमैभजोसुपादहमारे॥करमछुहेंगेना
हितुमारे॥५३ ॥ ॥दोहा ॥ ॥ इहविधिभाष्योरामजी
उमाकैकईपास ॥ मुखपंकजतांकेखिरेभयोसुमनेहुलास॥
॥५४॥ ॥कैकेईउवाच॥ ॥चौपई॥ ॥शुद्धबुद्धपरमा
तमराम ॥ मेरोहैतेपदपरणाम ॥ तज्ञरामतूंआहिअनंता॥
त्वंनिरगुणत्वंसर्वनियंता॥५५॥ ॥दोहा॥ ॥ यां
विधिउस्तुतितांकरीकरप्रदक्षणाराम ॥ सौवंदनभूमैकरीमु
दितगईनिजधाम॥५६॥ ॥चौपाई॥ ॥भरतसुसैनाभ्
हितवजीर ॥भ्रातसमेतसहितगुरुधीर ॥ शीघरगयोअयो
ध्यामाहीं॥ रघुवरकोचितवेउरमाहीं॥५७॥ पुरकेलोकसं
गथेजेते॥ पुरीअयोध्याथापेतेते॥नंदगाममैगयेसुआप॥
पादुकधरीसिंहासनथाप.॥ ५८ ॥ भक्तसमेतसुपूजेनीत
रामबरोबरतामैचीत ॥ अक्षतगंधसुफूलचढावे॥ नित्यरा
जउपचारनध्यावे॥५९॥ ॥सवैया॥ ॥ फलमूलअहार
करेनिशिकोमनदांतजटाशुभशीशबनाई ॥ वटव्रत्तिधरीत
हैंभ्रातसमंपुनआपभयोधरभीतरशाई ॥ भवभूतलराजकि

कारयजेविनपादुकवातकरेनहिकाई ॥ जगदंडइनामुसुहोइ
जितोरघुवीरकिपादुकमाहिजनाई ॥ ६० ॥ ॥ **चौपाई** ॥
रामागमनआशउरमाही ॥ गनेभरतदिननिजमनमाही ॥
रामविषेमनतांकोजूटो ॥ मनोब्रह्ममुनिध्याननछूटो ॥ ६१ ॥
सवैया ॥ ॥ इतकैकइनंदनआइभलेनंदग्रामविषेमुनिरीति
बनाई॥उतरामचलीगिरिचित्रविषेमुनिसोंमिलवासकियोसु
खदाई ॥ शुभसीयसुभ्रातसमेतवसेसभलोकनवातइहैसुन
पाई ॥ वनरामनिहारनकेहितजूसुलगीतहँआवननीतलुका
ई ॥ ६२ ॥ रामनिहारसुभीरतहांउरधीरचडेमनकाजविचा
री ॥ त्यागचलेगिरिचित्रतवैवनदंडककीमनभीतरधारी ॥ अ
त्रिमुनीश्वरआश्रममैचलआपगयेसुमुकंदमुरारी ॥ भीरनहीं
जनकीसुजहांफलफूलजरीलटकीतरुडारी ॥ ६३ ॥ ॥ **तो
टकछंद** ॥ ॥ ढिगजाइपिखेमुनिरामतपी ॥ सुतपोवनमैं
जनुकोटिपपी ॥ अभिवंदनरामसुजाइकही॥ हमरामअहों
मुखमाहिकही ॥६४॥ ॥ **श्रीरामोवाच** ॥ ॥सुनदेवकहो
करंमोहिमया ॥ पितुआइसुलैवनमाहिअया ॥ वनदंडकवा
ससुमोहिगहो॥ अजुधंन्यभयोतवदर्शलहे ॥६५॥ ॥**दोहा**॥
रामवाक्यमुनिसुनतहीउमासुउरहर्षान ॥ जानेरामपरा
तमाभवभंजनभगवान॥ ६६॥ ॥**अत्रिरुवाच**॥ ॥**शं
करछंद** ॥ ॥ श्रीरामतूंजगपूजहैंआनंदकारकआंहिं ॥
ममपुंन्यआश्रमकरनकेहितआगयोवनमांहि ॥ इहभांतितां
मुनिभापकैलैपीठरामविठाइ ॥ करअर्घपूजारामकीवनमी

ठफलहँखवाइ ॥ ६७ ॥ पुनसीयलक्ष्मणकोदयेवहुभांतिकी
नस्नेह ॥ संतुष्टमुनिवरहोइकैमुखभापयोपुनएह ॥ हैभारयामे
वृद्धअतिअनुसूयहैइहनाम॥ अतिधर्मवंतीकीनतपइहकंदरा
चिरराम ॥ ६८ ॥ अंतररहेतिंहंजनकजापेखेसुमंदिरमांहिं ॥
श्रीकंजनैनसुरामजीभाष्योतवैसियजांहिं॥ वंदनकरोपदजा
इकैपुनवेगआइसुठौर ॥ सत्येतिरामवखानसीतागईतांढिग
दौर ॥ ६९॥ तवदंडवतवंदनकरीअनुसूयासीताचीन॥गरिला
इसियउरहर्षकैमुखबोलआदरकीन॥पुनदिव्यकुंडलदादयेजो
विश्वकर्माकीन ॥ शुभदिव्यदोनपटंवरातिनदएआपनवीन
॥ ७० ॥ अंगरागलगाइपुनसियअंगनीठसवार ॥ नहिकां
तितेतनकोतजेकमलाननेवलिहार ॥ सीतपतिव्रतधारकैचर
रामकेअनुसार॥ तवसंगकुशलीरामजीपुनजांहिंनगरमझा
र ॥ ७१ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ लैअशीसमुनिनारितेसीताबाहि
रआइ ॥ वैठीरामसमीपमैशोभाकहीनजाइ ॥ ७२ ॥ लक्ष्मण
सीतारामकोवहुरसुफलनखवाइ॥ वोलेमुनिकरजोरकरपर
महर्षउरआइ॥ ७३ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ रामतुमेभुवनानिरंचे
तिनरक्षणकेहितदेहधरे ॥ वामनतूंसुरमांहिंभयोनररामइहै
सुवराहकरे ॥ तोहिनहींगुणलेपकछूमहमायसदातुमतेसुड
रे॥ अत्रिमुनीवरयौंमुखतेहरिपुन्यकथावनमेविथरे ॥ ७४ ॥
कविरुवाच ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ जिनकेगुणगावतहैंसनका
दिकऔमुखमैचतुराननगावे ॥ गुणगावतनारदवीनलयेशि
वपारवतीप्रतिनित्यसुनावे ॥ सुउचारतशेपहजारमुखानहि

अंतकबीजगभीतरपावे ॥ कविसिंहगुलावसुतारघुनंदनपु
न्यकथासुनिपापमिटावे ॥७५॥ जिनकेयुगभ्रातवसेंनंदगां
उंसुएकभयेतिनसंगसहाई ॥ जिनराजविभूतितजीछिनमैंत
नभीतरजांमुनिरीतिबनाई ॥ जिनकीअतिगोप्यकथाजगमैं
शिवऔरिपिमंडलगोप्यजनाइ॥ कविसिंहगुलावसुतारघुनं
दनऔधकथाजनभापसुनाई ॥ ७६ ॥ इतिश्रीमत्अध्यात्म
रामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेनवमोऽध्यायः ॥
॥ ९ ॥ द्वितीयकांडंसमाप्तम् ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥



अरण्यकांडम्





श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ अरण्यकांड प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ सवैया ॥ ॥ वनदंडकजांहरिवा
सकरेमुनिमंडलकेसभदूखमिटाए ॥ करतानकमानविश
धहनेखरदूपणसेसुघनेअरिघाए ॥ जिहंब्रह्मसनातनवेद
भनेशिवऔचतुराननकीरतिगाए ॥ पदपावनतांमनभावन
कीहमबालकहैंशरणागतिआए ॥ १ ॥ ॥ श्रीमहादेवउ
वाच ॥ ॥ परमातमसुंदरतांरिपिमंदररातिवसेपरभातभ
ए ॥ हरिपावनपावनिनीरविपेभरअंजुलिऔइसनानकए॥
करजोरभलेमनभावभरेमुनिपुंगवकीढिगरामगए ॥ वनदं
डकजोमुनिमंढितहैमुनिपुंगवजूहमचांहिंजए ॥ २ ॥ तुम
आइसुदेहिमहामुनिजूपथदेखनकेहितएहुसुकीजे ॥ पथजा
ननजेतवशिष्यभलेकरआइसुवैहमसंगसुदीजे ॥ सुनराम
किवाक्यसुअत्रिमुनीहसवातकहीसुउमासुनलीजे ॥ सभ
कोतुमपंथदिखावतहोतुमरेहितऔरसुकौनकहीजे ॥ ३ ॥
॥ ॥ नराजछंद॥ ॥ तथापिरामलोककेनुसारतूंभयोजवै
॥ दिखाहिंतोहिपंथकोमुरारिशिष्यमेअवै ॥ वुलाइशिष्यवैमु

नीसुआपसंगहूंभए ॥ सप्रेमरामवारिओमुनीशभौनकोगए ॥ ४ ॥ सुक्रोशरामजौगएपिखीतहांमहानदी ॥ मुनीशशिष्य रामजीवखानिओसुयौंतबी ॥ उपाइपारजानकोकहोकुमार आहिको ॥ नदीतरैंसुकांहिसौंपिखैंउपाइनाहिको ॥ ५ ॥ मुनी शशिष्ययौंकहीसुनावएकहैभली ॥ तरांहिगेक्षणेकमैसुनो सुरामजूभली ॥ चढाइरामसीयभ्रातनावमैकुमारका ॥ चु फेरनावकेलएवनाइनीरतारका ॥ ६ ॥ ॥सवैया॥ ॥ जिं हँनामउचारतरेभवसागरनाहिंलगेकछुरंचकवारे ॥ जिंहँना मसुनेभवफंधटुटैंसुमिटैंभवभीतरकेअघभारे ॥ अवचेलन वातकहांकहियेसुनजांगिरिजागिरिजाहरतारे ॥ रघुनाथवही सुनपारवतीमुनिदारकवैक्षणमाहिउतारे ॥ ७ ॥ अभिनंद नकैरघुनाथवलीमुनिदारकवैपुनआपहटाए ॥ मुनिआश्र मवैमुनिबालगएपुनरामवलीवनपंथसिधाए ॥ वनघोरम हाझनकारितझीलसुडीलवडेम्रगपुंजसुहाए ॥ अतिसिंहसु व्याघरकोलवडेइतिरातसुराक्षसहैंतिहंछाए ॥ ८ ॥ ॥चौपा ई ॥ ॥ रामप्रवेशकीयोवनभारी ॥ लक्ष्मणप्रतियौंकह्योमु रारी लक्ष्मणसावधानअवचालो ॥ मेरोवचननमनतेंटालो ॥ ९ ॥ धनुपमाहिगुनलेहुचढाई ॥ करभीतरशरलेवोभाई ॥ आ गेचालोंमैपथिमाही ॥ पाछेतूंधनुलैकरमाही ॥ १० ॥ दोनो मैसियचालेऐसे ॥ जीवईशमैमायाजैसे ॥ दृष्टिपसारोचा रोओर ॥ वनमैराक्षसकोभयघोर ॥ ११ ॥ मैसुनिओसुपूर्वही भाई ॥ तोहिअरिंदमदयोसुनाई ॥ यांविधिभाषतदोनोभाई

योजनडेढगयेसुखदाई ॥ १२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तहँएक
तलावसुरामपिखेबहुफूलरहेजहँतामरसा ॥ वहुभांतिविहंग
सुगुंजतहैंअतिसुंदरहैंयुगसारससा ॥ अतिगुंजतभ्रिंगचुफेर
फिरेंजलशीतलऔमधुजांहिरसा ॥ सरतीरगयेअचनीरभ
लेतरुछायविपेरघुवीरवसा ॥ १३ ॥ पुनआवतरामपिख्योइ
कराक्षसदीरघदेहभयानकभारी ॥ मुखदाडकरालसुगाजत
हैंजिहंपेखसभैसुडरेंनरनारी ॥ जिहँमानुपआंहिंअनेकग्रथेअ
सवामसुकंधत्रिशूलसुधारी ॥ महिपागजव्याघरखावतहैतिन
पेखसुरामकमानसंभारी ॥ १४ ॥ रामअरोपकुवंडगुणंलघु
भ्रातहँकोइहवातउचारी ॥ भ्रातपिखोयहराक्षसआवतदीरघ
पीनजिसेतनभारी ॥ संमुखआवतहैहमकोजगभीरुणकोभ
यदेवतभारी ॥ लेहुअरोपकुवंडगुणंभयदूरतजोसुविदेहकु
मारी ॥ १५ ॥ इमरामवखानलयेशरपानसुआपखडेगिरि
जागिरिसे ॥ पिखरामरमापतिभ्रातसियागिरिजावहुराक्षस
घोरहसे ॥ भयदेवनकेहितवोलउठेतुमकौनअहोकटितूंणिक
से ॥ शुभशीशजटातरुछालनईमुनिभेपधरेवनमाहिंधसे ॥
॥ १६ ॥ तुमनारिसहायमहामदसुंदरमेमुखभीतरआइपरे ॥
ममग्रासमनोविधिनीठरचेकिहँहेतुकहावनमाहिवरे ॥ सुनरा
क्षसवाक्यउमाहरिजीमुसकावतहीइहवाक्यकरे ॥ हमरामअ
यंममभ्रातपिखोलक्ष्मंनकहेंवलरूपवरे ॥ १७ ॥ इहसीयअहे
ममप्राणप्रियापितुआइसुलैवनभीतरआए ॥ तुमसेलखराक्ष
सघोरवडेतिनकीसिखिआहिततातपठाए ॥ सुनकयहराघववा

क्यउमाखलहास्यउठेमनमैहरपाए ॥ करधारत्रिशूलपसारमु
खंपुनराघवकोयहवाक्यअलाए ॥ १८ ॥ मोहिनजानतरामतु
मैसुविराधवलीसभलोकसुनाए ॥ भाजगएमुनिमेडरतेवन
त्यागसुनोअबलौनहिआए ॥ जौमनजीवनआशतुमेइहछो
डसियातुमजाहुपलाए ॥ नाहिंतरामकरोंतुमभक्षनदक्षनदेश
कहोकिमआए ॥ १९ ॥ राक्षसयांविधिभाषउमापुनजानकिले
वनकेहितधायो ॥ काटदईभुजदोतिहँकीहसरामवलीशरएकच
लायो ॥ क्रोधभरेपुनराक्षससोसुपसारमुखंहरिकीढिगआयो ॥
रामदयोशरतानतिसेकटपादउभेअतिदूरवगायो ॥ २० ॥ मान
अचंभसुराक्षससोअहिसेमुखसोंहरिखावनआयो ॥ राघवता
कसुमुंडतिसेपुनआधशशीशरएकचलायो ॥ श्रोणितधारअ
काशगईशिरराक्षसरामसुकाटवगायो ॥ सीयसराहकरेतवरा
मकिप्रेमभरीसुउमागललायो ॥ २१ ॥ तवदुंदुभिदेवनकेसुवजे
नभकोटिअपच्छरनृत्यदिखावे ॥ उरआनंदऔउतसाहभरेगण
गंध्रवकिंनरवाजवजावे ॥ सुविराधहिंकेतनतेइकसुंदरऔरभ
योअतिरूपसुहावे ॥ विमलांवरकांचनभूपनहैंसुमनोरविऔ
रभयोइमआवे ॥ २२ ॥ ॥ **विद्याधरउवाच** ॥ ॥**सैवया**॥
अभिवंदनवंदितआरतिहाभवकंदनहाअतिदीनदयाला ॥
अभिवंदनवंदनदंडसमंशरणागतिहासुप्रसन्नविशाला ॥ ज
लजायतनैनसुरामवलीविदिआधरहोंसुप्रकाशविशाला ॥
दुरवासअकारणक्रोधभरेमुहिश्रापदयोअतिशैसुकराला ॥
॥ २३ ॥ तेपदनीतसंभाररहेभवफंधनमेजगभीतरटारे ॥ ना

मकथातुमरीममवाककहेसुसुनैंपुनकानहमारे ॥ द्वैकरतेप
दसेवकरेंशिरतेपदपंकजवंदनधारे॥ हेभगवाननमोतुमकोज
गआनंदज्ञानस्वरूपमुरारे ॥ २४ ॥ आतमरामसियारमणे
जगकारकमैंशरणागतिआयो ॥ मैंभवसिंधुसुनाहिंवहोंअ
वतोहिवनेहरिलेकुछुडायो ॥ आइसुदेहिसुमेहरिजीउरचाहि
तहोंसुरलोकसुजायो ॥ रामइहैवरमोहिदिजेममवोधहरेंन
हितेप्रभुमायो ॥ २५ ॥ ॥ दोहा॥ ॥ इहभांतीवरमागिओ
दयोरामपुनसोइ ॥ विद्याधरकेवाक्यसुनपरमप्रसन्नसुहोइ
॥२६॥ ॥ श्रीरामोवाच॥ ॥ सवैया॥ विदिआधरजाकुसु
देवपुरीनहिमायकतेगुणलेपकरे ॥ ममपेखनतेतवमोक्षभई
तुमहोसभतज्ञनमाहिवरे ॥ जगमोक्षप्रदायकमेभगतीसुअ
होविरलोजनकोइकरे ॥ अवतूंममभक्तिसपंनभयोममआइ
सतेसभवंधहरे ॥ २७ ॥ राक्षसरामहनेवनमैंपुनश्रापविमो
क्षकरेक्षणमाहीं ॥ रामदयोवरतांहिपुनाविदिआधरहोइगयो
नभमाहीं ॥ रामकिनामलयेअखिलारथपावतहैंजनयाजग
माहीं ॥ किंनभजेंगिरिजावकुरामसुकोविदजेभवमंडलमा
हीं ॥ २८ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे
अरण्यकांडेप्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥ ॥ ९॥ ॥ ९ ॥
॥ श्रीमहादेवउवाच॥ ॥ चौपाई॥ ॥ गयोविराधस्व
रगकोजवही ॥ रामसीयलक्ष्मणपुनतवही॥ कपिसरभंगआ
श्रमहिगए॥ सर्वसूखजिहँभीतरनए ॥ १ ॥ आवतसीताल
क्ष्मणराम ॥ पेखउठेमुनितपकोधाम ॥ पूजनकीनोसनमुख

जाइ ॥ ऊत्तमआसनमैंबैठाइ ॥ २॥ कंदमूलफलभोजनदी
नो ॥ तिनआतिथ्यभलोविधिकीनो ॥ ऋषिसरभंगसुभक्ति
परायन॥ बोलेरघुवरप्रतितपआयन ॥ ३॥ तपकोनिश्चयमैं
उरधारि॥ बहुतकालइहिविस्योमुरारि ॥ तवदरशनकीइच्छा
राम॥ त्वंपरमेश्वरपूरणधाम॥ ४॥ तपोसिद्धबहुपुन्यसुकीनो
सोसभरामतोहिमैंदीनो ॥ मैंअबमुक्तभयोतबहेरे॥ यांविधि
उमाऋषीश्वरटेरे॥ ५॥ ॥ सवैया॥ ॥ सभपुंण्यदएरघु
वीरबलीसरभंगभयोफलमांहिअसंगा ॥ सुबनाइचितातिहिं
मांहिचढेरघुनाथप्रणामकरीसरभंगा ॥ पुनरामहिंध्यानध
योंउरमैंतनुश्यामहाद्रिगकंजउतंगा ॥ तनुचीरधरेशुभ
शीशजटासुसरासनऔकटिमाहिनिखंगा ॥६॥ कौनदया
लुवियोबिनरामसुचिंततकामदगोजगसारे ॥ मोहिभजेनि
तएकमनाबहुजानममार्थआपपधारे ॥ जारतनूबिधिलोक
त्वहोअबदाशरथीरघुवीरनिहारे॥ औधपतीयहिराघवजोस
हसीयवसेउरमांहिहमारे॥ ७॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वामअंक
जिंहसीयसुहाई ॥ मनोमेघसहतडिताआई ॥ यांविधिध्या
नचिरंतिनधारे॥ सनमुखखडेसुरामनिहारे॥ ८॥ बहुरोअ
ग्निसुचितालगाई ॥ पांचभूततनुदयोजलाई ॥ दिव्यदेहधर
ऋषितपधारे ॥ लोकपतीकेलोकपधारे॥ ९ ॥ दिव्यविमान
चढेऋषिऐसे ॥ भ्राजमानदूसररविजैसे ॥ दिव्यनारिनरचा
मरकरें॥ व्यजनसुचारओरतेफिरें॥ १०॥ विष्णुदूतचौतरफीं
जावें ॥ विद्याधरआगेयशगावें ॥ दिव्यफूलमालागलसोहे

तेजतपस्यासभजगमोहे ॥ ११ ॥ पिखसरभंगगएनभमांहीं ॥ भएसुविस्मयऋपिमनमांहीं ॥ दंडकवासीऋपिगणसारे ॥ सरभंगासनमाहिपधारे ॥ १२ ॥ आएपेखनरामहिंसभही ॥ रामसियालक्ष्मणपुनतवही ॥ गिरिजावंदनतीनोकीनो ॥ मायाकरमानवतनलीनो ॥ १३ ॥ देहिंअशीशऋपीश्वरसारे ॥ रामहिंजोसभरिदेमझारे ॥ हाथजोरऋपिरामहिंकह्यो ॥ धनुपनिखंगजांहिंकरगह्यो ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूमिभारकेहरणहिततुमउपजेरघुनाथ ॥ ब्रह्माजूविनतीकरीजारउभयनिजहाथ ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हमजानेंतुमविष्णुस्वरेश ॥ सियकमलालक्ष्मणयहशेश ॥ दरअवतारभरतउरजानें ॥ चक्रशत्रुघनविद्रुपपछानें ॥ १६ ॥ रामप्रथमप्रभुएहुसुदीजे ॥ ऋपिगणकोदुखदूरसुकीजे ॥ आइरघूत्तमआपनिहारो ॥ मुनिसेवतवनमैंपगधारो ॥ १७ ॥ लक्ष्मणसियसहचालोजवही ॥ दयाहोइगीहमपरतवही ॥ यांविधिमुनिगणविनतीकरी ॥ जोरेहाथरामतवहरी ॥ १८ ॥ जातभएपुनमुनिकेसंगा ॥ लैकरधनुकटिकसेनिखंगा ॥ पडेहाडशिरघनेनिहार ॥ रामकियोमुखएहुउचार ॥ १९ ॥ किनकेहाडपरेकिहँकारण ॥ किनकाटेमुनिकरोउचारण ॥ तवऋपिगनइहकीनवखान ॥ हैंरिपिहाडसुनोभगवान ॥ २० ॥ जेहरिध्यानप्रमत्तसुभए ॥ राक्षसतिनशिरकाटसुगए ॥ देखतफिरेंसुवनमैसारे ॥ जेराक्षसहैंनीचमुरारे ॥ २१ ॥ सुनमुनिवाक्यसभयअतिदीन ॥ रामतवैसुप्रतिज्ञाकीन ॥ राक्षसजेभुविमंडलमांही ॥ सभमारोंमु

निडरोसुनांहीं ॥ २२ ॥ ॥श्रीरामोवाच॥ ॥चौपाई॥
अवममसुनोऋषीश्वरवानी ॥ सकुलकरोंसभराक्षसहानी ॥
अवऋषिदंडकजांहिंअवास ॥ सुखीहोइदुखहोइसुनाश ॥
॥ २३ ॥यांहितमैअवतारसुलीन ॥ ब्रह्मामोहिप्रार्थनाकीन ॥
जनकनंदनीसीतानाम ॥ यहममायाकेरसुकाम ॥ २४ ॥
इनलक्ष्मणमिलमैसभथारे ॥ करोंसुकार्यराक्षसमारे ॥ यां
विधिभाषमुनिनसंगराम ॥ किंचितकालवसेसुखधाम ॥ २५ ॥
पूजनकरेंऋषीश्वरसारे ॥ वनदंडकेहैंजांहिंअगारे ॥ लक्ष्मण
रामजनकजारानी ॥ कितिकवर्षतहँवसेभवानी ॥ २६ ॥ दे
खतवैऋषिआश्रमसारे ॥ क्रमहीक्रमवनमांहिमुरारे ॥ ऋ
षीसुतीक्षणआश्रमआए ॥ ऋषिसंकुलप्रख्यातसुहाए ॥ २७ ॥
सभऋतुकेफलजांकेमांहीं ॥ हैसुखदाइकसभऋतुमांहीं ॥ रा
मागमनसुन्योतिनजवही ॥ सिष्यअगस्तसुतीक्षणतवही
॥ २८ ॥ आसनतेउठलेवनआए ॥ राममंत्रजिहँहृदेसमाए
॥ विधिवतपूजनरामहिंकरे ॥ भक्त्युत्कंठदोऊदृगखिरे
॥ २९ ॥ ॥सुतीक्ष्णउवाच॥ ॥चौपाई॥ गुणअनंतसी
तापतिराम ॥ तोहिजपोंमैआठोजाम ॥ शिवविरंचितवपादल
गानें ॥ पोतभवाब्धिभ्रमलमैजानें ॥ ३० ॥ यांतेपर्योंसुतेपद
मांहीं ॥ रामदासमैतेजगमांही ॥ तुमसभजीवननेत्रखनहारे ॥
कुटंबकूपमुहिपर्योंनिहारे ॥ ३१ ॥ मलमयतनुमहिवंध्योनि
हार ॥ तुममोक्षणहितअएमुरारि ॥ तूंसभभूतनमैंसमअ
हें ॥ तोहिविमुखतवमायागहे ॥ ३२ ॥ तवसुमंत्रसाधनधर

जंई ॥ तवमायातेमुक्तसुतेई ॥ सेवासमफलदेहुमुरारी ॥ तुम
होकल्पतरुनकीवारी॥३३॥ ॥अनंगशेखरछंद ॥तुहींप्रभो
उपाइपालनाशहैंजगत्तकोस्वमाययाविरंचिईशनामतोहि
जानिये॥सुनीरकुंभजिउंरवीसुभिनतोहिमानहैंविनष्टतामती
भईसुरामयौंपछानिये ॥ प्रत्यक्षअक्षगोचरंपिखोंसुतेपदांबु
जंसुअंधकारतेपरेपदंसुतेवखांनिये ॥ सुज्ञानरूपतूंसदाअसं
ततोहिनापिखैंसुसंतमंत्रपूतजेतिनेंहृदेसुभानिये ॥ ३४ ॥ तुं
हींअरूपरामरूपतोहिमैंपिखोंमनुष्यवेशमाययाकरेविडंबएह
धारिये॥ दयासुनैनमीनयोमुखारविंदसुंदरंसुचापबाणहैंधरे
मनोजकोटिवारिये॥सुजानकीसमेतछालएणकीतनूलियेसु
भ्रातपादसेवहैकपीशदुःखटारिये॥गुणाअनंतश्यामशांतभा
गधेयतोहिकोसुजोरकैकरंउभेसुवंदनाहमारिये॥ ३५ ॥ ॥स
वैया ॥दिगदेशसुकालउपाधिविनारिपिजानतकेचितरूपतु
मारे॥घनचेतनपूरणब्रह्मकेहंनिगमागमगावतहैंगुणथारे॥ ह
मऔरनहींकछुचाहतहैंवनमाहिंपिखेंयहरूपमुरारे ॥ कचकुं
चितशीशकलापजटाईहरूपवसेउरमाहिहमारे ॥३६॥ इह
भांतिकहीरिपिपुंगवजौंहसरामतबैयहबातवखांनी ॥ ममतो
हिउपासननीठकरीउरउज्वलहोतभयोहमजानी ॥ हमहूंतव
पेखनहेतुअएममसेवनसाधनजानतज्ञांनी ॥ शरणागतमे
ममंत्रजपेंनिरपेक्षनकोहमहोवतभांनी ॥ ३७ ॥ ॥ चौ
पाई॥ ॥तोहिकीयोसुस्तोतरजोई॥ यांहिपढेजगभीतरकोई
॥ मेरीभक्तिलहेजनसोइ ॥ निरमलज्ञानतांहिउरहोइ ॥३८॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तूंममसेवनतेभयोमुक्तसुयांजगमांहिं ॥ देहअंतममरूपकोपावेंसंशयनाहि ॥ ३९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तेगुरुजोसुअगस्तमुनीमुनिनायकपेखनकीमनआई ॥ कछु कालतहांहमवासकरेंबहुठौरसुनीअतिशैसुखदाई ॥ गिरिजा सुनकैयहराममतोसुसुतीक्ष्णहैइहवातअलाई ॥ तुमप्रातच लोहमसंगचलेंचिरकालपिखेहमहूंमुनिराई ॥ ४० ॥ गिरिजा सुप्रभातभएहरिजीमुनिसंगचलेपथिपूछतजावें ॥ सुअ गस्तसंभाषणकेहितवैरघुवीरबलीमनमैहुलसावें ॥ गति मंदचलेंपथिपावनमैघनविद्युतसूरशशीछबछावें ॥ सुअग स्तकिआनुजमंदिरकोबहुजातभयेमुखवातअलावें ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेद्वि तीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ दो हा ॥ ॥ अनुजअगस्तसुतापसीअग्निजिव्हलिहंनाम ॥ सी यसुतीक्षणलक्ष्मणोगएतिनाश्रमराम ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अनुजअगस्तसुजोअस्थान ॥ तहँपहुचेतेदिनमध्यान ॥ विधिसोंतांऋपिपूजनकीनो ॥ मूलफलादिकभोजनदीनो ॥ ॥ २ ॥ प्रातभएअगलेदिनमांहीं ॥ न्हातभएपावनजलमां हीं ॥ अगस्तस्थानजातभएसारे ॥ सभऋतुकेफलजांहिंम झारे ॥ सुंदरहरणचुफेरेंखरें ॥ वैरभावमनमैनहिधरें ॥ पक्षी नादकरेंचहुंओरा ॥ मोरनकीजामैघनघोरा ४ ॥ नंदनवन जिहँपेखलजाए ॥ ब्रह्मरिषीगणजहांसुहाए ॥ देवऋषीगणभू षितभयो ॥ मनोविधाताल़ोकसुनयो ॥ ५ ॥ रामसुवाहि

रआश्रमखरे ॥ मुनिकेप्रतियहवचनउचरे ॥ तुमेसुतीक्ष्ण
वेगसुजावो ॥ ममआगमनसुगुरुंसुनावो ॥ ६ ॥ सीता
लक्ष्मणसंगसुराम ॥ बाहिरखरेनिवेदोधाम ॥ महाप्रसादसु
तीक्ष्णभाष ॥ गयोगुरूढिगपदअभिलाष ॥ ७ ॥ ऋषिसमूह
जिहँठौरमुहाए ॥ बैठेसनमुखकुशाविछाए ॥ रामभक्तबैठ
करजोरे ॥ हर्षअगस्तकेहेतिनओरे ॥ ८ ॥ राममंत्रकोअर
थसुनांवें ॥ शिष्यनकेसंदेहमिटांवें ॥ पेखअगस्तमुनीश्वर
आसन ॥ दंडप्रणामकरीपदपासन ॥ ९ ॥ होइसुतीक्षणनम्र
भवानी ॥ मुखभीतरयहबातवखानी ॥ ब्रह्मनसीतालक्ष्म
णराम ॥ बाहिरआइखरेतवधाम ॥ १० ॥ तवदरशनहितअति
हितभरे ॥ बाहिरखरेसुअंजलिकरे ॥ सुनअगस्तमनमैहर्षाने ॥
शिष्यसुतीक्ष्णप्रतियहभाने ॥ ११ ॥ ॥ अगस्त्यउवाच ॥
ल्यावहुशीघ्रतुमेकल्यान ॥ रामवसेममहृदयस्थान ॥
तिनकोध्यानसुमैनितकरों ॥ पेखनकोउरआशाधरों ॥
॥ १२ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इहभांतिवखानसुआपउठेऋषि
संगलियेनहिंवारलगाई ॥ उरभावभरीतिहिंठौरगएजिहँआ
पखरेगिरिजारघुराई ॥ कलिआनतुमेगृहरामचलोशुभआ
जभयोमुखएहुअलाई ॥ ममप्रीतमआजअतिथ्यभएस
फलंदिनआजभयोसुखदाई ॥ १३ ॥ रामनिहारउमामु
निकोमनभीतरवैअतिसेहरपाए ॥ सीयसुभ्रातसमेतभले
धरदंडप्रणामकरीऋषिपाए ॥ वेगउठाइउमामुनिराजसुराम
प्रातमजूगलिलाए ॥ रामसुसंगतिपाइमुनीश्वरआनंदको

जलनैनवहाए ॥ १४॥ करसोंकररामगहेमुनिपुंगवजातभए
निजमंदिरमाही ॥ बहुपूजनतांकपिराजकरेपुनरामबिठाइ
सुआसनमाही ॥ फलमूलखवाइसुभोजनजूशुभजोनिप
जेअपनेवनमाहीं ॥ शशिआननरामइकंतजबेपुनबैठरहेसु
खआसनमाही॥१५॥ करजोरकहीभगवानकपीतवआवन
कीनितवाटनिहारों ॥ चतुराननक्षीरनिधीविनतीदिनजांहि
करीवहुनीतचितारों ॥ धरभारनिवारनकोउरमैपुनरावनको
वधनीतविचारो॥ इहकाजसुश्रीहरिआवहिंगेमनआशइहैति
हँरूपनिहारों १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मैतपइहांसुकियोनिरं
तर॥ मुनिनसमेतनपायोअंतर॥ तेरोचिंतनमैउरकीनो॥ प्रभु
करुणाकरदर्शनदीनो ॥ १७॥ सृष्टिप्राकत्वंहीइकआहीं ॥
निर्विकल्पनिरुपाधिसदाहीं॥ मायाशक्तिसुतोहिकहीजे ॥ त
वआश्रयपुनतोहिविषीजे॥ १८॥ त्वंनिर्गुणतोकोंसाअवरे ॥
मायाशक्तिनामतवपरे ॥ अव्याकृतवेदांतीभांने ॥ मूल
प्रकृतिऔरेपुनठांने ॥ १९ ॥ केचितकेहसुमायानाम॥ के
संसृतिकेबंधनधाम ॥ यांविधिबहुतनामवखांने॥ विनाविवे
कनहोइसुहाने ॥ २० ॥ तुंहीकरेंसंक्षोभनजबही ॥ महतउ
पावेमायातबही ॥ पुनमहतत्वजनेहंकार ॥ तीनप्रकारसु
करेंउचार॥ २१॥ ॥सवैया॥ ॥ सात्विकराजसतामसऔ
जगभीतरवैपुननामकहाए ॥ तामसतेतनुमातरऔतनुमात
रतेमहभूतउपाए ॥ राजसतेसभइंद्रियकोगणसात्विकतेमन
देवबनाए ॥ लिंगमयीतनुसूत्रकहेंतिनमेलनतेपुनएहुरचाए

॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ स्थूलभूततेभयोविराट ॥ तांतेस्था
वरजंगमठाट ॥ देवमनुष्यसुतिर्यककरे ॥ कालकरमकरहुइ
अनुसरे ॥ २३ ॥ तूंरजगुणतेब्रह्माभयो ॥ निखिलजगतपु
नजांनिर्मयो ॥ सात्विकतेत्वंविस्नुकहीजे ॥ निखिलजगतको
पालनकीजे ॥ २४ ॥ रुद्रतुहींसातुमअनुसार ॥ निखिलज
गतकोहोइसंहार ॥ जाग्रतस्वप्नसुपोपतिजेती ॥ बुद्धिवृत्ति
गुणकीनीतती ॥ २५ ॥ तांहिंविलक्षणत्वंजगसाक्षी ॥ चितअ
विनाशीवेदसुसाक्षी ॥ उरमैस्फटिकर्योजवचहें ॥ त्वंरघुनंदन
मायागहें ॥ २६ ॥ प्रभुगुणवानिवतवत्वंभासें ॥ सिमरणते
जनकेअघनाशें ॥ द्वैविधिकीमायाबडभाग ॥ विद्याविद्याता
हिविभाग ॥ २७ ॥ पंथप्रवृत्तिवर्त्तेजेई ॥ भएअविद्यावशगत
तेई ॥ जेनिवृत्तिपंथहिंअनुसरे ॥ वेदांतार्थविचारणकरे ॥
तेरीभक्तिनिरतजनजेई ॥ विद्यामयभासेंपुनतेई ॥ जेइअवि
द्याकेअनुसारी ॥ तेईहैंभवमैसंसारी ॥ २८ ॥ विद्याभ्या
सकरेंजनजेई ॥ मुक्तभएभवभीतरतेई ॥ तेरेभक्तसुजेज
गअंतर ॥ तेरोमंत्रसुजपेंनिरंतर ॥ २९ ॥ विद्याप्रगटसुतिन
कोहोई ॥ इतरकदाचितलहेनकोई ॥ तांतेजिनतवभक्तिसु
गही ॥ मुक्तितिनेभवभीतरलही ॥ ३० ॥ वेमुखजेतवभक्ति
रसायन ॥ तिनकोमुक्तिनकरुणाआयन ॥ रामबहुतअ
वकहावखानो ॥ किंचितसारतत्वअवभानो ॥ ३१ ॥ संतन
कीसंगतिहैजोई ॥ मुक्तिहेतुभवभापीसोई ॥ समदर्शीनिर्वा
सीजेई ॥ संतकहीजेंयांभवतेई ॥ ३२ ॥ शांतदांतवभक्ति

सुधारे॥ उरकीकामनसगलनिवारे ॥ इष्टअनिष्टपाइजगमा
हीं ॥ हर्षविषादभजेंउरनांहीं ॥ ३३ ॥ सभकर्मनकोकरस
न्यास ॥ सदानिरंतरब्रह्माभ्यास ॥ समदमादिगुणउरमैध
रें॥ सद्संतुसटनचिंताकरें ॥ ३४ ॥ तिनकोसंगसुहावेज
बही ॥ कथाश्रवणतेरुचिजनतवही ॥ उपजेभक्तिसुथारेमा
हीं ॥ तुहींसनाननथांजगमाहीं ॥ ३५ ॥ तेरीभक्तिवंतजन
जेई ॥ ज्ञानविपुलपावेंपुनतेई ॥ मोक्षपंथयहअहेनिरंतर ॥
कोविद्भजेंनपावेंअंतर ॥ ३६ ॥ तांतरामभक्तियहथारी॥
प्रेमलक्षणामोहिमुरारी ॥ होइसदातवभक्तनसंगा ॥ करे
निरंतरजोभवभंगा ॥ ३७ ॥ आजजन्ममेसफलसुराम ॥
तोह्निपिखोंहरिपूर्णधाम ॥ आजसफलममभएसुयागा ॥ तो
हिपिखोंहरिमैवडभागा॥ ३८॥ दीर्घकालअतिमैतपकीनो ॥
तोहिविखेमनआननदीनो ॥ तांकेफलमैआजसुपाए ॥ तेप
दपंकजवारिचढाए ॥ ४० ॥ राघवसीयसमेतदयालु ॥ मेउ
रमंदिरवसोविशाल ॥ ऊठतवैठनचलतनिरंतर ॥ तेसिस्मृतिमे
परनअंतर॥ ४१॥ ॥ मदराछंद॥ ॥ इहभांतिउमासुअग
स्तमुनीमुखराघवकीअतिभाषवडाई ॥ चांपनिखंगदियोहरि
कोघरभीतरन्यासधरेसुरराई॥ खड्गदियोमणिभूपितजोभुवि
भारहनोतुमराक्षसराई॥ जांहिततैंअवतारलियेमनुजाकृतकी
तुमदेहवनाई ॥ ४२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ योजनद्वैइततेसुनरा
मसुपावनकाननजांहिमझारी ॥ हैइकपंचवटीवरआश्रमगौ
तमिकतटमाहिंमुरारी ॥ आश्रमतांतुमवासकरोसहभ्रातसमं

तविदेहकुमारी॥ देवनकेशुभकाजतहांवसआपकरोतुमराम
उदारी ॥ ४३ ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ अगस्तभाषितंवचो
सुनेस्तवोतिऊत्तमा ॥ मुनीसुंभाषकैचलेउमासुवैरघूत्तमा॥
अगस्तपंथजेकहेसुजांहितांहिमैचले ॥ समस्तपंथआपही
सुजानहैंउमाभले ॥ ४४ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे
उमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेत्रितीयोऽध्यायः॥ ३ ॥श्री
महादेवउवाच ॥ ॥ अनंगशेखरछंद ॥ सुजांहिरामपं
थमैसुशैलश्रिगकेसमंजटायुपंक्षिराटकोसुरामजीनिहारकै॥
कह्योअचंभहोइकैकुवंडआनभ्रातजूसुराक्षसोनिहारिओक
ह्योहरीपुकारकै ॥ इतोवखानलक्ष्मणंकह्योहनोंसुयांहिको
ऋपीसुदंडकावनेभखेइनेसुमारकै ॥ सुनेजटायुकानमैसुरा
मवाक्ययोंकहेभयोसुभीतचित्तमैकहैसुनांउचारकै॥१॥सुरा
ममोहिनाहनोसखासुतोहितातकोजटायुनाममेकहेंसुगृध्रमो
पछानिए॥वसोंगुपंचवाटिकाकरोंगुकाजथारिआकमानबा
नकिंधरोकरोनप्रानहानिए॥ शिकारकोसुजाहुजोकदासमे
तलक्ष्मणंसुसीयप्राणप्राणलैसुरक्षमोहिठानिए॥ उमासुगृ
ध्रवाक्यजेसुनेरघूत्तमेजवैसनेहवाक्ययोंकहेकहोसुगीधमा
निए॥ २ ॥ ॥ सवैया॥ ॥ इहिवासकरोसुजटायुभलेवन
भीतरतूंहमरेनिकटाई॥इमभाखगएपुनपंचवटीसुउमागलमा
हिंजटायुलगाई॥ सहसीयसुभ्रातसमेतगएरघुवंशमणीगिरि
जारघुराई ॥ शुभपंचवटीसुगुदावरितीरकरेनिजमंदिरवास
बनाई॥ ३॥ ॥चोपाई॥१॥ तांहिंनदीउत्तरतटमांहीं॥ती

नोवसतभएवनमांही ॥ जांहिकांतिपिखनंदनलाजे ॥ रामर
मापतितहांविराजे ॥ ४॥ ॥तोटकछंद॥ ॥ घनछायकदं
बसुजाहिंघने ॥ पनसाकदलीसफलाहिंवने॥ घनआम्रसमा
कुलदेशभए ॥ सभकालहुंकेफलजांहिंनए ॥ ५॥ अतिआहि
इकंतसुरोगनही ॥ जनकात्मजालक्ष्मनसही ॥ तहँराम
सुवाससुखेनकरे॥ सुरलोकसुरेशसमानवरे॥ ६॥ फलमूल
लिआवतभ्रातवनं ॥ रघुवीरसियापदसेवमनं ॥ धनुबाण
निखंगसुधारवरं ॥ निशिमाहिकरेअतिजागरणं ॥ ७ ॥ नित
न्हाहिगुदावरिनीरभले ॥ पथिदोनहुंवीचसुसीयचले ॥ लघु
भ्रातगुदावरिनीरअने ॥ करप्रेमसुसेवतपादतिने ॥८॥ चौ
पाई ॥ ॥एकसमेश्रीलक्ष्मणनामा ॥ जाइइकंतजहांश्रीरा
मा ॥ विनयवंतजोरेनिजहाथा ॥ पूछतभयोउमारघुनाथा॥
॥ ९ ॥ भगवनमोक्षगतीहैजोई ॥तुमतेसुन्योचहोंमैसोई ॥
कमलनैनतुमकरोवखान॥ ज्ञानसहितजोईविज्ञान ॥ १० ॥
भक्तिसहितअतिदृढवैराग॥ मोप्रतिकहोसुतुमवडभाग ॥ तुम
विनवक्ताऔरजुहोई ॥ भूतलमाहिंपिखोंनहिसोई ॥ ११ ॥
॥श्रीरामउवाच॥ ॥कहोंभ्रातनीकेसुनलीजे ॥ गोप्यनते
अतिगोप्यकहीजे ॥ जांहिज्ञानकोनरपहिचाने ॥ करेसकल
निजवंधनहाने॥ १२॥ प्रथमैकहोंसुमायारूप॥ वहुरज्ञानके
हेतुअनूप॥ वहुरोज्ञानसहितविज्ञान॥ वहुरपरातमकरोंवखा
न ॥ १३ ॥ जांकोजानमिटेभयभारो ॥ यहलक्ष्मणउरअंतर
धारो ॥ तनअनात्ममैआत्मज्ञान ॥ यहीसुमायाकरीवखा

न ॥ १४ ॥ तांहींकरहोवेसंसार ॥ तांकिरूपसुहृदउरधा
र ॥ इकविक्षेपावर्णसुआन ॥ रचेविक्षेपसुजगतमहान
॥ १५ ॥ लिंगादिकयहजगहैजेतो ॥ सूक्ष्मथूलरच्यो
तिनतेतो ॥ दूसरज्ञानरूपआवरयो ॥ आत्ममाहिसुवं
धनकरयो ॥ १६ ॥ रज्जुभुजंगभ्रांतिकरजैसे ॥ कीयेविचार
रहेनहितैसे ॥ काननैनमनकरजगभासे ॥ सर्वअसत्यस्वप्न
जिउंनाशे ॥ १७ ॥ तरुसंसारमूलअज्ञान ॥ तांहींक
रहैतनुअभिमान ॥ ततमूलकबंधनसुतदारा ॥ आतममा
हिसुभयोविकारा ॥ १८ ॥ तनसुस्थूलभूततनुमात्रा ॥ भयो
प्रगटलक्ष्मणविख्याता ॥ यांविधिपिंडरथूलउपायो ॥ यांमैआ
तमअतिदुखपायो ॥ १९ ॥ अहंकारबुद्धींद्रियप्रान ॥ चिदा
भासमनमायाजान ॥ यहीक्षेत्रतनुकोविदभाने ॥ इनेविल
क्षणआतमजाने ॥ २० ॥ यहीपरात्मजानोवीर ॥ साधनना
हिंसुनोअवधीर ॥ जीवपरातमहैपरयाय ॥ कियेविचारभे
दनहिपाय ॥ २१ ॥ मानाभावदंभनहिकीजे ॥ हिंसामाहि
नहीमनदीजे ॥ परक्षेपादिकसहेनिरंतर ॥ वक्रतताजतिकरेनअं
तर ॥ २२ मनवाणीपुनत्तीशरीर ॥ करेभक्तिसेवेगुरुधी
र ॥ बाहिरभीतरउज्वलरहे ॥ भलीक्रियामैथिरतागहे ॥
॥ २३ ॥ मनोवाक्यकायापरदंडा ॥ विषयवासनाकरेसुखंडा
॥ निरहंकारविकारनधारे ॥ जन्मजरादिकदोषनिहारे ॥
॥ २४ ॥ पुत्रसुदारधनादिकसारे ॥ करेसनेहनजगतमझारे ॥
इष्टअनिष्टअहजगजोई ॥ पाइविकारभजेनहिंकोई ॥ २५ ॥

मयिसर्वात्मिस्वात्मराम ॥ बुद्धिलगाइतजेसभकाम ॥ जन
कीभीरंजहांनहिहोई ॥ सेवेशुद्धदेशअतिसोई ॥ २६ ॥ प्राकृ
तजनकीसंगतिजोई ॥ करेकदाचितभूलनसोई ॥ आत्म
ज्ञानेउद्यमधारे ॥ वेदांतनकेअर्थविचारे ॥ २७ ॥ इनकरल
हेसुआतमज्ञान ॥ इनविपरीतसुहैअज्ञान ॥ बुद्धिप्राणमन
तनहंकार ॥ इनेविलक्षणआतमसार ॥ २८ ॥ चिदानंदआ
तमनिजजाने ॥ नित्यशुद्धअतिबुद्धपछाने ॥ जांहिज्ञानकर
यौंउरजाने ॥ सोईज्ञानभ्रातहममाने ॥ २९ ॥ यहिविज्ञान
रहदेमैजान ॥ कैअपरोक्षनिजातमभान ॥ आत्मापूरण
सर्वनिवासी ॥ सतचितआनंदहैअविनाशी ॥ ३० ॥ बुद्धयादि
कसुउपाधिविहीनो ॥ नहिपरिणामसुरंचककीनो ॥ स्वयंप्र
काशअनावृतजोई ॥ देहादिककोभासेसोई ॥ ३१ ॥ एका
द्वितीसत्यचिद्ज्ञान ॥ स्वयंप्रकाशअसंगसुजान ॥ द्रष्टापूर्ण
लक्षणगाए ॥ विनविज्ञाननजान्योजाए ॥ ३२ ॥ श्रोत्री
आहिअचारयजोई ॥ करउपदेशनिगमकोसोई ॥ एकज्ञान
तबउरमैभासे ॥ जीवपरात्मभेदविनाशे ॥ ३३ ॥ तबहीमूलअ
विद्याजोई ॥ लीनहोइआत्ममहिसोई ॥ कारयकारणहोहिंसु
हानी ॥ यहीअवस्थामुक्तिवखानी ॥ ३४ ॥ रघुनंदनयह
मोक्षसरूप ॥ तोप्रतिभाख्योभ्रातअनूप ॥ ददवैरागज्ञान
विज्ञान ॥ मैपरमात्मकह्योवखान ॥ ३५ ॥ परमेभक्तिवि
हीनसुजेते ॥ यांकोलहेंकदापिनतेते ॥ यद्यपिनैनवंतनरहोई
सम्यकरा[१]त्रिनपेखेसोई ॥ ३६ ॥ जोनरकरमैदीपकगहे ॥ नि

१ संघट.

खिलपदारथसोनिशिलहे ॥ इउंहीजेममभक्तिसुयुक्ता ॥
लहेंपरातमतेईमुक्ता ॥ ३७ ॥ मेभक्तीकेकारणजेई ॥ किं
चितकहोंसुनोअवतेई ॥ मेरीभक्तिवंतजेअहें ॥ प्रथमैसंग
तितिनकीगहे ॥ ३८ ॥ एकादशीकरेउपवास ॥ ममपर्वन
कोदृढअभ्यास ॥ मोकोममदासनकोसेवे ॥ करउपवासमो
हिमनदेवे ॥ ३९ ॥ मेरीकथासुनेअरुकहे ॥ करव्याख्यानप्री
तिममगहे॥ मोमैनिष्ठामेरीपूजा॥ मोहिभजेमुखऔरनदूजा
॥ ४० ॥ यांविधिकरेनिरंतरजोई ॥ मेरीभक्तिअखंडितहोई
तांतपरेनसाधनआन ॥ मेरीभक्तिबडीपहिचान ॥ ४१ ॥ मे
रीभक्तियुक्तजनजोई ॥ लहेज्ञानविज्ञानसुसोई ॥ दृढवै
राग्यलहेपुनसोइ ॥ तांतेमुक्तवेगवहुहोइ ॥ ४२ ॥ तेरेप्रस्नन
केअनुसार ॥ भ्रातकीयोमैसर्वोचार ॥ यांहिंविषेमनजो
जनलावे ॥ सोक्षणभीतरबंधमिटावे ॥ ४३ ॥ मेरीभक्तिवि
मुखमनजांको ॥ लक्ष्मणएहुकहोनहिंतांको ॥ मेरीभक्तिवा
नजनजोइ ॥ कहोवुलाइतांहिंकोसोइ ॥ ४४ ॥ ममउपदेश
पढेजनजोई ॥ भक्तिसहितश्रद्धाउरहोई ॥ वहुअज्ञानपट
लसुनिवारे ॥ क्षणभीतरसभबंधनटारे ॥४५॥ जोममभक्त
अहेयोगीश्वर ॥ विमलसुज्ञानशांतिजिनकेउर ॥ मेरीशेव
निरंतरकरे॥ विमलज्ञानउरअंतरधरे ॥ ४६ ॥ तिनकोसंगक
रेसदजोई ॥ उद्यमवंतसदामतिहोई ॥ मेरीसेवामैधीलावे ॥
मुक्तिवहीकरभीतरपावे ॥ ४७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैपरमा
तमरामजोवेदवखानेजांहिं॥ भक्तिज्ञानकरमोपिखेविनानि

१ आवर्ण

हारेनाहि ॥ ४८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥
सिम्रतिवेदपुराननमैपरमातमकैजिनकोजगगायो ॥ शंभुभ
जेजिनकेपदपंकजऔचतुराननतारदगायो ॥ व्यासवसिष्ट
अगस्तऋपीश्वरभांतिअनेकअनेकसुनायो ॥ सोकविसिंहगु
लाबपरातमरामधरेतनुभ्रातवतायो ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमद
ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेचतुर्थोऽध्यायः
॥ ४ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तिहँ
कालविषेरजनीचरनोंइकडोलतथीतिहँकाननमांहीं ॥ ढिग
पंचवटीशुभतीरनदीमुनिवासनमेशुभथाननमाहीं ॥ कमलां
कुशवज्रध्वजाहरिकेपदचिन्हपिखेजुउमाधरमांहीं ॥ पदसुं
दररेखनिहारमुठीअतिकामबध्योतिहकेउरमांहीं ॥ १ ॥
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शनेशनेपदरेखनिहारे ॥ गईरामकेभवन
मझारे ॥ पेखरमापतिरामहठीले ॥ सीयसमेतसुपरमरसी
ले ॥२॥ मनोमनोजरामइहभांती ॥ पेखमनोजलगोतिंहँछा
ती ॥ उमाराक्षसीरामअलाए ॥ किनकोसुतकोहितवनआए ॥
॥ ३ ॥ शीशजटातनुवलकलधारी ॥ कामकौनतेविपनमझा
री ॥ सूर्पणखामेकरेंवखान ॥ राक्षसिकामरूपणीजान ॥ ४ ॥
॥ सवैया ॥ ॥ मैभगनीवलिरावणकीसभराक्षसकोज
गमैंवडुराई ॥ काननमेखरभ्रातसमेतवसोंवनभूपतिआप
पठाई ॥ भोजनमैमुनिमांसकरोलिखभ्रातदईवनकीठकु
राई ॥ सुंदरतूंकहुकौनअहेंपदपेखतमैतुमरेढिगआई ॥ ५ ॥
तवरामकह्योगिरिजामुखतेइकउत्तरकौशिकदेशवखाने ॥

१ कहे.

इकऔधपुरीतिहँमध्यविराजततांपतिभूपसुरासुरजाने ॥ ह
महैंतिनकेसुतनारिइहैजनकातमजासभलोकवखाने ॥ ल
घुभ्रातइहैलक्ष्मंनकहेंअतिसुंदरपेखमनोजलजाने ॥ ६ ॥
हमसोंकछुकामअहैतुमरोअतिसुंदरितूंममदेहिवताई ॥ सु
नरामकिवाक्यउमामदनारतिराक्षसियौंमुखमाहिअलाई ॥
ममसंगरमोगिरिकाननमैमदंनारति मैतुमरीढिगआई ॥ दग
कंजनहींतवत्यागसकोंमदनागलगीतनदेहिवुझाई ॥ ७ ॥
तबरामकटाक्षनसीयपिखीहसकैमुखभीतरयौंतिहंभाषे ॥ म
मनारिइहैअतिसुंदरिहैतुमनाहिंकरोहमरीअभिलाषे ॥ तुम
सौंकनकोदुखनीतदहेअबनाहिंबनेतुमसोंघरराखे ॥ अतिसुं
दरमेलघुभ्रातअहैढिगजाहितिसेसुवहीदुखनासे ॥ ८ ॥ तु
मरेअनुसारसुहैभरतातिहँसंगरमोगिरिकाननमाहीं ॥ इहभां
तिकह्योहरिजीजवहीवहुदौरगईलखमंनजहांहीं ॥ उरभ्रात
कीआइसमानभलेभवमेभरतासुकह्योमुखमाहीं ॥ अवढी
लकरोनहिंसंगचलोहमकेलकरेंवनकीपरछाहीं ॥ ९ ॥ वन
घोरनिशाचरिकाममुठीइहभांतिवकेअपनेमुखमाहीं ॥ हसं
रामकिभ्रातकह्योमुखतेसुमहोदरितूंसुनियोमनमाहीं ॥ सुप
तिव्रततूंदशकंधरकीभगनीहमतोइनदासकहांहीं ॥ पुनदास
नितूंजगहोवहिंगीबडमोहिवरेदुखतेउरमाहीं ॥ १० ॥ क
लिआनितुमेतिनकीढिगजाहिवहीजगभीतरराजनराई ॥ सु
नकेयहिवातउमाकुटिलामनदौरतसोहरिकीढिगआई ॥ अ
तिक्रोधभरीमुखरामअनेकिममोहिभ्रमावततूंदुखदाई ॥ तुम

१ कामकरकेपीडीत. २ खेल.

इहैमुखबातअलाई॥ध्वनिघोरसुनोवनदैतनकीयहराक्षसको
ध्वंजिनीचढिआई ॥ अवहोइगुसंगरघोरइहांममसंगइहैअ
रिकीवलआई ॥सुमहावलत्वंजनकातमजागहिकंदरजाइर
होसुखदाई ॥ १७ ॥ मैवधआजकरोंक्षणमैयहराक्षसकीव
लआवतसारी ॥ तूंइहवीचनभापकछूवलितोहिसुगंदसुआ
हिहमारी ॥ मानतवैसहसीयलईलक्षमंनगयोगिरिखोहम
झारी॥रामनिखंगकसेकटिमैपुनलीनकुवंडसुपाणिसंभारी॥
॥ १८ ॥ राक्षसआयपरेतवहीकरआयुधकीवरपावरपाई॥
केच्चितमारतहैंतरुवाअरुकेचितशैलसुदेहिंचलाई ॥ रामसु
आयुधधारसभेंकटितीरनसोंअतिदूरवगाई ॥ वानहजारल
एकरमैसभराक्षससैनसुमारगिराई॥ १९॥ खरदूखनऔपु
नतीनशिरापहिराधिकमैसभनायकमारे॥तबलैलघुभ्रातवि
देहसुतापुनआइतहांजहंआपमुरारे ॥ अरपीतवसीयसुराघ
वकोहतराक्षसपेखभएविसमारे॥ मुखकंजप्रभाअवनीढुहि
ताविगसीमिलरामपतंगनिहारे॥२० आयुधधावसुरामकले
वरधोवतिहैइतसीयसुहेली॥सूर्पणखाहतराक्षसपेखसुदौरग
ईउतलंकइकेली॥जाइसभामहिरावणकेपदपासपरीदुखमां
हिदुहेली॥ रावणकीभगनीतरफैधरतीरनदीमछुलीजनमेली
॥ २१॥रावनपेखतयाभगनीअतिरोवतिनैनसुंनीरपनारे॥ऊ
ठसुऊठकस्योमुखतेकिननाककटीपुनकानतुमारे॥शक्रकुवेर
यमोवरुणातनखेहकरोंतिनकीकटनारे॥रावनकीगुनिएवेंति
यांतवसूर्पणखामुखमांहिउचारे॥२२॥त्वंमतिमूढप्रमत्तसदा

१ गला २ बाता

मद्पानकरेंकछुसारनपावें ॥नारिअधीनसुदीनभयोसठचार
नकोनहिदेशपठावें॥चारसुचक्षुविहीनसदासठराजकहोकिहिं
भांतिकमावें॥ मारलएत्रिशिराखरदूषनत्वंघरभीतरमंगलगा
वें॥२३ क्षण आधविखेवलवंतवडेदशचारहजारसुराक्षसमा
रे॥असुरारिवडेजगरामभएजनथानविषेमनकेडरटारे॥ नहिं
जानततूंइहवातकछूइहतेमतिमूढसुमोहिउचारे ॥ पिखलाज
भईदशकंधरकोपुनपूछतरावणआपविचारे ॥ २४॥ कौनसु
रामहतेकिमराक्षसकौननिमित्तभयोवनमाहीं॥आपभलेतिहं
मूलहनोअवक्रोधभयोहमरेउरमाहीं॥वीरसुमैजनथानकदा
चितआपगईसुनदीतटमाहीं ॥ पंचवटीइकथानअहेमुनिपूर्व
वासकर्योजिहंमाहीं ॥ २५॥ तहंआश्रमएकमनोरमथोमुहि
जाइपिखेतहंरामहठीले ॥ द्रिगकंजप्रभाधनुबाणधरेतनची
रजटाशिरमाहिंरसीले ॥ लघुभ्राततिसेलक्ष्मनकहेंअतिसुंद
रताहिंतथाविधिडीले॥कमलासमसुंदरितांपतिनीद्दगवारिज
सेतनकांचनकीले॥२६॥ गंध्रवदेवनहीनरनागनमाहितथावि
धिकीहमदेखी॥राजननाहिसुनीकबहूंवनघोततिर्थीवहुयांवि
धिलेखी॥मैतुमरेहितलेनलगीतिनरामइहैमनजानिविसेखी॥
रामहिप्रेरसुभ्रातवलीममनाककटाइदईतुमपेखी॥२७॥ तव
मैदुखिरोवतदौरगईखरभ्रातसमीपसुजाइपुकारी ॥ रणके
हितराक्षसलैवहुतेतहंदौरगएजहंरामहंकारी ॥ क्षणमैतिन
नाशकरेसगलेरणराक्षसजेजुहुतेवलभारी ॥ सुनमेमनयों
जवरामचहेक्षणमाहिहनेविधिकीविश्वसारी ॥ २८॥ जीवन

तौसफलातुमरोजवहोवहिसीयसुनारितुमारी ॥ उद्यमतूंइह भांतिकरेंजिहिंभांतिमिलेवहुप्राणपिआरी ॥ जानकिकंजप्र भाहगनीसभलोगनभीतरसुंदरिसारी ॥ रामहुतेनहिंआनस कोकछुपेखतनावलवुद्धितिहारी ॥ २९॥ छलकेरघुवीरहंदूर नयेतवपावहिंगोवहिप्राणपिआरी ॥ सुनकैयहवातदशोधन तांअरुमानकियोभगनीहितकारी ॥ करशांततिसेदशमौलि तवैपुनआपगयोनिजभौनमझारी ॥ उरचिंतवढीहगनीदन हीइहभांतिवितीतभईनिशिसारी ॥ ३० ॥ एकलराममनुष्य तिसेसहसैन्यहन्योखरसोकिहंभांती ॥थोवलवंतवडाजगमैक रआयुधऔतरुणातिहंगाती ॥ कैनहिरांमनराधपकोसुतमे वधचाहिलगीतिनछाती ॥ हैचतुराननकीविनतीहरिमानुपरू पलयोहमजाती ॥ ३१ ॥ रघुकीकुलमैहरिजीनिपजेमुहिमा रहिंजौपरमातमरामा ॥ इहभूमहिंराजतजोंक्षणभंगुरराज विकुंठलहोंनिजधामा ॥ नहिराक्षसराजकरोंजगमैहनराम लहोंशुभसीयसुवामा ॥ इहभांतिविचारकर्योघरमैभलराक्ष सराजसुरावणनामा ॥ ३२ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ गिरिजाप रातमरामकोहरिजानकीनविरोध ॥ विनवैरवेगनहरिमिलैति नदेखिओउरशोध ॥ करभक्तिजोहरिसेवहैनहिवेगपावेसोइ॥ मैभजोंतांअतिवैरकरहरिवेगराजीहोइ ॥ ३३ ॥ ॥ इतिश्रीम दध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेपंचमोऽध्या यः ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ सवैया ॥ ॥ इह भांतिविचारकर्योनिशिमैपरभातभएचढकैरथमाही ॥ सुमरी

चकिआश्रमजातभयोइककारजधारमतीमनमाही ॥ सुमरी
चतहांमुनिसेअतिराजतचीरधरेजटहैंशिरमाही ॥ गुणभास
कजोगुणहीनसदापरमातमध्यावतहैउरमाही ॥ १ ॥ सुसमा
धिविरामभईतिहंकीतवतांहिपिखेघररावणआए ॥ तवपूज
नतांहिकयोंतिनकोअतिआदरकैगलमाहिलगाए ॥ अतिथो
करतांसुखआसनमाहिविठाइमरीचसुवैनअलाए ॥ इहआ
वनतेरथवैठइकांकिनरावनमेकछुकाजजनाए ॥ २ ॥ कछु
चिंतपरायणतेमनभासतकारजतूंचितवैंमनमाही ॥ अब
मोहिकहोवहुकाजकरोंअतिगोपनहीजवतेमनमाही ॥ कछु
न्यायअहेतवनाथकहोकछुपापनहोइसुमेजगमाही ॥ सुन
कैइहभांतिमरीचकथातवरावनबोलउठेमुखमाही ॥ ३ ॥ **राव
णउवाच ॥ ॥ सवैया ॥** ॥ हैदशस्यंदनऔधपतीअति
भूपवलीविदिताखिलमांहीं ॥ रामअहेतिहंकोसुतज्येष्टसुसत्य
पराक्रमलोकनमांहीं ॥ भूपदयोतिहंकोवनवाससुआइवसे
वनदंडकमांही ॥ नारिसमेतसभ्रातअहेवहुतीनमिलेसुफिरें
सुखमाही ॥ ४ ॥ हैअवलौवनघोरविषेशुभआश्रमवीचसुपं
चवटीसो ॥ नारिअहेअतिसुंदरितांविधिनाइहभांतिनऔरठटी
सो ॥ रामहनेअपराधविनावनराक्षसमोहिलगीउचटीसो ॥ मा
रखरंसुखसोंविचरेंभगनीगहिमेतिननाककटीसो ॥ ५ ॥ निरदो
षनिशीलवतीभगनीअतिदुष्टतिनेगहिकानकटाए ॥ कछुमोहि
सहाइकरोवनमेअवमोहिजनेतिहँनारिलिआए ॥ वनतूंवनकां
चनकोमृगवाजवराघवकोछलदूरलिजाए ॥ लक्षमंनचलेतिहँ

१ एकेला

पीठपिछेतवरावणजानकिकोवनपाए ॥ ६ ॥ करमोहिस
हाइसुतूइतनीपुनपूर्वजिउंसुवसोघरमाही ॥ सुनिरावनकी
इहवाततवैसुमरीचकहेअपनेमुखमाही ॥ किनतेउपदेशसुए
हुकर्योवहुमूलउपारततेजगमाही ॥ तुमतांहिंहनोवहुशत्रुअ
हेवहुनाशचहेतुमरोभवमाही ॥७॥ रामपराक्रमयादभएसुन
रावणमैडरहोंमनमांहीं ॥ बालहुतोजवरामवलीमखकौशि
कराखनआइतहांहीं ॥ एकहिंवानसुवाहुहनेपुनदूसरमैइहसा
गरमांही ॥ योजनसौइहँआइपर्योमनव्याकुलऔतनकीसु
धनाही ॥ ८ ॥ वहुवानचितारचितारतहीमुहिरामदिखेसभठौ
रमझारी ॥ वनदंडकपूरववैरचितारसुराजनफेरगयोइकवारी
अतितीक्षणशृंगभयोमृगमैममसेमृगवावहुतेपरवारी ॥ जन
कातमजारघुवीरवलीलखमंनसभीसुपिखेवनचारी ॥ ९ ॥
मारनकोमनमोहिकियोतवरामविलोकसुमेमनमाही ॥ मे
उरवानहनेरघुनंदनश्रोणितजावतमेमुखमाही ॥ औरगएव
नभागसभैपुनमैगिरयोइहसागरमाही ॥ तांदिनतेइहठौरव
सोंमुनिभेपधर्योसुडरोंउरमाही ॥ १० ॥ अवरामकुध्यान
धरोंनिशिवासरभोगनतेसुडरोंउरमाही ॥ रतनारथराजतथा
रमणीइहकानपरेतुडरोंउरमाही ॥ इहशंकउठइहरामअहेस
भकारयमोहितजेजगमाही ॥ जबसोइरहोंनिशिमांहितवेअ
तिरामचितारतहोंमनमाही ॥ ११ ॥ सुपनेजवरामनिहारत
होंशरतानडराइसुमोहिजगाए ॥ अथतूंसुनुवातकहोंहितकी
शुभहोवतरामसुंवैरमिटाए ॥ दशकंधरराक्षसकोकुलजोतु

मपालकरोबहुभांतिसुहाए ॥ तवहेतकहौंउरमानकह्योतुम
रामपरात्मवैरवढाए ॥ १२ ॥ तजवैरभजोकरप्रेमभलेकरुणा
निधिरामपरातमगाए ॥ युगआदिविखेमुनिवाकनतेसुउदंत
सबैहमैहेसुनपाए ॥ परमेश्वररामाहिंपैविनतीचतुराननआ
पकरीढिगजाए ॥ तवईशकह्योतवकारयजोसुकरोंविधिजा
हिंनिमित्तसुआए ॥ १३ ॥ चतुराननतोमुखएहकहीकमलायत
लोचनभूमिपधारो ॥ तुमदाशरथीवपुधारहरीदशकंधरकौरण
मंडलमारो ॥ इहतेहरिमानुपरामभएवहुआहिंनरांयणयौंउर
धारो ॥ निजमायभएवहुमानुपसेतिनकोवनभीतरनाडरभारो
॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूमीभारमिटानहितमनुजभएजग
दीश ॥ तुमसुखसोंनिजघरवसोवैरतजोअवनीश ॥ १५ ॥
सुनमरीचकेवचनकोबोलेरावणफेर ॥ मानीनातिनकीकही
लीनोकालसहेर ॥ १६ ॥ ॥ मदिराछंद ॥ ॥ जोपरमातम
रामअहेविनतीविधिनातिनजाइकरी ॥ मारनकेहितआइइहां
पुनमानवकीतिनदेहधरी ॥ सोइकरेवहुढीलनहींकछुसिंहम
नोरथईशहरी ॥ मैअवढीलकरोंनकछूवनजाउंवनेमुहिसीय
हरी ॥ १७ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ वधरामकरेरणभीतरजोत
वैमैपरमात्मकोपदपाऊं ॥ नाहिंरामहनोरणभीतरजोतवजान
किकोघरभीतरल्याऊं ॥ अवतूंमृगरूपसुधारतहांपुनमैवनमै
तिनकीढिगजाऊं ॥ तुमआश्रमतेनयदूरतिनेपुनसानुजरामसु
एहुवताऊं ॥ १८ ॥ पुनपूरवज्यौंघरमाहिवसोइतनेपरतेक
छुहोतनहाने ॥ अवतूंभयदायकफेरकछूवनकोविदमोहिमरी

चवखाने ॥ तबतेशिरकाटदुटूककरोंअसिधारहरोंतुमेरेतनप्रा
ने ॥ सुनवाक्यमरीचस्वमृत्युलखीअववातवनेखलकेवचमा
ने ॥ १९ ॥ जवरामहनेवनभीतरमेतवमैभवसागरतेछुटजा
वों॥दुपटातमरावणमोहिहनेतवमैनरकागनिकीगतिपावों॥
इहभांतिविचारकियोगिरिजाउठवेगकह्योतुमसंगसिधावों॥
प्रभुरावनजोकछुमोहिकहोशिरजोरकरोंनहिनाथहटावों २०
इहभांतिउचारसुबैठरथंतवरावणआश्रमकीढिगआए ॥ सु
मरीचभयोमृगकांचनकोशुभराजतविंदुसुबीचसुहाए॥ रत
नाशिरशृंगकरेछलकैशुभनीलमणीखुरनैनबनाए॥ दुतिदा
मनिसीतनपैलशकेवनबीचफिरेसियरूपदिखाए॥२१॥ क्षण
धावतऔपुनआश्रमकीढिगआइतहांक्षणमैटिकजाए ॥पुन
आइसमीपडरेउरमैभयभारभयेकछुदूरपलाए ॥ इहभांतिभ
योमृगवाछलकैपुनसीयसमीपपुनापुनआए॥इहभांतिफिरेढि
गआश्रमकीउरचाहतहैखलसीयलुभाए॥ २२ ॥ इतिश्रीमद
ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेषष्टमोऽध्यायः

॥**श्रीमहादेवउवाच**॥**सवैया**॥ अथरामपरातमरावणको
कृतजानलियोसगलोमनमाही॥ पुनरामइकंतकह्योसियको
सुनसीयकहोंतुमकोवनमाही ॥ दशकंधरभिक्षुकरूपधरेतुम
रीढिगआवहिगोवनमाही ॥ अवतूंकरछायकिसीयभलेपुन
आपरहोदुरपावकमाही ॥ १ ॥ ममआइसमासनद्वादशतूंव
सपावकमेउरमानकही ॥ पुनरावणकेवधतेउपरंतसुमोहिमि
लेंइहझूठनही ॥ सुनरामकिवाक्यरचीछलकीसियसोहरिके

ढिगआइवही ॥ तबआपधसीसियपावकमैअतिलीनभईन
हिजातिलही ॥ २ ॥ छलकीसियसाछलकोम्रगवापिखहास
उठीअपनेमुखमाही ॥ ढिगरामकिजाइअधीनभईपुनएहक
ह्योनिजआननमाही ॥ इहरामपिखोम्रगकांचनकोरतनांग
नभूपितहैतनमाही ॥ वहुविंदुविराजतयांतनमैडरतोनहिरंच
सुकाननमाही ॥ ३ ॥ अबफांधतिनेमुहिदेहिपतीकरखेलन
घासचुगेफुलवारी ॥ तबरामसरासनलैकरमैलघुभ्रातसमी
पसुएहुउचारी ॥ बनतूंयतनोकरसीयरखोजनकातमजाममि
प्राणपियारी ॥ इहहैंछलवंतबडेखलराक्षससीमुगधातुमरीर
खवारी ॥ ४ ॥ चितहोइइकागरसीयरखोसुअनिंदतआहिप
तिव्रतवारी ॥ लक्षमंनकह्योम्रगपेखतवैम्रगनाहिंसुनोतुमरा
ममुरारी ॥ सुमरीचअहेनसंदेहकछूम्रगयांविधिकोनरचेमुख
चारी ॥ गिरिजासुनभ्रालमुखांवुजतेलवरामरमापतिएहुउ
चारी ॥ ५ ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ जुमरीचअहेतुइनोक्षणमै
म्रगजोतुवनेसियकेहितआने ॥ तुमसीयकुपालननीठकरोइ
मभापलईकरमाहिकमाने ॥ म्रगकोअनुधावनरामकीयोअ
चलोनिगमागमनीतवखाने ॥ जिनमाहिंरहेनितमायसदाज
गदाकृतजांसभलोकभुलाने ॥ ६ ॥ सुविकारविहीनचिदातम
जोपरिपूर्णओम्रगकेहितधाए ॥ हरिसेवककेअनुकूलसदागि
रिजाभुविमंडलवेदनगाए ॥ छलजानउमासियकेहितरामध
एम्रगकोवलपादउठाए ॥ वलिनातररामपरातमजोम्रगजान
कितकछुचाहतपाए ॥ ७ ॥ सुसमीपकदाचितडीठपरेक्षणधाव

तल्लीनकदाचितहोई॥ पुनदूरदिखावतरूपउमाहरिध्यानधरेह
गहेरतओई ॥ जगधन्यमरीचसुभागजगेपरमातमढूंढतता
तनजोई॥ तबरामनिहारउमामनमैंहरिजानलयोखलराक्षस
सोई ॥ ८ ॥ शरएकहनेमृगरूपवहीधरपूरवरूपगिरेधरमाहीं
मुखमाहिमरीचकिश्रोणवहेस्वरउच्चसुंदेरकह्योमुखमाहीं॥वि
धिहामृतुमोहिभईखलनेलक्ष्मंनरखोतुममोवनमाहीं॥ सम
रामउचारगिरागिरिओवहुश्रोणतपीवतजांमुखमाही ॥ ९॥
मरणेजिहंनामचितारतहीतजदेहमिलेनररामपियारे॥ अव
क्यौंनमिलेवहुराक्षसजोहरिहेरतहैहरिहीतिहँमारे॥ तिहँकेतन
तेइकज्योतिउठीसभकेपिखतेमिलिराममुखारे ॥ विसमैसुर
होइरहेसगलेमिलकैइहभांतिविचारविचारे ॥ १० ॥ कृतकौ
नकर्योंइनराक्षसऔपदकौनलह्योइनयांजगमाही॥ मुनिहिं
सकनीचमहाकपटीसुमिल्योननछोडपरातममाही ॥ अथ
वाइहरामप्रभावअहेकछुराक्षसकीकृतकोफलनाही ॥ शर
रामशरीरहन्योइहकेपुनरामचितारतथोउरमाही॥ ११॥डर
रामकेछोडदईसगलीग्रहकीकृतरामभजेउरमाही॥ लदिराम
कुध्यानधरेसदहीसभपापमिटाइदएतनमाही ॥ द्रिगरामनि
हारतराममिल्यांसुमरीचहन्योहरिजोवनमाही॥ द्विजराक्षस
पुण्यअपुण्यनकीगनतीनहिहैहरिकेघरमाही॥१२॥ अंतकले
वररामभजेवहुराममिलेयहसाचनिहारी ॥ आपसमोइम
आपसभैसुरआपगएसुरलोकमझारी ॥ रामवढीउरचिंतव
डीमरतेखलराक्षसकीनउचारी ॥ हालक्ष्मंनसुमोसमदा

क्यकह्योइनराक्षसतुंडमझारी ॥ १३ ॥ सुनमोसमवाक्य
विदेहसुताबधकोउपजेतिहँचित्तमझारी ॥ इहचिंतवढीहरि
केमनमैंवनवेगहटेसुमुकंदमुरारी ॥ सुनवाक्यमरीचसियाडर
पीदुखसिंधुवहीलक्षमंनउचारी ॥ लक्षमंनसरासनलैकरमै
वनवेगधसोतवभ्रातपुकारी ॥ १४ ॥ राक्षसपीडदईतिन
कोमुखहालक्षमंनसुरामकहेहैं ॥नाहिसुनेनिजकाननतूंवलिबु
द्धिकहांममदूखदहेहैं ॥ तांलक्षमंनसुएहुकह्योइहराघवनामु
खवाक्यकहेहैं ॥कोइकराक्षसरामहनेमरतांमुखभीतरएहकह
हे ॥१५॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्रोधकरेंजवरामजीहनेत्रिलोकीए
क ॥ सोकिमदीनसुबोलहैंसुरपूजैंधरटेक ॥ १६ ॥ सवैया
॥ ॥ क्रोधभरीलक्षमंननिहारसुसीदगभीतरजावतवारी ॥
भ्रातकुनाशचहैंउरमैंदुरबुद्धिमहालक्षमंनितिहारी ॥ कैकइ
नंदनतूंपठयोन्तरामकोतौउरअंतरधारी ॥ जानकिनातुम
हाथचरैंविषप्राणतजोंजरआगमझारी ॥ १७ ॥ रामनजान
तथांतुमकोपतिनीहमरींवनलेवनआए ॥ रामविनानहिमैंप
रसोंतनजानकियोंमुखसाचअलाए ॥ कैकइनंदनओतुमको
किहभांतिछुहेजनकात्मजाए ॥ योंमुखभापसुवाहुहनेउरजा
नकिनैननतीरवहाए ॥ १८ ॥ सोसुनकैलक्षमंनतवैकरकान
ढपेदुखहैउरमांही ॥ मोप्रतियोंमुखभापतहैंधिकपावाहिंगीदु
खतूंजगमांही ॥ योंमुखभापसियाअरपीवनदेविनकोसुगयो
वनमांहीं ॥ दूखलगोउरभीतरतांहरुएहरुएवनरामजहांहीं ॥
॥ १९ ॥ खलअंतरपाइसुरावणनेतवभिक्षुकरूपधर्योतनमा

हीं॥जनकातमजा।ढिगआइखरोपुनदंडकुमंडलहैकरमांहीं॥त
वसीयविलोकसुआपउठीलखसंतकयोंपुनपूजनतांहीं॥ फल
मूलदएतिनखावनकोपुनस्वागतआपकह्योमुखमांहीं॥२०॥
॥ **तोटकछंद** ॥ ॥ मुनिजूतुमभोजनबैठकरो ॥ सुखठौ
रवसोदुखदूरहरो ॥ पतिमेवनमैअबिआवहिंगे॥तवसेवबि
शेषकरावहिंगे॥२१॥ ॥**भिक्षुरुवाच**॥ ॥**सवैया**॥वारि
जनैननिकौनतुमेअरुकोपतिहैतुमरोजगमाही॥काननमैकि
मवासकरेबहुराक्षसनित्यफिरेंजिहँमाही ॥ मोहिकहोसभतूं
कलिआननिहेरजवंशनकेघरमाही ॥ उंनतअंगसभैतुमरेऋ
पिनारिनकेयहलक्षणनाहीं ॥ २२॥ ॥ **सीतोवाच**॥ ॥
॥**सवैया**॥ औधपतीइकभूपबलीदशस्यंदनजासभलोकव
खाने॥हैंसुतरामवडेतिनकेशुभलक्षणऔवलकेसुनिधाने ॥
मैपतिनीतिनकीजगमैजनकातमजामुहिलोकवखाने ॥ भ्रा
तअहेलघुजोतिनकोलक्षमंनकहेंबलबुद्धिसमाने ॥ २३ ॥
॥ **चौपाई** ॥ पितुआज्ञाउररामसुधारी॥ आएदंडकविप
नमझारी॥ चौदांवरषंकरेंवनवास॥ तुमनिजनामसुकरोप्र
काश॥ २४॥ ॥**भिक्षुकउवाच**॥ ॥**चौपाई**॥ पौल
स्त्यजरावणमुहिभाने ॥ राक्षसराजासभजगजाने ॥ तेरे
कामसुमोहितपायो ॥ तोकोंलेवनमैवनआयो ॥ २५ ॥
॥**सवैया**॥ ॥मुनिभेषधरेवनरामफिरेतिहँसंगकहांसुखतेव
नचारे ॥ अबमोहिभजोतजदुःखसभेसभभोगनभोगहुजेज
गसारे ॥ सुनसीयसुरावणवाक्यतवैमनभीतभईमुखएहुउ

चारे ॥ इममोखलभापततूंवनमैरघुवीरवलीतुमकोरणमारे ॥ २६ ॥ आवहिंगेअवसानुजरामजुतूंक्षणभीतरठांदरहेहै ॥ कोममधर्पणशक्तअहेहरिनारियथाशशकोनगहेहै॥राघववाणविभिनतनूधरमाहिंगिरेंफलबोललहेहैं ॥ सीयकहीसुनकेगिरिजादशकंधरक्रोधसुंदेहदहेहै ॥ २७ ॥ तजभिक्षुकरूपस्वरूपगत्योगिरिसोतनहैमुखभीतरगाजे ॥ दशआननऔपुनर्वीसभुजातनकीद्युतिसोंघनकीद्युतिलाजे ॥ तिनहेरडरीवनदेविसभेअरभूतदशोदिशकोउठभाजे ॥ तवफोरधरानखवंदनसोंसधराउत्तकीगिरिसीकरछाजे ॥ २८ ॥ तोलधरारथमाहिधरीअतिवेगचलेनभमंडलमाही ॥ हारघुवीरहहालक्ष्मनकहेजनकातमजामुखमाही ॥ रोवतिदीनभईउरमैधररूपनिहारतनैननमाही ॥ सीयकुक्रंदनदीनमहासुजटायुसुन्योनिजकाननमाही ॥ २९ ॥ वेगउठेसुजटायुवलीनखतीक्ष्णतुंडकुपेउरमाही . ॥ तिष्ठसुतिष्ठकह्योमुखतेइहकोतुमजावतहेवनमाही ॥ तूंजगनाथकीनारिहरीखलनाथनहींअपनेघरमाही ॥ कूकरज्योंपुरुडासवलीअतिपावननीचहरेमखमाही ॥ ३० ॥ इहभांतिउचारसुचोंचचलाइसुतोडदयोरथरावणको ॥ पदकेनखतीक्ष्णफेरदयेखगतोरदयोधनुवाहनको ॥ तजसीयसुरावनखड्गलयेसुजटायुजुटेगललाहनको॥करक्रोधकटेतिनपक्षउभेशिरशेपरत्योसुवतावनको ॥ ॥ ३१ ॥ इतजाइजटायुपरेधरमैकछुप्राणरहेतिहँकेतनमाही ॥ उतरावनऔरचढेरथपैगहिसीयगएनभमंडलमाही ॥

मुखरामहिरामखुसीयकहेअतिरोवतिरक्ष्यकपावतनाही ॥ मु
खहारघुवीरपुकारतिहैसुहिरामनिहारननादुखमाही ॥ ३२॥
राक्षसलेवनमोहिचलेपतिनीतुमरीतुमलेहुछुडाई ॥ हालक्ष
मंनसभागवडेअपराधिनिकोतुमलेहुवचाई ॥ वाक्यशिली
मुखमोहिहनेतुमदेवरमोहिपिखोअवआई ॥ रोवतियौंसि
यऊचमहाडररामहिंकेरथवेगचलाई ॥ ३३ ॥ वेगप्रभंजन
जातभयोसियकोदशकंधरलैनभमाही ॥ सीयनिहारअधो
मुखवानरपंचविराजतथेगिरिमाही ॥ भूषणलाहिकछूतनते
पटपाडसुवांधवगाइतहांही ॥ रामकहेंइकनारिगईसुहरीदि
शदक्षणयांपथमाही ॥३४॥ तवलंघपयोनिधिलंकगयेदश
कंधरसीयधरीपुरमाही ॥ सुअशोकवनीअतिसुंदरमैंशुभ
तालतमाललगेजिहंमाही ॥ तहँराक्षसियांरखवारिकरैंदशकं
धरमातपिखेउरमाही ॥ कृशदीनभईअतिआरतहैनहिवाल
गुंदावतहैशिरमाही॥ ॥३५॥ ॥दोहा॥ ॥ शुशकवदनअ
तिव्याकुलाहाहारामपुकार ॥ राक्षसिमैसीतावसेविलपतिनै
ननवारि ॥ ३६ ॥ ॥इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्व
रसंवादेअरण्यकांडेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ श्रीमाहादे
वउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ इहराक्षसकामुकरूपधरेछल
कोम्रगवावनराघवमारे ॥ तवरामहटेवनतेघरकोअतिदूराहिं
तेलघुभ्रातनिहारे ॥ मुखसूकरहेअतिदीनभएलक्षमंनवलीव
नपंथमझारे॥ वहिजानसभाविधिरामवलीमनआपनमाहि
विचारविचारे ॥ १ ॥ लक्षमंननजानतवातकछूवनमैसिय

जोछलकीसुवनाई ॥ जनप्राकृतजिंउंअवशोचकरोंसुकरों
लक्षमंनकीआजठगाई॥जवमैअवतूशनिमंदिरमैतजशोक
रहोंवनमैठहराई॥तवराक्षसकोटिमरेंकिहँभांतिपिखोंअवऔ
रसुरीतिनकाई॥ २॥ कामुकजिउंदुखभारभएसियशोचकरों
वनमैअकुलावों ॥ ढूंढतढूंढतसीयवनेतवमैअसुरायनमैंकुप
जावों ॥ रावणकोकुलकेसहमारसुपावकमैनिजजानकिपा
वों ॥ मोहिधरीगहिमैतिहिंकोपुनऔधपुरीसुखसेंघरजावों
॥३॥ चतुराननमेविनतीसुकरीममानुषरूपसुआपसवारे॥
गहिमानुषभावसुंवासकरोंकछुकालइहांअवभूमिमझारे ॥
जगमानुषभावकिमेचरयासुनहैंभवमंडलजीवउदारे ॥ त
जवंधनतेभवमोक्षलहेंनसहेंभवभीतरतेदुखभारे ॥ ४ ॥ यौं
मनमैठहिराइभलेतवआवतरामसुभ्रातनिहारे ॥ काहितजा
नकितोहितजीलक्षमंनकहोइमरामउचारे ॥ कैकिनराक्षस
सीयहरीअथवाजनकातमजागयोमारे ॥ रामकह्योजव
योंमुखतेकरजोरसियावचभ्रातउचारे ॥ ५ ॥ हालक्षमं
नकह्योमुखराक्षससोहरिजीहमहूंसुनपाए ॥ तेवचसोसुन
सोअवनीदुहितामम्जाकुसुएहअलाए ॥ रोइउठीतवमोहिक
ह्योवचराक्षसकोतुमकिंउंदुखपाए ॥ रामकहेनहियौंकवहीं
मुखशोभिनितूंसुपिखोघरआए॥६॥ इहभांतिकह्योजवमैति
हैंकोतवफेरकह्योतिनयोंमुखमाही ॥ अवसोनाहिंवाक्यवखा
नसकोंवहुआहिअवाच्यसुतेढिगमाही ॥ करसोंमुहिकानद
येतवहीतुमपेखनकोसुअयोवनमाही ॥ तवरामकह्योलक्ष

मंनउमासुनतद्यपितोहिकियोकछुनाही ॥ ७ ॥ तुमजोपित
वाक्यसुसत्यगहेपुनत्यागकर्योनिहिंकोवनमाही ॥ अवकैकि
नराक्षससीयहरीअथवाकोऊखाइगयोमुखमाही ॥ इहचिंत
यढीरघुवीरवलीकरवेगअएनिजआश्रममाही ॥ जनकातम
जातिहंनाहिंपिखीसुविलापकरेंदुखहैउरमाही ॥ ८ ॥ ॥ शंक
रछंद ॥ हाजानकीअतिसुंदरीकहंगईआश्रमछोर ॥ कैलीनतूं
वनमैभईममहासहितमनतोर ॥ इमरामढुंढेंजानकीवनमा
हिंपावेंनाहिं ॥ वनदेवीयोतुममेंकहोकहंजानकीअवआहि
॥ ९ ॥ म्रगपादपालिविहंगमोतुमदेहुमोहिवताइ ॥ इहभांतिवि
लपसुरामजीसियहेरहेंनहिपाइ ॥ सरवज्ञसोरघुनंदनापरसीय
पावेंनाहि ॥ आनंदसोअतिशोचहैंअतिअचलदौरेजांहिं ॥ १० ॥
चौपाई ॥ निरममनिरहंकारसुरामा ॥ सदानंदचितअद्वैधा
मा ॥ ममजायासीतायौंकहैं ॥ दुखसागरकोअंतनलहैं ॥ ११ ॥
यांविधिमायानरतनधारी ॥ फिरेरघूतमविपनमझारी ॥ जां
पदपंकजभजेविधाता ॥ मुनिसनकादिकऔरिपिसाता
॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हैअसंगसहसंगसोमूढपछानेराम ॥
तत्त्वज्ञानीरामकोलखेंपरातमधाम ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ॥
यांविधिसियहरिवनमैटोले ॥ लक्ष्मणसहितसुव्याकुलडोले ॥
नभकीओरनडीठपसारे ॥ सूरयतेउरलज्जाधारे ॥ १४ ॥ शंक
रछंद ॥ रथचक्रचापसुकूवरंभूभगनरामनिहार ॥ यहदेखल
क्ष्मणभ्राततूंइमरामकीनउचार ॥ कोलेचल्योथोजानकीतिहं
जीतलीनीआन ॥ कछुभूमिआगेरामजोपुनगएएहुवखान ॥

॥१५॥ ॥सवैया॥ तनुहैगिरिसोमुखश्रोणभरेतिनपेखसुराघवएहुअलाई ॥ जनकातमजाशुभलक्षणजोलक्ष्मनसुनोइनहैवनखाई ॥पिखयांहिनिशाचरप्राणहनोंअवसोइरह्योसुइकंतअघाई॥अवबानसरासनमोहिदिजेरघुनंदवनेनहिढीलगाई॥१६॥सुनरामकिवाक्यजटायुडरेअतिदीनभएमुखएहुउचारी॥नहिमारहुमोहमदेवहनेकलयानतुमेसुमुकंदमुरारी॥मुहिनामजटायुसुतेपतिनीजनकातमजागुणशीलउदारी॥दशकंधरसोवनमाहिहरीतिहँसंगभिरेहमरामसुभारी ॥ १७॥ मैतिहँवाहनस्यंदनचापसुकाटभलेधरमाहिवगाए ॥ मारगयोमुहिप्राणतजोंपिखभागभएतुमहूँअबआए ॥ यौंसुनिरामजटायुकथाअतिदीनखगेशगलेअसुआए ॥रामछुहेतिहंहाथनकैअतिदुःखभयोजलनैनवहाए॥१८॥आहिशुभाननमेपतिनीवनकांहिहरीसुजटायुसुटेरो॥ तूंममकाजहत्योवनमैप्रियबांधवतूंजगभीतरमेरो ॥रामहिंगीधकहेवतियांमुखमाहिसुश्रोणितजाइघनेरो ॥रावणराक्षसराजकैंहहरिसीयगयोतुमशोधसवेरो ॥ १९ ॥ दिगदक्षणसीयगईतुमरीअबजोरनहींममबोलनको ॥ अबप्राणतजोंतुमरामअएहमरेजगबंधनखोलनको ॥ तुमईश्वरतेपदकंजनकीइहुरेणकहांजगलोकनको॥ इहरूपनिहारमिटेअघभारफिरोवनमैसियटोलनको ॥ २० ॥**चौपाई**॥ भलाभयातुमरामनिहारे॥मरणसमेजनकेअघटारे॥ त्वंपरमात्माविष्णुअनूप॥ मायाकरभएमनुजसरूप ॥ २१॥ अंतकालतवदर्शनपाए॥रघुसत्तममेबंधमि

टाए ॥ मोतनरामलगावोहाथ ॥ मैंतपदजावोंरघुनाथ ॥ २२ ॥ रामतथातिनहाथलगाए ॥ भूमिपरेखगप्राणविलाए ॥ रामबंधुजिमशोचअपारी॥ रोवेंरामजाइद्दगवारी॥२३॥ लक्ष्मणकेकरचितावनाई ॥ रामहाथकरअग्निलगाई ॥ लक्ष्मणसहितनाइजलराम॥ देहिंतिलांजलिलैखगनाम॥२४॥ वहुरमेधमृगरामसुमारे ॥ आमिपखंडसुआपसवारे॥श्राद्धरामतिहंकोतवकरयो ॥ भिन्नभिन्नत्रिणमासुधरयो॥ ॥२५॥ भक्षणकरेंसजातीसारे ॥ त्रिपतिखगेश्वरहोहुउदारे ॥ श्राद्धकरेइहमंत्रउचारी ॥ पुनजटायुकोकहेंमुरारी ॥ २६ ॥ गच्छजटायूमेपदवीर ॥ मेस्वरूपपावोतुमधीर ॥ सर्वलोकयहवातनिहारे ॥ रामचंद्रइहभांतिउचारे ॥ २७ ॥ **सवैया**॥ तवदिव्यतनूधरवैखगनायकदूसरजिउंनभसूरचरे अतिसुंदरजाइविमानचढ्योसभभूषणहैंतनमाहिधरे॥ दरचक्रगदामुकटांगदवारिजलोगनकेतमदूरकरे ॥ तनपीतपटंवरयौंलसकैजनुमेघनकेसहविद्युफिरे ॥ २८ ॥ ॥ **दोहा** ॥ चतुविष्णुकेपारपदतैसेतांहिंस्वरूप॥पूजेंसर्वजटायुकोरघुवररूपाअनूप ॥ २९ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ उस्तुतिकरेंयोगिगणसंगा॥भयोजटायुसरूपउतंगा॥ वहुरजटायुजोरनिजहाथ॥ उस्ततिकरतभयोरघुनाथ॥३०॥ ॥**जटायुरुवाच**॥ ॥ **चौपाई** ॥ अगणतहैंगुणपुंजतुमारे ॥ अप्रमेयतुमब्रह्मउदारे जगउत्पतिसंयमथितिकारण ॥ उपरमपरमपरातमतारण ॥ ॥३१॥ रामचंद्रमहोइप्रणाम॥तुमकोनाथसआठोजाम॥त

मअपारसुखरामरसाल॥रमाकटाक्षसुकरेविशाल॥३२॥सु
रपतिचतुराननदुखजोई ॥ तुमेनिवारकऔरनकोई ॥ नरव
रतुमकोसदाप्रणाम ॥ तुमवरदायकपरमअकाम ॥ ३३ ॥
वानसशासनतेकरसोहे ॥ तीनभवनतरुणामनमोहे॥ वांछ
तफलकेतुमदातारी॥रविशतसुंदरप्रभातुमारी॥३४॥ मूदःसु
रागसुनिलयतुमारे ॥ तुमशरण्यमैशरणतिहारे ॥ भववन
दावानलतवनाम ॥ भवमुखदेवभजेंश्रीराम ॥ ३५ ॥ दनु
जपकोटिहजारविनाशी॥तनुयमुनासमप्रभाप्रकाशी॥ मैश
रणागततुमरीदेव॥तुमपरिपूरणअलेखअभेव॥३६॥गिरेसु
जेजगविपयमझार॥तिनतुमदूरसुराममुरारे॥ विपयनतेवे
मुखजनजेई॥सदानिहारेंतुमकोतेई॥३७॥भवसागरतारण
पदनाव ॥ शरणगहीतुमरेअबपाव ॥ शिवगिरिजामनकीन
निवास ॥ गिरिवरधारणतुमसुखरास ॥ ३८ ॥ सुरवरऔ
दानवसिरदारे ॥ सेवेंसगलसुचरणतुमारे ॥ देवनकेप्रभु
वरदातारी ॥ रघुनायकमैशरणतिहारी ॥ ३९ ॥ **सवैया** ॥
परकेधनऔपरनारनतेजिननीतविरागरहेउरमाही ॥ परके
गुणहेरप्रसंन्नसदापरकेहितमैसुरमेउरमाही ॥ सुवहीसुख
सेवतहैंतुमकोशरणागतमैतुमरीजगमाही ॥ मुखअंबुजमं
दप्रसन्नहसेसुलभोमणिइंद्रसुनीलसमाही॥ ४० ॥ नवनीरद
श्यामसुकंजप्रभाहगशोभितरामप्रफुलतुमारे ॥ गुरुकेगुरुई
श्वररामतुमेहरिब्रह्मशिवादिकरूपसवारे ॥ गुणतीनमयीतु
मरीशकतीपुनतांकरहैतुमहूंयहधारे ॥ रविज्यौंजलभाज

नमाहिभयोसुरनायककैंहंगुणगायकथारे ॥४१॥ रतिकेपतिके
शतकोटिसमाअतिसुंदरतूंजगमाहिसुहावें॥शतपंथसुगोचर
भावनयारघुनाथसदाअविदूरसुहावें ॥ यतिकेपतिजेउरशाँ
तसदातिनकेउरमैंनितरूपदिखावें ॥ रघुनाथतुमैपददासलहै
तुमआरतकेसभदूखमिटावें ॥४२॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यौंउ
स्तुतिसुकरीखगनाथ ॥ भयेप्रसन्नतांहिरघुनाथ ॥ श्रीमुखक
ह्योताहिकल्यान ॥ तूंमेरोहैंभक्तप्रधान ॥ ४३ ॥ मोहिविष्णुको
जोपदसार॥तांमैतूंअविवेगपधार ॥ तोहिकरीममउस्तुतिजो
ई ॥यांकोपढेलिखेवाकोई ॥४४॥ सुणेसुपावेमोहिसरूप ॥ मो
हिपरायणभक्तअनूप ॥ यांविधिरामकह्योतिहंजवही ॥ हर्ष
भयोखगवरउरतवही ॥ ४५ ॥ ॥दोहा॥ ॥ रघुनंदनकोरू
पजोविष्णुसनातनआदि ॥ सोधरतांपदमैंगयोपूजेंजांब्र
ह्मादि ॥ ४६ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसं
वादेअरंण्यकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीमहादेवउ
वाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तवभ्रातसमेनसुरामरमापतिऔ
रवनांनरमाहिंगए ॥ तहँसीयकुशोधनरामकरेमनव्याकुल
औउरदुःखनए॥ वनराक्षसरामसुएकपिखेजठरेमुखहैदगदूर
भए ॥ भुजयोजनलौंतिहँव्यापरहीइहभांतिकुरूपसरूपक
ए ॥ १ ॥ नामकवंधकहेंतिहँकोशुभजीवनकोवनभीतरमा
रे ॥ तांभुजभीतरआइपरेलघुभ्रातसमेनसुरामसुरारे ॥ तां
भुजमंडलमांहिंअयेयुगभ्राततवैखलरूपनिहारे॥पेखहुभ्रातु
सुराक्षसकोहसरामतवैइमवाक्यउचारे ॥ २॥ शिरपादनहीइ

सराक्षसकोजठरेमुखहैपुनबाहुपसारे ॥ भुजभीतरआइपरे जनजोतिहँखाइरहेवनघोरमझारे ॥ हमआइपरेइसिकीभुज मैखलराक्षसथांवनमैहममारे ॥ कहिंपंथनहीअविजावनको रघुनंदकरैंकहुकौनविचारे ॥ ३ ॥ खावहिगोहमदोनहुंकोहमे तेअवनाहिकछूबलहोई ॥ यौंसुनकैलक्ष्मंनकह्योअवऔ रविचारकरोनहिंकोई ॥ होइइकागरएकइकाहमकाटधरेंइह कीभुजदोई ॥ रामतथाकहिलीनअसीभुजदक्षणताहिंकटी हरिसोई ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लक्ष्मणवांमभुजाकट डारी ॥ दैतअचंभाभयोसुभारी ॥ तुमदेवनमैकौनप्रधान ॥ जिनमेरीभुजकीनीहानि ॥ ५ ॥ कहोअहोतुमभूमनि वासी ॥ कैदिविदेवसुतेजप्रकाशी ॥ कंजनैनश्रीरामर सीले ॥ हसकरबोलेछैलछबीले ॥ ६ ॥ सरयूतीरअयोध्या अहे ॥ पुरीमनोहरसुरनरकहें ॥ तांकोपतिदशरथवरराई ॥ सुरपतिकीजिनकीनसहाई ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैतिनको सुतपूरवोभाईयहममनाल ॥ रामनाममेरोकहेंलक्ष्मणइहै विशाल ॥ ८ ॥ ममपतिनीशुभजानकीसीतासुंदररूप ॥ मृ गयाकोहमथेगएराक्षसहरीअनूप ॥ ९ ॥ तांकोशोधनह मकरेंआएयांवनमांहिं ॥ तेभुजभीतरमैपरेप्राणपियारेआं हिं ॥ १० ॥ प्राणहितारथतेभुजाकाटीभुजबलधार ॥ विक टरूपतनमैधरेतुमहोकौनउचार ॥ ११ ॥ कबंधउवाच ॥ चौपाई ॥ ॥ मैअबधंन्यभयोजगमाहि ॥ रामतुमेआ एमोपाहि ॥ मैगंधर्वनकोथाराजा ॥ यौवनरूपपरमशि

रताजा ॥ १२ ॥ गर्वभयोमेरेउरमाहि ॥ विचरोमैसभलो
कनमाहि ॥ मोहिपिखेंसुरनारीजबही ॥ ह्योंजाइतिनको
मनतबही ॥ १३ ॥ मेतपकरब्रह्मावरदीनो ॥ मोहिअबद्धरघू
त्तमकीनो ॥ अष्टावक्रसुजोमुनिराई ॥ एकसमेहेयोंमैजाई ॥
॥ १४ ॥ तांकोदेखहस्योमैजबही ॥ क्रोधभयोमुनिवरपुन
तबही ॥ मोकोएहुबखानीबानी ॥ दुष्टअसुरतूँहोहुमलानी
॥ १५ ॥ मैपदवंदनतांपुनकरी ॥ शापअंतभाष्योमुनिवरी ॥
तपकरयोतेतांतनअैसे ॥ पावकहोइविधूमसुजैसे ॥ १६ ॥
त्रेतायुगदशरथवरनामा ॥ होवेंगेभूपतिअजधामा ॥ आ
दिनरायणलैअवतारे ॥ होसीसुततांभवनमझारे ॥ १७ ॥
वैवनआवेंगेपुनजबही ॥ काटेंगेतुमरीभुजतबही ॥ तांकरते
रोशापविलावे ॥ पूरवरूपबहुरतुमपावें ॥ १८ ॥ यांविधि
शापजबैतिनदयो ॥ राक्षसतनुमैपावतभयो ॥ एकसमेसु
रपतिवरराई ॥ तिनकौदौरामैरुखसाई ॥ १९ ॥ तिनेवज्रमे
शीशलगायो ॥ रामशीशमेकुक्षिगिरायो ॥ पादधसेमेकुक्षि
सुजाई ॥ रामरहीनहिमेगतिकाई ॥ २० ॥ कमलासनकोवर
थोभयो ॥ वज्रपावकरनहितनगयो ॥ तबतिनसंगदेवथे
जेई ॥ दयायुक्तपुनभएसुतेई ॥ २१ ॥ तोटकछंद ॥ अमरे
श्वरयांमुखनाहिअहे ॥ यॉप्राणकहांकिहँभांतिरहे ॥ तबमेसुर
नायकएहकही ॥ जठरांतरतेमुखहोइसही ॥ २२ ॥ भुजयांज
नलौतवहोइनए ॥ इमभापसुआपसुरेशगए ॥ वनतांदिन
तेइहठौरवसों ॥ भुजआइवरेमुखमाहिंग्रसों ॥ २३ ॥ तुम

मोभुजकाटदईवनमै ॥ अवजीवननांसमझोंमनमै ॥ इहखा
तविखेभरकाठघने ॥ मुहिआगलगाइसुरामवने ॥ २४ ॥ त
नमोहिसुआगजलाइजवे॥गहिपूरवरूपसुनाथनवे॥नवयोपि
तमारगतोहिकहों॥तवपादकृपापदसोइलहों॥२५॥तहँरामसु
भ्रातसमेतभले॥इकखातउपारसुतांहिडले॥ भरकाठसुपाव
करामदयो ॥ निकस्योतिहँतेइकरूपनयो॥ २६॥ जिहँकंद्रप
केसमशोभअहे॥सभभूषणहैंतनमाहिगहे॥ कररामप्रदक्षण
प्रेमभरे ॥ अष्टांगप्रणामसुपादकरे ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥
जोरउभयकरआपनेभक्तभरेउरभार॥गदगदवाणीतांभईउ
स्तुतिकरेअपार॥ २८ ॥ ॥ गंधर्वउवाच ॥ ॥ चौपाई॥
उस्तुतिकोमनभयोहमारो ॥ रामनहीतवगुणकोपारो ॥
तुमअनादिमनवाकअतीत ॥ भजेंयोगिवरजांकोचीत ॥
॥ २९ ॥ हैअव्यक्तरूपतवसूक्षम ॥ देहदुहूँतेरहितरघूत्तम
॥ दृष्टारूपतुमारोएक ॥ कोइकलहैसुपाइविवेक ॥ ३० ॥
औरतुमारोदृश्यसुरूप ॥ जन्यअनात्मप्रभूअनूप ॥ सूक्ष्म
तेरोरूपुसुजोई ॥ दुर्विज्ञेयजगतमैसोई ॥ ३१ ॥ चिदा
भासवुद्धीपुनदोई ॥ मिलकरजीवकहावेसोई ॥ वुध्यादि
कसाक्षीप्रभुनाथ॥ तूंपरब्रह्मसुश्रीरघुनाथ॥ ३२ ॥ तोहिवि
खेकल्पेंसंसार ॥ मूढमतीतोकोंनविकार ॥ हिरण्यगर्भसूक्ष्म
तेरूपा ॥ स्थूलदेहवैराटस्वरूपा ॥ ३३ ॥ सूक्ष्मरूपभावनाभा
से॥मंगलध्यानदूखसभनाशे॥भूतभविष्यअहेपुनजोई॥ राम
तुमेविनजगतनकोई ॥ ३४ ॥ यहिब्रह्मांडकोशतनथारो॥ म

हदादिकआवर्तसुउदारो ॥ सप्तगुणात्तरजांकोरूप ॥ सोवैरा
जधारणाऽनूप ॥ ३५ ॥ तुहींएकसभठौरेंअहें ॥ लोकअ
वयवतुमारेकहें ॥ हैपातालतोहिपादनतल ॥ पार्ष्णिआहिसु
लोकमहातल ॥ ३६ ॥ रामरसातलगुल्फसुजाने ॥ जानुन
लातलतोहिवखाने ॥ सुतलवितलतेउरूउचारे ॥ अतलरा
मतेजघनउदारे ॥३७॥ रामनाभितेअहअकाश ॥ उडगणतें
उरभएप्रकाश ॥ ग्रीवातेमहलोककहीजे ॥ वदनरामजनलो
कभनीजे ॥ ३८ ॥ तपोलोकतेकंबुकहावे ॥ सत्यलोकतेशीं
शसुहावे ॥ इंद्रादिकसभलोकसुपाला ॥ रामअहेंतवभुजा
विशाला॥३९॥दिशासुश्रोत्रअश्विनौनासा॥ तवमुखरामसु
अग्निप्रकाशा ॥सवितानयनचंद्रमनगाए॥ भ्रूवोभंगतवका
लवताए ॥ ४० ॥ वुद्धिवहस्पतिरामतुमारी ॥ रुद्रअहंकृत
कीनउचारी ॥ यमदाडापुनवाणीवदा ॥ औनक्षत्रदंतकोभे
दा ॥४१॥ हासारामतुमारीमाया ॥ सृष्टिकटाक्षरामतवगा
या ॥ पूरवभागधर्मतेगायो ॥ पृष्टसुभागअधर्मवतायो ॥
॥४२॥ ॥ **गीयामालतीछंद** ॥ निमेषऔउनमेषरामसुरा
तिदिनतवभाषिए॥समुद्रकुक्षिसुतेरेऔ नाडीनदीसभआखि
ए॥रोमावलीतरुऔषधीपुनरेतवृष्टिवखानिए॥ महिमातुमा
रोज्ञानहैइहथूलवपुतवजानिए ॥ ४३ ॥ इहतवपूजोधरेमन
महिलाइनीकेभावनी ॥ विनखेदपावेमोक्षसोनहिंऔरकृत्य
कमावनी॥ इहहेतुरामस्थूलतेवपुनीतमेउरआवहीं॥ जिहँध्या
नतेरसप्रेमउपजेरोमसभपुलकावही ॥ ४४ ॥ ॥ चौपाई

मुक्तहोइनरयांजगतवही ॥ स्थूलरूपतवभजेसुजवही ॥ य
हिसुस्थूलरूपजोथारो ॥ याँकोभीअवरहोविचारो ॥ ४५ ॥
यहिजोरूपप्रत्यक्षनिहारों ॥ मैइहकोउरअंतरधारों ॥ धनुषवा
णतनुस्यामविराजे ॥ शीशजटातनुवलकलछाजे ॥ ४६ ॥
तरुणशांततनसीयनिहारो ॥ सदावसोउरकरुणाधारो ॥
शिवसर्वज्ञमदासभवानी ॥ भजेंयहीतनुनिजरजधानी ॥
॥४७॥काशीविखेमरतजनकाल॥ तारकमंत्रकहेंसुविशाल॥
रामनामयहभाषेकान ॥ तारकब्रह्मसुकीनवखान ॥४८ ॥
जनकातमजापतीमुरारे ॥ त्वंपरमात्मामैउरधारे ॥ तेरीमा
यामोहेसारे ॥ जानेनहितवतत्वविचारे ॥ ४९॥ रामनमस्ते
सदकल्यान ॥ त्वंपरमात्मातेपदध्यान ॥ कौसलनायकराम
उदार ॥ भ्रातसंगपदसेवनहार ॥ ५० ॥ रक्षरक्षजगनाथउ
दारे॥मायाहरेनज्ञानहमारे॥ तवकरुणानिधिरामउदारे॥ भी
नेनयनसुवचनउचारे॥५१॥ ॥ श्रीरामउवाच॥ ॥ चौ
पाई ॥ भक्तियुक्तकीनवडाई ॥ मेगंधर्वहर्षअधिकाई ॥
योगिगंम्यमेपरमस्थान ॥ तहांजाहितूंबैठविवान ॥ ५२ ॥
वाक्यकदंबकत्थोतवजोई ॥ भक्तिसहितइहपढेजुकोई॥ अ
ज्ञानजभवबंधनजोई ॥ क्षणभीतरवहुत्यागेसोई ॥ ५३ ॥
॥ ॥दोहा॥ अनुभवकैअनुमेयजोमेरोचेतनरूप ॥ तांको
पावेंपाठकात्यागेंभ्रमतमकूप ॥ ५४ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्म
रामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेनवमोऽध्यायः ॥ ॥
॥९॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ सवैया॥ गंधवसोवर

पाइभलेचलतेतिहँरामहिवातउचारी ॥ तेपुरभागअहेशवरी शुभआश्रमजांकदलीफुलवारी ॥ तेपदपंकजसेवकहैभगती पथमैतिहँबुद्धिउदारी॥ तोहिकहेवहिवानसभाचलरामतहांतु मजाहुमुरारी ॥ १ ॥ इहभांतिवखानविवानचढहरिकेपद जावनहेतपधारे॥ तनुसूरजसोचमकैनभमैंकविरामकहेफल योंविसतारे॥रामतजेवनघोरतवैजहंसिंहसुव्याघरबोलतभा रे ॥आश्रमभीलसुतारघुनायकजाइभलीविधिसोंपदधारे॥ ॥ २ ॥ शवरीतवरामनिहारतहीसहभ्रातभलीछबआवतभा ई ॥ हरपीउठआसननेशवरीतबरामकिलवनकेहितआई ॥ह रिपादप्रणामकरीशवरीपुनप्रेमकुनीरचल्योहगजाई ॥ कहि रामअएतुमआनंदसोंसुखआसनमैतिनलीनविठाई॥३॥ल घुभ्रातसमेतसुराघवकेतिनप्रेमभरीपदनीरपखारे ॥ अरघा दिकपूजनतांहिकरेहरिपादननीरसुतांशिरधारे ॥ पुनदिव्यफ लादिकभीलसुतासुसुधारससेतिनआपनिकारे॥हरिकेहितजे तिनसंचयरेवहुआनदएतिनराममुरारे॥४॥पुनपादनफूलच ढाइभलेघसचंदनतांतिनअंगलगाए॥ इहभांतिअतिथ्यकर्यो तिनकोपुनसानुजआसनमाहिविठाए ॥ कविसिंहगुलावत वैशवरीकरजोरउभेइहवैनअलाए ॥ इहआश्रममेगुररामर हेवहुकालभलेतपतांहिकमाए ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ मैतिन शेवनकरोंसुनीत ॥ रहोंसमीपइकागरचीत ॥ बहुतहजारव र्षयोंभए ॥ तेकमलासनकेपदगए ॥ ६ ॥ जानसमेमुहिएहु वखानी ॥ तूंइहांहिंवसकल्यानी ॥ दाशरथीहरिरामहठीले ॥

ब्रह्मसनातनपरमरसीले ॥७॥ कृपिपालनराक्षसवधकाज॥
आवहिंगेवनमैसुरराज॥ तुंतिनध्याननिरंतरधार ॥ रामना
ममुखमाहिउचार ॥ ८ ॥ चित्रकूटगिरिमेअबआए ॥ मुनि
समआश्रमबसेंसुहाए॥आवहिंरामइहांसुनजौलौ ॥ एहुक
लेवररखसुतौलौ ॥ ९ ॥ रामहेरतनुअपनोदाहि ॥ जावहिं
गीहरिकेपदमाहि ॥ यांविधिगुरमुहिभाप्योजैसे ॥ करतभई
रघुवरमैतैसे॥१०॥तेरेध्यानविपैमनुदीनो॥तवआगमनप्रती
क्षनकीनो॥सफलभयोगुरमुखोउचार॥रामलख्योमैदर्शतुमा
रा॥११॥ ॥दोहा॥ तेरोदर्शनरामजीपायोमैगुरुनाहि॥योपि
तमूढाहीनमैअप्रमेयतुमआहि॥१२॥तवदासनकेदासजेसौ
गुणउत्तरकीन॥तांदासीअधिकारनहिकहाकहौंपरवीन॥१३॥
॥चौपाई॥ मनवाणीकेअहोअगोचर॥किंहँविधिभयेसुमे
हगगोचर॥उस्तुतिकरनहिजांनोराम॥होहुप्रसन्नरूपकेधाम॥
॥१४॥ ॥श्रीरामउवाच॥ नरनारीमुहिनाहिविशेपे॥जाति
नआश्रममेरेलेखे॥मोहिभजनमैभक्तिसुकारण॥वहीकरेसभ
वंधनिवारण॥१५॥वेदाध्ययनयज्ञतपदान ॥इनकरनहिमम
होवेभान ॥ भक्तिविहीनकरेकृतजोई ॥ मेरोदर्शनतांहिनहो
ई ॥ १६ ॥ भापौंभामनिभक्तिअगाधन ॥ करसंक्षेपभक्ति
केसाधन ॥ संतनकीसंगतिहेजोई ॥ प्रथमसुसाधनभाप्यो
सोई ॥ १७ ॥ दूसरमेरीकथाअलाप ॥ तृतीयसुमेरेगुणको
जाप ॥ व्याख्याममवचननकीजोई ॥ चौथोसाधनजानसु
सोई ॥ १८ ॥मेरोरूपसुजानअचारय ॥शेवैंनिशिदिनजेज

गआरय ॥ कपटनहीमनभीतरठाने ॥ पंचमसाधनएहुवखाने ॥१९॥ पुन्यशीलयमनियमउदारे ॥ मेरेपूजनमैमनधारे॥ षष्टमसाधनभाष्योसोई ॥ कोविदकरेनिरंतरजोई ॥ २० ॥ शुभममभंत्रउपासनजोई ॥ सप्तमसांगपछानोसोई ॥ सभभूतनमैममसतिकरे ॥ पूजाममभक्तनविसतरे ॥ २१ ॥ करेविरागसुअरथनमाही ॥ शमदमधारनिजमनमाही ॥ अष्टमसाधनएहुकहीजे ॥ नवमोतत्वविचारभनीजे ॥ २२ ॥ नवविधएभक्तीकेसाधन ॥ जांकोप्रामसुहोइमहाजन ॥ पुंस्त्रीतिर्यकआदिजुहोई ॥ मेरीभक्तिलहेपुनसोई ॥ २३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ प्रेमलक्षणाभक्तिजोउपजेजनमनमाहि ॥ मेरीतत्वज्ञानपुनभासेतिनमनमाहि ॥ २४ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ मेरोज्ञानभयोतिनजवही ॥ यहीजन्ममुक्तीतिनतवहीं॥ भक्तिमोक्षकोकारणआहि ॥ तांविनऔरसुकोईनाहि ॥२५ ॥ पूरवसाधनजिनकोहोई ॥ क्रमकरसगललहेपुनसोई ॥ तांतेभक्तिमोक्षदृढहोई ॥ बंधनसगलनिवारेसोई ॥ २६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ममभक्तीसंयुक्ततूंभईजगतकेमांहि ॥ यांहीतेहमभीलनीआएतवघरमाहि ॥ २७ ॥ मेरोध्यानसुधारकेभईमुक्ततूंआज ॥ अवरनकारणचाहीएभएसगलतवकाज॥ ॥ २८ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तूंजवजानतसीकमलादृगतीममदेहिसुआजवताई ॥ कांहिहरीकिहँठौरअहेममप्राणप्रियाशशिसीवदनाई ॥ तूंसभजानतरामसदाशवरीइहआंतसुवातअलाई ॥ तूंसर्वज्ञसनातनहैंजगकारणतेसवरीवलि

जाई ॥ २९ ॥ तद्यपितूंहरिपूछतहैंमुहिलोकनसोतनुयांज
गधारी ॥ हैजिहंठौरसुतेपतिनीतुमभाषतहोंसुनराममुरारी॥
रावननेतवसीयहरीअवलंकवसेजलसागरपारी ॥ आहिन
जीकसरोवरएकसुपंपकहेंअतिउज्जलवारी ॥ ३० ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ ऋष्यमूकतहँपरवतएक॥ रच्योविधाताअरथ
नटेक ॥ तहँसुग्रीववसेकपिनायक॥ चारसुमंत्रीजाहिसहाय
क ॥ ३१ ॥ पवनवेगकपिहैवलधारी ॥ भयोसुडरतिहँचीत
मझारी ॥ वालीभाईतेडरपावे ॥ ऋपिभयबालीतहांनआवे ॥
॥३२॥ तहँतुमजाहुरामबलधारी ॥ तौकिसखासुवनोमुरारी॥
तेसुग्रीवकार्यसभकरे ॥ तवदासीतेसत्यउचरे ॥ ३३ ॥
तवआगेरघुनंदनश्याम॥ अग्निप्रवेशाकरोंमैराम ॥ जारकले
वरतेपदजावों ॥ दोघटिकारहुदर्शनपावों ॥३४॥ ॥**सवैया**
इहभाँतिवखानसुरामवलीपुनपावकमाहिधसीतहँसोई ॥ क्ष
णभीतरजारकलेवरसोभववंधनकारणथोजगजोई॥ वनरा
मप्रसादसुमोक्षलहीशवरीजिहँपावतकोविदकोई ॥ फलको
दुरलंभसुहैजगमैजवरांमप्रसन्नउमाजगहोई॥३५॥ **चौपा
ई** ॥ अधमसुजातिभीलनीजोई॥ भईमुक्तभवभीतरसोई॥ रा
मभक्तब्राह्मणपुनजोई॥ किंउंनहिमुक्तसुवहुजगहोई ॥ ३६ ॥
भक्तिरामकीयांजगजोई॥मुक्तिविधायकभवमैसोई॥ काम
धेनुसीसाजगमाही॥ किंउंनहिंकरोभक्तिहरिमाही ॥३७॥ **स
वैया** ॥ रामकिपाइनसेवकरोजगभीतरहेजनप्रेमलगाई
ज्ञानअनेकसुमंत्रविचारसुदूरतजोभवभीतरभाई ॥ रामसु

श्यामम्हातनुसुंदरजांहिभजेसभहीअघजाई॥ तांहिंभजोतु
मनीतजनाजगभीतरजोजनकोसुखदाई ॥३८॥ ॥अनंग
शेखरछंद ॥ विराधजांहिमारयोनिवारयोकलेशदासवास
दंडकाकरेमुनीशटेकयोमथा ॥ कटेनिषंगधारयोउधारयोज
टायुकोसुयोजनायतीभुजाकबंधदेहजांमथा ॥ सुतांहिंरा
मचंद्रकीउदारपावनीमहाअपारधारगंगसीअरण्यकांडकीक
था ॥ गुलाबसिंहदाससामनोमलानिवारणीउधारदेवगीर
तेवनाइकेकहीतथा ॥ ३९ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामाय
णेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेदशमोऽध्यायः ॥१०॥ इति
अरंण्यकांडसमाप्तं ॥ ७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥







श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः



अथ किष्किंधाकांड प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः॥ ॥सवैया॥ मैथिलकीदुहितापदवीव
नडोलतजोरघुबीरनिहारे ॥ काननकेसरिकेसुतसोंजिनवात
करीजगनाथमुरारे॥ सूरयकोसुतमीतकर्योअरुजांहिपुरंदर
कोसुतमारे ॥ सोरघुनायकदासनकेशुभकाजकरेंविघनाक
टडारे ॥ १ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ तब
लक्ष्मणअरुरामरसीले ॥ शनेशनेअतिसुंदरडीले ॥ पंपा
सरकेतटमैगए ॥ऐखसरोवरविस्मयभए ॥ २ ॥ क्रोशप्रमा
णअहेविस्तारा॥ जलअगाधअतिउज्वलसारा॥ सुंदरकमल
जहाँअतिखिरे ॥ कुमुदअनेकप्रभाविसतरे ॥ ३ ॥ ॥ सवै
या ॥ वत्तिकऔपुनहंसघनेचकवाजिंहँशोभतहैंचहुँओरा॥
कोकिलकाजलकुक्कुटऔपुनक्रौंचसुनादकरेंघनघोरा ॥ की
रकपोतअनेकरटैंअतिशोभतसारसकेघनजोरा ॥ फूलल
तातरुयौंनिरखैंजनुनागरनारिचितैंदृगकोरा ॥ ४ ॥ फलभा
रभरेतरवासगलेशुभसंततिसेसुलटेघरमाही ॥ जलउज्वल
जिउंमनसंतनकोपुनवारिजगंधधसीतिनमाही ॥ श्रमहार

कवैजलपानकरेरघुवीरतहाँतरुकीपरछांहीं ॥ तहँसानुज
रामसुतूणकसेपथिशीतलमाहिंचलेतटजांहीं ॥ ५ ॥ **चौ
पाई** ॥ रिष्यमूकपरवतढिगदोऊ ॥ जातभएलक्ष्मणहरिसो
ऊ॥ धनुपवाणकरभीतरधारे ॥शीशजटावलकलहिंसवारे
॥ ६ ॥ नानावृक्षनओरनिहारें॥गिरिकीशोभावहुतउचारें॥
वानरचारसहितसुग्रीव ॥ तांपरवतशिरवसेसदीव ॥ ७॥
पिखलक्ष्मणअरुरामसुआए ॥ परवतशिखरचढ्योपुनजाए
डरसुग्रीवकह्योहनुमान ॥ आवतकौनदोऊवलवान॥८ ॥
जाइपिखोतुमतिनउरत्तांई॥ वटुकीआकृतिदेहवनाई॥क्यायह
वालीआपपठाए॥मेरेमारणकेहितआए॥ ९॥ तिनसोंजाइसु
वातकरेहु ॥ तिनकोचीतसगललखलेहु॥ जेवहुदुष्टचित्तलख
पांवें॥ करसैननकरमोसमझांवें॥१०॥ **दोहा** ॥भलेजानतिन
मोहिपिखहासीदंतनिकार॥यांविधिजानेहमसहीतिनकोसार
असार ॥ ११ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ हनूमानमुखतथाउचार ॥
लीनोवटुस्वरूपतनधार॥ अतिसुनम्रतिनकीढिगगयो ॥ कर
प्रणामपुनपूछितभयो ॥ १२॥ पुरुषसिंहतुमकौनसुदोई ॥
तरुणबीरवनआएजोई ॥ आठोदिशाप्रकाशोभाई ॥
दोसूरयसमप्रभासुहाई॥१३॥तुमत्रिलोकिकेकरतादोई॥मेरी
मतियांविधिकीहोई॥तुमसुप्रधानपुरुपजगकारण॥जगतस्व
रूपजननकेतारण॥१४॥मायामानुपभएअकार॥मैजानततु
मकोअवतार॥जगउपजावनपालनहरणू॥ लीलाकरोसुतुम
दोतरणू॥१५॥स्थावरजंगमजोजगहेरे॥तुमसुतंत्रप्रेरकतिन

केरे ॥ भूमीकोसभभारसुहरणो ॥ निजभक्तनकोपालनकर
णो ॥ १६ ॥ याहिततुमलीनोअवतार ॥ तुमपरमेश्वरक्षत्रि
अकार ॥ नरनारायणसेजगदोई ॥ मेरीमतियांविधिकीहोई
॥ १७ ॥ रामकीयोतबभ्रातउचार ॥ पेखोलक्ष्मणवटूसुचारु ॥ श
ब्दशास्त्रहैसगलोजोई ॥ वारअनेकसुन्योइनसोई ॥ १८ ॥ इने
सुजोजोमुखतेकस्यो ॥ शब्दअशुद्धनतांमैलस्यो ॥ पुनर
घुवीरकस्योहनुमान ॥ ज्ञानरूपवैश्रीभगवान ॥ १९ ॥ मैहों
दाशरथीजगराम ॥ यहमेअनुजसुलक्ष्मणनाम ॥ सीताद्धु
तीसुनारिहमारी ॥ पितुआयसशिरपरहमधारी ॥ २० ॥ ती
नोदंडकविपनमझार ॥ हमआएसुनब्रह्मकुमार ॥ राक्षसकि
नेसुहरीपियारी ॥ मेपतिनीवद्धुजनककुमारी ॥ २१ ॥ **दोहा**
तांकेढूंढनहेतुहमआएयांवनमाहि ॥ तुमबटुरूपीकौनहो
मोहिकहोमुखमांहि ॥ २२ ॥ ॥ बटुरुवाच ॥ ॥ **चौपाई**
सुग्रीवनामवानरकोराजा ॥ हैमतिमानवडोशिरताजा ॥
चारमंत्रितिहँसंगपियारे ॥ गिरिशिखवसेसुकपिशिरदारे ॥
॥ २३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ बालीकोलघुभ्रातहैरघुवरकपिसुग्री
व ॥ बालीपापीकाढयोडरतरहेतिहँजीव ॥ २४ ॥ इनकोनारि
सुतांहरीबालीपापीभ्रात ॥ तिहँडरयांगिरिमैवसेकपिनाय
कविख्यात ॥ २५ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ मैसुकंठकोअहोंव
जीर ॥ वायुपूतममकहैंसुधीर ॥ हनूमानममनामवखाने ॥
अंजनिमातसगलजगजाने ॥ २६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सहसुकंठ
सखिताकरोंकहोरघूत्तमजोइ ॥ पतिनीहरीसुनाशप्रतितोहि

सहायकहोइ ॥ २७ ॥ मैअवजावोंवेगतहँढीलनहीकछुआ
हि ॥ चलोरघूत्तमवेगतुमजोरुचिहैउरमाहि॥२८॥ ॥ श्री
रामउवाच॥ ॥सवैया॥ ॥ हमहूँतिहँकेसंगहोनसखाचल
केइहठौरसुनोअबआए ॥ जगमीतकुकारजहोइजितोकरहों
सगलोशिरलौवललाए ॥ हनुमानतबैनिजरूपगह्योकर
जोरउभेतिनरामअलाए ॥ अबमोहिसुकंधचढोरघुनायक
वेगचलेंनहिंढीलसुहाए ॥ २९ ॥ तिहँठौरचलेंअबवेगसु
नोजहँसंगअमातबसेकपिराई ॥ तबरामतथामुखभापभले
हनुमानसुकंधचढेयुगभाई ॥ हनुमानसुकूदचढेक्षितितेगिरि
शीशविखेनहिंढीललगाई ॥ रघुनाथतहाँलघुभ्रातसमाक्षण
बैठरहेनिवडीतरुछाई ॥ ३० ॥ हनुमानकपीश्वरपासगएकर
जोरउभेइहवातअलाई ॥ लघुभ्रातसमारघुवीरअएडरदूरत
जोसगलोकपिराई ॥अबवेगउठोमिलराघवकोतिनसोंसखि
तातुमरीसुबनाई॥करतूंसखितासहवेगतिनेसुनराजनपावक
पासजलाई॥३१॥हरपेशुभग्रीवसुनीबतियांपुनआपरघूतम
कीढिगआई॥ तरुकोमलशाखसुछीनलईकररामकिहेतुसुदी
नविछाई॥हनुमानदईलक्समन्नतबैलक्समन्नसुकाढदईकपिरा
ई॥पुनबैठगएतिँहँठौरतबैकपिनायकऔहरिजीहरपाई॥३२॥
आदहुँतेरघुवीरकथालक्ष्मनसभातिहँभापसुनाई॥ रामदयो
वनवासपिताअरुसीयगईवनमाहिचुराई ॥ यौंलक्ष्मनकिवा
क्यसुनेतबएकपिनायकबातअलाई ॥सीयसुशोधनमैकरहों
बलबुद्धिजहाँपहुचेरघुराई॥३३॥अरिघातनमैसुसहायकता

तुमरीकरहोंवलमैरणमाही ॥ इकऔरसुनोतुमरामकहोंजु पिखीइहमैनिजनैननमाही ॥ कपिचारसमेतसुएकसमेइह वैठुहुतोगिरिकेशिरमाही ॥ इकनारिसुलोचनराक्षसकोगहि जावतथोनभमंडलमाही ॥३४॥ मुखरामहिरामपुकारतथीपु नपेखहमैगिरिकेशिरमाही ॥ निजभूषणतारसुफारपटंवरडा रदएसुधराधरमाही ॥ अतिरोवतिथीदृगनीरघनोगहिराक्ष सतांहिगयोनभमाही ॥ गहिभूपनमैरघुनंदनवैइहथापधरेगि रिकंदरमाही ॥ ३५ ॥ अवलौइहआंहिंपिखोनिजनैननहैंतिन केकिनहीसुविचारे ॥ इहभांतिउचारसुआनवहेकपिनाथभले रघुनाथदिखारे ॥ पुनरामसुहाथनखोलगिरापिखभूपणहामु खमाहिंपुकारे॥ ह्रदिभूपणधारसुरोतभएजनुप्राकृतरोवतलो कमझारे ॥३६॥ लक्ष्मनदयोवहुधीरतवैअरुवाक्यइहैसुकहे मुखमाही ॥ दिनकेतकमाहिंलहोसीयकोतुमकिउंवहुशोचक रामनमाही ॥ कपिनाथसहायकहेहमरोहममारहिंरावण कोरणमाही ॥ तवआपसुग्रीवकह्योमुखतेप्रणभापतहोंसुसु नोवनमाही ॥ ३७ ॥ ॥ **सुग्रीवउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ यहहैरामप्रतिज्ञामेरी॥ वहुतकहेउरलाजघनेरी ॥ रावणको रणभीतरमारी ॥ तेकरदेंउंसुजनककुमारी ॥ ३८ ॥ ॥ **शंकरछंद** ॥ हनुमानपावकदारुलैतहँजालयोपुनआप ॥ रामओकपिनाथकेढिगधर्योसाक्षीथाप ॥ तवभएमीतपर स्परंगलमिलभुजापसार ॥ निहपापदोनोचीतमैजिमगंग यमुनावारि॥ ३९ ॥ तवरामकेढिगवैठकेसुग्रीवकीनउचार॥

सुनसखेनिजमैह्यालुतोकोंकहोंराममुरारि॥सुनोतुममनलाइ कैममवालिकीनोजोइ॥ मायाविनामसपूतमयकोपरमदुर मदसोइ॥ ॥४०॥ ॥ **चौपाई** ॥ एकसमैकिष्किंधाआ यो ॥ वालीकोतिनआइवुलायो ॥ सिंहनादतिनकीनउ चारा॥ वालीक्रोधभयोउरभारा ॥ ४१॥ तासुनैनक्रोध अतिलाली ॥ निकसेपुरतेवीरसुवाली ॥ वालीताडरमुष्टिल गाई ॥ राक्षसडर्यौसुचल्योपलाई ॥ ४२ ॥ अपनीगुहप्र तिभाग्योजवही ॥ वालीपाछेधायोतवही ॥ मैतवसंगधयो तिनगयो ॥ वालीकाअनुगततवभयो ॥ ४३॥ गिरिकंदरम हिसोधसगयो ॥ वालीमोप्रतिवचनअलयो ॥ तूंरहुवाहिर मैधसजावों ॥ रहोतवीलौजौलौंआवों ॥ ४४ ॥ यांवि धिभापगुहामहिगयो ॥ मासएकवाहिरनहिअयो॥ मासोप रतगुहाकेद्वारा॥ निकसीशोणितकीवहुधारा॥ ४५॥ तिन कोदेखतमतनभयो ॥ मैउरजान्योवालीमुयो ॥ गुहकेद्वार शिलाइकमार ॥ मैआयोनिजभौनमझार॥४६॥ वाली राक्षसनिश्चयमारा॥ गुहावीचमेकीनउचारा॥सुनकैवातदु खीसभहोए॥ छातीताडसुवहुविधरोए॥ ४७॥ मोकोराज तिलकसभभापें ॥ रामहुतीनहिमेअभिलापे ॥ राजवला तकारतेदीनो ॥ कपिमंत्रिनमुहितिलकसुकीनो ॥ ४८ ॥ ॥ **शंकरछंद**॥मैराजकीनोकपिनकोसुनरामकिंचितकाल॥ शीशछत्रसुमेफिरेयुगदुलेंचौरविशाल॥ जिहँकालवालीआ यपिखपुनमोहिरोपसुकोन ॥ वहुत्रिप्रकारसुमेकर्योकुपमुष्टि

छातीदीन ॥ ४९ ॥ तजमैंसिंहासनताहिंकोभयभीतभाग्योरा
म॥जगलोकसगलेमैफिर्योनहिराखिओकिनसाम॥रिष्यमूक
सुपर्वतइहरह्योमैंडरडार ॥ नहिआइवालीयांहिमैंकपिशाप
काभयभार ॥ ५० ॥ दिनताहितेममभारयावहुमृढभोगेआ
प॥ इतनारिमेरीऔगृहंवहुदहेमेउरताप ॥ अबपादतेलहिसु
खीहोयोयौंकहेकपिवैन॥ सुनमित्रकेदुखदुखीहोएरामवारि
जनैन ॥५१॥ ॥ दोहा॥ ॥ तववैरीकोमारहोंजाँहिंहरीतव
नारि ॥ यौंरघुपतिजवहीकह्योकपिपतिकीनउच्चार ॥ ५२ ॥
राजनवालीअतिवलीकैसेमारोताहि॥ मानुपकीगिनतीकहाँ
देवडरेंउरमाहि ॥ ५३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनारामतेकथा
वखानो ॥ जाँकरतुमवालीबलजानो ॥ एकसमेदुंदुभिति
हँनामा ॥ वडोदेहराक्षसबलधामा ॥ ५४ ॥ किष्किंधाप्र
तिनिशिकोआयो ॥ महिपरूपतिनदेहबनायो ॥ वालीकोर
णहेतुवुलायो ॥ सोसुनवालीकोपबढायो ॥ ५५ ॥ युद्धहेतु
वालीतबगयो ॥ महिपशृंगततांगहिलयो ॥ बलकरधरणी
माहिगिरायो ॥ पादएकतिहिंदेहदवायो ॥ ५६ ॥ हाथनसों
तिहँशीशमरोर ॥ रामदेहतेलीनोतोर ॥ तोलनकरतिनदूरव
गायो ॥रामशीशवहुईहाँआयो॥ ५७ ॥ योजनएकतहाँतअ
यो॥ ऋपिमतंगआश्रमढिगपयो ॥रक्तइपितहँभईअपारा ॥
पेखमुनीश्वरक्रोधसुधारा ॥ ५८ ॥ वालीकोतबशापलगा
यो ॥ क्रोधभरेमुनिएहुअलायो ॥ मेरेपर्वतआवैंजबही ॥
भग्नशीशतूँमरेंसुतवही ॥ ५९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऋपिमतं

गवडश्रापयौंदीनोरघुवरतांहि ॥ ऋष्यमूकयाँपर्वतेवाली
आवेनाहिं ॥ ६० ॥ ॥ सैवया ॥ ॥ इहजानवसोंइहठौर
विपेसुनरामसभोउरतेडरडारी ॥ शिरदुंदुभिकोइहठौरपयौंतु
मरामचल्लोअवलेहुनिहारी ॥ जवताँहिनिक्षेपनतेशकतीतव
वालिहनोतुमहोवलधारी ॥ इहभांतिवखानदिखातभयोशिर
थोवहुभूधरसोअतिभारी ॥ ६१ ॥ पिखरामहसेमुखमाँहिंत
वेपुनपादअंगूठसुँशीशचलाए॥दशयोजनजाइपर्योजवहीक
पिनायकचीतअचंभसुआए॥ शुभग्रीवकहेमुखधन्यसुधन्य
सुमंत्रिसभैमुखएहुअलाए॥ वलपेखनकोपुनऔरकथाकपि
नायकराघवपाससुनाए॥६२॥इहतालरघूत्तमसातपिखोइक
एकहिंआनहलावतवाली॥ धरमाहिंगिरेंइनपातसुनोइकपा
तरहेनहितालनडाली ॥ इकसायकछिद्रकरोसभकोहमजान
हिंतौउरमारहुवाली॥कहिरामतथाधनुहाथलयोअरुसायक
एकलयोवलसाली॥६३॥भेददयेसभतालतवैरघुनायकसा
यकुएकचलायो॥फोरकितालनभूधरभूपुनसायकरामनिषंग
हिंआयो॥ होइरहेविसमैशुभकंठसुरामकहेउरमैहरपायो॥रा
मसुतूँजगनाथअहैपरमातमयाँजगजाँहिंउपायो॥६४॥ कृत
पूरवपुन्यप्रफुल्लभएममरामयतोतवसंगतिपाई॥जगतोहिमहा
तमनीतभजेंभववंधनतेसभदेहिंमिटाई ॥ अवकाहिसुमैभव
चाहिकरोंवलिरामलहोंतवमोक्षसहाई॥सुतनारिसुराजधना
दिकजेसभमायकहैंइममेमनआई॥६५॥अवदेवनदेवनऔ
रचहोंतुमहोहुप्रसन्नमहावलधारी॥ जगआनंददतेपदमोहिल

हेकृतभागहुतेकछुमोहिअपारी ॥ मृदहेतुयथानरधावतकोनि
धिसोइलहैजगमैजिमसारी ॥ यहिमायकबंधनआहिजितो
वहुदूरभयोअबमोहिमुरारी ॥६६॥ ॥ चौपाई ॥ यज्ञदान
तपकरेसुजोई ॥ संसृतिबंधनजीरणहोइ ॥ उलटोबंधनदृढता
गहे ॥ जांकरजीवबहुतदुखलहे ॥ ६७ ॥ तेपदपेखनतेसुन
धीर ॥ बंधनमिटेसुश्रीरघुवीर ॥ आधोक्षणतोमैमनलागे
॥ मूलाज्ञानअनर्थसुभागे ॥ ६८ ॥ तांतेतोहिविपेमनमेरो
॥ सदारहेनहिऔरसुहेरो ॥ रामरामजिहँवाणीगावे ॥ सो
क्षणभीतरपापमिटावे ॥ ६९ ॥ ब्रह्मसुहत्याऔमदपान ॥
सर्वपापक्षणभीतरहान ॥ रामनहीअरिजीतनचहों ॥ दार
सुखादिकनाउरगहों ॥ ७० ॥ तुमरीभक्तिसदाममहोइ ॥ बं
धनसगलमिटावेजोइ ॥ तुमरीमायाहैबलवंत ॥ जगउपजा
योजाँभगवंत ॥ ७१ ॥ मैहोंदासतुमारोराम ॥ आयोहौंतु
मरीअबसाम[1] ॥ निजपादनकीभक्तिसुदीजे ॥ भवसंकटते
रक्षणकीजे ॥ ७२ ॥ तवमायाममहरसुज्ञान ॥ मीतउदा
सीअरिउरमान ॥ पूर्वभएसुमेउरमाही ॥ आजुनहीरघुवर
मनमाही ॥ ७३ ॥ अवतेपदकेदर्शनपाए ॥ सर्वब्रह्ममेरेउर
आए ॥ मित्रकहाँसुकहाँअरिमेरे ॥ सर्वब्रह्ममेरोमनहेरे
॥ ७४ ॥ तवमायानरगहेसुजौलौ ॥ गुणविशेषहोवैपुनतौ
लौ ॥ जौलोमायावलेभगवान ॥ तौलौहोइनतत्वसुभान
॥ ७५ ॥ कृतअज्ञानअनिकताजौलौ ॥ कालजन्यभयहोइ
सुतौलौ ॥ यातेजोउअविद्यागहे ॥ सोउअंधेरेतममहिवहे

१ सरण.

॥ ७६ ॥ मायामूलसगलसुविकारा ॥ यहिमेरोसुतयहिममदा
रा॥ ताँतेमायालेहुहटाई ॥तवदासीमायारघुराई ॥ ७७ ॥ **सवै
या** ॥ तवपादविखेमतिमोहिलगेतवनामकथामुखमाहिंउचा
रों ॥ तवसेवकसेवकरोंकरसोंवलतेतनुकीतनुसंगतिधारों ॥
तवशेवकऔगुरकेपदकोंनिजनैननथाँजगनीतनिहारों ॥ ज
नमादिकतेममकानसुनेंपदसोंतवमंदिरमाहिंपधारों ॥ ७८ ॥
खगईशध्वजाधरतेपदधूरिमिलेजगपावनतीरथसारे ॥ फि
रभूमिविखेजलपावनकैजगदोपहरोंनिजअंगपखारे ॥ शिर
नीतप्रणामकरेहमरोजगपावनजेपदकंजतिहारे ॥ हमसेक
पिकीगनतीसुकहांशिवऔकमलासनवंदनधारे ॥ ७९ ॥ इ
तिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेप्र
थमोऽध्यायः॥ १ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **चौपाई**
॥ यौंरघुवरकीसंगतिपाए ॥ कपिनायकसभपापमिटाएं ॥
भयोविरक्तपेखकपिराम ॥ हसकरबोलेसुखकेधाम ॥ १ ॥
मायामोहिकरीजगजोई ॥ कार्यहितविस्तारीसोई ॥ सखे
वखानेतूँममजोई ॥ सत्यअहेसंशयनहिंकोई ॥ २ ॥ परसभ
लोककहेंगेराम ॥ कीनोकोसुग्रीवहिंकाम ॥ अग्निसाक्षिधरभु
जापसारे ॥ वनकेसखानकाजसवारे ॥ ३ ॥ यौंअपवादक
रेंगेमेरो ॥ सखेनयामेसंशयहेरो ॥ ताँतेजाहुभलेसुखपावो
॥ वालीकोरणहेतुबुलावो ॥ ४ ॥ एकहिंबानताँहिंकोमारों ॥
राजतिलकतवमस्तकधारों ॥ तवकपिनायकतथावखानी ॥
रामहरीतिहँमेरीरानी ॥ ५ ॥ किष्किंधासुग्रीवसुगयो ॥ सिंह

नादपुरकेढिगकयो ॥ वालीकोरणहेतुबुलायो ॥ सुनबाली
उरकोपसुआयो॥६॥ताम्रसुनयनलालअतिभए॥वेगनगरते
बाहिरगए ॥ जहँसुग्रीवकीसथोखरो ॥ वेगजाइतिंहँठौरे
परो ॥ ७ ॥ मुष्टसुकंठतासउरमारी ॥ पुनबालीनिजब
लहिंसंभारी ॥ वालीक्रोधभयोउरभारा ॥ बहुमुष्टनसुग्रीव
प्रहारा ॥ ८ ॥ पुनतिनवालीकोबहुमारा ॥ परसपरयोंभ
योआखारा ॥ एकरूपदोनोअतिलरे ॥ रामहिंभेदजानन
हिंपरे ॥ ९ ॥ वाणनमारेश्रीरघुराई ॥ मतसुग्रीवनाशहो
जाई ॥ तबसुग्रीवश्रोणमुखजाए ॥ भयव्याकुलरणछो
डपलाए ॥ १० ॥ वालीगयोसुसभामझारी ॥ कहिसुग्रीव
सुराममुरारी ॥ वैरीभाईबालीनाम ॥ किउँमरवाएताँनेरा
म ॥ ११ ॥ जोममहननचाहिहरितोही ॥ निजहाथनकर
मारोमोही ॥ तबहींममउतसाहुसुदीनो ॥ सत्यसंधतुमवच
नसुकीनो ॥ १२ ॥ शरणागतवत्सलतबनाम ॥ काहितक
रीउपेक्षाराम ॥ सुनसुग्रीववचनरघुराई ॥ नैननीरचल्यो
बहुजाई ॥ १३ ॥ रामअलिंगनताँकोकरयो ॥ मतभय
करोसुमुखोंउचरयो ॥ एकरूपपेखेदोभाई ॥ मित्रघातशंका
मनआई ॥ १४ ॥ यांतेवाणनमोहिचलाए ॥ अबतवचिन्ह
सुकरोंबनाए ॥ जांतेभ्रममेरोमिटजाई ॥ तूँबालीकोजाहि
बुलाई ॥ १५ ॥ अबवैरीकोमुयोनिहारें ॥ रामसुगंदसुतोहिउ
चारे ॥ तेअरिकोक्षणडारोंमार ॥ यांविधिरामदिलासाधार
॥ १६ ॥ लक्ष्मणप्रतिपुनरामबखानी ॥ गलेकरोसुग्रीव

निशानी ॥ फूलनकीगलमालापाई ॥ वालीप्रतिइनदेहिप
ठाई ॥१७॥ लक्ष्मणताँगलमालाधारी ॥ जाहिजाहियहिकी
नउचारी ॥ वहुआदरकरताँहिपठायो॥ वालीकोपुनताँहिंवु
लायो ॥ १८ ॥ अद्भुतशब्दजाइतिनकयो ॥ वालीसुनकर
विस्मयभयो ॥ क्रोधभयोवालीवलवाना ॥ वाँधकमरतिन
कीयोपयाना ॥ १९ ॥ आवतवालीकोगहितारा ॥ हाथजोर
तिनकीनउचारा ॥ अवनहिजाहुनाथवलवान ॥ शंकामेउर
भईमहान ॥ २० ॥ अवहीतुमरणमारभगायो ॥ पुनसुग्रीव
वेगचलआयो ॥ कोन्नलवानसुभयोसहायक ॥ सुनवोले
वालीकपिनायक ॥२१॥ शुभ्रूशंकादेहिमिटाई ॥ मेकरतजा
वैठघरजाई ॥ आवोंवेगताँहिंरणमारी ॥ कौनसहायकताँ
वलकारी ॥ २२ ॥ जौकोआहिसहायकताँको ॥ सहसुग्री
वहनोगोवाँको ॥ मेवलकोसुरनरजगजाने॥ तेरोमुखकिम
भयोमलाने ॥ २३ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥शोचकरोतुमकिंउरभा
मिनिमाररिपूअवहीघरआवों ॥ मोहिवुलावतसोरणमैइह
जानकहोघरक्यौंठहिरावों॥सूरकहावतमैजगमैयशचंद्रकलं
कनहीअवलावों॥सुंदरितूँघरभीतरजाहिसुमैतुमकोयहिसा
चअलावों॥२४॥ ॥**तारोवाच**॥ ॥**दोहा**॥ मेरेतेइकऔरतु
मसुनोराजवरआप॥योग्यहोइसुनकैकरोतुमपतिरविपरता
प ॥२५॥ अंगदम्रगयाकोगयोसुनवनभाख्योमोहि ॥ सुनो
कानदैसोअवैनाथवखानोतोहि ॥ २६ ॥ **चौपाई** ॥ औध
पतीदशरथवरराजा॥तांसुतरामवडोसिरताजा॥ लक्ष्मणभा

ईसीतानारी ॥ तिनमिलआयोविपनमझारी ॥२७॥ तहँराव
णसीताहरगयो ॥ रामविरहउरव्याकुलभयो ॥ सीताशो
धनकेहितदोई ॥ ऋष्यमूकगिरिआएसोई ॥२८॥ हनुमतराम
सुग्रीवमिलाए ॥ वनेसखाढिगआगजलाए ॥ रामप्रतिज्ञा
यौंमुखगाई ॥ भाईलक्ष्मणजाँहिसहाई ॥ २९ ॥ वालीको
मारोंरणमाही ॥राजसमर्पौंतेभुजमाही ॥ यौंनिश्चयकरदो
ऊआए ॥ जोमैसुन्योसुदियोसुनाए ॥ ३० ॥ ॥ **सवैया** ॥
इकऔरसुनोअवहीतिहँकोतुममारभगाइदयोरणमाही ॥
अवफेरवुलावतसोरणमैकिनधीरदईतिनकेउरमाही ॥ तु
मवैरतजोतिहँसोंउरमैशुभग्रीवकुआनभलेघरमाही ॥ युव
राजदिजेतिहँभालविखेअरुरामकीसामगहोजगमाही ॥
॥३१॥ वलिअंगदमोहिसुराजरखोसभवानरकोसुकरोप्रति
पारे॥इहभांतिवखानपरीपदमैदृगसांजनतांहिसुजावतवारे॥
अतिरोइउठीउरभीतमहाँपतिकेपदतांकरभीतरधारे ॥ पुनवा
लिअलिंगसनेहकीयोमुखभीतरतांइहवाक्यउचारे॥३२॥ना
रिसुभावतितूंडरपीडरनाहिअहेकछुरंचहमारे॥ जौलक्षमन्न
सुरामअएवहुरामअहेसुमुकंदमुरारे॥ रामकिसाथसनेहवने
ममतूंउरमाहिनशंकविचारें ॥ रामनरायणहैजगमैतिनआप
लयोभवमैअवतारे ॥३३॥ धरभारनिवारनकाजभयेद्विजमं
डलपूरवमोहिसुनाए॥ नहिआपनऔपरपक्षतिनेवहुहैपरमा
तमश्रीरघुराए॥शिरवंदपदांबुजपूजनमैसुकरोंग्रहभीतरतांहिं
लिआए॥ पदसेवककेवहुसेवकहैंभगतीहरिसंगसुदेतमिलाए

॥३४॥ जबआपसुग्रीवअयोधनआवहितौँहिंतवैक्षणभीतर
मारों॥युवराजकह्योतवजोमुखतेतिहँकोपुनउत्तरएहुउचारों॥
वहुमोहिवुलावतहैरणमैअवमैकिंहँभांतिसुराजप्रचारों॥ ज
गमैसभलोकसुशूरगनेयशचंद्रहिंनाहिंकलंकसुधारों॥३५॥
उरभीतरमानसुभीतमहांइहभांतिवखानतनाहिंसुवाली॥ग
जगामिनिनाउरशोचकरोघरमाहिरहोसुखसोंमिलआली ॥
इहभांतिसमोधकरीपतिनीवहुशोचकरेद्रिगनीरविशाली ॥
रविकेसुतकेवधकाजगयोचलआपजहांरणभूमिकराली ॥
॥ ३६ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ वालीआवतदेख्योजवही ॥ भ
योसुकंठक्रोधउरतवही ॥ गलमैफूलनमालसुहाई ॥ प
तंगसमानपर्योतहंजाई ॥ ३७ ॥ वालीउरदैमुष्टिप्रहारा ॥
पुनसुग्रीवहिंवालीमारा ॥ तिहंसुग्रीवबहुरतिहंवाली ॥
भिरेमतंगमनोवलशाली॥ ३८ ॥ ॥**सवैया**॥ ॥ रामनि
हारप्रहारघनेशुभग्रीवकरेअरिकेउरमाहीं ॥ अंगदतातकरे
उततेइहभांतिभिरेरणमंडलमाहीं ॥ रामनिहारसुवानधर्यो
करशाक्रशरासनकेगुणमाहीं ॥ कानलुतानकमानरुपेहरि
जाइखडेतरुकीपरछाहीं॥३९॥**शंकरछंद**॥हरिहोइतरुकी
ओटमैपुनहरवालीवीर ॥ हृदयताकिताककैरघुनाथछोड्यो
तीर॥अतिभेदछातीतांहिंकीशरकरेश्रोणितपान॥भूकंपशब्द
महानकरकपिगिरवैवलंवान ॥ ४० ॥ द्वैघटीलौतनमूर्छता
पुनपाइचेतनधीर॥आगेखडेद्रिगसोंपिखेद्रिगकंजसोरघुवी
र॥धनुटेकवामेहाथसोंशरदक्षहस्तफिराइ॥तनचीरपाटविरा

जहींशिरजटामुकुटसुहाइ॥ ४१ ॥ सुविशालवक्षकपाटछाती
शोभहैवनमाल॥ नवदूरवादलश्यामसुंदरभुजापरमविशाल
॥ सुग्रीवलक्ष्मणसेवहैंदुहुंओरतेवलधार ॥ वालीविलोकसु
रामकोपुनकोनएहुउचार ॥ ४२ ॥ ॥ गीयामालतीछं
द ॥ कोकोनमैअपराधतेरोरामजांकरमारयो ॥ तवकीननिं
दतकरमयहिनहिराजधर्मविचारयो ॥ तरुखंडओटदुराइतनु
कोवीरनाशरघाइहैं ॥ चोरजिउंदुरमारमोकोंकौनतूंयसपाइ
हैं ॥४३॥ संतानक्षत्रीकोहुतोमनुवंशजन्मकहावतो ॥ युद्ध
मोहिसमक्षकोनेरामतौफलपावतो ॥ सुग्रीवकार्यकोकयोंपु
ननाहिकीनोमोहिको ॥ दशकंधनारिसुतेहरोक्योंमारयोहरि
मोहिको ॥४४॥ इहहेतुतेंसुग्रीवकीवनशरणलीनीआइकै॥
ममलोकवनमैंजेफिरेंतिनकह्योमोहिसुनाइकै ॥ राममेवल
लोकमैविख्यातछान्योनाकहो ॥ इहुदाहुछातीकोदहेतुमराम
जान्योसोनही ॥ ४५ ॥ कुलसंगरावणबांधकेंसहसीयलंक
उठाइकै ॥ जोचाहितोघटिदोनमैंदिखलावतोंनेल्याइकै ॥
धरमिष्ठभाखेंआपकोसभलोकमाहिपुकारकै ॥ कोधरमकी
नोरामतैंनेव्याधजिउंकपिमारकै ॥ ४६ ॥ ॥ सवैया ॥
वानरमासअभक्षमहासरहैंइहतेनहिकाजतुमारे॥ वानपरीन्ह
गमारनकीदुरराजनकेपथदूरविसारे ॥ शीशजटातनचीरध
रसुतपोधनकेवहुभेपसवारे ॥ पूतपुरंदरयोंजलपेतवरामव
लीमुखवाक्यउचारे ॥ ४७ ॥ ॥ नराजछंद ॥ सुधर्मगोप
तासदासुलोकमाहिमैचरों ॥ करेकुवंडसायकंसंभारआपने

धरों ॥ अधर्मकारिणंहनोसुधर्मपालहोंसदा ॥ विलंबनासहों
हरेअधर्मपेखहोंयदा ॥ ४८ ॥ ॥ **सवैया** ॥ दुहिताभगिनी
अनुजापतिनीसुतनारिसभैयहिआहिंसमाने ॥ इनमाहिरमे
मतिमृढरुजोवहुपातकवंतसुवेदवखाने ॥वहुहैवधलायकरा
जनकोयहधर्मसभैक्रपिमंडलजाने ॥ खलतूंलघुभ्रातकिना
रिरमेवलकैनहिंधर्मसुरंचपछाने ॥ ४९ ॥ इहतेहमधर्मवि
चारभलेवनगोचरतेउरमैंशरमारे ॥ खलतूंकपिजातिनजान
तहैंमहदातमडोलतलोकमझारे ॥ सभलोकपुनीतकरेंफिर
कैनिजदासनकेदुखदूरनिवारे ॥ अबतूँपुनवक्तिबोलतहैंइ
मभापगहीहरिमौनमुरारे ॥ ५० ॥ सोसुनकैउरभीतभयोक
पिरामनरायणतांहिपछाने ॥ पूतपुरंदरशीशनिवाइसुप्रेमभ
रेमुखवाक्यवखाने ॥ रामनरायणईशमहांअवतूंभगवंतसु
मैउरजाने ॥सोक्षममेअपराधभयोकछुनिष्ठुरवाक्यजुमोहि
अलाने ॥ ५१ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ तेशररामसुमेउरलागे ॥
नयननिहारोंतुहितेआगे ॥ त्यागोंप्राणभागअतिमेरे ॥ दु
र्लभदर्शनपेखोंतेरे ॥ ५२ ॥ जांहिनामव्याकुलमनकहे ॥
मरणसमेनरपरपदलहे ॥ सोतुमखरेआजुममआगे॥भाल
भागमेरेअतिजागे ॥५३॥ तुमैपुरातनपुरुपपछानों॥सीताको
पदमाउरजानों॥रावणकेवधहितअवतार॥ तैंलीनोविनतीमु
खचार॥५४॥आयसदीजेमोहिनरायण ॥गयोचहोंतुमरेअव
आयन॥मोसमवलअंगदयहिवाल॥तांपरकरुणाकरोविशा
ला ॥ ५५ ॥ तीरनिकारोउरतेराम ॥ हाथलगावोकरुणाधा

म ॥ रामतथातिहँवानननिकार ॥ हाथलगायोकरुणाधार
॥ ५६ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तबवानरदेहतजीकपिनायकहोइ
सुरेशगयोक्षणमाही ॥ शररामहत्योपुनशीतलपानछुहाइदये
तिहँकेतनमाही ॥ तजदेहशितावसुकीसतवैपुनवेगगयोह
रिकेपदमाही ॥ परहंसलहेंपदजोदुखकैवहुअंगदतातलह्यो
पलमाही. ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहे
श्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ **श्रीम
हादेवउवाच** ॥ ॥**दोहा**॥ वालीमार्योरणविखेरामपरा
तमआप ॥ किष्किंधाप्रतिभगेसभकपिउरवढिसंताप ॥ १ ॥
सवैया ॥ ॥ अंगदतातमुयोरणमैइमआइकहीकपिमंदिर
तारा ॥ अंगदकेपरिपालनकेहितआजुकहोसभबोलसिदा
रा ॥ पालहिंगेपुरकोसगलेहमचारसुद्वारनवाँधकिवारा ॥
वानरराजकरेसगलोसुनभामिनिअंगदवालतुमारा ॥२॥ प
तिकीम्रतुताँहिसुनीजवहीअतिशोकभयोतिहँचीतमझारे ॥
अतिरोवतिभालसुपाणिहनेपुनशोकभरीउरभीतरमारे॥ धन
मालसुअंगदराजपुरीनहिरंचकहैकछुकाजहमारे ॥ अवही
मरणाममलोकभयोपतिसंगचलोंजहँजांहिपियारे ॥ ३ ॥ इह
भाँतिउचारसुरोवतिहैकचखोलघनीतहँधूरलगाई ॥ जिहँठौ
रपर्योरणनाथकलेवरशोकभरीसुतहाँचलआई॥तनशोणित
धूलिसुपूररहेपतिपेखधरासुधदेहभुलाई ॥अतिरोवतिनाथह
नाथकहेमनव्याकुलताँपदमैलपटाई ॥४॥ इहभाँतिविलाप
करेपतिपादनरामखरेतिनपासनिहारे ॥ तुमजाँशरसोंपति

मोह्हिनेशरसोइहनोमुहिरामसुरारे॥पतिचाहितमोहिचलोंप तिलोकसुआपगयेजहँनाथहमारे ॥ सुनमोविननारघुना थतिनेसुखहोवतहैसुरलोकमझारे ॥ ५ ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ नारिवियोगदुःखअतिभारा ॥ रामसगलतवआहिनिहारा॥ वालीप्रतिअविमोहिपठावो ॥ पतिनीदानरामफलपावो ॥ ॥६॥ ॥शंकरछंद॥ ॥त्वंभोगराजसुग्रीवमिलहरिरुमाप्या रीनारि ॥ हैरामदीनोराजतोकोंनाहमेरोमारि ॥ इहभांतिता राविलपतीपिखरामपरमकृपालु ॥ संवोधकीनोताँहिंकोकहि तत्वज्ञानविशाल॥७॥ किंशोकभीरूतूँकरेंप्रतिशोकलायकना हिं॥कहुसत्यमोकोभामिनीपतिजीववातनुआहि॥त्वकमांस हाडसुशोणमयतनपंचभूतकजोइ॥करकालकरमसुजोभयो वहुपर्योआगेसोइ ॥८॥जौजीवमानेंतूंपतीवहुरोगविनजग आहि ॥ नहिमरेजन्मेवृद्धक्षयथिरचलेवैठेनाहिं॥ नहिनारिपु रुपनपुंसकोवहुजीवसभगतआहि॥अद्वितीयैकअकाशसम नहिलेपहैकछुताँहि ॥९॥ ॥दोहा॥ ॥ नित्यज्ञानमयशुद्धहै जीवसनातनरूप ॥ ताराशोचनकीजियेतजोसुभ्रमतमकूप ॥ १० ॥ ॥तारोवाच॥ चौपाई॥ ॥ देहकाष्टवतजौज डराम ॥ जीवसनातनचेतनधाम ॥ सूखदूखतवकाँकोहो ई ॥ रामविचारकहोममसोई ॥११॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ताराप्रश्नकर्योतुमऐसो ॥ कोविदकोइककरेसुजैसो ॥ अ हमादिककोदृढसंवंध ॥ तनुइंद्रयसोंभयोभिसंध ॥१२॥ जौं लौंहैतौलौसंसारा ॥ हैआविद्यकविनाविचारा ॥ मिथ्या

रोपितवेदवताए ॥ तदपिनिवृत्तिआपनहिपाए ॥ १३ ॥
विषयध्यानजिँउँजाग्रतिकरे ॥ स्वप्नेमाहिअनरथनपरे ॥
अजाअविद्याअरुताँकार्य ॥ अहमादिकसभअहैंनआर्य
॥ १४ ॥ यहिसंसारसुआहिअसारी ॥ रागद्वेषकरव्याकुल
भारी ॥ मनहीयहसंसारभनीजे ॥ मनहीबंधनरूपकहीजे
॥ १५ ॥ आत्मामनकेहोइसमाने ॥ बंधनआपनमाहिसुमा
ने ॥ जिमसुस्फटिकउज्जलोअहे ॥ लालकुसमकीसंगतिगहे
॥ १६ ॥ लालवर्णतिहँभीतरहोई ॥ वस्तुविचारेवर्णनकोई ॥
वुधींद्रियकीसंगतिधारी ॥ आत्माभयोसुतिमसंसारी ॥ १७ ॥
आत्माआत्मालिंगमनयोग ॥ पाइलिंगतनुजनेसुभोग ॥ भोग
भोगगुणबाँध्योजोई ॥ परवशफिरेसुजगमैसोई ॥ १८ ॥ आदि
सुमनरागादिककरे ॥ पाछेतेवहुकर्मनधरे ॥ सात्विकराजस
तामसभेद ॥ पाइयोनिवहुलहेसुखेद ॥ १९ ॥ याँविधिकरमनके
आधीना ॥ भ्रमेजीवजगजिमजलमीना ॥ प्रलयअवधियाँ
विधिदुखपावे ॥ वहुरोजाइप्रकृतीसमावे ॥ २० ॥ प्रथमवास
नावासितजोई ॥ मनअरुकर्ममिलेपुनदोई ॥ अजाअविद्याके
वशपरयो ॥ सृष्टिकालवहुरोनिस्सरयो ॥ २१ ॥ याँविधिजी
वभ्रमेवहुवारा ॥ घटीयंत्रजिमदुःखअपारा ॥ उदयहोंहिंजव
पुण्यकमाए ॥ संतनकीसंगतितवपाए ॥ २२ ॥ मेरेभक्त
शांतउरजेई ॥ मोमैंमतिउपजावैंतेई ॥ पुनममकथाश्रवण
रुचिहोई ॥ दुर्लभयाँहिजगतमैजोई ॥ २३ ॥ वहुरोतत्व
रूपविज्ञान ॥ विनाखेदहोवैतिहँभान ॥ वाक्यअर्थकोज्ञानसु

जोई॥गुरुप्रसादकरउपजेसोई॥ २४॥ तनुइंद्रयमनप्राणअहं
कृत ॥ इनतेंभिनस्वरूपअनाकृत ॥ सत्यानंदसुएकअनूप॥
ताँकोजानसुआतमरूप ॥ २५ ॥ होवैंमुक्तवारनहिलागे ॥
वंधनसर्वसुजगकेत्यागे ॥ मोहिवखान्योभामिनिजोई॥ स
त्यअहैसंशयनहिकोई ॥ २६ ॥ याँविधिमोहिवखान्योसार
करेनिरंतरयाँहिविचार ॥ ताँकोदुःखजगतकेजेई ॥ नाहिंक
दाचितछुहेंसुतेई ॥ २७ ॥ तारातूँपुनएहुनिरंतर ॥ मोहिक
ल्योहेरोउरअंतर ॥ नाहिंछुहेंतोकोंदुखजाला॥करमवंधतेभि
टेंकराला ॥२८॥ सुभ्रूतेपूरवभवमाही॥ उत्तमभक्तिकरीमो
माही ॥ ताँतेमेरोदर्शनपायो ॥ अवतेवंधनसगलमिटायो
॥ २९ ॥ मेरोरूपध्याइमनमाही ॥मोहिकल्योहेरोउरमाही ॥
पतितप्रवाहकार्यहैजोई ॥ करोनिरंतरलेपनहोई ॥ ३० ॥
इहेभाँतश्रीरामवखानी ॥ सुनतारासीतापतिवानी ॥ तनुअ
भिमानशोकनिजत्यागी॥श्रीरघुवरकेपाइनलागी॥३१॥आ
त्मसुअनुभवलहिहपानी ॥ जीवनमुक्तभईदुखहानी ॥ राम
परातमनरअवतार॥ ताँकीसंगतिपाइउदार ॥ ३२ ॥ वंध
अनादिदूरविनिवारे ॥ मुक्तभईकिल्विपसभटारे ॥ मुक्ति
कल्पद्रुमरामउदार ॥ उमाफिरेंवेविपनमझार ॥३३ ॥ स
वैया ॥ सुनकैशुभग्रीवसुएवतियांमुखरामकहीउरअंतरधा
री ॥ सुअनंदभयोउरभीतरसोनिखिलोजुअज्ञानसुदूरनिवा
री॥पुनवारिजनैनसुरामभलेशुभग्रीववुलाइसुएहुउचारी ॥
सुनभ्रातवडेशवकीकृतजोसुततांहिंवुलाइकराइसुसारी ॥

॥३४॥ दोहा ॥ ॥ मेरीआइसुमानैककरोसगलकृतसो
इ ॥ ऊर्द्धदेहकेहेतुकरवेदवखान्योजोइ ॥ ३५ ॥ सवैया
या ॥ मानसुग्रीवबुलाइवलीकपिवालिकिदेहसुलीनउठाई ॥
फूलनकेसुविमानविखेशुभनीरनवाइउठाइसुपाई॥ राजनके
उपचारवडेसभताँहिसमैतिनलीनमँगाई ॥ ब्राह्मणमंत्रिवजी
रघनेपुनदुंदुभिभेरिअनेकवजाई ॥ ३६ ॥ वानरकेसरदारव
डेपुनअंगदऔपुरवासिघनेरे ॥ अंगदमातरुमाविललातचु
चातसुनैनपतीकरटेरे ॥ चंदनकाष्टवनाइचितापुनअंगददाहु
कर्योंढुकनेरे ॥ नीरसुँनाइतिलोदकदानदयोपुनअंगदलेपित
मेरे ॥ ३७ ॥ शंवरनाइपटंवरलैपुनरामसमीपसभैचलआ
ए॥रामपदांवुजवंदनकैशुभग्रीवतवैइहवैनअलाए ॥वानररा
जकरोमहराजविभूतिवडीसुपरैंहमपाए ॥ मैतवदाससुपाद
भजोंलक्षमंनजिमेपदसेवकमाए॥ ३८ ॥ यौंशुभग्रीवकह्यो
जवहीतवरामहसेमुखएहुवखानी ॥ वेगचलोपुरभीतरतूंम
मआइसुलैतवप्रीतसुजानी ॥ वानरराजकरोसगलोअभिपे
ककरोअपनीरजधानी ॥ मीतनमैपुरमाहिंवरोंदशचारस
माउरमैइहुठानी ॥ ३९ ॥ चालहिंगेपुरभीतरतेसुगरीवसुनो
यहभ्रातहमारे ॥अंगदकोयुवराजदिजेकरआदरताँकरियोप्र
तिपारे॥ पावसकेदिनसानुजमैगिरिशीशवसोंपुरतेसुकिनारे
॥ किंचिततूँपुरमैवसकैसियशोधनकोपठियोहलकारे॥ ४०॥
रामपदांवुजवंदनकैशुभग्रीवचलेउरआइसुमानी॥ देवकहो
निजदासहिंजोकरहोंप्रभुसोगमनोंरजधानी ॥ रामकिआइ

सुमानगएकपिनायकऔलक्ष्मंनभवानी ॥ जाइपुरीकृतसो
इकरीरघुनायकजोमुखमाहिवखानी ॥ ४१ ॥ कोसनराज
सुपाइकपीश्वररामकेभ्रातकुपूजनकीनो॥ रामसुभ्राततवैपुर
तेचलरामकेपंथविपेमनदीनो ॥ पादप्रणामकियोहरिकोपुन
आइखडोढिगरामअधीनो ॥ रामसभ्रातचढेशिखरेगिरिपेख
तिसेवडभूरिनवीनो ॥ ४२ ॥ शुद्धसफाटककोतहँकंदरदीप
तशोभतभावतराजे ॥ बूँदनआतपवातनिवारकमूलफलादि
कैंहँढिगछाजे॥ राघववासकेहेतुकर्योरुचभ्रातवलीलघुसंग
विराजे ॥ वेजगपालकभ्रातउभेगिरिजानभ्रजैंनरजेनिरला
जे ॥४३॥ ॥ **शंकरछंद** ॥ अतिदिव्यमूलसुपुष्पफलजहँल
टेअवनीडाल॥ मुक्तासमानसुऊजलेजलभरेतालविशाल॥
वहुवरणमृगसुविहंगसोहैंशोभगिरिहँअपार ॥ रघुकुलोत्तम
रामजीतहँवासकीनमुरारि ॥४४॥ ॥इतिश्रीमदध्यात्मरामा
यणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥
॥**श्रीमहादेवउवाच**॥ **सवैया**॥पावसकेदिनरामतहाँमणि
कंदरमंदरवासकिये॥मूलफलादिकभोजनकैमनतोषभरेशुभ
नीरपीये॥ वातचलेजलमेघफिरेमुखगाजतऔसहविज्जुली
ये॥कांचनकक्षमनोगजडोलतरामनिहारअचंभहीये॥१॥धा
वतआवतएणविहंगमरामनिहारतहीहरपावें॥वैवनवासिनि
वासतह्रौंदगखोलमनोमुनिध्यानलगावें॥चित्रलिखेजनुएण
विहंगमनाहिंकदाचितअंगडुलावें॥जानपरात्मरामफिरेंगिरि
सिद्धमृगादिव्हैसेवकमावें॥२॥ध्यानसमाधिविरामभएइक

ठौरइकंतहुतेरघुराई॥ प्यारभरेमनहोइअधीनसुमित्रजआप
कह्योतहँजाई ॥ पूर्वसुवाक्यतुमारसुनेगयोचीतसंदेहसुमो
हिविलाई॥ किंहँभाँतभजेंसुक्रियामगतेइहजाननकोहमरेउर
आई॥३॥ **चौपाई**॥ योगीकिंहँविधितोहिअराधें॥क्रियायो
गउरसाधनसाधें ॥ क्रियासुनामउपासन जोई ॥ योगीकहेंमु
क्तिपथसोई ॥ ४ ॥ नारदव्यासयहीवहुभाषें ॥ कमलासन
मुखयहीप्रकाशें॥वरणाश्रमजगभीतरजेई॥ मुक्तिविधायक
तिनकोएई ॥ ५ ॥ शूद्रस्त्रीलौंहैंजगजेते ॥ मुक्तिलहैंइहपंथ
सुतेते ॥सुखसाधनयहअहेउदार॥ ऋपिगणकरेंसुरामउचा
र ॥ ६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ नाथतुमारोभक्तहोंहैसभकोउपकार
॥ तवसेवनसुखसाधनोतुमहींकरोउचार ॥ ७ ॥ ॥ **श्रीरा
मउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ मेरीपूजावहुविस्तारा ॥ अंत
नहींतिहँकोकछुपारा ॥ तद्यपिमैंसंक्षेपवतावों ॥ क्रमतेसग
लसंदेहमिटावों॥८॥प्रथमहिंकरेसुएकुप्रकारा॥ अपनेसूतरके
अनुसारा॥ पाइजनेऊहोइद्विजाती॥ गुरुपदभजेसदादिनरा
ती ॥९॥ गुरुतेलेइमंत्रविधिजैसे ॥ मोकोभजेकहेंगुरुजैसे॥
हृदयमाहिंवापावकमाही॥ पूजेमोहिप्रेमउरमाही॥१०॥प्रति
मामैवारविकेमाही॥ वाशिलशालग्रामकेमाही॥ होइनिराल
सपूजनकरे॥मेरोनामसदामुखररे॥११॥ प्रथमैप्रातहिंन्हावै
नीर॥ अपनोकरेसुशुद्धशरीर॥ मंत्रपढैम्रतकासुलगावे ॥जो
विधिवेदसुप्रथमवतावै ॥ १२ संध्यादिकजेकरमवखाने ॥ ते
सभकरेवेदजिमभाने ॥ पूर्वकरेसंकल्पविधान॥ कर्मसिद्धि

हितनरभतिमान ॥ १३ ॥ भेवपुजानकरेगुरुपूजा ॥ तां
मैभावनआनेदूजा ॥ शिलामाहिसुस्नानकरावे ॥ प्रतिमाप
रूमालफिरावे ॥ १४॥ वहुविधिफूलसुगंधचढावे ॥ यांवि
धिपूजसिद्धतापावे ॥ कपटनहीमनभीतरधारे ॥ पूजनकरेने
मप्रतिपारे ॥ १५ ॥ प्रतिमामैभूपनपहिरावे॥ मेरेउरआनंद
उपावे ॥ घृतआहुतपावकअनुसरे ॥ स्थंडिलमैरविपूजन
करे ॥ १६ ॥ श्रद्धाप्रीतिदेइममवारि ॥ सोभोगोंमैलक्ष्म
णप्यारि ॥ परजोभक्षभोज्यकरल्यावे ॥ अक्षतगंधसुफूचढा
वे ॥ १७ ॥ तांपरमैनहिंकिउंहर्पावों ॥ प्रेमसहितउरभोग
लगावों ॥ पूजाद्रव्यसर्वधरआगे ॥ तौमेरेपूजनकोलागे ॥
॥ १८॥ चैलाजिनकुशतलेविछाई॥ बैठेमेसनमुखमनलाई॥
मंत्रयुक्तपुनकरेसुन्यास ॥ वाहिरभीतरशुद्धप्रकाश ॥ १९ ॥
केशवआदिन्यासपुनजेई ॥ मातृककरपुनकरेसुतेई ॥ तत्व
न्यासवहुरोवहुकरे॥ उरकेसभकिलविपपरहरे॥२०॥ममभूर
तिपंजरकोन्यास ॥ मंत्रन्यासपुनकरेप्रकाश॥ प्रतिमादिकमै
तैसेकरे॥ आलसनाउरअंतरधरे ॥२१॥ सनमुखवामेकलश
टिकाइ॥ पुष्पादिकदक्षणसुवनाइ॥ अर्घ्यदानपुनपाद्यप्रदान॥
मधुपरकादितथाअचमान ॥ २२ ॥ पात्रचारशुभधरेवनाई
॥ मेरेविपेभलेमनुलाई॥ मोरीकलाजीवजिहँनामा॥ रविस
मउज्जलचेतनधामा॥ २३॥ देहसकलमैव्यापकजोई॥ हृदय
कमलमैध्यावेसोई ॥ प्रतिमादिकमैकरेअवाहन ॥ मेरीकला
दूखवनदाहन ॥ २४ ॥ पाद्यअर्घ्यअचमनसुस्नाना ॥ पटप

हिराएभूपणनाना ॥ यावतशक्तकरेउपचार ॥ बाहिरभोगसु
कपटविसार ॥ २५॥ जौविभूतिघरमाहिंनिहारे ॥ तौपूजाम
मयाँहिंप्रकारे ॥ कसतूरीकुंकुमबहुभाँती ॥ अगुरचढावेचं
दनजाती ॥ २६ ॥ फूलसुगंधसुफलहुँअपारी ॥ मोहिचढा
वेमंत्रउचारी ॥ दशावरणपूजापुनकरे ॥ आगमजिंहिंविधि
ताँहिंउचरे ॥ २७ ॥ करनीराजनदीपजगावे ॥ धूपसुबहु
नैवेद्यचढावे ॥ श्रद्धाकरदेवेमुहिजोई ॥ मैभोगोंश्रद्धायुत
सोई ॥ २८ ॥ श्रद्धाविनईश्वरनहिंखाए ॥ भावेंभोगसुला
खलगाए ॥ होमकरेपुनपावकमाँहीं ॥ मंत्रविधानपढेमुख
माँहीं ॥ २९॥ कह्योअगस्तसुमारगजैसे ॥ कुंडवनाइधरा
मैतैसे ॥ मूलमंत्रकरहोमसुकरे ॥ वापुनपुरुषसूक्तसुउचरे
॥ ३० ॥ करेउपासनवाजगपावक ॥ होमेचरुघृततंडुलया
वक ॥ जांबूनदसमदिव्यसुरूप ॥ दिव्यसुभूषणधरेअनूप
॥ ३१ ॥ होमकालअसमोकोध्यावे ॥ पावकमाहिअहूती
पावे ॥ पार्षदनवलीआँदैआम ॥ होमशेषपुनकरेसमाप्त
॥ ३२ ॥ मेराध्यानवहुरजपकरे ॥ धारेमोननव्यथाउचरे॥
मुखसुवासहितदेतांबूला ॥ सहितप्रीतिप्रीतिहुँसभमूला ॥
॥ ३३ ॥ गीतनृत्यमेरेहितकरे ॥ पाठकरेसुस्तुतिविसतरे ॥
दंडसमानसुवंदनधारे ॥ ध्यावेमोहिसुचीतमझारे ॥ ३४ ॥
भावनरूपप्रसादअपारे ॥ मोहिदयालैशिरपरधारे ॥ करमै
धारसुदोपदमेरे॥ शीशनिवाइसुयौंमुखटेरे ॥३५॥ घोरभवा
ब्धिघनोदुखभारी ॥ तौंतिराखोमोहिमुरारी ॥ करदंडवतविस

जनकरे॥ प्रत्यक्ज्योतिसिमरउरधेरे॥३६॥याँविधिकह्योउपा
सनजोई॥ करेसुविधिवतयाँकोकोई॥ मोरअनुग्रहइहपरलो
क॥पाइसिद्धिसोत्यागेशोक ॥ ३७॥ दिनदिनमैजोमेरोभक्त
॥ पूजेयौंमेप्रेमप्रसक्त ॥ विनसंदेहपाइवहुमोको ॥ लक्ष्म
णसाचवखानोतोको॥३८॥ शंकरछंद ॥शुभपरमगोपसु
पावनोपथहैसनातनभ्रात॥ संक्षेपसहितबनाइकैभाष्योतुमे
साक्षात॥भलपठेयाँहिनिरंतरंपुनजोसुनेमनलाइ॥सुसमस्तपू
जनजोकरैफलताँसमानसुपाइ ॥ ३९॥ चौपाई ॥ इहवि
धिरामपरातमघालु ॥ क्रियायोगशुभकह्योविशाल॥ शेश
अंशपूछ्योनिजभ्रात ॥ रामभक्तलक्ष्मणविख्यात ॥ ४०॥
पुनप्राकृतवतराममुरारि॥दुखीहोइमुखकीनउचारि॥ हासी
तेइहभाँतिपुकारें ॥ प्राणजाँहितूँनाहिंनिहारें॥ ४१ ॥ याँवि
धिवहुतविलापसुकीन ॥ उमाभएपुननिद्रालीन ॥ ताँहिंसमे
किष्किंधामाँहीं ॥ हनूमानबोलेमुखमाँहीं ॥४२॥ कपिनाय
कसुग्रीवइकांत ॥ हनूमानतिहँकहेवृतांत ॥ राजनसुनअब
तोहिबताऊँ ॥ तेरोहीहिततोहिसुनाऊँ॥ ४३॥ ॥सवैया॥
रामकरेउपकारसुपूरवतैंकपिमूढसुहैंविसराए ॥ वीरप्रसिद्ध
सुलोकतिहूँवहुअंगदतातसुतेहितघाए॥ अंगदमातभजेपद
तेशुभराजदयोशिरछत्रफिराए॥ सोवहुरामवसेंगिरिमैसह
भ्रातवलीतुमदीनभुलाए ॥ ४४॥ तेपथनीतनिहारतहैंवहु
काजवडोतिहँतेअकुलाए॥त्वंकपिजातिसुनारिरमेंमदनातुर
कैकछुसारनपाए ॥ शोधनसीयकुनोहिकह्योअवलौंभटना

हिंसुबोलपठाए ॥ जानतहैंकपिबालिजिवेंअबतूँतिनतेनि
जप्राणखुहाए ॥ ४५ ॥ सुनकैहनुमानकीबातनकोकपि
नाथडर्योमुखुँएहुअलाई॥ हनुमानकह्योतबसाचसहीडरडा
रसुमेहितबातसुनाई ॥ ममआइसबेगदशोदिशिकोसुसहस्र
दशोकपिदेहिपठाई॥कपिसातहुँदीपनमाँहिंजितेसभल्यावहिं
वेगसुजाइबुलाई॥४६॥ एकहिंपक्षविषेसगलेकपिपुंगवआ
वहिंढीलनलावें ॥ आइसमेटसुजेकपिमूढसुपक्षवधीकक
छूदिनलावें ॥ साचकहोंहनुमानसुनोतिनप्राणहनोंयहदंडसु
पावें॥ आइसदैघरमाँहिंगयोकपिमारुतऔरनपाससुनावें
॥ ४७ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ आइसलैकपिराजकीमंत्रिवरीहनु
मान ॥ वानररीछबुलाइकैभेजेदैसनमान ॥ ४८ ॥ **सवैया**
वायुसमानसुवेगवढेजिनकेगुननाहिंसुजातगिनाए ॥ भूध
रकेसमडीलवढेहनुमानवहीकपिदूतबुलाए ॥ पत्रदएलिखताँ
करमैंकपिराजहुँतबहुद्रव्यदिवाए ॥ आदरमानकीयोबहुतो
हनुमानअमातसुदूतपठाए ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामा
यणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेचतुरथोऽध्यायः ॥ ४ ॥
॥ **श्रीमाहदेवउवाच** ॥ **सवैया** ॥ मणिशृंगसुभूधरशीश
विषेरघुनाथविराजतरातिजुआई॥ विरहेसुविदेहसुताउरमैं
रघुनाथतवैइहबातअलाई॥ लक्षमंनसुसीयहरीकिनराक्षस
जीवतहैकिमरीविषखाई॥ दिनआजवितीतअनेकभएसुनमैं
अवलोकछुसारनपाई ॥ १ ॥ ममप्राणप्रियाजगजीवतिहैइ
हभाँतिकहेजनकोइसुनाई ॥ सुजितेतितजानकिजीवतिकें

कछुयाँजगमैजवसारसुपाई॥सुनभ्रातहरोंवलकैतहँतेजिम सिंधुसुधासुहरीसुरराई॥ कविसिंहगुलाबभजेपदकोहरिवा हतकीरतिगंगवधाई॥ २॥ ॥ चौपाई॥ ॥ लक्ष्मणसुनो प्रतिज्ञाभाई॥ जनकातमजाजाँहिंचुराई॥ बलवाहन सुतऔकुलसंगा॥ भस्मकरोंरणताँहिंसुअंगा॥ ३॥ चंद्र मुखीहासीतेप्यारी॥ वसतीराक्षसभवनमझारी॥ दुखआ रतमुहिनाहिंनिहारें॥ किउँकरप्राणसुअपनेधारें॥ ४॥ चं द्रमुखीविनचंद्रतपाए॥ भानसमानउभ्रदवदाए॥ चंद्रजा नकीकोछुहिआवो॥ शीतलकिरणसुमोहिलगावो॥५॥ द यानहींसुग्रीवसुराई॥ यौंमैंदुखीनपेखेआई॥राजअकंटक जगमैपायो॥ नारिनमैवसमोहिभुलायो॥ ६॥ कपिकृतप्रमु हिपर्योसुभान॥ कामुकसदाकरेमदपान॥ शरदऋतूआई पिखरूढा॥ सीयशोधहितअयोनमूढा॥ ७॥ पूरवमैउ पकारसुकए॥ कपिकृतघ्नतेसभविसरए॥ अवसुग्रीवहिंडारों मारे॥ बाँधवसहितसहितपुरसारे॥ ८॥ बालीमार्योमैरण जैसे॥ अवसुग्रीवहनोपुनतैसे॥ [illegible] मा॥ तवबोलेलक्ष्मणबलधामा॥ ९॥ सवैया॥ अब आइसमोहिदिजेरघुवीरहनोद्रुपटातमताँकपिराई॥ इहभाँ तिउचारसुतूँणकसेतलवारलईधनुलीनचढाई॥ लक्षमंनव लेइहभाँतिपिखेतवश्रीरघुवीरहिंवातअलाई॥ ममहैशुभग्री वसुग्रीयसखासुतऐसिकरोतिनकीढिगजाई॥ १०॥ बालि जिवेंनहिंताँहिंहनोशुभग्रीवकुतूँवहुभाँतिडराँई॥ भूलगए

उपकारतुमेइहभाँतिसुनिष्ठुरुवाक्यअलाई ॥ जोशुभग्री
वकहेमुखतेगहितेबतियाँवलिवेगसुआँई ॥ जोकरतव्यसुहो
इकछूपुनसोमिलकेममसंगकमाँई ॥ ११ ॥ चौपाई ॥
भीमपराक्रमलक्ष्मणवाला ॥ भापतथामुखगयोकराला ॥
किष्किंधाप्रतिवेगसुधाए॥ क्रोधभरेजनुदेतजलाए ॥ १२ ॥
दोहा ॥ किष्किंधालक्ष्मणगएपुनसोवेंरघुवीर ॥ विरहे
व्याकुलसीयकेभएसुविकलशरीर ॥ १३ ॥ चौपाई ॥
वेसर्वज्ञसदाविज्ञान ॥ पद्मानायकहैंभगवान ॥ परसीता
हितशोचेंऐसे ॥ प्राकृतमानवशोचेंजैसे ॥ बुद्ध्यादिककेसा
क्षीसारे ॥ मायाकारयसदानिआरे॥ १४ ॥ रागादिकतेरहित
उदारा ॥ मायाकेनांहिंतिनेविकारा ॥ ब्रह्माकह्योवचनजग
जोई ॥ कयौंचहेंहरिसत्यसुसोई ॥ १५ ॥ दशरथघरलीनो
अवतारा ॥ ताँतपकोफलदयोउदारा ॥ मानुपवेपआपहरि
धारा ॥ चाहेंलोगनकीनउधारा॥ १६ ॥ मेमायाबाँधेजनजे
ई ॥ किंहँविधिमुक्तहोंहिंपुनतेई ॥ याँविधिविष्णुसुआपवि
चारी ॥ चाहतहैंनिजकथाविथारी ॥ १७॥ मेरीकथासुगंग
उदारे ॥ लोकनकेसभपापनिवारे ॥ नामरमायणपावनहोई
॥ याँहितभएमनुजहरिसोई ॥ १८ ॥ क्रोधमोहपुनकामवि
कारा ॥ याँहितकीनेअंगीकारा ॥ तततकालविपेहरिकरें॥
लोकनमाँहिंमोहविस्तरें॥ १९ ॥ सबगुणतेहैंसदाविरक्त॥ पर
भासेंमानोआरक्त ॥ ज्ञानशक्तिविज्ञानस्वरूप ॥ साक्षीगुण
केसकलअनूप ॥ २० कामादिककोलेपनकोई ॥ नभजिउँ

निर्मलहैंहरिसोई ॥ मुनिकेचितयौंकरेंविचारा ॥ कैजानैतिंहँ
सनतकुमारा ॥ २१ ॥ निर्मलभक्तताँहिकेजेई ॥ जानतराम
नरायणतेई ॥ भक्तनकेपुनमनअनुसारा ॥ लेभगवानजग
तअवतारा ॥ २२ ॥ याँविधिरामकथामैभाषी ॥ अवसुन
यहिलक्ष्मणकीसाक्षी ॥ लक्ष्मणकिष्किंधाढिगजाए ॥ धनु
पशब्दकरकपनडराए ॥ २३ ॥ ताँकोपेखमूढजेकीशा ॥ गढके
दौरचढेवहुशीशा ॥ किलकिलशब्दसुकीनउचारे ॥ पादप
औकरपाथरधारे ॥ २४ ॥ सवैया ॥ वानरजातिमवास
भईलक्षमंनतवैपिखएडुउचारे ॥ थापदएहमहींपुरमैहमसों
अवएहफडेंहथियारे ॥ मैइनकोनिरमूलकरोंइहभाँतिउचारकु
दंडसँभारे ॥ अंगदजानसुबातइहैलक्षमंनअएकपिदूरनिवा
रे ॥ २५ ॥ अंगदजाइसुताँपदमैअतिदीनभयोअभिवंदन
धारे ॥ रामकिभ्रातदयालुभएगललाइमिलेभुजदंडपसारे ॥
हेसुतजाइकपीशकहोममआवनयौंमुखमाहिंउचारे ॥ को
पभरेरघुवीरपठेइमजाइकहोनिजभौनमझारे ॥ २६ ॥ अंग
दभापतथामुखतेशुभग्रीवकुजाइनिवेदनकीनो ॥ वाहिरद्वार
खडेपुरकेलक्षमंनलएकरचापनवीनो ॥ नैनसुलालकरालभ
एअतिक्रोधभरेमुखलालसुकीनो॥वानरराजसुयौंसुनकैतनु
कँपतऔसुभयोडरजीनो ॥ २७॥ मंत्रिवरीहनुमानवुलाइक
ह्योसमझाइसुएडुविचारो॥अंगदकोसँगलैहनुमानसुतूँअवि
जाहुभयोसुविगारो ॥ जोरउभेकरपादपरोलक्षमंनविनेकर
क्रोधनिवारो॥शांतकरोशुभवातनकैपुनमंदिरआनहुधारपि

यारो ॥ २८ ॥ इहभाँतिपठाइहनूमतकोपुनआपवुलाइकह्योति
नतारा ॥ गजगामिनितूँचलताँपथमैलक्ष्मनकुक्रोधभयोअ
तिभारा ॥ म्रदुबोलसुशांतकरोतिनकोपुनताँहिंलिआवहुभौन
मझारा ॥ समपावकक्रोधभयोतिनकोजिहँभाँतिहरेनहिजी
वहमारा ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ मध्यहवेलीताराजाए ॥
खडीभईमुखतथाअलाए ॥ हनूमानअंगदपुनधीर ॥ गएज
हाँलक्ष्मणहरिवीर ॥ ३० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ जाइप्रणाम
करेपदमैकरजोरउभेमुखएहुअलाए ॥ हैंसुखसोंरघुवीरभले
तुमहूँसुखसोंपथभीतरआए ॥ भागमहाँघरमाहिंचलोउरभी
तरतेसभशंकमिटाए ॥ राजत्रियादिनृपंपिखएपुनऔरक
छूप्रभुकाजबताए ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ सोहमकरेंशीश
परमानी ॥ हनूमानइहभाँतवखानी ॥ लक्ष्मणकोपुनकरफ
रलीनो ॥ मारुतनंदनप्रेमसुकीनो ॥ ३२ ॥ लेआयोतिनकोपु
रमाँहीं ॥ राजभवनकेपथकेमाँहीं ॥ यूथपकेजोभौनउदारे ॥
आवतलक्ष्मणपंथनिहारे ॥ ३३ ॥ राजभवनप्रतियाँविधि
गयो ॥ सुरपतिभौनसमानसुनयो ॥ तारामध्यहवेलीछाजे
॥ तारापतिसमवदनविराजे ॥ ३४ ॥ सर्वाभरणधरेतनु
सोहै ॥ मदरकतांतनैनमनमोहै ॥ लक्ष्मणकोअभिवंदनधार
॥ हसकरएहुसुकीनउचार ॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ देवरतेकल्यान
पाहिनिरंतरदासको ॥ तूँभक्तनकेप्राणसाधुभावतेरोकहें ॥ ३६ ॥
सवैया ॥ दशहूँदिशदूतपठाइदएमहिमंडलकेकपिनाथबुला
ए ॥ कनकाचलकेसमहैजिनकोतनदेवरपेखघनेकपिआए ॥

तुमरोअतिसेवकवीरवडोकपिनायकपैकिमक्रोधवढाए ॥ इ
हवातनलाइकहैतुमकोसुनरामजिनेशिरछत्रफिराए ॥ ३७॥
॥ कामनीमोहनाछंद ॥ रामराजीवनैनंभजेनीतहीं ॥
बातसीशोधकीराखहैचीतहीं ॥ जानकीशोधकैशत्रुकोमार
णो ॥ काँमश्रीरामकोशीशदैसारणो ॥ ३८ ॥ ॥ सवैया॥
इहभाँतविचारकरेकपिनायकनींदकरेनकवीनिशमाँहीं ॥ ज
गजाँदिनराघवकाजसरेद्रिगनींदकरेप्रभुताँदिनमाँहीं ॥ ब
हुकालसुदूखभरेतनुपैइनमीतलहेअवहीजगमाँहीं ॥ तुमदू
खमिटाइसुराजदयोगुनगावतहैतुमरेघरमाँहीं ॥ ३९ ॥
॥ चौपाई ॥ दीरघकारयमैमनलायो ॥ रघुपतिसेवाहितन
हिंआयो॥ नानादेशनिवासीजेई ॥ आवहिंगेदवरकपितेई
॥ ४० ॥ रघुसत्तमपठएपलवंगम ॥ दशहजारचारात्हदअंग
म ॥ सभदिगवानरल्यावनकाजे ॥ शैलसमानजिनेतनछा
जे ॥ ४१ ॥ सभदिगवानरसहसरदारा ॥ कपिनायकले
करेनवारा ॥ दैतसमूहसभैचुनमारे॥ रावणकोरणमाँहिसँहा
रे ॥ ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ तेरेसाथसुजाइगोअवहीकपिसर
दार ॥ भवनसुपावनकीजियेअंतहपुरपगधार ॥ ४३ ॥ पे
खातुमसुग्रीवकोसुतदाराकोधीर ॥ दानुअभयदेजाँउँबलितु
मसेवकहरपीर ॥ ४४ ॥ तारावचनसुसुनतहीलक्ष्मणभए
कृपालु ॥ क्रोधसुदूवरताभएगएसुभौनविशाल ॥ ४५ ॥
॥सवैया ॥ वानरराजजहाँशुभग्रीवसुरामकिभ्राततहाँपग
धारे॥ नारिकेसंगविनोदकरेकपिमाँहिंपलंघभुजागलडारे॥

आवतपेखसुलक्ष्मणकोउरभीतमहापडुकूदकिनारे॥ क्रोधभ
योलक्षमंनतवैपिखतौंद्रिगथेमदसोंअरुणारे ॥ ४६ ॥ क्रोध
भयोलक्षमंनकहेकपिदुष्टतुमेअबरामविसारे ॥ बाणउसास
नतोहिचितारतअंगदतातजिनेरणमारे ॥ मैवधतोहिकरोंअ
वहीपथिवालिकिजाहुसुवेगपधारे ॥ भाँतिअनेककहेलक्ष
मंनसुपेखउमाहनुमानउचारे ॥ ४७ ॥ हनुमानउवाच ॥
कवित ॥ लक्षमनवादकैनकोजियेविपादकछुऐसेकपिराइ
कोनमुखतेवखानीये ॥ सुनीएसुशेशअंशतोहितेदशांशराम
सेवकप्रवीनसुग्रीवउरआनीये॥रामकाजहेतुकपिराजहैसु
जागसदारामभूलगएसुउलाहनेनठानीये॥ वानरनिहारआ
एकोटहूँहजारपुनआइहैंअनेककछुढीलनपछानीये ॥ ४८ ॥
सीयशोधकाजजाँहिंखाँहिंफलमूलवलिकरेंनरसोईकपिदल
इतरावतो॥करेगोकपीशरामकारजअशेषतवजानीयोजिहु
तोअरिजीवतोनजावतो॥ हनूमानवाक्यसुनगुनकेनिधानप्र
भुलक्षमनलाजउररह्योसरमावतो॥ अरघसुपादकैकपीशल
क्षमनपाइपूजेगरेलाइलीयोपाहनोसुहावतो ॥ ४९ ॥ वो
लेकपिराईरघुराईकोसुदासुमैहोंवानरकोराजदीयोनाथमेउ
वारकै ॥ रामतजआपनेसुतीनोलोकजिनेक्षणआधहीके
वीचचहेंभुजाबलधारकै ॥ करोंगोसहाइरघुराइकीनिवाइ
शिरवानरमिलाइरणकोटसुहजारकै ॥ कागदपठाएहैंसुअ
एहैंअनेककपिरणतेनफिरेंभटाफिरेंअरिमारकै ॥ ५० ॥ स
वैया ॥ लक्षमंनतवैशुभग्रीवकह्योकछुनिप्ठुरवाक्यजुमोहि

उचारे ॥ अबसोक्षमहेकपिबीरबलीतुमसोजुकहेकरप्रेमपि
आरे ॥ चलिएशुभग्रीवसुकाननमैजहँरामविराजतहैंसुमु
रारे ॥ इकलेवनसीयवियोगवढोरघुनायकहैंवनमैदुखिआ
रे॥ ५१ ॥ **चौपाई॥** तबसुग्रीवमानउरमाँहीं ॥ लक्ष्मणसहि
तचढेरथमाँहीं ॥ वानरसभैसुलीनबुलाई ॥ चलेकपीशजहाँ
रघुराई ॥ ५२ ॥ **सवैया ॥** इतभेरिमृदंगअपारबजेंइतवा
नररीछलँगूरसुहावें॥व्यजनाडकचारुफिरावतहेंइकवीरबली
शिरछत्रझुलावें ॥ इतअंगदऔहनुमानचलेइतओरचलेनल
नीलसुजावें ॥ इहभाँतिगएकपिराजतहाँजहँरामविराजतभू
धरछावें ॥ ५३ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्व
रसंवादेकिष्किधाकांडेपंचमोऽध्यायः ॥ ५॥ **श्रीमहादे
वउवाच ॥ ॥ सवैया ॥** रामहिंदेखसुद्वारिगुहासुशिला
तलऊपरछाजतहैं ॥ हैमृगछालसुश्यामतनूपुनशीशजटासु
विराजतहैं ॥ नैनविशालसुमंदहसेंमुखपेखसरोजसुलाजत
हैं॥सीयवियोगसुचीततपेमृगपक्षिनिहारसुजागतहैं॥१॥दूरहुं
तेरथतेउतरेशुभग्रीववलीलक्ष्मनसुभाई॥प्रेमभरेरघुबीरकि
पाइनमाँहिंपरेगिरिजाढिगजाई ॥रामकपीशमिलेगलमैपुछि
क्षेमलयोहरिपासबिठाई॥रामकर्योशुभग्रीवकुपूजनपारवती
हरिरीतिदिखाई॥२॥जोरउभेकररामकिपासकस्योशुभग्रीवभ
लेशिरनाई॥देवपिखोकरुणाकरकैयहिवानरसैन्यबडोप्रभुआ
ई॥ केइकुलाचलमैजनमेगिरिमन्दरमेरुसुदेहसुहाई ॥ दीपअ
नेकनिवासकरेंकहिआवतहैंविनवेरलगाई॥३॥केअसंताचल

कउदयाचलकेइभएसरितातटमाँहीं ॥ केकुशद्वीपभएरघुनाय
ककेइभएगिरिमंदरमाँहीं॥भूधरकेसमदेहवडेफलहारकरेंकपि
एवनमाँहीं ॥कामगरूपधरेंसगलेकपिसैननकीगननाकछुनाँ
हीं ॥ ४ ॥ देवनकेवलअँशनतेइहवानररूपभएजगमाँहीं ॥
हैकिनकोगजसोवलरामविशारदहैंसभसंगरमाँहीं ॥ केचित
हैंदशनागवलीगजआयुतहैंवलमैइनमाँहीं ॥ लाखकरोरग
जानधरेंवलहैकिनकेवलकोमितिनाँहीं ॥ ५ ॥ केचितअंजन
कूटसमापुनकेचितहेमसमानविराजें ॥ केचितलालमुखांवु
जसेपुनकेचितदीरघवालसुराजें ॥ उज्वलकेचितफाटकसेपु
नकंवुसमानसुकेचितछाजें ॥ आवतहैंरणचाहिभरेकपिरा
मपिखोघनसेमुखगाजें ॥ ६ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ रामतेरी
आइसकेसभैहैंकरनहारचाहतनकछूफलमूलहीअहारहैं ॥ ए
जोपिखोरामतुमलागतपहारसोसोजांववाननामकोटिरीछ
सिरदारहै ॥ येहैहनूमानवलवानसुविख्यातप्रभुवायुकोकु
मारनीतिमंत्रमैउदारहै ॥एहैंनलनीलसुगवाक्षसुगवयजानो
रामगंधमादनसुवलकोनपारहै ॥ ७॥ शरभसुमैंदवद्धुविं
दगजपनससुवलीमुखदधिमुखएईपहिचानिये ॥ येहीतुसु
षेणअहेतारनामयाँहिकहेंपिताहनूमानकोसुकेसरीपछानि
ये ॥ एहैंसिरदारमेरेखासकीसुचलेंलारपुरकेनिवासीहैंप्रधा
नकैवखाँनिये॥ सभहैंउदारतेजपुंजकोअधाररामम‌ाहिंसुसं
ग्रामकेसुरेशसममानीये ॥८ ॥ औरजेईवानरउदारवडेरा
मचंद्रकोटिकहजारकछुअंतनहीपाईये ॥ देवअंशसूतसभ

वानरसपूतप्रभुनाथकाजकरैंबलिमुखतेबताईये॥एजोपिखो रामतुमलागतसुहावनोंसुवालीकोकुमारनामअंगदसुनाई ये॥ बालीसमवीरअतिधीरसुसंग्रामकरेयाँहींकेभरोसेरणखं भसुगडाईये ॥ ९ ॥ वानरअनेकऔरशूररणपरेंदोरनाथ काजप्राणकीनचिंतमनधारहैं ॥ अरिवधकाजकपिरणमैसु जागसभकोपवीरभरेसुउखारगिरिमारहैं॥ आइसुसुदीजिये नवेरकछुकीजियेसुवानरअधीनप्रभुआइसनिहारहैं ॥ उमा तवरामहरपाइउरनैनभरमिलकैकपीशमीतवातयौंउचारहैं ॥ ॥१०॥ . . . .
कपिपठियेविचारकै॥ सुनकैसुरामवाक्यभएपुलकातकपिप ठएसुतीनवारतीनहींप्रकारकै ॥ बलिऔविचक्षणपठाएदिग दक्षणगुलाबसिंहनामनाँहिंकहितउचारकै॥अंगदसुजांबवंत केशरीकुमारनलशरभसुपेणमैंदद्रुविंदसुधारकै ॥ ११ ॥ क . . . . . .
हींलावना॥भूमीअंतहेरसीयसारलैसवेरकहोकहोंवेरवेरदिन तीसमाँहिंआवना ॥ विनासीयदेखीदिनजाँहिंजुविशेषीतिंहैं प्राणअंतदंडकपिभूमिमैगडावना ॥ वानरपठाइकपिराइशि रनाइहरिबैठोढिगआइउमालागतसुहावना ॥ १२ ॥ दे खहनूमानपथिकीनहैपयानप्रभूलीनहैवुलाइवातकहीसमझा इकै ॥ लेहुकपिमुंदरीप्रतीतिहितसुंदरीसुरामनामलिखी दीजोजानकीकोजाइकै ॥ काँमहैमहानयाँमैतूँहींहैप्रमानक पिसत्तमसुजानबलिकीजोमनलाइकै॥ कहोंबलिजानतेरीप

थमैकल्यानसदाजाहुवीरवेगतूँगजाननमनाइकै॥१३॥ऐसे
कपिराईदीएवानरपठाईसीयशोधकाजगएमौरअंगदसिधा
रियो॥ विंध्यवनमाहिफिरेंसीयकीनपावेंसारगिरिकेसमानए
कराक्षसनिहारियो॥भीषणअकारमृगहाथीकोअहारकरेरा
वणविचारकपिदलकिलकारियो॥ वानरउदारकरमुष्टकप्रहा
रबलिक्षणहींकेबीचतॉँहिंकोपकरमारियो॥१४॥एहुनदशान
नवखानगएकाननसुऔरवनभारोनशुमारकछुकीजिये ॥
जानकीकीआशालागीप्यासातनभारीजागीपावेंनाँहिंवारी
कपिकहेंकाहिपीजिये॥ मूकमुखकंठतालुभएहैंविहालकपिम
हावनभ्रमेकहेंकौनभाँतिजीजिये॥एकपिखीदरीतहाँत्रिणसों
अवरीमुखएककहैंयाँहिमाँहिंनीरपेखलीजिए॥१५॥पिखेंपल
वंगमसुनिकसेविहंगमसुगीलेछदक्रौंचहंसहनूयौंउचारीहै ॥
याँहिंगुहाद्वारवरोसभसोविचारकहोंसभनपुकारयाँहिंभीतर
सुवारीहै ॥ ऐसेतुवखानआगेभएहनूमानपाछेचलेकपिजा
तिकहेंकहाँजलधारीहै॥ आपसमैंहाथफरेजाँहिंचलेजीयडरे
देतनादिखाईकछुबडोअंधकारीहै॥१६॥ चौपाई॥ याँविधि
दूरगएकपिजबही ॥ पेखेनीरतलावसुतबही ॥ मणिसमानउ
ज्वलजहँवारे ॥ कल्पद्रुमनसेद्रुमपरिवारे ॥ १७ ॥ लटकेंडा
लभूमिफलभरे ॥ मधुकेजहाँसुछातेखरे॥ सभगुणवंतसुभौ
ननिहारे ॥ मणिमुक्तापटपूरेसारे ॥ १८॥ जाँमैभोजनबहुत
प्रकारा ॥ मानुपनाँहिंसुकोरखवारा ॥ भौनप्रभापिखकपि
विसमए ॥ ताँमहिंकौतकदेखेनए ॥ १९॥ दिव्यकनककेआ

सनमाँहीं ॥ नारिपिखीइकदूसरनाँहीं ॥ तनकीप्रभासगलत
मवारे ॥ चीरवसनउरईशचितारे ॥ २० ॥ पद्मासनदृढयो
गकमाए ॥ ताँकोपिखकपिसगलडराए ॥ गएसमीपभ
क्तिउरभीने ॥ जोरदोइकरवंदनकीने ॥ २१ ॥ देवीपेखसुकी
शअलाए ॥ कौनतुमेकिहँकारणआए ॥ किनकेदूतकहाँतेआ
ए ॥ ममसुस्थानसुकिउँपदपाए ॥ २२ ॥ दोहा ॥ ताँकेव
चनसुनतहीतववोलेहनुमान ॥ समाचारदेवीसुनोनीकेक
रोंवखान ॥ २३ ॥ कवित ॥ अयोध्याकेराजादशरथशिर
ताजातांकेवडेसुतभामिनीसुलोकरामगाएहैं ॥ आज्ञासु
नरेशकीनीमानउरलीनीनिजनारिलघुभ्रातलैसुवडेवनआए
हैं ॥ नारिताँहिकाननसुहर्योहैदशाननसुसीयपथआयेशुभग्री
वसोंमिलाएहैं ॥ कह्योकपिराइसभकपिनवुलाईसीयशोधका
जजाहुमीतभावकैपठाएहैं ॥ २४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ शोध
तसीयलगीतनप्यासवरेगिरिकंदरयौंहमआए ॥ तूँकिहँकाज
वसेंइहठौरसुकौनअहेंहमदेहिवताए ॥ योगिनितौपिखकीशन
कोहरपीउरमैंइहवैनअलाए ॥ पूर्वनीरसुपानकरोतुममूलफ
लादिकलेहुसुखाए ॥ २५ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ आवोपास
मेरेतुमैकहोंसुवृत्तांतपुनसुनकैसुकीशगएफलमूलखावने ॥
खाएफलपीनोजलभएवलवंतकपिकरेंमधुपानभएहीएहरषा
वने ॥ हीएहरपाएकपिताँकीढिगगएपुनखरेआगेजोरकरलाग
तसुहावने ॥ योगिनीउदारजाँहिरूपहैअपारवहुकरकैविचा
रलगीहनूकोवतावने ॥ २६ ॥ हेमाहुतोनामवहुरूप

कीसीधामविश्वकर्माकीतनूजापूजाईशकीकरेनई ॥ ताँहिं
नृत्यकीनोसुमहेशमनलीनोतिनहोइकेक्रिपालदिव्यपुरीजग
एदई॥वरषअनेकइहवासकीनेएकटेकभूमलोकछोडवहुब्रह्म
लोकमैगई ॥ तिनकीसहेलीमैइकेलीईहाँवासकरोंमोक्षचाहि
जगीतिनसंगनाहिंहौंगई ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैंवटीगं
धर्वकीस्वयंप्रभाममनाम ॥ ब्रह्मलोकजातीकह्योहमातप
करधाम ॥ २८ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ ईहाँवासकीजीयोसुजी
जीयोअराधहरिशून्नथानहोइइहजीवनरहाइहैं॥ त्रेतायुगआ
एअवतारहरिपाएवहुदशरथसुतहोइरामयोंकहाइहैं ॥ भूम
भारहारकाजतजेंगेसुतातराजचीरपटधारवहुवनमैसुआइ
हैं ॥ सीयताँहिभारयासुहरीजाइआरयासुशोधनकेकाजव
हीवानरपठाइहैं ॥२९॥ ॥चौपाई ॥ ॥ याँहिंगुहाकेभीत
रआँवें॥ पूजेंतूँफलमूलखवाँवें ॥वहुरगुफातजजावहिंराम॥
जाइकरेंतूँपदपरणाम ॥ ३०॥ वहुरविष्णुकेभौनसुजाँवें ॥
योगीयाँहिंयतनकरपाँवें ॥ अवमैरामनिहारनजाँवों ॥ च
लोंसुवेगनवेरलगाँवों ॥३१॥ तुमअवनयनमिलावोसारे॥
चलोगुफातेवाहिरवारे॥सुनसुवानरननयनमिलाए॥पूरवजि
मकपिवाहिरआए॥ ३२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ भामिनिभा
मिनित्यागगुफावहुआपगईजहँरामसुरारे ॥ भ्रातविराज
तपासतिनेढिगएकसुवानरकोसिरदारे ॥ पेखप्रदक्षणताँहिं
करीपुनवंदनरामपदांवुजधारे ॥ रोमभरेउतसाहुउमासुख
माँहिंगदागदवैनउचारे॥३३॥ ॥स्वयंप्रभोवाच॥ ॥सवै

या ॥ राजनराजसुदेखनकेहितआइइहाँतवपादनदासी॥मैं
तपकीनहजारसमाबहुकंदरअंदररामविलासी ॥ आजभयो
फलताँतपकोप्रभुरूपपिख्योजगमैंअविनाशी॥वंदतिहोंपदपं
कजकोतुममायपरेपुनमायप्रकाशी ॥ ३४ ॥ भूतनमाँहिंअ
लक्षसदातुमवाहिरअंतरएकसभागे ॥ मायकनाततनीतुमहीं
तिहँतेतुममानुपसेतनलागे ॥ जानसकेंनहिमूढतुमेनटचारु
समानसजोतनवागे ॥ सेवकजेतुमरेपदकेवहुजानतेंहंजगते
वहुजागे ॥ ३५ ॥ सेवकसेवबतावनकेहिततैंअवतारलियोज
गमाँहीं ॥ तामसयोनिसुमैंजगमैंकिंहँभाँतिलखोंतुमकोभव
माँहीं ॥ तेवलतत्वस्वरूपभलेजनकेचितजानतलोकनमाँहीं॥
रूपइहैजगपावनजोनितरामवसेहमेरउरमाँहीं ॥३६॥ राम
सुतेपदमोहिपिखवहिमोक्षसुआपहिंदेंहिंदिखारे ॥ जेधनपुत्र
कलत्रसुरामुखपानकरेंसुभएमतवारे॥ तूंधनआँहिअकिंचन
कोधनवंतकहाँतवनामउचारे ॥ त्वंगुणहीनअकिंचनवित्तस
दाअभिवंदनआहिंहमारे॥ ३७ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ आत्मारा
मतुहींजगमाँहीं॥ तूंनिरगुणगुणतेरेमाँहीं ॥ कालरूपईश्वरतूं
आँहिं॥ आदिअंतमध्यनवनाँहिं ॥३८॥ सभभूतनमेंतूंसमअ
हे॥ त्वंपुरषोत्तममैंउरलहे॥तेरोदेवाचरणसुजोई॥लोकविडंब
नलखेनकोई॥३९॥ तेरोनाहिंपिआरोकोई॥द्वेपविपयतुमरेन
हिंहोई ॥ तेरीमायाढाँपेजेई॥तुमकोसंम्यकलखेंनतेई॥ ४० ॥
तुमअजन्मपुनजन्मतुमारे॥देवत्रियकअरनरनमझारे॥जन्म
सुकरमादिकतेजेई॥हैंअत्यंतविडंबनतेई॥४१॥तोकोंअक्षरवे

दवखाँनें॥जनिकल्याणकथाहितठानें॥कौसलराजतपहिंफल
दान॥केचितजन्मसुकरेंवखाँन॥ ४२॥ केचितकहेंकुसल्यामा
ता॥ विनतीकरीभएविख्याता॥राक्षसदुष्टभएभूभारा॥मा
रणहितलीनोअवतारा॥४३॥ विनतीचतुराननथीकरी॥ताँ
हितभएजन्मजगहरी॥ केचितऐसेकरेंवखाँन॥ त्वंपरिपूरणहैं
भगवान॥४४॥तेरीकथासुनेंअरगावें॥ तेरघुनंदनतेपदपावें॥
तेरेपादपोतआलंबा॥ पाइतरेंभवनाहिंविलंबा॥४५॥त्त
वमायागुणमेउरबंधा याँतिभईसुमैप्रभुअंधा॥ त्वंगुणभिन
सुगुणनअधारा॥ कैसेजानोंरूपतुमारा॥ ४६॥ उस्तुति
कैसेकरोंतुमारी॥ वाणीकिनहिंविषयमुरारी॥ताँतेतपदकरों
प्रणामा॥वाणशरासनधारीरामा॥४७॥ लक्ष्मणसहितसु
देवविराजे॥ सहसुग्रीवनिखिलतमभाजे॥ याँविधिकरीव
डाईजवही॥ भएप्रसन्नउमाहरितवही॥ ४८॥ ॥दोहा॥
स्वयंप्रभहिंनिजभक्तपिखवोलेहसभगवान॥ जोवरचाहो
चीतमैंसोमुहिकरोवखान॥ ४९॥ स्वयंप्रभापुनरामप्रतिभापे
वचनविशाल॥ भक्तिसुराघवदीजियेतुमभक्तनपरघाल॥
॥ ५०॥ जहंजहंजन्माकर्मवशतहँतहँभक्तितुम्हारि॥ तव
भक्तनकोसंगसदहोवेमोहिमुरारि॥ ५१॥ ॥सवैया॥
मूढनकोनहिसंगकदाप्रभुहोवहिमेइहलोकमझारे॥ जीभक
हमुखरामसदामनराम्सुश्यामलरूपचितारे॥ सीयसुभ्रात
समेतसदाशरऔरशरासनहैंकरधारे॥ पीतपटंवरऔमुक
टामणिअंगदनूपुरहारसवारे॥ ५२॥ ॥दोहा॥ कौस्तुभम

णिगलमैलसंकुंडलकानसुहाँहिं॥ इहीवसेउरमैसदारामऔर वरनाँहिं॥ ५३ ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ स्व यंप्रभाऐसेहीहोई ॥ तूँमनमैचाहतिहैंजोई ॥ पावनवदरीखँ डस्थान ॥ तहाँजाहिदर्शनमलहान ॥ ५४ ॥ तहँवसमो कोंउरमैभजें ॥ वहुरोयाँहिकलेवरतजें ॥ मोहिपरात्माकोत वपावें ॥ वहुरोभवसागरनहिंआवें ॥ ५५ ॥ सुनिराघवकी याँविधिवानी ॥उमाताँहिंअंमृतसममानी ॥ आश्रमवदरी खंडसुजाई ॥ स्मर्योंरघुपतिप्रेमलगाई ॥ ५६ ॥ ॥ **दो हा** ॥ उमाकलेवरत्यागकेगईरामकेधाँम ॥ गिरिजाकानन मैफिरैंमोक्षकल्पद्रुमराम ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामा यणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेषष्टमोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **कवित** ॥ तरूनकिमूरखरेवानरलं गूरसीयसारनाँहिंपाईभईचिंतासभकीशके ॥ ह्वैएकरूपसारेति नअंगदउचारेगएतीशदिनसारेजनहैंअधीनईशके ॥ दरीमै जुभ्रमेमाससीयाकीनभईआशप्राणतेउदासकाजकरेनकपी शके॥ जाँहिराजधानींजवहोंहिंप्राणहानीतवमारेंशुभग्रीवस भचलेनसुरीशके॥ १॥वालीहुनोतातसुविख्यातजिनवैरकीनो ताँकोसुतजानमिपपाइमोहिमारहै ॥ मोहिसोंनताँहिंप्रीतिवै रअतिचीतद्रिढमारतोसुतवहीजुरामनउवारहै ॥ रामकोनका जकीनोजाँतिसुखहातोजीनोइहैशुभग्रीवसुवहानोउरधारहै ॥ मातकेसमानकहींवेदऔपुरानवडेभाईकीसुनारिभजेपापीन विचारहै॥ २॥सुनोकपिपुंगवनजाँहिंपुरपुंगवसुमरेंहमईहाँवन

पावकजलाइके॥अंगदसुनैनजलपेखवलवंतकपिनीरनैनभर
सभकह्योहैसुनाइके।काहेकोसुकरोशोकयौंकहेंमहानयहिक
रेंरछपालतेरेप्राणकीसहाइकै ॥ फेरगुहापैरंवलिवासईहाँकरें
सभभोगसुमहानरहेंयाँहिंमैसुहाइकै ॥ ३ ॥ सवैया ॥ इह
भाँतिविचारकरेकपिअंगदमारुतनंदनएसुनपाई॥नयकोवि
दआपसुवातकहीपुनअंगदकोगलमाँहिंलगाई ॥ इहकौंन
विचारकरोवलिअंगदनीतिवुरीतुमहैठहिराई॥तुमराजकुमा
रउदारवडेअतिवल्लभतूँवालिहैंकपिराई ॥ ४॥ ॥ दोहा ॥ ॥
लक्ष्मणतेतुमरामकोपिआरेहोउरमाँहें ॥ राघवतेडरनाँहिंत
वकपिनायकडरनाँहिं ॥ ५॥ कवित ॥ तेरोहितचाहोंबीरऔ
रनविचारोंधीरसाथतेरेचलोंचितशंकनाहिंधारिये॥एजुगुहा
वासकपिकहेहैंमवाससभझूठोउरजानोतवनीकेसुउचारिये॥
तीनलोकमाँहिंरामवाणतेअभेदनाहिंछाडजाँहिंकपिजिनसं
गसुविचारिये ॥ सुतऔरनारीइनग्रामकेमझारीऊँहाँजाँ
हिंतजपासतवरहेंननिहारिये॥६॥ गोपइकवातहैसुकरोंतेवि
ख्यातसुतसुनोमनलाइपाछेमनमानेमानिये॥रामनरनाँहिंसु
नारायणप्रगटजगसीयामायारूपउरलक्ष्मीपछानिये॥लक्ष्म
मणशेपधारजगकोअधारप्रभुवेदऔपुरानमैसहस्रशीशभा
निये॥राक्षसननाशहितविनतीपितामाधारीमायातनधारीलो
कपालकवखानिये॥७॥विष्णुजोवैकुंठवासीताँकेहमदाससभ
होयोहरिमनुजपरातमासुहावना ॥ ताँहिंकीजुमायाजिनलो
कहैभ्रमायातिनकरेहमकपिफलमूलहीसुखावना ॥ पूरवअ

राधहरिरामहीकामयाकरभएपारपदसुवैकुंठलाइभावना ॥ अवतिनेसेवकरपापपरहरिसभपाइसुवैकुंठवासहम्मसुखपावना ॥८॥ ॥ सवैया ॥ ॥ अंगदकोइहभाँतिसुबोधगएगिरिविंध्यमहावनवीरा ॥ ढूँढतवैजनकातमजासुमहेंद्रगिरीगयेसाइरतीरा ॥ पेखसमुद्रअपारतहाँभयदायकजाँहिअगाधसुनीरा ॥ वानरचीतमहाडरपेकेंहेकाहिकरेंउरमाँहिअधीरा ॥ ९ ॥ सागरकेतटवैठगएबहुचिंतबढीसभकेउरमाँहीं ॥ वैठविचारकरेंसगलेइकमासगयोभ्रमतेगुहमाँहीं ॥ रावणन्याहिंपिखेअबलौपुनसीयकिसारनहींजगमाँहीं ॥ तीक्षणदंडकपीशअहेबहुप्राणहनेसुगयेपुरमाँहीं ॥ १० ॥ शुभग्रीवहनेइहतेसुभलोइहठौरमरेंकछुधारउपाए॥ इहभाँतिविचारउपारकुशाक्षपिपावनआसनलीनविछाए ॥ तहँबैठगएसगलेकपिवैध्वगबाजुमरेंमनमैठहिराए॥ पुनताँहिंसमेगिरिकंदरलेनिकसेखगएकभयानकआए ॥ ११ ॥ गृध्रनराजवडोशिरताजसुभूधरसोजिहँकोतनभारे ॥ वानरकेशिरताजबडेकुशआसनमाँहिंसुताँहिंनिहारे ॥ भोजनआजदयोबहुतोजगनायकयोंमुखमाँहिंउचारे ॥ एकहिंएकसुवानरकोसुकरोंदिनएकहिंएकअहारे ॥ १२ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ सुनकैसुगृध्रवानीभएहैंमलानीमुखखाइगोसुगीधतनकपिनउचारियो॥ सीयकोनशोधलीनोरामकोनकाजकीनोऔरकपिनायककोकाजनसवारियो ॥ हितनकमायोहमव्यथायमलोकपायोधन्यसुजटायुजोईरामहितमारियो ॥ योगीकोदुरापपदपायोहैजटा

युखगडारकैसुदेहहरिलोकमैपधारियो ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उमासुनीसंपातीवानी ॥ भ्रातकथामुख कपिनवखानी॥ पूछ्योवहुरभलेहितलाई॥ तुमहोवानरकौन सुभाई ॥ १४ ॥ नामजटायुभ्रातमेभाना ॥ सुधासमान परोममकाना ॥ मेरेतडरतुमकोनाँहीं॥कहुपलवंगमजोमन माँहीं ॥१५॥ तिनमेअंगदकीशप्रधान ॥उमालगोतबकरन वखान॥दशरथपूतरामयशटीको॥लक्षमणभ्रातजाँहिकोनीको ॥ १६ ॥ सीयभारयातौंकीप्यारी ॥ ताँसहआएविपनमझारी ॥ रावणदुष्टमहाहंकारी ॥ ताँहिंहरीवहुजनककुमारी ॥ १७ ॥ रामचंद्रमृगमारणगए ॥ लक्षमणताँकेपाछेधए ॥ रामरामसियकरीपुकारा ॥ सुनतजटायुभयोरुपभारा ॥ १८ ॥ रावणसाथभिर्योरणभारी ॥ रावणमार्योखगसंभारी ॥ रामनिमित्तमुएखगराजा ॥ रामदाहलौकरेसुकाजा ॥ १९ ॥ हरिसायुज्यजटायूपाई ॥ राममिलेसुग्रीवहिंजाई ॥ अग्निजलाइभएवहुमीता ॥ पुनसुग्रीवकहीसभरीता ॥ २० ॥ रामचंद्रवालीरणमारा ॥ भालसुकंठराजकपिधारा ॥ वानरवृंदसुग्रीवपठाए ॥ ढूँढोसीयजगतमेजाए ॥२१॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इकमासअवाँतरआउसभैनहिंप्राणहरोंकरदंडतुमारे ॥ इहभाँतिवखानपठाइदएहमआइपरेगिरिकंदरभारे॥ इकमासवितीतभयोहमकोनहिंसीयसुरावणनैननिहारे ॥ अवप्राणतजेंकुशडारतलेसरतापतिकेपुनवैठकिनारे॥२२॥ जौतुमजानतहोखगराजनसीयकथाहमदेहि

सुनाए ॥ अंगदवैननकोसुनकैहरपेउरमैखगराजअलाए॥
वानरप्राणसमानजटायुसुभ्रातह्रुतोलघुमेउरभाए ॥ वीतह
जारगएवरपावह्रुभ्रातउदंतसुमैअवपाए ॥ २३॥ वाक्यसहा
यकरोंतुमरीसुनवानरआजभएदुखभारे ॥ भ्रातहिंनीरसुदा
नकरोंअवलेचलियेमुहिनीरकिनारे ॥दैजलफेरकहोंवतियाँस
भकारयजाँकरहोंहिंतुमारे ॥ वानरभापतथामुखतेखगआन
धरेजहँऊजलवारे॥२४॥ न्हाइजटायुकुनीरदयोपुनवानरताँ
हिंसुलीनउठाई ॥ फेरतहाँतिनआनधर्योंखगवानरभाषतदेहि
सुनाई ॥ वानरकोहरपावतहीतवसीयकथाखगराजबताई॥
पावनसीयकथागिरिजावह्रुभापतहोंसुनियेमनलाई॥ २५॥
॥ **चौपाई** ॥ लंकानामपुरीमनमोहे ॥ गिरत्रिकूटकेशिरपर
सोहे॥ तहाँअशोकवनीमहिसीता॥ राक्षसीआँराखतहैंनीता
॥ २६ ॥ सौयोजनपैंडोयहिजानो॥ लंकाजलनिधिमध्यपछा
नो॥ विनसंदेहलंकमैदेखो॥सीतातहाँभलीविधिपेखो॥२७॥
वानरसंशयकरह्रुविनष्ट॥ गृध्रस्वभावदूरममदृष्टि ॥ शतयोज
नसागरविस्तारा ॥ याँकोजोकपिलाँघनहारा ॥ २८ ॥ सो
मिथिलेशतनूजादेखे ॥पुनआवेबलधारविशेपे॥ रावणदुष्ट
तमखलभारा ॥ जिनमेरोभाईलघुमारा ॥ २९॥ एकाकाति
हँमारोंजाई ॥ विनापंखनहिंपारवसाई ॥ सागरतरपुनदेइ
सुसारा ॥ ताँकोकरोसुयत्नविचारा ॥ ३० ॥ **दोहा** ॥
रावणकोरघुनाथपुनमारहिंगेबलधार॥ सीयशोधपह्रुचाव
नीयहिहैकाजतुम्हार ॥ ३१॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥सिंधुइहाँशत

योजनवीचसुजोकपिजाइसकेवलिपारे ॥ देवनकीगमना
हिंजहाँवढुजाइवरेपुनलंकमझारे ॥ सीयनिहारसुवाक्यउ
चारमहाबलिआवहियाँहिकिनारे ॥ आपसमैकपिसोतुम
वानरवैठभलीविधिलेहुविचारे ॥ ३२॥ ॥ इतिश्रीमदध्या
त्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेसप्तमोऽध्यायः
॥७॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **दोहा** ॥ अथकौतकआविष्टतसं
पातीप्रतिकीश ॥ पूछतभयेउदंतसभकहाभूतखगईश ॥ १ ॥
उमाकह्योसभआपनोसंपातीवृत्तांत ॥ पूर्वसुतिनकोजोभ
योसुनोचीनएकांत ॥ २ ॥ **कवित** ॥ हमओजटायुभाईभये
गरवाईतनयौवनअंधेरवलकहाँलौवताईये ॥ उडेरविमंडल
कोपेखेंवलआपनोभीयोजनहजारवढुपारनहीपाईये ॥ रवि
केप्रतापसोंजटायुतनतापभयोसूरयअछादयाँहिंतापकोमि
टाईये ॥ मनधरदोऊनिजपंखनपसाररविछादयोसुमोहिजनु
राहुसेसुहाईये॥३॥**सवैया**॥ सूरयकेकरदाहभएपरमैसुगियौं
गिरिकेशिरमाँहीं ॥ कोशसुनोअतिदूरहिंतेअतिमूरछतासुभ
ईतनमाँहीं ॥ वीतगएदिनतीनजवैतवप्राणभएसुकलेवरमाँ
हीं ॥ पीरमहाँतनधीरगयोपरहीनभयोसुधनामनमाँहीं॥४॥
॥ **कवित** ॥ कौनदेशकौनगिरिकाननसुकौनधरजान्योसुन
जाइकछुभ्रांतचित्तह्वैगयो ॥ हरूएउघारेनैनवैननउचारसकों
आश्रमनिहारसनेसनेढिगमैगयो ॥ चंद्रनामथोमुनीशनीतउ
रईशभजेमोहिपिखकपिविसमादउरसोभयो ॥ कहुरेसंपाती
उतपातयहकाहेतेसुछदनविहीनतोहिकहोकिनहैकयो॥५॥तूं

तोहुतोबलवानपूरवपछानमेरीजरेपरकाहेतसुकहोसमझाइ
के॥ भयोजोईसमाचारकस्योविसतारसभसुनकैमुनीशउरर
ह्योविसमाइकै॥फेरमैमुनीशकोउचारयोविचारकरतजोंयहदे
हवनपावकजलाइकै॥पक्षहीनजीवनोसुक्षीणभयोमेरोअब
सुनकैमुनीशउरदयावसीआइकै॥६॥वचनसुनीजोमोहिभा
खोंजोखगेशतोहिसुनकेकरीजोसुतचीनजोसुहाइहै॥देहमूल
दुःखजानकर्मदेहकोनिदानकर्मनकोमूलतनअभिमानआइ
है॥ देहअभिमानकोसुहेतुहैअविद्याअजजडरूपमिथ्यातोंहि
वेदयोंसुनाइहै॥चेतनकीछायाजवमिलेमाँहिंमायातवहोइकै
अभेदलोहपावकसुहाइहै॥७॥ **चौपाई** ॥ वहुरोदेहतदातम
पाइ ॥ चेतनवतपुनदेहसुहाइ॥ देहोहंयाँविधिमतिजोई॥अ
हंकारतेआतमहोई ॥ ८ ॥ ताँमूलकयहहैसंसार ॥ सुखदुख
हैजाँमाँहिंअपार ॥ आत्मानिरविकारहैजोई ॥ मिथ्याभयोअ
भिमानीसोई ॥ ९ ॥ देहोहंपुनकर्मकमाऊँ ॥ इनकोफलआ
गेमैपाऊँ ॥ इमसंकल्पकरेयहिप्रानी ॥ कर्मकरेफलमैअभि
मानी ॥ १० ॥ फलवाँध्योयहभजेविकारा ॥ भ्रमेअधोर्द्ध
वारंवारा ॥ पुण्यपापकेहोइअधीन ॥ फलभोगेहरपेउरदीन
॥ ११ ॥ मैजगपुण्यसुवहुतकमाए ॥ यागदानवहुभाँतिकरा
ए ॥ भोगोंफलतिनकोसुरमाँहीं ॥ इमसंकल्पकरेमनमाँहीं
॥ १२ ॥ भोगेतहाँवहुरचिरकाल ॥ स्वर्गलोकमैभोगविशा
ल ॥ क्षीणपुंण्यहोवेतहँजवही ॥ गिरेअधोमुखतहँतेतवही
॥ १३ ॥ प्रथमैपरेसुचंद्रमझारे ॥ पुनहोवै [illegible] व

हुरोगिरेसुधरकेमाँहीं ॥ परेसुयवव्रीहीकेमाँहीं ॥ १४ ॥ वसे सुबहुदिनअन्नमझारे ॥ बहुरचतुर्विधभोज्यप्रकारे ॥ चारप्र कारभोज्यहैजोई ॥ भोगेपुरुषजगतमैसोई ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ रेतहोइनरतनुविषेनारीरक्तसुहोइ ॥ ऋतुवतिनारीयोनिमैंसिंचेजौनरसोइ ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ योनिरक्तमैमिलेसुजवही ॥ परिवृतहोयजरायूतवही ॥ दिनइकमाँहिंकलिलसोहोई ॥ रूढस्वरूपहोइपुनसोई ॥ १७ ॥ पांचरात्रिमैवुदवुदकार ॥ होवैवीर्यसगर्भमझार ॥ सप्तनिशाकैमांसाकारा ॥ लोहूभरेसुपक्षमझारा ॥ १८ ॥ रात्रिपचीसजाइपुनजवही ॥ अंकुरहोहिंतौहिंततवही ॥ ग्रीवाशिरपुनऔरस्कंधा ॥ पृष्ठवंशपुनउदरकबंधा ॥ १९ ॥ मासवितीतहोइपुनजवही ॥ पंचप्रकारअंगतिंहँतवही ॥ पाणिसुपादपार्श्वकटिजानु ॥ युगलमासवीतेहुइँभानु ॥ २० ॥ होहिंवितीततीनजवमासा ॥ अंगनसंधिसुहोहिंप्रकाशा ॥ चारमासजवजाँहिंविलाई ॥ तवअंगुलिउपजेंखगराई ॥ २१ ॥ नासाकरणनयनलौजेते ॥ पांचमासमैहोवेंतते ॥ दंतपांतिनखगुह्यप्रमान ॥ पंचममासविषयहिमान ॥ २२ ॥ पटपुनमासवितीतेंजवही ॥ छिद्रहोहिंखगराजसुतवही ॥ होवैंकाननविवरउदारा ॥ गुदउपस्थपुननाभिअकारा ॥ २३ ॥ सप्तममासरुमावलिकेश ॥ अष्टमभिन्नअवयवसुवेश ॥ वधेगर्भजठरस्त्रीसोई ॥ नवममासचैतन्यसुहोई ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मातखाइजलअन्नजोताँकोरससुविशाल ॥ नाभिनालिकरभोगइगर्भमाँहिं

वहुवाल ॥ २५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ कर्मअधीनवधेउरमैज
ठरानलतेनहिंवालमरे ॥ पूरवलेजनमाकरमाजठरांतरवाल
सुयादकरे ॥ यौंउरमाँहिंसुवोलकहेजठरागनितेतनुताँहिज
रे ॥ योनिहजारअनेकधरीदुखयोनिनमैवहुभाँतिभरे ॥
॥ २६ ॥ सुतदारसुबंधुकरोरभएपशुबांधवनाकछुजातगि
नाए ॥ सुकुटंबभरेनिशिवासुरमैकरनीतअनीतसुद्रव्यमि
लाए ॥ कृतिव्यर्थकरीभवभीतरमैसुपनेसुनहीहरिकेगुण
गाए ॥ अवताँफलदुःखसुभोगतहोंजठरानलमेतननीतत
पाए ॥ २७ ॥ क्षणभंगुरदेहविषैवसकैजगभीतरमैवहु
पापकमाए ॥ हितआत्मकेनकरेकवहीतिहँतेइहभाँतिसुमैदु
खपाए ॥ नरकाभमहाँगरभानलतेनिकसोंकवियौंमुखमाँ
हिंअलाए ॥ अवतेउपरंतनभोगभजोंहरिपूजनमैकरहोंशिर
नाए ॥ २८ ॥ ॥ गयामालतीछंद ॥ ॥ इहभाँतिकी
नकरारतहँपुनजन्मऔसरआइयो ॥ योनियंत्रप्रपीडियोवहु
भाँतितहँदुखपाइयो ॥ इहभाँतिदुःखसुभोगनिकस्योनरक
तेजिमपातकी॥ जनुपूतिव्रणतेकीटगिर्योसुसारनाकछुआप
की ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ताँउपरांतदुःखवहुभारी॥
होंहिंसुवालकदेहमझारी ॥ यौवनमैदुखआँहिंसुजेते ॥ अ
नुभवकरेसकलजनतेते ॥ ३० ॥ तैंखगवरसभआपनिहारे॥
याँतिमैनाहिंकीनउचारे॥ याँहिंभाँतितनुमैहंगहे ॥ करअध्यास
नरकदुखलहे ॥ ३१ ॥ गर्भवासलौंदुःखअशेश ॥ अभि
निवेशतेहोंहिंखगेश॥ ताँतेतनुदोनोतेन्यारो॥ आत्माकोउरअँ

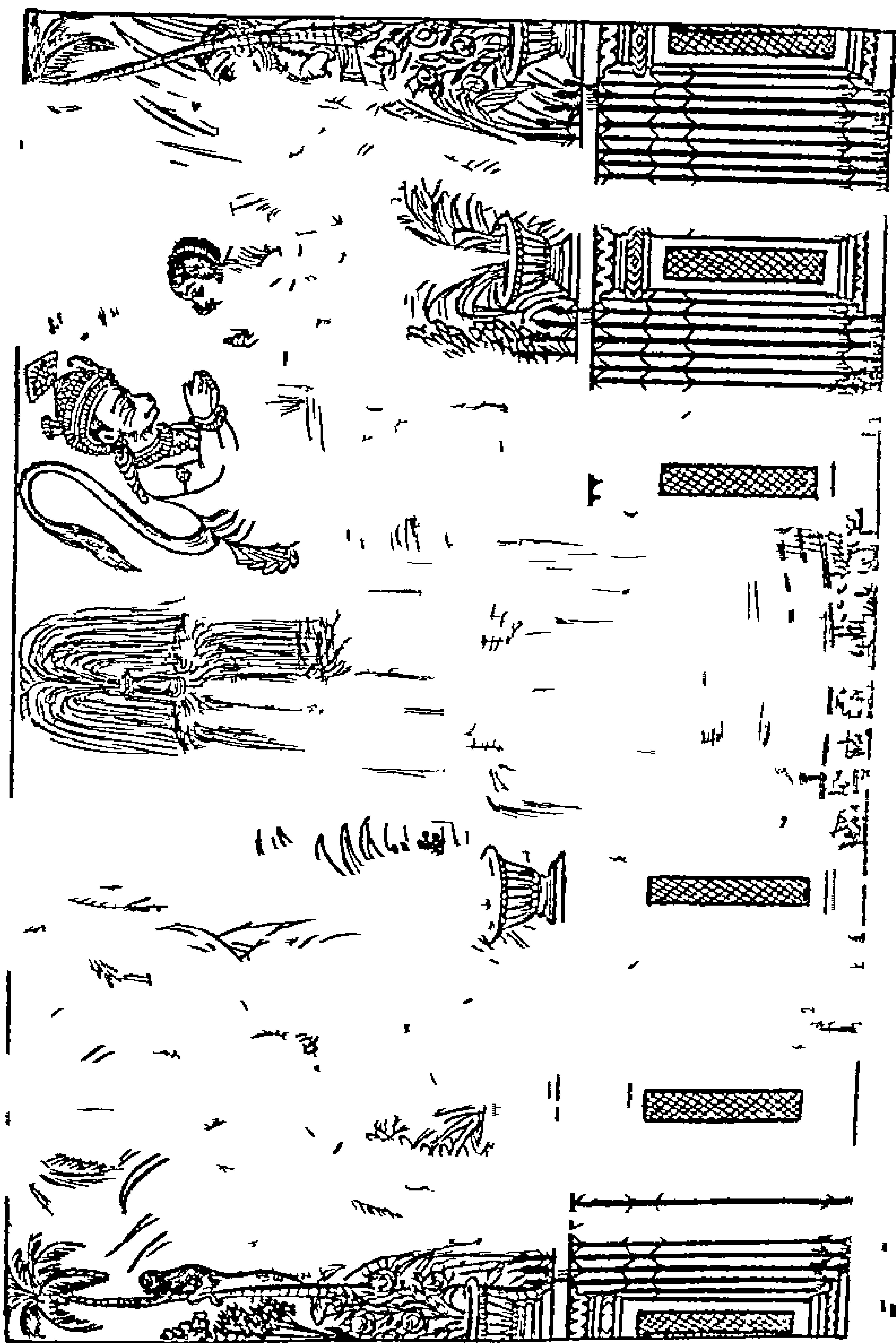
तरधारो॥ ३२॥ प्रकृतिपरेतौंकोउरमान॥त्यागेदेहादिकअभि
मान ॥ आतमज्ञानवानजगजोई॥ जाग्रतआदितजेजनसो
ई ॥३३॥सत्यज्ञानपुनशुद्धस्वरूप॥ बुद्धशांतघनआनंदरूप॥
चित्स्वरूपआतमजोजाने॥ मोहाज्ञानहोंहिंसभहाने ॥ ३४॥
देहरहेअथवापुनजाई॥ योगीकोदुखहोइनराई ॥ सुखदुखस
भप्रारब्धाधीन॥योगीभयोपरमपदलीन॥ ३५॥ ताँतेहैप्रारब्ध
सुजौलौ॥ देहसहितखगरहोसुतौलौ॥सुखसेतींधीरजउरधा
रो॥सर्पकुंचसमदेहनिहारो॥३६॥औरकहोंसुनियोंखगसोई॥
जाँमैतेरोअतिहितहोई ॥ त्रेतायुगमैश्रीनारायण ॥ आवें
गेदशरथकेआयन ॥ ३७ ॥ दाशरथीवहुरामकहावें ॥ रा
वणकेवधहितवनआवें ॥ सीतानामनारिलैसाथ ॥ लक्ष्म
णभ्रातसहितरघुनाथ॥ ३८ ॥भ्रातजाँहिंगेविपनमझारी॥आ
श्रमरहिंसीजनककुमारी ॥ तस्करजिमरावणचोराई॥ लंका
मैराखेगोजाई ॥३९॥ कपिसुकंठकीआइसमानी॥ ढूँढेंगेतौं
कपिवलवानी॥ आवहिंगेवहुजलधिकिनारे कारणवशसंग
मिलेंतिहारे ॥ ४० ॥ तवसीताकीस्थितीसुजोई॥ तुमतिनप्रति
भाखीजोसोई ॥ तवतेरेनूतनपरदोई ॥ पुनउपजेंसंशयनहि
कोई ॥४१॥ ॥ **संपातिरुवाच** ॥ **सवैया**॥ ॥ चंद्रमुनी
श्वरमोहिसुबोधकयौंइहभाँतिदयाउरधारी ॥ कोमलमेपर
एहुनवीनभएतुमवानरलेहुनिहारी ॥ जावतहोंशमहोइतु
मेयहिसाचुपिखोंसुविदेहकुमारी ॥ वैठविचारकरोसगलोजिं
हँभाँतिपरोतुमसागरपारी ॥ ४२ ॥ जिहँनामभजेजगसिंधु

तरेंखलपावतहैंपदरामसुरारे ॥ तुमतौंजगनाथकिदूतभएअ
तिसेवकरामकिनीतपियारे ॥ तुमकिंबलधारतनामनमैल
घुनीरधकिंनहिंपावतपारे ॥ इहभाँतिवखानगएनभमैजन
कातमजासगलीकहिसारे ॥ ४३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामा
यणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥
॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **सवैया** ॥ खगराजगएनभमंडल
मैहरषेकपिपुंगवतौमनमाँहीं ॥ उतसाहुबढ्योसियदेखनको
तटनीरधबोलउठेमुखमाँहीं ॥ झषमीनतिमिंगिलपूररह्योजि
हँपेखतजीवडरेतटमाँहीं ॥ जनुआहिअकाशगंभीरवडोकपि
पैठसकेनहिंकोतिहँमाँहीं ॥ १ ॥ आपसमैकपिदेखतबैकिंहँभाँ
तितरेंमुखकीनउचारे ॥ अंगदबोलउठेतबहीकपिआजसुनो
तुमवाक्यहमारे ॥ होवलवंतसभेकपिवीरमहाँकृतविक्रमआँ
हिंतुमारे ॥ कौनकरेरघुवीरकुकारजजाइउलंघसुसागरपा
रे ॥ २ ॥ **शंकरछंद** ॥ सुग्रीवआइसपालकैइनवानरनदे
प्रान ॥ उठमोहिआगेहोइठाढोजोअहेबलवान ॥ बहुवानरन
केप्राणराखेरामकपिसिरदार॥ [illegible]
हिंवींचविचार॥३॥ इहभाँतिअंगदबोलसुनकपिरहेमौनसुह
इ॥ मुखहेरहैंतेपरस्परनहिबोलहैकपिकोइ ॥ तबपुनः [illegible]
चनकहिंदवानरनसनमान ॥ सुग्रीवकारयसिद्धहितबलकरो
मोहिवखान॥४ [illegible]
युवराजकेयहवाक्यसुनबललगेकरनवखान॥ दशवीशऔपु
नतीशचालीकहेंएकपचास॥पुनसाठसत्तरयोजनाकपिएकक

रहिंप्रकाश ॥ ५॥ अश्शीतनव्वेयोजनाकपिकहेंनिजबलसा
र ॥सुनजांबवानभलूकनायककीनएहुउचार॥ सौयोजनाते
न्यूनमैकछुजाउँवानरछाल॥जवभएपूर्वसुवामनातवकरेकर
मविशाल॥ ६ ॥ वलिभूमिमापीपादत्रयलक्षणरहेहरिठहिराइ॥
एकीशवारसुभूमिफिरमैदईडिंडिमवाइ॥अवभयोवूढोशक्ति
नाकिंहँभाँतिलाँघोंवारि॥अंगदवखान्योवाहुवलमैजाउँजल
निधिपार॥७॥फिरआवनेकीशक्तिहोइनहोइगतिकरतार॥सु
नवाततांकीजांबवानसुआपकीनउचार ॥ यद्यपिसमर्थसुतूँ
अहेंतवभेजनोनहिसार ॥ वलवानसुंदरवालिकोसुतसैन्यको
सिरदार ॥८॥ अंगदउवाच ॥शंकरछंद ॥ जवभेजनोन
हिमोहुकोभलेहुदर्भविछाइ ॥ नहिंकार्यकीनोकिनेजीवनत
जेंप्राणचढाइ॥तवजांववानसुकह्योवहुसुतदेउँतोहिदिखाइ॥
सोकरेकार्यअनूपअतिवलिदेहितांहिंपठाइ॥९॥ इहभाँतिभा
षभलूकपतिसुवुलाइकहिहनुमान॥सुतकाहिमौनीतूँभयोयहि
आहिकाजमहान॥वलिअज्ञजिमनहिंमौनधारोवलदिखावो
आप॥ वलवंतवायुकुमारत्वंपुनवायुतुल्यप्रताप॥ १० ॥श्री
रामकार्यसुहेतत्वंमहताजन्योमहवीर ॥ सुनजन्मकालनिहार
भानूउदयजिउँमुखकीर॥फलपक्कजानसुखानहितत्वंगयोगग
नमझार॥अतिवालयोजनपंचशतपुनगियोत्वंधरभार॥११॥
तेदेहकोवलकौनभाषेवर्णियोनहिंजाइ॥उठरामकार्यसुकोजि
येहमलेहुआजवचाइ ॥ तवजांबवंतसुवाक्यसुनहनुमानहर्ष
अखंड॥अतिसिंहनादसुकीनइमजनुफोडहैब्रह्मंड॥१२॥गिरि

केसमानसुहोगयेजनुवढीवामनदेहे॥ हनुमानबोलेवानरोत्त
मसुनोमेवचएह॥ मैलंघजलनिधिपारलंकाभस्मछारउडाइ
लैआँउँसीतारामकीकुलसंगरावणघाइं॥ १३॥ वावाँधरावण
जेवरीगलधारबाँधेहाथ॥ गिरिसहितपुरीउठाइकैतहँधरोंजहँ
रघुनाथ॥ वादेखआँवोंजानकीजिहँहेतुभेजेराम॥ सुनवाक्य
व ेरि ि ि ाँ १४॥ सुतदेखआवोजानकी
कल्यानतेरीचाँहिं॥ वहुजीवतीहैलोकमैवाजीवतीहीनाँहिं॥
पुनरामसोंमिलभुजाकोवलकीजियेरणवीर॥ अवजाहि
ल्यानखेमैवेगपूतसमीर॥ १५॥ तुज व यु
छेहोइ॥ आशीरदैकपिमौरभेज्योविघ्नहोइनकोइ॥ सुमहेंद्रगि
रिकेशीशचढकपिभयोअद्भुतरूप॥ नगइंद्रसोतनसोभयोपुनहे
मवर्णअनूप॥ १६॥ मुखलालजिउँफलविंबकोभुजतुल्यजि
मअहिशेष॥ इहभाँतिभयोसुवायुसुतौतिहँपिखेभूतअशेष
सुनउमासीतासारहितकपिभएरूपविशाल॥
तिलकीतिहँक्षणअंजनीकेबाल॥ १७॥ ॥ चौपाई॥
थाकांडकिष्किंधाजोई॥ कहीगुलावसिंहसभसोई॥ याँको
पढेजुप्रेमलगाइ॥ रामभक्तिउपजेउरआइ॥ १८॥ इति
श्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेनव
मोऽध्यायः॥ ९॥ ॥ ९॥ ॥ ९॥

॥ इतिश्रीकिष्किंधाकांडम्समाप्तः॥



श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ सुंदरकांड प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ दोहा ॥ सीताशोधीलंकमैरावण
नगरजराइ ॥ जाँहिंसुनायोआइहरिताँहिंनमोरघुराइ ॥ १ ॥
॥ सवैया ॥ मकराउरगाजिंहँमाँहिंघनेशतयोजनहैजिंहँको
सुविथारा ॥ जलसागरलाँघनचाहितहैगिरिजाकपिवीर
सुवायुकुमारा ॥ रघुवीरकुध्यानधर्योउरमैहनुमानतवैइहवा
क्यउचारा ॥ सभवानरनैननआजपिखैंनभभीतरवेगसुगौन
हमारा॥ २॥ ॥ कवित ॥ अमोघरामवानकेसमानमैगगन
जाँउँचाहिमनअैसीसीयअबहीनिहारीये ॥ होवोंगोकृता
रथसुपेखपदसीताजूकेकरोंकाजवेगनहिंढीलसुविचारीये ॥
प्राणअंतनामएकवारहीउचारजिनतरेनरनारिभवसागरअं
पारीये॥तिनहींकोदूतमोहिमुद्रिकाउतारदईरामउरधारक्युंन
तरोंतुच्छवारीये ॥ ३ ॥ सवैया ॥ ॥ इहभाँतिवखानजवैह
नुमानपसारभुजाअतिपुंछवढाई॥ रिजुकंधरढीठअकाशध
रीपदआपसमैयुगलीननमिलाई ॥ दिगदक्षणकूदअकाशच

ढेवलवायुसमानभयोअधिकाई ॥ गतिदेवनिहारभएविसमै
कपिकुंजरकीगणनाइकमाई ॥ ४ ॥ जबजावतवायुसमान
पिख्योकपिदेवनतौमनएहुविचारी॥मतियाँहिंपरीक्षणआज
करैंसुरमंडलयौंमुखमाँहिंउचारी ॥ बलवंतमहाकपिजावत
एसुसदागतकेसमहैबलकारी ॥ गढलंकप्रवेशकिलाइकहैकि
नहींइहजाननचाहिहमारी ॥ ५ ॥ इहभाँतिविचारसुनागन
कीजननीसुरसाजिहँभाखतनामा ॥ सुरकौतिकवंतकह्योति
हँकोसुनमातकरोतुमएहुसुकामा ॥ विघनाकरियेपथिजाइ
अवैकपिजावनएहुहनूमतनामा ॥ बलबुद्धिनिहारसुयाँक
पिकीफिरआउतुराकरआपनधामा ॥ ६ ॥ **शंकरछंद** ॥ इ
हवाक्यसुनकैवेगदौरीविघ्नहितहनुमान ॥ तवरोकमारगकी
शकोमुखएहुकीनवखान ॥ मतिवंतत्वंमुखमाहिंमेरेपरोआ
खोंतोहि॥भलदेवतारचभक्षदीनोक्षुधालागीमोहि॥७॥हनुमा
नभाख्योमातमैअवरामकार्यसुजाँउँ॥जाजानकीकीसारमैग
ढलंकतेपुनल्यांउँ ॥ सियकुशलरामवखानकैसभसारताँहिंसु
नाइ॥पदवंदनाअवभापहौंफिरिपरोंगोमुखआइ॥८॥सुरसा
सुसुनकैवाक्ययौंपुनकीनआपवखाँन ॥ कहँजाँहितूंकरवं
चनामेआहिभूखमहाँन ॥ सुप्रवेशकरमुखजाहितूंनहिंखाउं
गीबलधार ॥ सुनबोलियोहनुमानमातालेहुवदनपसार ॥
॥ ९ ॥ सुप्रवेशमुखकेमाँहिंकरमैजाँउकाँममहान ॥ इमभाप
योजनदोइकोतनुकीनतबहनुमान ॥ सुरसासुयोजनपंच
कोमुखकीनहनुमतपेख ॥ दशयोजनाहनुमानरूपसुकियो

आपविशेप॥ १०॥ मुखविंशयोजनकोकियोसुरसासुनागन
मात॥द्वात्रिंशयोजनकेभएहनुमानतवविख्यात॥ पंचाशयो
जनकोजवैसुरसासुमुखविस्तार ॥ हनुमानतवपुनहोगयोअं
गुष्टसोआकार॥११॥सुप्रवेशकरमुखनिकसियेपुनखडोआ
गेआइ॥सुप्रवेशकरमुखनिकसिओमैमातलागोंपाइ॥ इहभाँ
तिभापतवायुसुतपिखताँहिंकीनउचार॥सुतयाहिरामसुकार्य
करतेआहिबुद्धिउदार॥१२॥ देवनपठीमैताततववलदेखनेके
काज ॥ वलिहारिसीयनिहारकैपुनदेखहैंरघुराज ॥ तवग
ईदेवसुलोकमैइमभाषनागनमात ॥ पुनहनूमानखगेशजिम
उडगयोमारगवात ॥ १३ ॥ मैनाकगिरिमणिकांचनेभोकी
नजलधिउचार ॥ भलजातहैवलवंतएहुसुपेखपवनकुमार ॥
श्रीरामकार्यसुहेतजावेकरोताँहिंसहाइ॥श्रीसगरपूतनमैवधा
योनामसागरपाइ ॥१४॥ अवभएतिनकेवंशमैयहिरामदश
रथपूत ॥ तिंहिकाजहितहनुमानजावेवलीजिमपुरहूत ॥अ
ववेगजलतेउठोभलविश्रामकरयहिजाइ ॥ जलमध्यतेनग
निकसतववहुशिखररूपवनाइ॥१५॥ मणिशृंगशोभेंताँहिंके
पुनआपधारअकार॥मैनाकतवहनुमानकोमुखएहुकीनउचा
र ॥ मैनाकमेजलनाथभेज्योतेविश्रामसुकाज॥शुभसुधासे
फलपक्वयहितुमखाइजावोआज ॥ १६ ॥ विश्रामकिंचित
कीजीयेपुनजाहुसुखीपधार ॥ हनुमानसुनकरवाक्यताँकिए
हुकीनउचार ॥ किंहँभाँतिभोजनमैकरोंनगजाँउँरामसुका
ज ॥ विश्रामकोनहिकालमोकोवेगजाणोआज॥ १७॥ इह

भाँतिभापछुहाइगिरशिरहाथपवनकुमार ॥ कछुदूरआगेजौ
गयोनिंहँभयोविघ्नअपार ॥ याराहुमातासिंहिकातिंहँगहीताँ
कीछाहि ॥ साघोररूपाराक्षसीजलमध्यवासाआहि ॥ १८ ॥
आकाशगामीछायगहिपुनलएताँकोखाइ ॥ तिहँग्रस्तहनुमत
चिंतउपजीयहिभयोअवकाइ ॥ किनवेगमेरोरोकियोयहिवि
घ्नकारीकोइ ॥ मेविस्मयंअतिहेदईनहिदेखियेअवसोइ ॥ १९ ॥
इहचिंतकरहनुमाननीचेनीरदृष्टिपसार ॥ वहिघोररूपासिंहि
काजलमाँहिंलईनिहार ॥ कपिवेगदौरसुनीरमैहतपादप्राणनि
कार ॥ दिग्दक्षिणापुनकूदकैकपिगयोगगनमझार ॥ २० ॥
तवदक्षकूलसमुद्रकेपुनपरोहनुमतजाइ ॥ बहुभाँतिपक्षिसु
बोलहींद्रुमरहेपर्वतछाइ ॥ फलभारसोंतरुभूमिलटकेलताफू
लअपार ॥ सुत्रिकूटगिरिकेशिखरमैपुनपिख्योनगरउदार
॥ २१ ॥ प्राकारबहुविधशोभईअतिनमनपरिखाआँहिं ॥ अ
सलंकमैकिंहँभाँतिपैठोंचिंतिओमनमाँहिं ॥ रात्रिसूक्ष्मरूपक
रमैवरोंलंकमझार ॥ सुप्रवेशयाँमैकठिनहैरावणकरेप्रतिपार ॥
॥ २२ ॥ इहभाँतिचिंतसुचीतमैतहँरह्योठाढोहोइ ॥ रविदुरेनि
शानिहारकैकपिचालिओपुनसोइ ॥ धररूपसूक्षमघोरपुरमै
वरेकपिवलवान ॥ तहँपुरीलंकाराक्षसीधरवेशथीदरवान ॥
॥ २३ ॥ पेखतिहँहनुमानकोअतिडाटकीनवखान ॥ तुमकौ
नवानररूपधरकरलंकनीअपमान ॥ क्याकरनकोउरचाहि
तोधसचोरजिउँपुररात ॥ इमभापनयनसुलालकीनेहनीकपि
कोलात ॥ २४ ॥ हनुमानवज्रसमानमुष्टीवाममारीताँहिं ॥ झट

गिरीधरमैंश्रोणितोपुनवमैसोमुखमाँहिं ॥ उठलंकभाख्योतौं हिंकोहनुमंतकपिबलवान ॥ निपपापलंकातैंजितीअबजाहि तेकल्यान ॥ २५ ॥ विधिमोहिभाष्योपूर्वहीयुगजाँहिंजौचौ वीश ॥ त्रेतायुगेअजनंदकेघररामव्हैजगदीश ॥ श्रीयोगमा याजानकीवहुजनकभौनमझार ॥ सुनवेनतीमैंहैकरीवहुलेइ गोअवतार ॥ २६ ॥ भूभारहारणकाजहरिसहभ्रातऔसह नारि ॥ प्रभुभक्तवत्सलजाँहिंगेवहुरामविपनमझार ॥ हरल्या इसियदशकंधरोवनकपटवेषअनीत ॥ पुनरामऔसुग्री वहुइहैंसखानिर्मलचीत ॥ २७ ॥ सियशोधकोकपिभेजहैं सुग्रीवबुद्धिप्रकाश ॥ तिनमाँहिंवानरएकनिशिकोआइगोत वपास ॥ तूँडाटहैंतवताँहिंकोवहुकरेमुष्टिप्रहार ॥ दुखहोइगो तेतनविषेमुखजाइलोहूधार ॥ २८ ॥ रावणतदाध्रुवमारियेवि नशंकतूँउरधार ॥ तुमजितीलंकापुरीताँतेजितेसर्वविचार ॥ दशकंधअंतःपुरीमैंइकक्रीडकाननआहि ॥ तिंहँबीचआहि अशोकवनिकादिव्यपादपजाँहिं ॥ २९ ॥ तिंहँबीचएकसुशिं शपातरुआहिरूपउदार ॥ तिहँतरेजनककुमारिकाढिगराक्ष सीरखवार ॥ तिहँपेखवेगसुजाइकैकहुरामकोसभसार ॥ इ मशापगिरिजालंकनीमुखफेरकीनउचार ॥ ३० ॥ ॥ **दोहा** ॥ धन्याहंचिरकालतेअघस्मृतिभइराम ॥ जाँतेभववंधनमिटैं लहेरामकोधाम ॥ ३१ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ रामभक्तकोसंगम जोई ॥ दुर्लभभयोआजमुहिसोई ॥ दाशरथीरघुवरश्रीरा म ॥ सदाप्रसन्नरहेहृदिधाम ॥ ३२ ॥ ॥ **सवैया** ॥ तटसा

गरनेजवपौनकुमारसुकूदचल्योनभमाँहिंभवानी ॥ अवनीदुहिताअरुरावणकेद्रिगवामभुजातवहीफरकानी ॥ रघुवंशशिरोमणिकीभुजदक्षणताँहिंसमैफरकीहरपानी ॥ इहभाँतिधसेगढलंकहनूकविसिंहगुलाबसुकीनवखानी ॥ ३३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणउमामहेश्वरसंवादेसुंदरकांडेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **शंकरछंद** ॥ तवअंजनीकेपूतरात्रीवरेलंकमझार ॥ भलफिरनलागोनगरमैधरसूक्ष्मोआकार॥ पुनसीयशोधनकाजसोकपिधस्योभूपनिवेश॥नहिंपिखीतिनतहँजानकीतिनपिखेघरसभदेश ॥ १ ॥ पुनलंकनीकेवचनचिंततगयोवनहिंअशोक ॥ अतिजाँहिंशोभापेखकैवनलजेंजेसुरलोक ॥ शुभदेवतावनवृक्षलागेरत्नकीसोपान ॥ मृगबालजाँमैखेलहैंपुनकरेंपक्षीगान॥ २॥प्रासादजाँमैंहेमकेधरलटेफलसोंडाल ॥भलसुधाकेरसजाँहिंसिंचेंदेवताअलवाल॥तहँजानकीकोढूढईतरुतरुविपेहनुमान॥ घनलीढमंदिरचैतकोअतिजाँहिरूपमहान ॥ ३ ॥ तिहँदेखविस्मयहोरह्योमणिथंभजाँहिंहजार॥तिहँदेखआगेगयोकिंचितपौनकोसुकुमार॥ तवहेरियोतरुशिंशपाअतिनिविडजाँछिदछेम॥आतपदिखाईदेतनहिंखगवनेवर्णसुहेम॥ ४ ॥तरुतलेजनककुमारिकाढिगराक्षसीभयकार॥हनुमानदेखीभूतलेजनुदेवताअवतार॥ शिरएकवेणीदूवरीपटरहीमलनसुधार॥मधभूमसोईशोचतीमुखरामरामउचार ॥ ५ ॥ त्रातानकोईपावतीउपवासदूवरिदेह ॥ पिखताँहिकोहनुमानभाख्योजानकीहैएह ॥कृतकृत्यधाँजगमैभ

योश्रीजानकीपिखआज ॥ परमातमारघुवीरकेमैकरेआइस्र
काज॥६॥पुनकिलकिलाअसशब्दहै [illegible]
शब्दचकितसुलीनतरुछदभयोवायुकुमार ॥ दशकंठआवतदे
खिओवहुलीनसंगसुनारि ॥ भुजविंशदशमुखशोभईतनुश्या
मनीलपहार ॥७॥ तिहँपेखकपिविस्मयभयोदुर्गयोपातनमाँहिं
॥ गिरिजासुनोदशकंठरावणयोंचितेमनमाँहिं ॥ किहँभाँति
राघवहाथतेमैमरोंयाँजगमाँहिं ॥ कोभयोकारणरामजोहि
तसीयआयोनाँहिं ॥ ८ ॥ इहभाँतचीनचितारईदिनरात्रिराव
णसोइ ॥ दिनताँहिंअंत्यमरात्रिमैइहस्वपनभीतरजोइ ॥ क
पिदूतरामहिंपठ्योहैगढलंकमैवहुआइ ॥ तरुबैठसीतहिंपेखई
वहुतनकदेहवनाइ ॥ ९ ॥ इहभाँतिअद्भुतस्वप्नपिखतिहँचि
तयोंमनमाँहिं ॥ मतहोइस्वपनोसाचयहअवयोंकरोंमैताँहिं॥
शितवाक्यशरसियफोरकैतिहँकरोंदुखीशरीर ॥ कपिपेखभा
खेरामकोइमआईहैरघुवीर ॥ १० ॥ तवगयोसीयसमीपयाँवि
धिचीतमाँहिंविचार ॥ ध्वनिकिंकिणीकीसुनीसीतानूपरनझ
नकार॥अतिलीनहोईसीयनिजतनुभईउरमैभीत॥भरनयननी
चेमुखकर्योंअरुरामअर्प्योंचीत॥११॥दशकंधसीताहेरकैपुन
एहुकीनवखान॥मुहिपेखसुभ्रूवृथात्वंकिंभईहैभयमान ॥ स
हभ्रातरामवसेवनेवहुवानरनकेमाहिं॥तिहँकदाकेचितदेखहैं
कवनजरआवेनाँहिं॥१२॥मैवहुतभेजेचारियापुनरामदेखन
काज॥वहुयत्नकरतिनपेखिओनहिपेखियेजगआज॥कैगएन
गरअयोध्यप्रतिकैमरेहैंविपखाइ॥सुनजानकीमैभेजचारेल

ईखबरमंगाइ ॥ १३ ॥ क्याकरहिंगीतूँरामकरनाहिंतोहिचाहे
राम॥तुहिसुदादीनआलिंगनापुनवसेतेरेधाम॥हैत्हदयनाहिंस्ने
हताँकोतेविषेसुनसीय॥मैसाचभाखोंजानकीकिहँकाजऐसे
पीय॥१४॥तवरचेभोगसुभोगइपुनजानतोगुनतोहि॥शुकृत
घ्ननिर्गुणअधमहैनहिंकरततोमैमोह ॥ मैतोहिल्यायोलंकमैतूं
शोकव्याकुलआँहिं॥ अवलौनआयोरामसुंदरिजोरनाँहींताँ
हिं॥१५॥निस्सत्वनिरममूढमानीकहेपंडितआप॥हैनराधम
तोहितेअतिविमुखमाइनबाप॥क्याकरेंगीतिहँसंगभामिनिरा
मनागुनवान॥सुगुलावसिहसुतीनछंदनलखेयशभगवान ॥
॥१६॥भजमोहितोकोंचाहितोमैराक्षसनशिरदार॥गंधर्वदेव
सुनागकिंनरयक्षकीवहुनारि॥शिरदारतिनकीहोंहिंगीजवभ
जेंमोहिपियारि॥सुनवचनरावणजोकहेसियजगेक्रोधअपार
॥ १७ ॥ त्रिणओटकरमुखभूमिसनमुखलगीकरनवखान ॥
खलऐपलीनअतीनकातुहिरामतेडरमान॥रेरामजववनमैग
एपुनगएलक्ष्मणभ्रात ॥ ममद्वारितंडुलयाचनातैनेकरीवि
ख्यान ॥ १८ ॥ जिमश्वानपूतसुआहुतीखलहरेयज्ञनमाँ
हिं ॥ तिमनीचमेहरल्याइत्वंअवपाइगोफलताँहिं ॥ शररा
मछातीफोदतेरीपठेंगेयमधाम ॥ धिक्जानहैंतवनीचरावण
मनुजहैंश्रीराम ॥ १९ ॥ शरवाँधपंजरशोषसागरभ्रातल
क्ष्मणलार ॥ तवपेखहैंरणमारणेतवआँइँगेवलधार ॥ गढ
सैन्यवाहनपूतसहतुहिमारकैसंग्राम॥ अलिभ्रातश्रीरघुवीरले
केजाँहिंगेमुहिधाम ॥ २० ॥ सुनसीयवाक्यकठोररावणक्रो

धलीनोधार॥सियमारनेकोआइयोखलखड्गहाथउभार॥ आ रक्तनयननिहारकैमंदोदरीगहिहाथ ॥ पतिभलाचाहिनिवारि ओइहयोग्यनाँहींनाथ॥२१॥यहिमानुषीअतिदीनदुःखितकृप णकृप्यशरीर॥पतिछाडदीजेयाँहिंकोनहिमारियेरणधीर॥गंध र्वदेवसुनागकीपरमाँहिंतेरनारि ॥ मदमत्तजाँहिंविलोचनाव हुचहैंतुम्हिभरतार॥२२॥ वोल्योसुतवदशकंठरावणराक्षसीभ यकार॥जिहँभाँतिमेवशहोइसीताकरोसोइप्रकार॥डरदेहुवेग सुयाँहिंकोपुनदेहुआदरमान॥दोमासहीकेवीचहीजवकरमो सनमान ॥२३॥ तवसर्वसूखसमेतलंकाराजभोगेसोइ ॥ दो मासजाँहिंवितीतजौनहिमानहैयहिकोइ॥ तवकरोप्रातअहा रमेराजानकीकोमार ॥ इमभापस्वस्त्रीसंगलैपुनगयोभौनम झार ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवसभआईराक्षसीसीय निकटभयकारि ॥ दीरघहाथनिकारकैडाटतकरतउच्चार ॥ ॥ २५ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ इककहेसीतेव्रथायौवनगयोतोहि विशाल ॥ मिलसंगरावणसफलकीजेजावतोहैकाल ॥ इक कहेऔरसुकोपकरकिंतोहिलाईवार॥क्रुतजानकीकोखंडखंड सुडारियेअवमार ॥ २६ ॥ इकऔरसीतामारणेहितलैउठीत रवार ॥ इकदंतिगारींऔरआईखानवदनपसार ॥ इहभाँति सियडरपाँवहींतहँराक्षसीविकराल॥त्रिजटासुताँहिंनिहारकैपु नकहेवाक्यविशाल॥२७॥तुमसुनोदुष्टाराक्षसीममवाक्यतुम हितकाम ॥ भयदेहुनाहीजानकीतुमकरोचरणप्रणाम॥ अव स्वप्नआयोमोहिकोमैपिखेराममुरारि ॥शुभनयनपंकजसेखि

रेऐरावतेंअसवार ॥ २८॥ लक्ष्मणसमीपसुशोभईगढलंक
दयोजलाइ॥ संग्रामरावणमारिओवहुवाणछातीघाइ॥आ
रोपसीताअंकवैठेरामशिखरपहार॥ रावणदिगंवरतेलमलव
हुन्हाइगोवरतार॥ २९ ॥ सभपुत्रपौत्रनसंगलैनरवदनकीक
रमाल ॥ इहभाँतिपेखेलंकपतिअवआइओतिंहँकाल ॥ वैठो
विभीषणरामकीढिगहर्षचीतवढाइ ॥ सेवाकरेपदरामकी
अतिप्रेमहृदयलगाइ॥३०॥कुलसंगरावणमारहैवहुरामहरि
अवतार॥देराजलंकविभीषणेपुनजानकीलैलार॥मनुराजधा
नीजाँहिंगेनिजअंकसीताधार॥ घनश्यामनैनसुकंजसेतनुमा
धुरीआगार॥३१॥ यहिवाक्यत्रिजटाकेसुसुनसभराक्षसीडर
कोन॥तवहोइचुपकीरहीसगलीभईनिद्रालीन॥अतिराक्षसिन
करडरीसीताचीतव्याकुलहोइ ॥ कृषमूरछातनमोभईनहिंपा
इरक्षककोइ॥३२॥भरनयनजलउरचिंततीपुनएहुकीनउचार
॥ सुप्रभातमेरोखाँहिंगीयहिराक्षसीतनमार ॥ सुउपाइकौन
सुमरणमेरोआजहीजगहोइ ॥ इमदुःखमग्नविमुक्तकंठा
जानकीचिररोइ ॥ ३३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ तरुकीशाखालं
वकरमरणोधार्योजीय ॥ मरणउपायहिमाद्रिजेजानेनाही
सीय ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवा
देसुंदरकांडेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥
शंकरछंद ॥ विनरामयाँहिंशरीरकोमैहनोपासीपाइ ॥क्या
जीवनेफलहोइवीचसुराक्षसनविलखाइ ॥ मेआहिवेणी
लाँवीयाकरफासिगलमैडार॥मैमरोंयाँविधिजानकीमतलई

उरमैधार ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हनूमानसियपेखगतिमन
मैकीनविचार ॥ जाँहितआयोमैइहाँमेरफासिगलडार ॥
॥ २ ॥ सनैसनैतबबोलिओसीयबचावनकाज ॥ सीता
काननजोपरेकथाकहीरघुराज ॥ ॥ ३ ॥ श्रीहनुमानउ
वाच ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ इक्ष्वाकुवंशेउपजिओइकभ
पदशरथबीर ॥पतिअयोध्याभाखिएबहुहुतोगुणीगहीर ॥ स
मदेवपूतसुचारताँकिविदितजगतमझार॥अतिरूपसुंदरमदन
सेवहुआँहिंगुननअधार ॥ ४॥ श्रीरामलक्ष्मणभरतऔशत्रुघ्न
चौथेआँहिं॥पितुमानआइसबडोरामसुआइओवनमाँहिं ॥
सुसीयनारिसुसंगलीनीऔरलक्ष्ममणबीर ॥ बेबसेपंचवटी
विपेशुभगौतमीकेतीर ॥ ५॥ पुनहरीजनककुमारियातहँदुष्ट
रावणजाइ ॥ श्रीरामपुनलक्ष्मणगएबनएकलीकोपाइ॥सि
यशोधराघवकरनलागेभयोदुःखअपार ॥ सुजटायुपक्षीरा
जपेखपेरधरणमझार ॥६॥ तिहँवेगसुरपुरभेजआएरिष्यमू
कपहार ॥ सुग्रीवसोंपुनमित्रताहरिकरीभुजापसार ॥ ति
ननारिहरतामारबालीरामकरीसहाइ ॥ सुग्रीवमीताहिंकाज
कीनोशीशछत्रफिराइ ॥ ७ ॥ कपिबलीसगलबुलाइकरसु
ग्रीवबानरराज॥दिशिचारताँहिंपठाइदीनेसीयशोधनकाज॥
तिनमाँहिंमैसुग्रीवमंत्रीपहुचिआइहठौर॥ संपातिवचनउलं
घसागरयोजनाशतदौर॥८॥ धसलंकसीतहिंढूढिओमैसग
लघरनमझार॥पुनआयमध्यअशोकबनिकाबचनलंकचिता
र॥पिखशिंशपातरुतरेबैठोबेटिआमिथिलेश ॥ श्रीरामकीपट

राणीआउरशोचपाइकलेश॥ ९॥ कृतकृत्यअवमैहोइओकर
काजराममुरारि ॥ इमभाखचुपकाहोइओकपिवुद्धिवंतउदा
र॥विस्मयभईउरमाँहिंसीताकथासुनयहिकाँन॥क्यामोहिसु
न्योसुव्योममैयहिवायुकीनवखाँन ॥ १० ॥ वाभयोस्वप्नामो
हिवामुहिभ्रांतिवासतआहि॥दुखनींदनाँहींस्वपनकैसेजानती
भ्रमनाँहिं॥ किनकरणअंम्रतडारिओयहिवचनमोहिसुनाइ॥
॥प्रियवचनभाषीशुभकृतीमैपिखोंआगेआइ॥११॥ दोहा॥
उमाजानकीवचनसुनहनुमतपवनकुमार ॥ शनेशनेतरुतेत
रेआएधरणिमझार॥१२॥ शंकरछंद ॥ गृहघटकसमआ
कारसीताखडोआगेआइ॥ मुखलालसुंदरशोभईतनपीलवर
णसुहाइ ॥ अभिवंदसीताजोडदोकरखडोआगेआइ ॥ इह
अहैरावणदुरीसीतापेखउरशंकाइ ॥१३॥ मुहिमोहनेंहितआ
इओवनकपटकपिआकार ॥ इहचिंतनीचेमुखकरेसियमौन
लीनीधार॥पुनबोलिओहनुमानमाताशंकनाकरकाइ ॥ मै
नाहिंहोंतिहँभाँतकोतजशंकमोमैजोइ॥१४॥ श्रीरामकौसल
राजकोयहिदासमाताआहि॥मंत्रीअहोंसुग्रीवकोजोवानरन
कोनाह ॥ श्रीवायुकोमैपूतहोंजोआहिसभकेप्राँण॥सुनजान
कीहनुमानप्रतिपुनएहुकीनवखाँन ॥ १५॥ वानरनअरुमान
वनकिहँभाँतिसंगतिहोइ ॥ तूँरामदासवखाँनहैंकिहँभाँतिजाँ
नोंसोइ॥ तवदूरठाँढेमारुतीपुनएहुकीनउचार॥श्रीरामसवरी
वाक्यआएरिष्यमूकपहार॥१६॥सुग्रीवथोतिहँपर्वतेतिहँपिखे
लक्ष्मणराम॥ढरमोहिताँहिंपठाइओतिनरिदेजाननकाम॥धर

ब्रह्मचारीरूपमैंतहँगयोजहँरघुराइ ॥ तवजाँनतिनकोशुद्धउर मैंलिएकंधउठाइ ॥ १७ ॥ सुग्रीवकेढिगआनकेमैंसखादियेब नाइ॥ बालीहरीसुग्रीवजायायौंसुनीरघुराइ॥ इकवाणवाली मारकेसुग्रीवदीनोराज ॥सुग्रीवलीनेबोलकपिसहवानरनशि रताज॥१८॥सभदिशाचालेकपिवलीतवशोधनेकेकाम ॥तव चल्योमोपिखबोलसादरआपभाख्योराम॥हेपवननंदनकाज मेरोकरेंगोतूँधीर॥ मेकुशलभाखोजानकीकोसहितलक्ष्मणवी र॥१९॥मेमुद्रिकासुप्रतीतिहितलेजाहुदीजोसीय॥ममनामअ क्षरपेखकरसुप्रतीतिकरहैजीय ॥ इमभाषरामउतारअपनी दईमोकोछाप ॥ मैयत्नकरयहिल्याइदीनीदेखदेवीआप ॥ ॥ २० ॥ इमभाषगिरिजामुंदरीसियदईपवनकुमार ॥ कर जोरठाँढोहोइओपदवंदनातिंहँधार ॥ तिंहँपेखसीताचीतहर षीरामनामनिहार ॥ तवमुद्रिकाशिरधारसियदृगजाइआनँ दवारि॥ २१॥ ॥ **सवैया** ॥ कपितेंममप्राननदानदियेमति मानवडोतुमहैंजगमाँहीं ॥ तुमसेवकहोरघुवीरहिंकेअरुराम प्रतीतिकरेंतुममाँहीं ॥ नहिमेढिगकौनपठावतरामसुमानव नाँहिंइसोजगमाँहीं ॥ हनुमानपिखेममदूखमहाइहभाँतिसु भोगतमैजगमाँहीं ॥ २२ ॥ सभरामकिपाससुजाइकहोजिं हँभाँतिदयाममऊपरधारे ॥ कपिसत्तमतोहिकुसाचकहोंयुग मासरहेंअवप्राणहमारे ॥ नहिंआवहिंगेजवरामवलीतवखा वहिगोमुहिराक्षसमारे॥ इहतेअववेगसुजाहिहनूतुमरामकि पासकहोसभसारे ॥ २३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ वानरनायकसं

गलैकपिकीसैन्यमिलाइ॥रामचंद्ररणमेंभिरेंऊधमपरममचा
इ॥२४॥ सहपुत्रनसहसैन्यपुनरावणकोरणमार॥ मोहिछुडा
वहिंरामजवतौयशरामनुसार ॥ २५ ॥ ॥सवैया ॥ जिहँ
भाँतिछुडावहिंमेंहरिजीदशकंधरकोरणभीतरमारे॥सुतसुक्र
तवाक्यनआजलहोअववेगकरोवहुजाइपुकारे॥हनुमानक
ह्योतबहीगिरिजातुममातसुनोयहिवाक्यहमारे ॥ मुहिदेख
तरामसुभ्रातसमाचढआवहिंगेकरआयुधधारे ॥ २६ ॥
कपिनायकऔतिनसैन्यलिएदशकंधरकोरणभीतरमारें ॥
तुमकोरघुवीरसुऔधपुरीसुलिजावहिंगेमतशंकविचारें ॥
कहिजानकिवेकपिसैननलैकिंहँभाँतितरेंसरितापनिवारे ॥ इ
हरामकुआवनआहिअसंभवयोंसुनकैहनुमानउचारे॥२७॥
॥ दोहा ॥ मोहिस्कंधनमाँहिंचढलक्ष्मणरामसुहाँहिं ॥ सै
न्यसहितसुग्रीवपुनआवेनभकेमाँहिं॥ २८ ॥ ॥ सवैया ॥
इहभाँतितरेंजलसागरकोअरुमारहिंगेगणराक्षससारे ॥ तु
महेतकरेंसुसँग्रामवलीअवआइसदेचलहोंपथिभारे॥पिखरा
घवकोलक्षमंनसमाअववेगलिआवहुँपासतुमारे॥ जिहँभाँ
तिसुरामप्रतीतिकरेंअवआपदिजेकछुमोहिविचारे ॥ २९ ॥
कमलाद्रिगसीयविचारकियोमणिकेशनतेतिनआपनिकारी॥
इहजाँनतरामसुभ्रातसमाइहपेखपतीजहिंराममुरारी ॥ ग
हुप्राणनकेसमपालकरींमणिहैइहराघवकीअतिप्यारी ॥ इ
कऔरकहोंहनुमानसुनोसुसुनावहुजोभयोवीचपहारी ॥
॥ ३० ॥ शंकरछंद ॥ ॥ शुभचित्रकूटसुपर्वतेइककालभे

एकांत ॥ मेअंकशीशनिधायरघुवरसोइरहेनितांत ॥ अैंद्र
काकसुआइकरनखतुंढवारंवार ॥ मेपदांगुष्टसुलालपिखति
नमांसजानविदार ॥३१॥ तवरामजागेनाथमेरपादमेंव्रण
पेख ॥ किनकीनयहिअपकारमेरोभयेकुपतविशेष ॥ इमभाप
आगेपेखप्रभुइककाकहैविकराल ॥ यह्कुवारमेपददौरहैनखतुं
डहैंतिहँलाल॥३२॥त्रिणएकरामसुकोपकरलैदिव्यअस्त्रसुजा
र॥प्रज्वलतसोत्रिणरामलीलाकाकपरघोछोर॥त्रिणपीठआ
गेकाकहैसभदेवलोकनजाइ॥इंद्रब्रह्मावरुणऔशिवसकेनाँ
हिंवचाइ॥३३॥ढररामपदमैआगियोंप्रभुरामदयासमुंद॥नि
जशरणआयोहेरकैपुनकह्योराममुकुंद॥सुनअस्त्रआहिअमो
घमेइकनयनदेकरयाहि ॥ सव्यदेकरगयोकाकसुपौरुपीइम
आहि॥३४॥किंहँहेतुमोहिविसारवैठरामचंद्रप्रवीन॥सुनजान
कीकेवाक्यएहनुमानउत्तरदीन॥सुनदेविजौतुहिजीवतीइहठौ
रजाँनैंराम॥करभस्मलंकक्षणेकमैहनराक्षसनसंग्राम॥३५॥
सियकह्योराक्षससंगकैसेलरोगेतनुएह॥औरवानरहोंहिंगेत
वतुल्यतेलघुदेह॥तवसीयकेयहिवाक्यसुनगिरिजातवैहनुमा
न॥दिखलाइदीनोरूपनिजजोआहिपरममहान॥३६॥ स
वेया॥गिरिमंदरमेरुसमानवडेगणराक्षसजाँवलतेडरपाए॥
हरखीसियपेखहनूमतकोकपिकुंजरकोयहिवाक्यअलाए॥तु
महोवलवंतवडेजगमैतनुराक्षसपेखहिंलेहुलुकाए ॥ पथितें
शमहोइसदाकपिकुंजरसारकहोसवरामहिंजाए ॥ ३७ ॥
॥ गीयामालतीछंद ॥ तवदेखणेतपारणाममभूखवउरमै

भारिया ॥ अबकरौंगोमधुफलौंकरजबहोइआइसुथारिया ॥ सियकह्योमेरीदृष्टिगोचरअलपफलकछुलीजिए ॥ मैपरीहोंइनबंदमैकछुनाअखारोकीजिए॥३८॥ जबखाइकछुफलबंदसीताहनूमानपधारिओ ॥ कछुदूरआयोतांहितमनवीचएहुविचारिओ ॥ जगदूतआयोकाजकोवहुस्वामिकाजअदूपणो ॥ कछुऔरकरनहिंजायजौवहुअधमदूतनभूपणो ॥ ३९ ॥ कछुऔरकरपिखरावणंकछुवाततांसोंकीजिये ॥ फिरजाउँराघवदेखनेहिततौकछूयशलीजिये ॥ इमधारमनमैफेरआयोलगोवृक्षउपारने ॥ सुअशोकवनमैशोकडायोंलगोराक्षसमारने ॥ ४० ॥ तरुसीयछायाछाडकैसभऔरवनसुउपारिया ॥ वनपाटतोकपिदेखकैढिगआइराक्षसनारिया ॥ श्रीजानकीकोपूछहैंकपिकौनउद्भटहैंवरे ॥ सियकह्योतुमहीजानहोछलनीचराक्षसजोकरे ॥ ४१ ॥ मैदुःखशोकसमाकुलाकछुसारनाँहींपावती ॥ योंसुनतराक्षसनारितेसभभागीयाँडरपावती ॥ हनुमानकीनोकर्मजोतिनजाइभाष्योरावणे ॥ सुनदेवआयोकोवलीकपिरूपताँडरपावणे॥ ४२ ॥सियसाथतिनकरवारतासुअशोकवनीउपारीया ॥ प्रासादचैतसुतोरिओकपिआहिअतिबलकारीया ॥ प्रासादपालकमारकैनिर्भीतबैठोहैतहाँ ॥ सोसुनतरावणकोपउठ्योसुकह्योसेवकहैंकहाँ॥४३॥शंकरछंद॥दशलक्षकिंकरभेजिओदशकंठराक्षसराज॥हनुमानमहलउखारबैठोवैररावणसाज ॥ कृतलोहथंभसुआयुधंतनुआहिगिरिआकार॥सुहलाइ

वैठलंगूलकोमुखलालनयनपसार ॥ ४४ ॥ भुजंगप्रयातछंद॥जवैताँहिंदखघनेशत्रुआए॥करैंसिंहनादंहनूताँसुनाए॥ मार्किकरनदेखयौंवायुवाला ॥ मनोसूरसोहेप्रतापीकराला ॥४५॥सवैया॥ रावणकिंकरकोप अएहनुमानाहिंकोवहुशस्त्र प्रहारे॥ कोपभयोहनुमानवलीउठलोहकुथंभसुहाथसँभारे ॥ राक्षसयाँविधिताँहिहनेगजराजमतोजिममछरमारे॥ रावण वातसुनीजवहीअतिक्रोधभयोतिहँचीतमझारे॥४६॥पंचसिदारसुऔरपठेहनुमानवहीपुनमारगिराए ॥ सातअमातनके सुतरावणकोपभएउरआनपठाए ॥पूर्वजिऊँहनुमानवहीरण भीतरकोपभलीविधघाए ॥ मारुतनंदनमारसभैअरलोहकुथंभुसुहायफिराए॥ ४७॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पूरवठौरसुवैठपुनऔरनकोपथिहेर ॥ अक्षकुमारसुआइओजनुयमआन्येघर ॥ ४८ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ पेखहनूतिनकूदअकाशचढेकर लोहकुथंभसँभारे ॥ फेरफिरेनभमंडलतेकुपरावणकेसुतके शिरमारे॥ सैन्यहनीसगरीतिहँकीकिनजाइकह्योसुअक्षरण मारे॥राक्षसराजसुकोपभरेमघवाजितकोयहिवाक्यउचारे॥ ॥ ४९ ॥ सुतमैअवजाउँतहाँरणमैजिहँठौरअहेजिनमेसुत मारे ॥ अवहीतिहँकोरणमाँहिहनोंनहिंवाँधसुल्यावहुँभौन मझारे॥ मघवाजितवापकुआपकह्योउरकोसभशोकसुदेहु निवारे॥ममजीवनकाहिनिमित्तसुनोइहदुःखितवाक्यसुआपउचारे॥ ५० ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ सुब्रह्मपासडारवेग वाँधताँहिंल्याइहों ॥ वखानइंद्रजीतयौंचलेंनवेरलाइहों ॥

गयोसुवायुपूतकेसमीपकोपरावणी ॥ निहारताँहनूसुथंभ
लीनवाँहिद्वाहिनी ॥ ५१ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ खगराजसमा
नतवैहनुमानसुकूदअकाशचढ्योवलधारे ॥ नभवीचफिरेइह
भाँतिहनूमघवाजिततांहिंशिलीमुखमारे ॥ शरपाँचदएकपि
केशिरमैंपुनआनभलेरिदमाहिप्रहारे ॥ षटपादनमैइकपुंछह
न्योमघवाजितकेहरिज्यौंललकारे ॥ ५२ ॥ तवकोपभयोहनु
मानवलीनभमंडलमूसलहाथउभारे ॥ मघवाजितकोरथ
औरतुरंगमसारथितांक्षणभीतरमारे ॥ घननादवडीउरलाज
भईकुपऔरभएरथमैअसवारे ॥ तिनवाँधलियोहनुमानउमा
चतुराननफासकरेसतकारे ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावण
ढिगलेजानहितहनूचलाएवंध ॥ हर्षपुरकेसगलजनविपति
नजानेअंध ॥ ५४ ॥ कवित ॥ जाँहिंनामभजजगवंधन
लौकिकतजकोटिरविभासुरसुरामपदपाएँहैं ॥ तिनहींकिपा
दकंजधाररिदकंजहनुमानवलवाननाहिंफासकैफसाएँहैं ॥
सर्ववंधहीनरामसेवकप्रवीनवलभयोनहीक्षीणइहघातमैन
आएँहैं ॥ रामवलधारीचहेंकथाविसतारीगढलंकनिजसेव
कतेकौतकदिखाएँहैं ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमा
महेश्वरसंवादेसुंदरकांडेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ श्रीमहादेवउ
वाच ॥ सवैया ॥ फासपरीगलआवतहैहनुमानमनोडरभौ
ननिहारे ॥ देखनआवतताँहिंमहाजनमूठहनेसुतलाशिरमा
रे ॥ फासगईचतुराननकीक्षणसंगमकैवरतेसुनिहारे ॥ जान
हनूलघुजेवरिजावतकारयगौरवमारसहारे ॥ १ ॥ जिहँठौरद

शाननमध्यसभामघवाजिततांहिंतहांपहुचाए ॥ जिनवानर
राक्षसमारदियेगलफासपरीसुपिखोकपिआए ॥ सुअमातन
साथविचारभलेकछुलाइकदंडसुदेहुकराए॥ इहलौकिकवान
रनांहिंअहेमघवाजितभापसुभौनसिधाए॥ २॥ ढिगआहिव
जीरप्रहस्तवडोतिहँपेखसुरावणवाक्यअलाए ॥ सुप्रहस्तपुछो
तुमयांकपिकोइहठौरकहांकिंहकारणआए॥ इहकौननिमित्त
कहांतिचलेकिनहैइहकोइहठौरपठाए॥ वनकाहिनिमित्तसुना
शकरपुनकाहिनिमित्तसुराक्षसघाए॥३॥तवसादरतांहिंप्रहस्त
कहेकपिकौनहितूंइहठौरपठाए॥मुखसाचकहोइहराजसभाडर
नाहिंकरोहमदेहिंछुडाए॥हरषेहनुमानसुनीबतियांतवरावण
ओरखरोमुखचाए॥ पिखरावणलोकत्रिकंटककोहनुमानतवै
इहभांतिसुनाए ॥४॥ पुण्यकथारघुनंदनकीकहनेहितरामचि
तेमननमांहीं ॥ सुनदेवनकेरिपुरामकुदूतसुमैहरिजीसभकेउर
मांहीं ॥ जिनकीपतिनीनिजनाशनिमित्तसुलोहिहरीवनदंडक
मांहीं ॥ जिमपावनआहुतिश्वानहरेकछुअंतरपाइसुयज्ञ
नमांहीं ॥ ५ ॥ सोरघुनाथसुग्रीवकिसाथमतंगधराधरमीत
भएहैं॥ वालिनमारसुएकहिंवानसुग्रीवकिशीशहिंछत्रदएहैं॥
वानरराजबुलाइमहांकपिकोटिपतीइकठौरकएहैं ॥ सानुज
रामसमेतकपींद्रसुमाहिंप्रवर्षणकोपभएहैं ॥ ६ ॥ सियशोध
नकोकपिनाथबुलाइसुवानरदेशनदेशपठाए॥ तिनमैइकपौन
कुमारहनूसियढूंढतहोंतुमरेपुरआए॥वनवारिजनैननिसीयपि
खीकपितेवनपारसभैफलखाए॥शरचापलिएममारनकोव

हुआइपरेतबराक्षसघाए ॥ ७ ॥ तनुरक्षणकेहितदैतहनेसभ
जीवनकोतनराजनप्यारे ॥ चतुराननफासुबाँधहमेंइहल्या
वनभेघननादतुम्हारे ॥ विधिकेवरमेंछुहिफासगईदशकंठनही
अवलेहुविचार ॥ मिपबंधनकेइहठौरअयोहितभापनधीक
रुणारसभारे ॥ ८ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ वीचाररांव
णलोकगतिपिखराक्षसीमतिनागहो ॥ संसारतेजोमोक्षकर
णीदैविमनिउरमैगहो ॥ विधिवंशउत्तमत्वंभयोविस्रवातेपितु
भानिये ॥ सुपुलस्तदादाआहितेसुकुबेरबांधवजानिये ॥ ९ ॥
सवैया ॥ तनुआतमबुद्धिनराक्षसहैंद्विजदेहसभैतुमरीजग
जाँने॥पुनआतमबुद्धिनराक्षसहैंघनआनंदत्वंइमवेदप्रमाने॥
तनुबुद्धिसुखादिकतोहिनहींसुविकारविहीनहिवेदवखाँने ॥
सुअज्ञानजनेभवबंधनतेवहुझूठअहेगुणसापसमाने ॥ १० ॥
॥कवित॥कहोंरक्षराईतोहिविक्रयानकाईसुविकारहेतुद्वैततव
रंचनाहिंठानिये॥सर्वठौरज्यौंआकाशलेपतेउदासतनुमाहिति
मसूक्षमसुआपकोपछानिये ॥ देहअक्षप्राणतनआतमपछा
नसभभएबंधवानइहनीठउरआनिये ॥ अक्षरआनंदचिदकंद
अजआपपिखबंधनविहीनजनवेदकैवखानिये ॥ ११ ॥ भूमि
कोविकारतनुआतमनधारनहिप्राणनिजआतमसुपौनहैनि
हारिये॥अहंकारकोविकारमनआतमानिहारनाहिबुद्धिआत
माप्रकृतिजाउचारिये ॥ आतमाआनंदघननाहिंहैविकारअ
न्यदेहतेविलक्षणसुनीकेकैविचारिये ॥ विनोपाधिआत्तमानि
रंजनसुजानमनराक्षसेकेगाईजगबंधकोनिवारिये॥ १२ ॥सा

धनसुँबंधहानकरौंमैवखानअबसावधानहोइकैसुरावनसु
नीजिये ॥ वुद्धिमलहरोतुमज्ञानउरधरोपुनयाँहिंकेनिमित्तसे
वविष्णुजूकीकीजिये ॥ शुद्धतत्वज्ञाननिजआतमपछानपद
पूर्णमहानअबपाइबेगलीजिये ॥ गौणीपरेरामअबभजिएसु
कामतजभूलचूकगएअबवैरडारदीजिए ॥ १३ ॥ जोशरणप
रेरामताँहिंसोंसनेहकरेजानकीकोपूजअबसंगताँहिंलीजिये॥
बाँधवमिलाइरामपाँइंपरोजाइनाथभूलचूकगएअबमोहिव
खशीजिये ॥ लेहिंतेउबारवेतोदयावंतहैंउदाररामभगवंतमम
कह्योसोईकीजिए॥विनारामसेवकरेकाहूँकेनकाजसरेकैसेभ
वसिंधुतरेदूखहींपईजिए ॥ १४ ॥ जौनसेवकरेंतोअज्ञानआग
जरेंनिजआतमकेसाथतोहिआपवैरठानिओ॥आपकोलेजा
हिंअधोअधनिजपापवद्धमोक्षकोनशंकाउरहोइमोहिजानि
ओ॥ अंम्रतसमानहनुमानजोवखानकरेसुनकैदशाननसुक्रो
धउरमानिओ॥करेद्रिगलालजनुपावककरालसुचवाइदंतमा
लहनुमानकोवखानिओ ॥ १५ ॥ कपिदुष्टमतितेरीतेंनलखीग
तिमेरीनीचसुअभीतमोहिकैसेकैवखानहैं ॥ कौनहैरेरामशुभ
ग्रीवकोननामजानोंउभेमारडारोंतबमोहिबलजानहैं॥ तोहि
कोसुमारपुनजानकीउतारशिररामलक्षमनहनोंकाहूँकीनका
नहै॥ हनोंकपिराईजोईभएहेंसहाईबलवानरकीमारोंतबमो
कोतूँपछानहैं ॥ १६ ॥ सुनकैलंकेशवानीकोपिओभवानीहनू
मानताँहिंउपमासुपावककीदीजिए॥ रावणकरोरमेरेजोरके
समाननाहिंरामचंद्रदासमैसुएहीजानलीजिए ॥ सुनहनूमान

वाककोपकैलंकेशाइकराक्षसबुलाइकह्योवेगएहुकीजिए ॥ दै
तसुतनारिसभलेहियौंनिहारअबयाँहिंकपिकुंजरकोखंडखंड
कीजिए ॥ १७ ॥ आयुधउठाइपर्योंदैतइकधाइतिंहेंदौरआप
जाइसुविभीपणनिवारिओ ॥कीशअन्यराजकोनमारनउचि
तनाथराजनकोदूतयाँहिंबनेनाहिंमारिओ ॥ रामपासबात
कौनकहैगोविख्यातजबरामकोपछानयहिदूतहीविदारिओ॥
वधकेसमानकछुआनहीविचारकरयाँहिंकेशरीरपरचिन्हबने
धारिओ ॥१८॥ पेखयाँशरीरशुभग्रीवरघुबीरकछुभुजाबल
होइगोतुलरंतव आइकै॥सुनकेविभीषणकीवातलीनीमानति
नराक्षसनराजकह्योदैतनबुलाइकै ॥ वानरकोमानसुलंगूल
मैमहानसदातांहिंकेसुसाथदीजैपाटलपटाइकै ॥ पुरिमैभ्रमा
इपुंछपावकजराइपिखैंशाखामृगहालदिजेताँहिंपैपठाइकै
॥ १९ ॥ पुरपाटशाणताटेरशमीदुशालेसभपुंछसोंलपेटलाइ
खाशगीविछावणे ॥ तेलसोंभिगाइदीएपुंछलपटाइकछुपाव
कजराइलगेदैतविगसावणे॥ जेवरसोंबाँधहनुमानबलवान
खलचोरचोरभाखेंलगेपुरिमैभ्रमावणे ॥ ढोलकोबजाइपीठ
ईटकोचलाइशिरठींगाइकमारलगेगारीकोसुणावणे॥ २० ॥
वायुकोकुमारउमासहेशिरमारकछुमनमैविचारसोईचलेगो
दिखाइकै ॥ चांदपौरगएधाइबंधनछडाइहनुमानतनआप
नोसुसूक्ष्मबनाइकै ॥ गिरिसोअकारकैउपारपुरद्वारलीयो
लोहथंभहाथपर्योंफेरकिलकाइकै ॥ इतेरखवारेहनूमानस
भमारपुनअंजनीकुमारराजभौनचढैधाइकै ॥ २१ ॥ कूद

१ पश्चिमद्वार

कूदकैअटारीहनूमानजारीकिलकारपुंछपावकसोंपुरकोंजरजा
रहे ॥ पीछेपावकजराइआगेभागेपारखाइपरताजराइसुम
हाजनकोमारहै ॥ हाइसुतहाइपतिहाइमाइभाइबापराक्षस
कीनारीयौंहिमालजापुकारहै ॥ भौनशिरचरेंतहाँपावकसों
जरेंफिरभूमिआइपरेंजनुदेवतापधारहै ॥ २२ ॥ औरपुरजा
योंसभलोगनकोमार्योंसुविभीपनकोजानघरएकहीउबारि
ओ ॥ कूदजलसिंधुपरपुंछकोडुबाइकरहोइसावधानहनूमा
नकिलकारिओ ॥ पौनआगमीताकरीवेनतीसुसीताभएपा
वकसुसीतानलंगूलकपिजारिओ ॥ जाँहिंनामलेनहारपाप
नउत्तारसभतीनतापपावकतरतझटझारिओ ॥ २३ ॥ **दोहा** ॥
तिनरघुवरकोदूतयहिउत्तमपवनकुमार ॥ प्राकृतपावकताँ
हिंकिमसकेसुगिरिजाजार ॥ २४ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामा
यणेउमामहेश्वरसंवादेसुंदरकांडचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ **श्री
महादेवउवाच** ॥ **कवित** ॥ सीयढिगजाइफरशीशको
निवाइहनुमानकह्योमाइमुहिआइसुसुदीजिए ॥ वेगतहाँ
जाऊँसमाचारसुसुनाऊँतोहिपिखेंरघुवीरअबईहाँहीअनी
जीए ॥ ऐसेभापतीनसुप्रदक्षणाबनाइदईकरकैप्रणामक
ह्योमातसुनलीजीए ॥ देवितकल्यानअबकरोंमैपयानरघुवी
रकोलिआऊँनिजनैननसोंदिखीजिए ॥ १ ॥ लक्ष्मणसंगसु
अनंगसेसुहाइरहेवानरकेराईकपिकोटिनमिलाइकै ॥ सुनकै
सुबातसीयरहीबिलखाइजीयफेरतिनकह्योहनूमानकोसुना
इकै ॥ तूँतोअबजाँहिंसुखीहोंहिंपंथमाँहिकपितोहिकोनिहार

दुखदियेथेभुलाइकै ॥ यांतिउपरांतअवजीवनोसुजातमेरो
रामबातसुनेबिनमरोंविपखाइकै ॥ २॥ **झूलना** ॥ कह्योसौ
म्यश्रीरामकोजाइकेजीपुरीलंकमैजानकीजीवतीहै॥दिनोथो
डिओंमैतजेप्राणकोजीनहींखावतीनीरनापीवतीहै॥लिखेलो
हकालंमवियोगतेजोघनेदुःखसोंजीवसंतावतीहै॥वहीजात
हैदुःखकैसिंधुमैजोधरेधीरआलंबनापावतीहै॥३॥चलेजांदि
नानाथसंकेततेजीभलेसूखसोंतीनआरण्यआए॥ पिखेहेम
कूरंगमैपापनीजोकहानाथकोआनलेवानधाए॥हतोहाविधे
रक्षसौमित्रमोकोंपर्योबैनअभागतेकानमोरे ॥ पुनःसौम्यसे
ताँहिकभ्रातकोजीबुराबोलमैतोरिओताँहिओरे॥४ ॥ नहीं
चाहितीहेमकूरंगकोजौहनूमाननादौरतेनाथमेरे ॥ हुतीराम
सामीपएजानकीजोहुतीकौनसामर्थजोमोहिहेरे ॥ कहोंजो
डकैहाथसौमित्रसेतीकहोजानकीतोहिकोंनैकवारी ॥ क्षमा
कीजियेमेबुरेबैनकीजोतुहींरामकोभ्रातमेसूखकारी ॥ ५ ॥
॥ **हनुमानउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ जौमनहैइहभाँतिसु
नोतबमोहिसकंधनमैचढलीजे ॥ रामकेसायमिलाँउँतुमेक्ष
णभीतरमातसुबेरनकीजे॥जौरुचिहोइचलोअबहीजबराम
रिसैंतबमोबखशीजे ॥ सिंहगुलाबकहेगिरिजापतिपारवती
सियवाकसुनीजे॥६॥ ॥ **सीतोवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥
रामसुकाइसुसागरकोअथवाशरपंजरसेतुबनावें॥वानरसै
न्यमिलाइसुआइकिरावणकेरणशीशउडावें ॥ फेरलिजाव
हिंमेपुरिमैरघुबीरतबैजगमैयशपावें ॥ मैअबप्राणरखोंह

ठकैतुमवेगचलोपथिवेरनलाँवें ॥ ७॥ इहभाँतिचलेहनुमानत
वैसियपादनमैअभिवंदनधारे॥गिरिकेशिरकूदचदेहनुमानसु
जावनहेतमहोदधिपारे ॥ गिरितेकपिकूदअकाशचदेपदभा
रधसेगिरिभूमिमझारे ॥ गिरियोजनतीशउचानहुतोभयोभू
मिसमानहनूपदमारे ॥ ८ ॥ सुतमारुतमारुतवेगअकाशचले
मुखमैघनसोकिलकारे ॥ सुनकैउतवानरवोलउठेनभआव
तहैयहिवायुकुमारे ॥ मुखगाजतऔहरपेउरमैपलवंगमयाँ
विधिवैनउचारे ॥ किलकारनतेहमजानतहैंहनुमानअएकर
कारजसारे ॥ ९ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ अंजनीकुमारयहिआव
तनिहारलेहुऐसेकपिकहेंहनुमानझुकेआइकै ॥ ऊपरपहार
जहाँवानरअपारखरेतहाँतिनआइएहुकस्योहैसुनाइकै ॥ जा,
नकीनिहारसुअशोकवनीपारसुतरावणकोमारपुरलंकमैज,
राइकै॥रावणसोंबातकरताँकोअभिमानहरफेरकूदआयोक
छुहाथमैदिखाइकै ॥ १० ॥ चलेंरघुराईकपिराईकेसमीपअ
बहनूमानकस्योसभसमाचारपायोहै ॥ सुनकैसुकीशबात
भएपुलकातसभअंजनीकुमारकोबनाइगललायोहै ॥ चूंबत
लंगूलकेईफूलमननाचेंकेईकेईपुनभापेंकछुफलमूलखायोहै॥
मिलकैसुहनूमानचलेबलवानकपिरामशुभग्रीवगिरिमनमै
तकायोहै ॥ ११ ॥ पथिमैसुग्रीववनपेखललचानेमनमधुवन
नामसमनंदनभनीजिये ॥ अंगदकोवोलकपिकहेंसमझाइ
हमभूखलागीबडीखाँहिंआइसुजुदीजिए ॥ फलतोरखाँहिंक
[illegible]

हरषाइफेरचलेंवेगधाइलघुभ्रातकेसमेतरघुराइकोपिखीजिए ॥ १२ ॥ कीएहनूमानकाजयाँहिंकप्रसादमधुफलमूलखाहुकपिसत्तमतुराइकै ॥ सुनीयौंभवानीजवअंगदकीवानीकपितोरफलखाँहिंमधुपीएँहरपाइकै ॥ रखवारेजेनिवारेंगारीआँनिकारेंदधिमुखजोपठाएतिनदएसुहटाइकै ॥ मधुपीऐंमतवारेजेईताँहिंकोसुमारेमूठनप्रहारशिरलातमारेंधाइकै ॥ १३ ॥ दधिमुखकोपकैसुगयोशुभग्रीवढिगमातुलकपीशकेसुजाइकैपुकारिओ ॥ लीनेरखवारेसंगटूटेजिनअंगअंगजोईमधुवनचिरकालप्रतिपारिओ ॥ तहाँवरेकपिधाएमधुपीएफलखाएअंजनीकुमारयुवराजसोउजारिओ ॥ सुनेकपिराईमुखबोलेहरपाईसीयदेखहनूआएहमऐसेनिरधारिओ ॥ १४ ॥ विनासीयदेखेमधुवनकोनिहारेऐसोकोऊवलवंतकपिनैननैनआयोहै ॥ वायुकेकुमारकरेकारजमुरारिसुसंदेहनाहिंरंचतिनवागममखायोहै ॥ सुनीशुभग्रीववानीभएहरषानीहरिरामघनश्यामकपिनाथकोअलायोहै ॥ सीयकथाहैउदारजाँहिकेमझारकपिराजनसुऐसोतुमकहामुखगायोहै ॥ १५ ॥ उमाकपिनाथरघुनाथकोअलाएवचदेवसुविदेहजानिहारकपिआएहैं ॥ अंजनीकुमारलारवरेमधुवनकपिडरडारमेरोमधुकाननलुटाएहैं ॥ रखवारेमारेतिनवागतेनिकारेमधुकाननउजारेसभतोरफलखाएहैं ॥ विनाकाजकरेतेरेमधुवनकौनहेरेदेवदेखआएसीययाँतेजानपाएहैं ॥ १६ ॥
॥ दोहा ॥ वनपालकतुमडरोजिनजावोआइसुमान ॥ मम

समीपलैआउतुमअंगदओहनुमान ॥ १७ ॥ ॥ कवित ॥
सुनशुभग्रीववाक्यभएपुलकातकपिवायुवेगगएसुपठाएक
पिनाहके ॥ अंगदउदारतुमवायुकेकुमारचलोआइसुकपे
शयलिहारिजय्येराहके॥ चहेंकपिराईरघुराईलक्षमनभाईदर
शतिहारेमनभएउतसाहके ॥ आइसकपेशमानचलेबलवान
कपिकूदकैअकाशपथिभूखउरलाहिके ॥१८॥ हनूमानअंगद
अगारीतेपिछारीभएरामशुभग्रीवकेसमीपगएधाइकै॥कीनी
अष्टअंगसुप्रणामतिनरामपुनधाइजाइगहेपदकंजकपिराइ
के॥ देखीसीयथारीसुअरोगतनसारीहनूमानरघुनाथकोसुक
त्योहैसुनाइके॥ राजनकेराईरघुराईसीयशोचवंतकुशलपठा
योसुविदेहजाअलाइकै ॥ १९ ॥ वनाशोकमाँहींतरुशिंशपा
कीछाँहींरामबैठीहैइकेलीनसहेलीमनभानीआँ ॥ रहेंराक्ष
सीचौफेरेअन्नकेसुनाँहिनेरेभईनाथदूवरीसुपीएनाँहिपानी
आँ ॥ हाइरामरामसीयाकहेसभजाँमतनुअंबरमलीनशोच
करेकुमलानीआँ॥ केशनकीएकबेनीशोचजलजाइनैनीदेखी
जाइमोहिमतिप्राणनाशठानीआँ॥२०॥दोहा॥वृक्षशाखमैबै
ठमैसूक्षमरूपवनाइ॥कीनोताँहिंसुबोधमैकथासुनाथअलाइ
॥ २१ ॥ ॥ कवित ॥ जनमवखानेथारेदंडकपधारेदशकं
ठसीयहरीसुकुरंगरामजोधए ॥ शुभग्रीवमीतभएबालीतन
प्राणहएसीयशोधकाजकपिराजदूतहैंगए ॥ महावलवंतस
भदेशमैनिहारेंसीयतिनमैसुएकहमलंकगढमैअए ॥ अंज
नीकेपूतशुभग्रीवकेवजीरहमरामरघुराजकेसुदार

॥ २२ ॥ जानकीनिहारीफलेभालभागभारीकीएयतनअधि
कअबलीएफलपाइकै॥ऐसीसुनबानीहरषानीसुविदेहजाचि
तारेचहुँओरदृगरहेविगसाइकै ॥ अमृतसमानशुभअक्षरम
हानकिनकानमैहमारेवचदीएहैंसुनाइकै॥साचजोवखान्योद
यापालयहिकाहूँजनरामदूतदरशदिखाएमोहिआइकै॥२३॥
वानरअकारधरसूक्षममुरारिमैनेदूरहीतेवंदनासुजानकीको
धारीआ॥जोरेहाथमोहिपेखपूछ्योसुविशेषसीयकहीसमझा
इमैनेभाषकथाथारीआ॥ फेरदीनीसुंदरीकोमुंदरीनिकालसो
ईदीनीप्रभुआपदेखीजनककुमारीआ ॥ पेखीजबमुंदरीप्रती
तीतयसुंदरीसुमोहिप्रतिरामतिनवातहैउचारीआ ॥ २४ ॥
॥ **सवैया** ॥ ॥ जिहँभाँतिपिखीहनुमानतुमेमुहिराक्षसिआँ
दिनरातिडराँवें ॥ रघुवीरहिंपाससभाविधितूँहनुमानयथार
थजाइसुनाँवें ॥ तबमोहिकह्योरघुवीरसीयातुमकोनिशिवा
सुररामधिआँवें ॥ इहआवनकीइमढीलभईरघुवीरनहींतव
सारसुपाँवें॥२५॥कवित॥अबीजाँऊँमाततेरोसारसुसुनाऊँ
सभसुनकैसुरामतवसारहरपाइहैं॥रामकपिराईलक्ष्मनतिन
भाईकपिसैनकोमिलाइसुसमीपतोहिआइहैं॥कुलकेसमेतसु
दशाननकोमाररणमनुरजधानीपुनतोहिकोलिजाइहैं॥दीजे
कोनिशानीपुनऐसेमैवखानीजिहँहेररघुनाथनाथमोमैपती
आइहैं॥२६॥ऐसेममवाक्यसुनदीनीतिनोचूडामणिकेशपा
सिमाहिहुतीऔरसुनलीजिए॥ चित्रकूटमाँहिंभयोकाककोवृ
तांतजोईरामरघुवीरकोसंदेसवहीदीजिए॥नैनभरवारितिनो

कीयोहैउचारनाथनाथसुखधामकोसुकुशलभनीजिए॥लक्ष
मणपासकहोहाथजोरमेरेअतिकहेवचखोटकुलचंदवखशी
जिए॥२७॥रामज्यौंत्तरॉंहिंमोहिकोजिएउपाइसोइकृपाकेनि
धानतुमकुलमैप्रधानीआँ ॥ अैसेमुखोचारअतिरोइद्दगजाइ
वारिशोचसिंधुवहीभईदूखगलतानीआँ ॥कयौंमैसंवोधमा
तशोचकोतूँरोधनाथनाथबलयथासभताँहिंकोवखानीआँ ॥
मातायौंपठायोआयोनाथतेसमीपअवआवनकेकालमैअ
शोकवनीभानीआँ ॥ २८ ॥ सुअशोकवनपाररखवारेमा
रसुतरावणविदारवहुराक्षसविदारकै ॥ रावणसोंबोलचा
लताँकोबलतोलतालजालगढलंकआयोकाजतेसवारकै ॥
हनूमानवाक्यसुनगुनकेनिधानप्रभुरामहरपाइउरकस्योहैउ
चारकै ॥ हनूमानकाजतैंमहानकरेअैसेजगदेवतातेहोइनाहिं
वडेदुखधारकै ॥ २९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तोहिकियोउपकार
जोताँहिंवरोवरजोइ ॥ मैहनुमाननिहारहोंपावोंनाहींसोइ ॥
॥ ३० ॥ ॥ कवित ॥ ॥ मोहिसरवंशजोईदेऊँहनुमानसोई

ण्यसँबूहजितेयुगकोटिनकेनहिंजातबताए ॥ जगसुंदरकांड किपुण्यकथाकविसिंह गुलाबसुदीनसुनाए ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुंदरकांडेपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

॥ इतिश्रीसुंदरकांडम्समाप्तः ॥



श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ युद्धकांड प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ सागरसेतुबनाइजिने गढलंकपतीरणमंडलमारे ॥ सीयउधारउबारविभीषणराज विभीषणकेभुजधारे॥वानरसैन्यजिवायदईचढमाँहिंविमान स्वदेशपधारे ॥ ताँपरमातमराघवकोकरजोरउभेअभिवंदह मारे ॥ १ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ सोरठा ॥ सुनीयथा रथबातहनूमानगिरिजाकही ॥ रामहर्षविख्यातपुनःरामताँ सोंकहे ॥ २ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ दुहसाध्यअहेजगदेवनको हनुमानअएकरकारजसोई ॥ जगतोविनयाँहिंसुकारजको मनमाहिंचितारसकेनहिंकोई ॥ शतयोजनभीमपयोनि धिकोतरपारपरेबलकाँमाहिंहोई ॥ पुरराक्षसलंकसुपालतहैंसु पिखोंनहिताँहिंविध्वंसकजोई ॥ ३ ॥ कवित ॥ सेवककोका जकरआयोहनुमानसभसुनशुभग्रीवतोहिकहोंसमझाइके ॥ हनूमानकेसमानदूतभुविमंडलनभयोनहिहोइगोसुपिखोंम नुलाइके॥मोहिरघुवंशलक्ष्मनशुभग्रीवसभकरेरक्षपालसा

रजानकीकौल्याइकै ॥ करेसभभाँतिइनकारजएकाँतममजा
नकीकीसारयहल्यायोहैवनाइकै॥४॥ ॥ ।५१
रकीडरेमननक्रझषमगरतिमिंगलभयानकी ॥ योजनअशी
तवीशपारपरोंकैसेअरिमारसुसंग्राममैसुपिखोंकविजान
की॥सुनकैभवानीरघुनाथकीसुवानीयहिकहीकपिनाथवात
लाइकसिआनकी ॥ नक्रऔतिमिंगलअपारजाँहिंधारमाँहिं
लाँघजलसिंधुहमजाँहिंसुअचानकी॥५॥अवैलंकजाँहिंगेसु
घाँहिंगेदशाननकोकारजविनाशिनीनचिंतउरधारिये॥ वलहै
अपारभुजवानरसिदारआएमहाशूरवीररामनैनकैनिहारिये
॥ रामतोहिकाजपरेंआगमाँहिंधाइकपिसागरतरनकेउपाइ
कोविचारिये ॥ लंकाकेनिहारेदशकंठरणमारेपिखोकहीहैसु
नाइमतिएहुहैहमारिये ॥६॥ तीनलोकमाँहिंवलिऐसोकोनि
हारोंनाँहिंगहेधनतेरेरहेआगेठहिराइकै ॥ जीतहैहमारीरणमं
डलमझारीरघुवीरअवदीजिएसंदेहकोमिटाइकै ॥ शकुनउदा
रजीतकेहैंवारवारशुभग्रीववचकहेसेववीरयजनाइकै ॥ रा
मजीउदारधारचीतकमझारवचकहितभवानीहनूमानकोसु
नाइकै॥७॥ ॥दोहा॥ जाँहिंकाँहिंसुप्रकारहमलाँघेंजलनि
धिपार॥ लंकापुरीस्वरूपजोकीजेमोहिउच्चार॥८॥ दानवदेव
असाध्यहैताँहिरूपउरजान॥जीतनहेतउपाइकोफेरकरैंहनुमा
न॥९॥ ॥कवित॥ सुनीरघुवीरवानीहाथजोरकैभवानीअं
जनीकुमारलगेरामकोसुनावने ॥ देवज्योंनिहारीअवंकरों
तेउचारीदिव्यपुरीहैअपारीवागवनेघनसावने ॥ हैत्रिकूटगि

रिशीशलंकपुरीजगदीशहेमकीअटारीकोटकिंगुरेसुहावने ॥
परषाअपारभरीऊजलसुवारिनाथविनपरवानीमाँहिंपय्येन
हींजावने ॥ १० ॥ उपवनशोभाजाँहिंमाँहिंहैअपारनाथवा
पीऔंहजारगृह्चीतेमनमानिये ॥ जांबूनदथंभजहाँमणि
नसोंखचेअतिकांतिहैअपारमुखकैसेकैवखानीये ॥ पश्चम
केद्वारगजवाहिनीहजारोंरहेंउत्तरकेद्वारअश्ववाहिपहिचानी
ये ॥ अरवुदसंख्यासुपदातीदिनरातीरहेंपूरवसुद्वारअतिसा
वधानजानीये ॥ ११ ॥ रथअसवाररहेंदक्षणसुद्वारप्रभुराक्ष
सहजारभुजवलमैंविशालहैं ॥ रथीऔपदातीगजवाजीके
सवारघनेमध्यकीसुडेवढीपसारेकालजालहैं ॥ आयुधवि
शारदसुलामघनवारदसेसदादिनरातिगढलंकप्रतिपालहैं ॥
मोरचेहजारजहाँतोपनकोपारनहींधीरनकेचीतढिगगएहूँते
चालहैं १२॥ ऐसेगढलंककोकलंकमैलगाइआयोसुनोरघुवी
रतहाँकाजतोहमारिआ॥ रावणकीसैन्यकीचौथाईनाथघाई
वललंकतोजलाईहेमकोटतोविदारिआ॥तोपनकोतोरतारमो
रचेसुफोरफारभक्तसुविभीपणकोगेहमैउवारिआ॥देवतेनिहा
रेंतेपसारेमुखपाहिकपिढीलननिहारोपिखोलंकगढमारिआ
॥१३॥ कीजियेपयानबातछोडियेसयाननाथवानरल्लवाइत
टसागरकेजाइहैं ॥ सुनहनूमानवाक्यधनुपचढाइबाँकआपर
घुनाथकपिनाथकोअलाइहैं॥सुनोकपिराइसभसैनाकोबुला
इमुखदेहितूंअलाइअवसैनकोचलाइहैं॥ जीतकोमुहूरतसुयाँ
हींसभैचढेंहमजाँइंगढलंकमाहिंजीतरणपाइहैं ॥१४॥ ॥दो

हा ॥ सप्रकारद्रुधर्पजोलंकाराक्षसधाम ॥ जीतोंयाँहिंमु
ह्रूरतेरावणहनसंग्राम ॥ १५ ॥ कवित ॥ ॥ जानकीकोल्या
ऊँगढ़लंकजीतपाँऊँसुनकपिनकेराईभुजफुरेममदाहिनी ॥ वा
नरजेवेगधारीचलेंसभसैनाथारीसुनोकपिनाथवातबनेगी
निवाहिनी ॥ अगारीपिछारीकपियूथपउदारीचलेंआस
पासपालेंचलीजाइमाहिवाहिनी ॥ हनूमानकोसवारहोइमै
अगारीचलोंअंगदकेभ्रातममचलेंतुमसाहिनी ॥ १६ ॥ ग
जऔगवाक्षगवमैंदवद्रुविंदनलनीलऔसुषेणजांबवानब
लधारीआ ॥ चलेंतेचौफेरेकोईआवनेनपावेनेरेसैनाअरिघा
तिनीकीकरेंप्रतिपारीआ ॥ ऐसेतुअलाइभटवानरवताइलघु
भ्रातकोलवाइचेढरामवैमुरारीआ ॥ कपिनाथकेसमेतरघु
नाथसैनावीचवरणीनजाइकांतिभईहैअपारीआ ॥ १७ ॥ दो
हा ॥ वानरराजसमानसभभुजवलजिनहिंअपार ॥ कामरू
पगिरिजासभेवानरसुरअवतार ॥ १८ ॥ सवैया ॥ ॥ कपि
नायकरामचढेजवहीगढकांचनजीतनकोजगमाहीं ॥ थरराइ
उठीसगलीधरणीखरराटपर्योगरवेगिरिमाहीं ॥ वसुधाद्रिढदि
ग्गजदंतदिएठहरातनहीधरकैसुउताहीं ॥ विधिलौडमढोलउठ
सगलेकपिभूधरसेउचटेधरमाहीं ॥ १९ ॥ कपिखेलतकूदत
गाजतहैंइहभाँतिचलेदिशिदक्षणमाहीं ॥ हरिधावतजावतखा
वतहैंफलपानकरेंमधुकोहरपाहीं ॥ कपिदौरसुरामअगारीक
हेंहममारहिंरावणकोरणमाहीं ॥ इहभाँतिचलेकपिपुंगवते
जिनकेवलकीगननाकछुनाहीं ॥ २० ॥ हरिकेअसवारभएह

रिजूहरिशोभतदोहरिकेदलमाहीं॥शशिसूरसुहावतज्योंगिरि
जानभमंडलतारनकेगनमाहीं॥कपिसेनचलीवहुभीरभईस
भछादलईधरणीजगमाहीं॥धरमारतपुंछउभारतहैंतरुशैलउ
खारलएकरमाहीं॥२१॥शैलनमैकपिकूदचढैंपुनमारुतवेगच
लेकपिजाहीं॥वानरसोंधरपूररहीहरपातचलेगननाकछुनाहीं
रामकरीप्रतिपालचहूंदिशिसैनगईसुदिवानिशिमाहीं॥कानन
भाँतिअनेकपिखेपुनसह्यमलैगिरीकेपथिमाहीं॥२२॥सह्यम
लैगिरिलाँघउभेवहुभीमपयोनिधिकेतटआए॥वायुकुमारति
उत्तरकेकपिनाथकिहाथसोंहाथमिलाए॥नीरकितीरहिंजाइभ
लेरघुनाथकपीश्वरचैनअलाए॥सागरकेतटमाहिंअएनहिंपा
रपरेंविनकीनउपाए॥२३॥इहठौरनिवासकरेसभसैन्यसुता
रणकारणलेहिंविचारे॥सुनकेरघुवीरकिवाक्यतवैकपिनाय
कआपसमुद्रकिनारे॥सभसैन्यवसाइदईक्षणमैशिरदारथपे
तिनकेरखवारे॥तबवानरवैठपयोनिधिकेतटभीमपयोनिधि
नैननिहारे॥२४॥जिहँमाहिंतरंगअपारउठेंझपनक्रभयंकर
जाँहिंमझारे॥सुअगाधवडोनभकेसमहैइहसागरहेरभएड
रभारे॥किहँभाँतितरेंइहसागरकोजलनाइककोपरआहिअ
पारे॥जलसागरवीचनहोइकवीरणरावणकोअवडारतमारे॥
॥२५॥इमचिंततव्याकुलहोइसभेकपिरामसमीपसुवैठरहे॥
रघुवीरचितारविदेहसुतादुखसागरधारअपारवहे॥वहुभाँ
तिविलापकरेंहरिजीसुरकारजकोनरदेहगहे॥विनहैतचिदा
तमऔपरमातमजाँहिंसनातनवेदकहे॥२६॥इहभाँतिपछान

तरामस्वरूपसुजोजगमैजनतत्वविचारी॥ नहिंताँहिंछुहेदुख
पुंजकवीपुनहोंहिंकहाँनिजराममुरारी॥ दुखऔरसुखंडरक्रो
धमहामदमोहसुलोभहिमाद्रिकुमारी॥ सुअज्ञानकिलिंगजु
आँहिंसभेकिंहँभाँतिरहेंचिदराममझारी॥ २७॥ तनकोअ
भिमानसुदूखजनेपरमातममैतनपाय्यतनाहीं॥ तनऔअभि
मानसुदूरभएसुखरूपपिखेसुसुषोपतिमाहीं॥ मतिआदिक
होंहिंअभावजबैदुखहेरतनासुखआतममाहीं॥दुखऔसुखहें
सभबुद्धिविपेपरमातममैकछुपाय्यतनाहीं॥ २८॥ शंकरछं
द॥परपुरुषरामपुरातनोपरमातमाहरिआहि॥नितउदेहैपुन
सदासुखकछुनाहिंताकोचाहि॥ सुतथापिमायागुणमिलेसु
खिदुखीसेभगवान॥ सुनहोइहेयहिलोकअंदरमूरखनकोभा
न॥२९॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्ध
कांडेप्रथमोऽध्यायः॥१॥ ॥**श्रीमहादेवउवाच**॥ ॥क
वित॥ लंकमाहिंरावणनिहारहनुमानकाजदेवनअसाध्यला
जभईउरभारीया॥देखेधरावारवारमंत्रिनपुकारलीएराक्षस
केराजबातएकुहैउचारीया॥लंकाउतपातहनूमानहिंविख्यात
कियेतुममतिमंतसभनैनतेनिहारीया॥ विनापरवानीराजधा
नीकेसुमाहिंवरेदेखीतिनजाइमिथलेशकीकुमारीया॥ १॥
राक्षसविदारसुमंदोदरीकोमारसुतजारगढलंकगयोवारिध
केपारीया॥ताँहिंकीनहानिभईलंकबातभईनईभापतहोंशूरला
जरहीनतुमारीया॥मंत्रमैविशारदसुकरणोजुकारजसुहोइहि

नध्वनिराक्षसकेराईकोभवानीयौंउचारीय॥२॥लोकनकोजी
तसुसंग्रामनिरभीततुमरामनरनामतेसुकहाडरआएहैं॥देवत
वपूतपुरहूतपुरवाँधआन्योजीतसुकुवेरकोविमानतुमपाएहैं॥
जीतेयमराजयमधानीतेभगाइदीएकालदंडभीतभूपतोहितो
मिटाएहैं॥वरुणहुंकारसुनमिलेगलडारपटजीतसभराक्षससु
दुंदुभीवजाएहैं॥३॥मयजोमहासुरसुमानडरतोहितेसुआप
नीतनूजातिनदीनीतुमेआइकै॥ अवलौंअधीनवातमानतति
हारीसभऔरजेमहासुरसुगहैंपदधाइकै॥हनूमानकीएकाज
भएनसुजागपदसूरनकोजाइवलकपिपैदिखाइकै॥ ऐसेहम
जाँननाँहिंमार्योताँहिंवानगयोकपिसुनोनाथतवपुरीकोजला
इकै॥४॥छलेहनूमानहमकरेंमद्यपानसभजानतसुवातकपि
जीवतनजाइहै॥दीजिएसुआइसुपिखीजिएसुनाथवलनरअ
रुकपिकोऊजगनरहाइहै॥ सभैभटजाँहिंजबआइसुपाँहिं
नाँतोहनेकपिमानवसुएकोभटजाइहै॥कहीजुअमातवातसुन
कैगणेशमातकुंभकानभ्रातसुदशाननेअलाइहै॥५॥ तोहि
काजऐसेकरेजाँतेसभसूखहरेहोवेंसभनाशसभरोवेंतवरानी
आँ॥वडेभागथेतिहारेरामनननिहारेतवेहरतसुरामकरेंप्राणतेरे
हानीआँ॥रामनरनाँहिंसुनारायणप्रगटरघुवीरनारिसीयरमा
तोहिनपछानीआँ॥राक्षसविनाशकाजआनीतुमेसीयराजहों
हिंदुखभोरअवजाइराजधानीआँ॥६॥महामीनखाइज्यौंह
लाहलकोपिंडवडोआनीतिमजानकीसुभावीनाँहिंजानीए॥
यद्यपिअकाजकीयोसुनोलंकराजतौभीहोइनविगारवातभई

हेअजानीए॥ लेऊँमैसवारअवदेहिडरडारसुनराक्षसकेराईउ
रचिंतनँाहिठानीए ॥ कुंभकानवाक्यसुनकरतवखानवहुराव
णकोपूतइंद्रजीतकैवखानीए ॥ ७ ॥ आइसुजुपाऊँमारवे
गअवआँऊँरघुनाथकपिनाथलक्षमनयौंसुनायोहै ॥ विभी
पणनाममतिमानभगवानजनहाथजपमालसुभवानीतहाँ
आयोहै॥वंदनाउचारवैठोरावणसमीपवहुरामपदपंकजवना
इध्यानलायोहै ॥ कुंभकानलौनिहारेभएमतवारेसभकरेवक
वादतिनपेखविसमायोहै ॥ ८ ॥ कामकेअधीनमतवारेअ
तिदीनपेखरावणमलीनकोविभीपणअलाइहैं ॥ कुंभकानइंद्र
जीतजीतेहैंनराजामहापार्श्वमहोदरसुहेरकैपलाइहैं॥ कुंभऔ
निकुंभअतिकाइनठराइरहेरामरणमाहिंजवतानधनुआइहैं॥
जानकीसुनामग्राहआहिवलवानअतितोहिग्रसगएनाहिंव
लकैछडाइहैं ॥ ९ ॥ सीयासनमानकरमहाँधनआगेधरराम
कसुपाइपरतवीसुखपाइहैं ॥ जवलौनरामवानमारतकमान
तानलंकव्यापतीरशिरराक्षसउडाइहैं॥ तवलौमनाइसीयशी
शकोनिवाइजीयरामपहुचाइफिरऔसरनपाइहैं॥ नखहैंउदा
रपुनदाढनसोंफारखांहिंअैसेकपिआइपुनलंककिलकाइहैं ॥
॥ १० ॥ जवलगलंकनदवाइकपिनाशकरेंतवलगजानकी
कोदेहिपहुचाइकै ॥ जीवतेकोरामतोहिछोडतनधाँमअव
दैतकहाँरखेंशिवसकेंनवचाइकै ॥ देवराजधर्मराजतोहि
नवचाइसकेंजीवतोनवचेंजौपतालधसेंधाइकै ॥ शुभहित
पावनसुरावणकेपासवचभ्रातयौंविभीपणसुदीएहैंसुनाइकै

॥ ११ ॥ रावणनमानीजुविभीषणवखानीउमाकालजाँहिं
आयोज्योंरसायणनखाइहै ॥ कालकोचलायोसुदशाननरि
सायोउरभ्रिकुटीचढाइकैविभीषणअलाइहै ॥ मेरोदीयोखाइ
पुनमोहिसोंकमाहिंबुरोभयोअतिमोटोढिगमेरेहीवसाइहै॥ मै
तोहितकारीसुविभीषणविकारीभयोमीतभाववैरितासुमोही
सोंकमाइहै ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याँहिंअनार्यकृतघ्नसों
संगतिमेनसुहाइ ॥ जालिजातिकोक्षयचहैवहीवनीविधिआ
इ ॥ १३ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ ऐसेजुवखानेऔरमारतोसुताँ
हिंठौरतोहिकोधिक्कारकुलअधमबुलायोहै ॥रावणकीवानीसु
निदेखिविपरीतधुनिसभाहूँकेवीचतेविभीषणपलायोहै ॥ चार
हैंअमातसाथगदाकोउभारहाथजाइकेआकाशमाहिवैनको
अलायोहै ॥ मततुममरेंदशकंठदुखभरेंसुविभीषणवखानेउर
क्रोधअतिआयोहै ॥ १४ ॥ तातकेसमानवडेभाईतोवखाने
जगकरेंतूँधिक्कारवाक्यकहेथेसनेहके॥कालरामरूपभयोदशर
थधामजगकालीसीयानामभईजनकविदेहके॥ दोऊवहीआ
एसुमिटाएचाहेंभूमिभारकरेंगेसुनाशदशकंठनवदेहके ॥ तिन
हींकप्रेरेनाहिंमानेंवाक्यमेरेतवतोहितनरूलेदुखपावेंजनगेह
के॥१५॥शंकरछंद ॥सुनवहुप्रकंतितेपरेहैंश्रीरामपूरणका
म ॥ वहिरंतसोहेंसर्वकेदुखजाँहिजाँभजनाम॥प्रभुनामरूप
विभेदकैतिमतिमसुसर्वदिखाँहिं॥जिमएकअनलविराजहीस
भभूरुहनकेमाँहिं॥१६॥सुउपाधिकेआधीनबहुविधपिखेंज
नअज्ञानि॥याँकोशपंचउपाधितेबहुभासहैंभगवान॥ह्वैनील

हैअजानीए॥ लेउँमैसवारअवदेहिडरडारसुनराक्षसकेराईउ
रचिंतनँाहिंठानीए ॥ कुंभकानवाक्यसुनकरतवखानवहुराव
णकोपूतइंद्रजीतकैवखानीए ॥ ७ ॥ आइसुजुपाउँमारवे
गअवआँउँरघुनाथकपिनाथलक्षमनयौंसुनायोहै ॥ विभी
पणनाममतिमानभगवानजनहाथजपमालसुभवानीतहाँ
आयोहै॥वंदनाउचारवैठोरावणसमीपवहुरामपदपंकजवना
इध्यानलायोहै ॥ कुंभकानलौनिहारेभएमतवारेसभकरेवक
वादतिनपेखविसमायोहै ॥ ८ ॥ कामकेअधीनमतवारेअ
तिदीनपेखरावणमलीनकोविभीपणअलाइहै ॥ कुंभकानइंद्र
जीतजीतहेंनराजामहापार्श्वमहोदरसुहेरकैपलाइहै॥ कुंभऔ
निकुंभअतिकाइनठराइरहेंरामरणमाहिंजवतानधनुआइहै॥
जानकीसुनामग्राहआहिवलवानअतितोहिग्रसगएनाहिंव
लकैछडाइहैं ॥ ९ ॥ सीयासनमानकरमहाँधनआगेधरराम
कसुपाइपरतवीसुखपाइहैं ॥ जवलौनरामवानमारतकमान
तानलंकव्यापतीरशिरराक्षसउडाइहैं॥ तवलौभनाइसीयशी
शकोनिवाइजीयरामपहुचाइफिरऔसरनपाइहैं॥ नखहैंउदा
रपुनदाढनसोंफारखांहिंऐसेकपिआइपुनलंककिलकाइहैं ॥
॥ १० ॥ जवलगलंकनदवाइकपिनाशकरेंतवलगजानकी
कोदेहिपहुचाइकै ॥ जीवतेकोरामतोहिछोडतनधाँमअव
दैतकहाँरखेंशिवसकेंनवचाइकै ॥ देवराजधर्मराजतोहि
नवचाइसकेंजीवतोनवचेंजौपतालधसेंधाइकै ॥ शुभहित
पावनसुरावणकेपासवचभ्रातयोंविभीपणसुदीएहैंसुनाइकै

॥ ११ ॥ रावणनमानीजुविभीषणवखानीउमाकालजाँहिं आयोज्योंरसायणनखाइहै ॥ कालकोचलायोसुदशाननरि सायोउरभ्रिकुटीचढाइकैविभीषणअलाइहै ॥ मेरोदीयोखाइ पुनमोहिसोंकमाहिंबुरोभयोअतिमोटोढिगमेरेहीवसाइहै॥ मे तोहितकारीसुविभीषणविकारीभयोमीतभाववैरितासुमोही सोंकमाइहै ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याँहिंअनार्यकृतघ्नसों संगतिमेनसुहाइ ॥ जातिजातिकोक्षयचहैवहीवनीविधिआ इ ॥ १३ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ ऐसेजुवखानेऔरमारतोसुताँ हिंठौरतोहिकोधिक्कारकुलअधमवुलायोहै ॥रावणकीवानीसु निदेखिविपरीतधुनिसभाहूँकेवीचतेविभीषणपलायोहै ॥ चार हैंअमातसाथगदाकोउभारहाथजाइकेआकाशमाहिवैनको अलायोहै ॥ मततुममरेंदशकंठदुखभरेंसुविभीषणवखानेउर क्रोधअतिआयोहै ॥ १४ ॥ तातकेसमानवडेभाईतोवखाने जगकरेंतूँधिक्कारवाक्यकहैंथेसनेहके॥कालरामरूपभयोदशर थधामजगकालीसीयानामभईजनकविदेहके॥ दोऊवहीआ एसुमिटाएचाहैंभूमिभारकरेंगेसुनाशदशकंठतवदेहके ॥ तिन हींकेप्रेरेनाहिंमानेंवाक्यमेरेतवतोहितनरुलेदुखपावेंजनगेह के॥१५॥शंकरछंद ॥सुनवहुप्रकृतितेपरेहैंश्रीरामपूरणका म ॥ वहिरंतसोहैंसर्वकेदुखजाँहिंजाँभजनाम॥प्रभुनामरूप विभेदकैतिमतिमसुसर्वदिखाँहिं॥जिमएकअनलविराजहीस भभूरुहनकेमाँहिं॥१६॥सुउपाधिकेआधीनवहुविधपिखेंज नअज्ञानि॥याँकोशपंचउपाधितेवहुभासहैंभगवान॥त्हैंनील

पीतसुयोगकरजिमफटकअमलसुचारु॥ सोनित्यमुक्तस्वमा
ययागुणबिंबतिहँआकार॥१७॥ भेकालऔरप्रधानपुरुषाव्य
क्तयाँविधिचार ॥ सुप्रधानपुरुषउभेमिलेयहिरचेंजगतविका
र॥पुनकालरूपसुहोइकैयहिकरेजगतविनाश॥ अबकालरू
पस्वमाययाहरिभयोरामप्रकाश ॥ १८॥ विधिकरीविनतीताँ
हिंपैदशकंठतवधकाज ॥ बहुअन्यथानहिंकरेंगेसंकल्पकोर
घुराज॥सुनपुत्रवाहनसैन्यसहतुहिमारहैंबहुराम॥ भोसकों
नाहिंनिहारतेरोनाशमैसंग्राम ॥ १९॥ **दोहा** ॥ ॥ त्वंराक्षस
कुलमरेंगेमैजावोंजहँराम ॥ मेरेगएसुपाइसुखचिरंरमोतुम
धाम॥ २० ॥ **सवैया** ॥ रावणकेदुरवाक्यनतेसुविभीषणत्या
गगएग्रहसारे ॥ हेमतुरंगमऔरमतंगसुनारिमणीबहुजाँहिं
मझारे ॥ पूर्णहैमनभीतरसोपदरामकेसेवनहेतपधारे॥ सिं
हगुलाबसुभागजगेकुलत्यागलियोतिनराहकिनारे ॥ २१ ॥
इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेद्वीती
योऽध्यायः ॥ २ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **कवित** ॥ विभी
षणभागधारीलीएहैंअमातचारीरामजीकेसंमुखअकाशमा
हिंआयोहै ॥ रामकंजनैनस्वामीसुनीएसुमोहिवानीऊचस्व
रबोलसविभीषणअलायोहै ॥ रावणकोभाईजिनदारातेचु
राईसुविभीषणएनामममेरोलोकमाहिंगायोहै ॥ दियोमैनिका
रीहितबातथीउचारीअबरामपादकंजमैतोतेरोहीतकायोहै
॥ १ ॥ सीयारामदीजिएनकीजिएसुवैरअतिफेरफेरकह्योना
हिंताँहिंमनधारिओ ॥ कालफासकेअधीनमानतमलीननाँ

हिंमोहिवधकाजहाथखड्गउभारिओ ॥ चारलैप्रधानवेगकी
योमैपयानपुनरामपदकंजतहाँतेंरोमैंचितारिओ ॥ मोक्षचा
हिहैहमारीसामलीनीमैतुमारीराजनकराईअबवनेगोउवारि
ओ ॥२॥ विभीषणवाक्यसुनबोलेकपिनाथपुनकीजिएविसा
हनाँहिंरामयाँहिंखलको ॥ सीताजाँचुराईएतोताँहींकोसुभा
ईपुनसायुधसमंत्रीऔधरय्याभुजबलको॥अँतरनिहारेएतोह
महींकोमारेभुजबलनबसाइकर्योंचाहेउरछलको ॥आइसुजु
दीजिएतुयाँहिमारलीजिएसुढीलननिहारोमैपठाँऊँकपिदल
को॥ ३॥ **सवैया** ॥ इहभाँतिपिखोंमनभीतरमैतुमरामकहो
मतिजोठहिराई ॥ सुनकैसुग्रीवकिवाक्यनकोहसरामतबै
मुखबातअलाई ॥ पतिलोकनकेसहलोकसभेउरमाँहिंचहोंज
थमैकपिराई ॥ निमिषार्धविषेसुहनोंसगलेनिमिषेकविषेपुन
लेंउँउपाई ॥४॥ अबमोहिअभैइहकोसुदियोतुमल्यावहुवेगइ
सेअबजाए॥इकवारकहेशरणागतहोंमुखमैतुमरीबहुभाँति
अलाए॥ व्रतमाहिधर्योइहभाँतितिसेडरुभूतनतेफिरहोननपा
ए॥सुनराघवकइहवाक्यउमाकपिनाथतबैमनमैहरपाए॥५॥
आनविभीषणकौतवहीकपिनाथभलेरघुनाथदिखारे ॥ आ
इविभीषणराघवकेपदपंकजमैअभिवंदनधारे॥ वाणिगदाग
दताँहिंभईअतिभक्तिबडीतिहँचीतमझारे॥ श्यामविशालबडी
अखीआँमुखपंकजसेतिनरामनिहारे ॥६॥ करवाणशरास
नशांतबडेअनुजोलछमनसुसाथसुहाए ॥ सविभीषणजोर
उभेकरकोगिरिजारघुनंदनकीरतिगाए ॥ अंबरामनरेंद्रसुतो

हिनमोवरसीयमनोरमतूँसुखदाए ॥ जगचंडकुदंडनमोतुम
कोजनवल्लभवंदनपंकजपाए ॥ ७ ॥ शांतअनंतरमाप्रभुकंत
अनंतसुतेजनमोपदधारे ॥ मीतकपीशनमोरघुनायकतूँजग
कोउपजाइनिवारें ॥ तीनहुँलोकनकेगुरुतेसुअनादिगृहीअ
भिवंदहमारे ॥ त्वंजगआदिअनादिसदारघुनाथकरेंजगको
प्रतिपारे ॥८॥ शंकरछंद ॥ स्वच्छंदचारीरामतुमजगनाश
केसुस्थान॥प्रभुचराचरकेबाहिरपुनमाँहिंहोवोभान ॥हरिव्या
प्यव्यापकरूपकैतुमजगतमयभगवान॥हैंनष्टआत्मविचेतसे
तवमायया्स्तज्ञान ॥ ९ ॥ कवित॥ देहधारवारवारमरेंतुअ
नेकवारभयेपुण्यपापवशनित्यआइजाइहैं ॥ शुक्तिरूप्यकेस
मानहोतजगसत्यभानपावतनज्ञानजवतोहिनाँहिंध्याइहैं ॥
तोहिनपछाँनेसुतदारागलतानेमतिभईतिनहानेगृहफासमैफ
साइहैं ॥ भोगनकोसेवेंसुतनारिनकोदेवेंकहोंसाचरघुराई
वहुअंतदुखपाइहैं ॥ १० ॥ त्वंसुरेशअग्नियमरक्षसजलेशवा
युधनदमहेशरामतूँहींतोवखानीए ॥ अणुहूँतेअणुऔमहान
तेमहानवडोरामजगनाथएकतूँहींतोपछानीए ॥ तुमहींतोपि
तासभलोकनकेमाताधाताआदिमध्यअंतकछुतोहिनाहिंठाँ
नीए ॥ पूरणअच्युतऔअनाशीस्वप्रकाशीरामतेरोहीस्वरू
पमाहिंवेदनवखानीए ॥ ११ ॥ पाणिपादनैनकाननाँहिं
भगवानतवगेहेंदौरेंपेखेंसदासुनेंतूँखरारीआ ॥ काँहूँमैन
रहेंअरुगुणकोनगहेंप्रभुतेरीगतिकहेंकोशपंचतेसुन्यारीआ
विकल्पनविकारनिराधारसुउदारअतितुहींजगवीचनरनाथ

सुमुरारीआ॥ पुरुषपुरातनसनातनप्रकृतपरेतोहिमैनपथ्येपद
भावजेविकारीआ ॥ १२ ॥ माययामिलापप्रभुपूरणप्रताप
जगमानवसोदेहभवमंडलदिखाइहैं ॥ अजभगवानतंवनिर्गु
णकोजानजगतेरेहीभगतप्रभुमोक्षपदपाइहैं ॥ तोहिपदसेव
हीसोपानपाइदेवहमज्ञानयोगसौधमैआरोहनोसुख्याइहैं ॥
सीयाकेरमणहारकरुणाअकारअरिरावणजुहारभवसिंधुमे
तराइहैं ॥ १३ ॥ **सोरठा** ॥ भक्तनप्यारेरामतववोलेहर्षाइउ
र ॥ जोतेरेमनकामलेहुवहीवरदेतहों ॥ १४ ॥ ॥**विभीष
णउवाच** ॥ **कवित** ॥ आजभयोधंन्यमैकृतारथजगतमैजु
करणीसीकृत्यसभलईमैकमाइके ॥ पिखेपदकंजतोहिभागसु
विशालमोहिआजुरघुवीरवंधदीएमैमिटाइके ॥ मोहिसमना
थधंन्यदूसरोनआनजगभयोशुचिआजुपापगएँहैंपलाइके॥
मोहिसमआजजगआननदिखाईदेतमूरतितिहारीपिखीराम
ढिगआइके ॥ १५॥ **शंकरछंद** ॥ अतिकर्मवंधविनाशहित
तवज्ञानभक्तिविशाल॥तवध्यानपरमानंदपूरणदेहिरामदया
लु॥यौंविषयकोसुखरामजीमैचहोंनामनमाँहिं॥ तवपादकंज
अनन्यसेवारहेमेउरमाँहिं॥ १६ ॥ मुखतथारामवखानिओपु
नआपिओहरिएहु ॥ कल्यानगोप्यसुमैकहोंमनुलाइतूँसुनले
हु॥मेभक्तयोगीशांतजेजगरागजाँकेनाँहिं॥ यहसाचसीयस
मेतमैनितवसोंताँउरमाँहिं ॥ १७॥ त्वंसर्वकालसुशांतउरपु
नपापसर्वनिवार ॥ मेध्याइमोक्षसुपाइहैंपुनलरेंभवनिधि
पार ॥ तवकीनसुस्तुतिजोपढेपुनलिखेसुनेसुकान ॥ मेतुष्टि

हितमेप्रियतमंसारूप्यपाइसुज्ञान ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ ऐसे भापविभीषणंभवभंजनभगवान ॥ भक्तनप्यारेरामजीलक्ष्मणकेरंवखान ॥ १९ ॥ ॥ सवैया ॥ मोहिनिहारनतेफलजो सुविभीषणकोअवदेहिदिखाए॥लंकविभीषणराजथपोजल सागरकोअवल्यावहुजाए॥ जौलगसूरयचंद्ररहेअरुजौलग एहुसुभूमिरहाए ॥ जौलगमोहिकथाजगमैशुभतौलगएहुसु राजकमाए॥ २० ॥इहभाँतिवखानस्वभ्रातकेहाथननीरभरेह रिकुंभअनाए॥गढलंकविभीषणराजनिमित्तसुरामसभीशिर दारबुलाए॥ अभिषेकअमातनऔकपिहाथनभ्रातकेहाथवि शेषकराए॥मुखसाधुसुसाधुवखानसभैकपिकेदलराघवकेय शगाए॥ २१ ॥ शुभग्रीवविभीषणअंकमिलेमुखभीतरयाँवि धिवैनअलाए॥सुविभीषणहैहमदाससभेयहिरामपरातमवेद नगाए ॥ तिनमैंसुप्रधानविभीषणतूँपिखसेवकरामसुराजदि वाए ॥ रणरावणकेसुविनाशविषेमनलाइकरोरघुवीरसहाए ॥ २२ ॥ ॥ विभीषणउवाच ॥ ॥ शंकरछंद ॥ प्रभु जगतकेपतिरामकीसुसहायतारणमाँहिं ॥ क्याकरोंगामैं कीटतूँसुग्रीवगुनमनमाँहिं ॥ कछुकरोंगामैदासिताजोहो इआवेमोहि ॥ करभक्तिकपटखुडारकेयहिसाचभाखोंतोहि ॥ २३ ॥ कवित ॥ रावणकोभेजिओसुआयोदूततांहिंक्ष णराक्षससरूपतांहिनामशुकगायोहै ॥ आइकेआकाशवीच बोलतभयोसुनीचवानरकेराईदशकंठयोंअलायोहै ॥ राक्षस केराईतोकोजानतसुभाईवनचारिनकेराईतूँमहानकुलजायो

है ॥ भाईसेंपि आरोमोहिकाजनविगार्योतोहिकहोकपिराईतु मकाहेचढ़आयोहै ॥ २४ ॥ राजपूतनारिजुमैहरीहैकुसूतक रकहोकपिराजकाजतेरेनविगारेहैं ॥ किपकिंधाजाहिसंग वानरलिजाहिगढलंककोनिहारसभदेवतासुहारेहैं ॥ ऐसे गढभारेनरवानरअसारेतुमभएमतिवारेकपिकौनमैविचारे हैं ॥ ऐसेताँवखानीकपिनाथकोभवानीशुभग्रीवरिसमानी कह्योरावणकेचारेहैं ॥ २५ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ कपिनायक केकपिकूदतवैनभमाँहिंगह्योमुखमूठलगाई ॥ कपिचंचलदाँ तनसोंकटकैसुदयोधरमैवलकैपटकाई ॥ जवकीशनताँतनफे रगह्योतवताँहिंदईमुखरामदुहाई ॥ रघुनाथसुरोकइनेकरिये नहिचारनकोहनतेजगराई ॥ २६ विधिलौसुरजाँहिंभजेंसद हींपुनऔरभजेंकपिजेमुनिज्ञानी ॥ वहुरामखरेकपिकेंदलमै धरकानसुनीशुकआरतवानी ॥ कपिनाँहिंहनोरघुवीरकही तिनछोडदियोप्रभुआइसुमानी ॥ जिँहनामछुडावतहैभवमें तिँहकोइडुनाहिअचंभभवानी ॥ २७ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ वी चअकाशसुजाइशुकफेरकहीकपिराइ ॥ राजनकहोदशान नहिंकिहँविधिभापोंजाइ ॥ २८ ॥ ॥ **सुग्रीवउवाच** ॥ ॥ ॥ **सवैया** ॥ रावणकोइमजाइकहोतुमभ्रातवडेजगमाँहिं हमारे ॥ अंगदतातयथाहमरोतिमहूँतुमहूँनहिंशंकविचारे ॥ तोहिहनोरणमंडलमैसहपूतपताकिनवाहनथारे ॥ दूतकहोद शकंधरकोकहँजाँहिंचुराइसुनारिमुरारे ॥ २९ ॥ ॥ **श्रीरा मोवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ सुनसुकंठममवाक्यतुमवाँधोशु

कहिंबनाइ॥ लेआवोदलवीचपुनयहिअवजाननपाइ॥३०॥
॥ **सवैया** ॥ तवरामकिआइसुपाइभलेकपिनायकसोशुकवाँ
धमगाए ॥ दशकंधरताँहिंसमैइकदूतसुऔरभलेशरदूलपठा
ए॥कपिकीध्वजनीपिखरावणकोशरदूलकहीसगलीविधिजा
ए ॥ उरचिंतवढीअतिरावणकेनिजमंदिरश्वासभरेविसमाए
॥ ३१ ॥ पुनताँहिंसमैरघुवीरनिहारमहोदधिकोउरकोपबढा
यो॥ दृगलालभएरघुनंदनकेमुखतेकुपयाँविधिवैनअलायो॥
लक्षमंनपिखोदुपटातमनीरधिनाँअवलौममहेरनआयो॥अ
भिनंदतिनाँनरजानमुझेसहवानरकाहिकरेगरवायो ॥ ३२ ॥
॥ **कवित** ॥ अवहीनिहारमहावाहुवलवाहुमेरोसागरकेनीर
कोसुदेतहोंसुकाइके ॥ वानरअपारचलेंपाइनपधारअवसा
गरकीधारकेसंतापकोमिटाइके ॥ ऐसेतुवखानदृगलालभ
गवानकोपआपनेहीहाथधनुलीनोहैचढाइके ॥ पावकसमा
नसुनिखंगतेनिकारवानमाहिताँकमानकेसुदियोहैलगाइके॥
॥३३॥ **सवैया** ॥ कानलौतानकमानकस्योशररामपराक्र
मलोकनिहारे ॥ मैअवहीसरितापतिवारिसुकाइउडावतभी
तरछारे॥रामवखानतयौंमुखतेधरकाँपउठीगिरिकाननसारे॥
पारवतीडरपेसगलेनभऔदिगमाहिंभएतमकारे॥३४॥ क्षो
भभयोजलकेनिधिकोइकयोजनवेलतिदूरहटाए ॥ नक्रसु
मीनतिमिंगलजेशरपावकतेउरमैडरपाए ॥ पुनताँहिंसमैधर
दिव्यतनूजलसागरराघवकीढिगआए ॥ दिगमंडलकोतमदू
रकरेसुमहातनऊपरिभूपणछाए ॥ ३५ ॥ ॥ **शंकरछंद** ॥

दिव्यरतसुआपनेकरदोनमाहिंउठाइ ॥ वहुभाँतिभेटसुआ
नराखीरामकेतिनपाइ ॥ समदंडकेपदवंदनारुपरामहेरउचा
र ॥ जगनाथरासत्रिलोकरक्षकत्राहित्राहिमुरारि॥ ३६॥ ज
दमोहिरामवखानिओजगसगलतोहिउपाइ॥सुसुभाउउलटे
कोकरेजोदिएदेववनाइ॥सुस्थूलपंचसुभूतकोसुसुभावतेज
डजान॥आज्ञासुतवनहितेलँघेतेंरचेजदभगवान॥ ३७॥पु
नतामसाहंकारतेहरिभएभूतमहान॥ प्रभुहेतुकेअनुगामितेज
दरूपताँकोजान॥निरगुणअकारविहीनमायालेहिजोगुणधा
र॥ वैराटतोहिअकारलीलाकरेराममुरारि॥३८॥नराजछं
द॥विराटसत्वअंशतेसुदेवताप्छानिये॥रजांशतेप्रजेशआ
दिक्रोधईशभानिये ॥ स्वमाययाकिनाततानदेहमानुपीक
री ॥ मतीजडासुमूरखोलखोंकथंसुतेहरी ॥ ३९ ॥ सुपंथ
हेतुमूरखोंसुदंडसंतगाइहैं॥यथापशूप्रमत्तकोसुदंडराहिपाइ
हैं॥शरण्यनाथशरणईशभक्तवत्सलंसुते॥अभैसुमोहिदीजि
एद्दामिलंकपंथते॥ ४०॥श्रीरामउवाच॥अमोघआहि
वाणमेसुकौनदेशमारिये ॥ सुलक्ष्ययाँहिंवाणकोसुशीघ्रमे
दिखारिये॥ सुनेसुरामवाक्ययोंसुहाथवानहेरिओ॥ हिमाल
जामहोदधीसुरामपासटेरिओ ॥ ४१॥शंकरछंद ॥द्रुमकु
ल्यनामवखानियेइकरामउत्तरदेश ॥ तहँरहेंवहुतेपातिकीमे
देहिंवहुतकलेश॥ तहँवाणमारोरामजीशरदीनरामचलाइ॥
क्षणमाहिंमारअभीरमंडलपरेतरकशआइ ॥ ४२ ॥ ॥ क
वित ॥ सागरवखानीपुनरामकोभवानीरघुवंशअवतंशतुम

सुनोमनलाइके ॥ विश्वकर्माकोसुपूतपुरहूतकेसमाननल
जलवीचसेतुकरेसुवनाइकै ॥ महामतिमानवलवानइनपा
योवरसेतुकोकरैयातुमकहोसुबुलाइके ॥ ऐसेसोंवखानभग
वानपदवंददोऊसिंधुभएलीनकपिरहेविसमाइकै ॥ ४३ ॥ रा
मशुंभग्रीवलक्षमनसुवुलाइनलकह्योसमझाइजलसेतुतैंव
नावना॥वानरशिदारसुपहारसेअकारवडेसेतुहितलीएनलभ
योहरपावना ॥ योजनअशीतवीशरचेसुवनाइपुलडारसुप
हारतरुलागतसुहावना ॥ कवीसिंहरामसुखधाममुशकाइक
ह्योसूंकपदकोशकरोलंकपैउठावना ॥४४॥ ॥इतिश्रीमदध्या
त्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेतृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥
श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ सेतुअरंभसमे
रघुवीररमेश्वरनामतहाँशिवथापे ॥ पूजनरामकियोतिन
कोपुनलोकहितारथभापतआपे ॥ जोअभिवंदनसेतुकरेपि
खयाँहिंरमेश्वरकोमुखजापे ॥ मेकरुणाकरब्रह्मवधादिक
होवतदूरसबेतिहँपापे ॥ १ ॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ सुसेतु
वंधन्हाइनोनिहारकेरमेश्वरं ॥ सुनेमचित्तधारजाइफेरका
शिकापुरं ॥ सुल्याइगंगनीरकोरमेश्वरंनवाइहे ॥ समुद्रभार
डारब्रह्मपावनंसुपाइहे ॥ २ ॥ ॥ **शंकरछंद** ॥ ॥ दशचा
रयोजनआदिवासरलिएसेतुवनाइ ॥ दिनदूसरेपुनऔरयोज
नवीशदिएवढाइ ॥ दिनतीसरेसुइकीशयोजनकरेनलवलधा
र ॥ दिनचतुरथेवावीशयोजनकरेसेतुसवार ॥ ३ ॥ दिनपंचमे
तेईशयोजनकरेसेतुमहान ॥ वंधसागरसेतुयाँविधिनलकपी

वलवान॥ शतयोजनाकपिचलेताँपथिभलेउरहरपाइ॥ पल
वंगमुखमेगाजेंहैंअवजिनेगढकोजाइ ॥ ४ ॥ ॥ कवित ॥
वानरअपारचलेसेतुकेमझारकछुपाय्यतनपारभीरभईअति
भारीआ॥ सुवेलपहारकपिचढेकिलकाररघुनाथहनुमानभ्रा
तअंगदसवारीआ ॥ देखनकिकाजरघुराजजुपहारचढेबैठर
घुवीरपुरीलंकतुनिहारीआ ॥ वडोविसतारध्वजालसतअपा
रलगेतोरणसुद्वारजहाँहिमकीअटारीआ ॥ ५ ॥ परिखाअनं
तसुशतघ्निकोनअंतपुनसंक्रमवेअंतपेखवीरविसमाइहै ॥ हे
मकिपहारपैप्रसादहैउदारइकताँहीपरवैठोसुदशाननसुहाइहै
॥ वीरजेअमातढिगसेवतेंहैंगातसभशीशदशक्रीटजनुसूरचि
लकाइहै॥ नीलगिरिशृंगकेसमानतनुश्यामअतिश्यामघनवा
रिदसीदेहलशकाइहै॥६॥दोहा॥ रत्नदंडसितछत्रशिरलसेसु
वारंवार॥ योंदशकंधरमहलपरवैठेसभामझार॥ ७॥ मारखा
इवानरनतेवँध्योछुडायोराम ॥ आयोशुकताँहींसमेपेख्योक
रतप्रणाम॥ ८॥ सवैया॥ हैकछुवैरिनमारकरीहसरावणयों
शुकवैनअलाए॥ फेरकह्योशुकसागरउतरतीरगएहमनाथप
ठाए ॥ भाखनमैकपिनायककोकुदमोहिगह्योपलवंगमधा
ए॥मूठहनीनखफारदएतनुकाटहिंमेकपिरोपवढाए॥ ९॥ तव
मोहिकह्योअंवरामरखोरघुपुंगवभापसुमोहिछुडायो ॥ डर
मेउरमाँहिंमहानभयोपिखवानरसैन्यसुतेढिगआयो॥वलरा
क्षसऔकपिपुंगवकीपिखराजनयोंमनभीतरआयो॥अवसं
धिनहोवतहैइनकीसुरदानवज्योंअतिरोपवढायो ॥ १० ॥ क

वित ॥ ॥ धाईकपिसैन्यआईलंकपैचढाईभईढीलननिहारो अबवेगएककीजिए ॥ देतजोदिखाईबलकीजिएलराईननो राक्षसकेराईअबसीयरामदीजिए ॥ औरकहीरामचंद्रचंद्र माविशालमुखकहोदूतरावणकोसोईसुनलीजिए ॥ जोईब लधारतुमनारिहैहमारीहरीसोईबलबांधवमिलाइमेदिखीजि ए ॥ ११ ॥ कालप्रातकालदेखलंककोहवालसभतोरणवि शालगृहटूटिआनिहारियो ॥ राक्षसकीसैनसुरगैनलैउडाहिं शरटूटफूटजांहितनुनारिदृगवारियो ॥ घोररोपभयोभारी तोहिपरदेंउंडारीशूरमाकहांवेंदशकैंठभटभारियो ॥ ऐसेरघु वीरगाईकत्योकपिराईसमवालीहमभाईदशकंठकोउचारि यो ॥ १२ ॥ ऐसेतुवखानभगवानमुखमौनभजीलोचन सरोजसुमनोजछबिवारीए ॥ भएइकठौरजहांचारशिरमौ रबलतेजमेंविशालरणमाहिंबलकारीए ॥ रामलक्ष्मणशुभ ग्रीवसुविभीषणहैलंकनाशकरेंक्षणमांहियहीचारीए ॥ मूल तेउपारधारसागरवगाइदेहिंदेहिंकैजराइऔररहेंकपिसारीए ॥ १३॥तिनकीनिहारीवलसभैबलवंतभटरूपपुनआयुधसुकै सेकैबखानीए ॥ चारोंबीचएकहीनिचिंतगढमारेतेरोतीनरहें न्यारेखडेअैसेउरजानीए ॥ संख्यातेविहीनकपिसैन्यहैप्रवीन आईपूररहीचारोंदिशिनैनपथिआनीए॥ गाजतहैंवारवारवा नरअपारभटगिरिसेअकारभुजवीशपहिचानीए॥ १४॥ आ हिकौनमतिमानसभकोप्रमाणकहेबडजेप्रधानकपिकहोंनि रधारीये॥ एजोपिखेलंकओररोपद्रिगभरेअतिमानोमलडारे

गढराजननिहारीये ॥ यूथपहजारशतरहेंपरिवारइनयहीतो
सेनानीशुभग्रीवकोउचारीये॥अग्निकेकुमारभुजबलमेंअपा
रसोतोनीलनामकहेंअहोबडोबलकारीये ॥ १५ ॥ एजोपि
खोमौलिमणिभूधरकेशृंगसमपद्मकिंजलकसमानतनुहेरी
ये ॥ कोपिओअपारपुनसागरकीधारवारवारपुंछहनेमानो
कहेलंकमेरीये॥ वालीकोकुमारजिहंनूतनअपारवलयहीयुव
राजनामअंगदसुटेरीये॥कहाँकहोंवारवारकीजियेविचारअ
बराघवकीसैन्यआईलंकगढघेरीए॥१६॥सीताजाँनिहारीअ
तिरामजूकीप्यारीतवमारसुतनीकेपुरलंककोजलायोहै॥रूप्य
केपहारसोअकारमतिमानवडोराजनकेराईपिखोहनुमानआ
योहै॥ वेगशुभग्रीवढिगजाइसुवताइकछुफरसैनाओरयहिपे
खोएसिधायोहै॥याँहिंकोप्रतापपेखपावकसमानअतिराक्षस
केराईगढलँकदहलायोहै ॥ १७॥ शैलसोअकारलंकपिखेबल
पारनाँहिंरंभनाँमवलीयहिलंकको॥विदारहै॥ एजुपिखेलंकमा
नोजारतोनिशंकनामशरभनीजेकोटियूथपसिदारहै॥ पेखी
एमहानमानोमेरुकेसमानएजोपनसभनीजेयाँहिंवलकोन
पारहै॥ यहिहीदशाननसुमाननजुमेंदवहैद्विविदसुएहीवलवा
नमैउदारहै॥१८॥सेतुजाँवनायोपिखोएहीनलआयोविश्वकर्मा
कोकुमारपारवलकोनपाईये॥ वानरकोवलकौनवरनेसुभौन
माँहिंसंख्यातोनहोइनाथकैसेकिवताईये॥शूरहेंमहानवलवान
युद्धचहेंचित्तलंकचकचूरसहराक्षसवगाईये॥शुभग्रीवपुरकेसि
दारकहेजेउदारतिनहींकीसैननकीसंख्यासुसुनाईये ॥ १९ ॥ इ

नकेसुकोटिहैंहजारनवपंचसातशंखतुहजारअरबुदशतमानी
ये॥शुभग्रीवकेवजीरमतिमानजेईधीरतिनकीसुकहीवलराज
नपछानीये॥ औरनकीसैन्यनाँहिंमोहितेवखानीजाइराजनके
राईनहींसंख्याताँहिंजानीये॥रामनाँहिंमानुपनारायणप्रगटज
गमायातेअतीतयहिवेदमैवखानीये॥२०॥दोहा॥भवकरताकी
शक्तिचितसीताशक्तिस्वरूप॥सीयरामकृतजगतयहिसीताराम
स्वरूप॥२१॥कवित॥ताँतेसीयरामजगमाततातजानोभूपति
नहींकेसाथकहोकैसेवैरठानिओ॥जानकीविख्यातजगमातप
हिचानोउरताँकोहरल्यायोदशकंठनपछानिओ॥क्षणमैविना
शहोइऐसोजगजोइतिहँमाँहिंक्षणभंगुरसुदेहकोवखानिओ
॥पंचभूतदेहजगराजनकलेशगेहपंचविंशतत्वयाँहिंमाँहिंपहि
चानिओ॥२२॥ हाडमलमासदुरगंधवुरीवासपुनऐसेतन
वासकरभएगरवावने॥ तनमैनकरेंआसकोविदउदासरहैंजे
इतेतुन्यारेनिजआपकरोभावने ॥ देहकेसुभोगकाजकरेहैंअ
काजभवविघ्नकेनाशलौंसुपातककमावने॥सोईनेरादेहइहाँ
गिरेगोसनेहतजपुण्यपापजीवसाथभूपतिसुजावने॥२३॥सू
खदूखहेतुपुण्यपापहैंअनेकधरेदेहजोगपाइपुनआतमानिहा
रहै॥ करमकमाँऊँफलयाँकोआगेपाँऊँपुनदेहमेऽहंकारजीव
जबलौंसुधारहै ॥ अध्यासअधीनजनहोवतहैदीनपुनजनम
विनाशलौंसुतबलौंविकारहै॥देहअभिमानतजआतमाअले
पभजवेदऔपुरानसभऐसेहीउचारहै॥ २४॥ ॥दोहा॥ नि
र्मलशुद्धविज्ञानइकअचलअनाशीआहि ॥ स्वात्माकेअज्ञान

तेजीवफसेभवमाहि ॥ २५॥ ॥ सवैया ॥ शुद्धसनातनआ
तमजानसदाभजभूपतितूँउरमाँहीं॥ हितभोगनजेजनमूढरमे
सुतऔरअगारसुदारनमाँहीं ॥ नरकेसुखतेपरिपूरणहैंतनु
छागसुकूकरशूकरमाँहीं ॥ सुखनारिनकोसभतुल्यअहेपुनरा
सभकूकरभूपतिमाँहीं ॥ २६ ॥ ज्ञानसहायकदेहलहीपुन
औरद्विजातमताजगमाँहीं ॥ भारतखंडसुकर्म्ममहीअतिदुर्ल
भहैभवमंडलमाँहीं ॥ कोविदकौनसुभोगभजेपुनआतमना
शचहैभवमाँहीं ॥ तूँद्विजहोइसुविश्वश्रवासुतमूढनज्यौंरत
भोगनमाँहीं ॥ २७॥ ॥कवित॥ वृथाक्षीनीआयुअवकीजी
एउपाइकछुऔरसभछोडअवएकहीकमीजीए॥ रामहैंपरेश
उरधारीयेलंकशसदाआपहाथजोरसीयरामजीकोदीजीए ॥
रामपदसेवअवकीजीएसुदेवजानपापनमिटाइसुवैकुंठपाइ
लीजीए ॥ नाँहिंजोकमाँहिंपुनअधोगतिजाँहिंसुनरामकीन
हानिकछुआपनोहीछीजीए ॥ २८ ॥ मेरोवाक्यमानोमोहिहे
तुहेवखान्योतोहिकीजीएसुसाधसंगभजोउररामको ॥शरण
जोआइतिनलेतेहैंवचाइउरराघवधिआइभलेमरकतश्याम
को ॥ सीयाकेसमेतनितचापवाणधरेरामसेवेशुभग्रीवपायो
राजनिजवामको ॥ विभीषणलक्ष्मनसेवतपदारविंदशिव
सेजपय्यापुनजाँकेनित्यनामको ॥२९॥ इतिश्रीमदध्यात्मरा
मायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **तोटकछंद** ॥ सुसुनेशुकके मु
खवाक्यकहे॥समसूरमहाँतममोहदहे॥ उररावणक्रोधमहान

भयो ॥ जनुदेतजलाइसुवाक्यकह्यो ॥ १ ॥ ॥ **सवैया** ॥ सेवकहैंदुरवुद्धिमहाँगुरुकेसममेउपदेशजनाँवें ॥ मैसभलोकनकोउपदेशकतूँमुहिभापतनाँहिंलजाँवें ॥ मारदिवोंअवहीतुमकोउपकारसुपूरवतेमनआँवें ॥ ताँकरराखतहोंतुमकोवधलाइकजाहिनफेरसुनावें ॥ २ ॥ ॥**दोहा**॥ महाप्रसादसुभापशुककंपतगयोस्वगेह ॥ शुककीकथापुरातनीसुनोसुधारसनेह ॥ ३ ॥ **शंकरछंद** ॥ शुकहुतोब्राह्मणपूरवपुनब्रह्मवित्तमहान ॥ शुभवानप्रस्थविधानकरतपकीनताँमतिमान ॥ सुरवृद्धिकाजविनाशदैतनकीनयागअपार ॥ तवदेवद्रोहितजानदैतनकीनद्वेपसुभार ॥ ४ ॥ ॥ **कवित** ॥ वज्रदाडनामइकराक्षसमहाँनशुकअंतरनिहारेयाँकोनीचगतिपावनो ॥ एकसमेआएसोअगस्तजोप्रशस्तऋपिशुकवनआश्रमसुकीनोतिनपावनो ॥ कीनशुकपूजनअगस्त्यपदगहेदीनदीनसुअमंत्रणप्रसादमेरेपावनो ॥ आमंत्रणमानभगवानजेअगस्त्यऋपिकह्योन्हाइआँवेंहमनदीजलपावनो ॥ ५ ॥ कुंभजपधारेतबअंतरनिहारेसोअगस्त्यसोप्रकारधारराक्षसहीआयोहे ॥ भोजनजोदींहिंतवलाइकसनेहशुकसामिषवनावोऐसीभाँतिसुअलायोहै ॥ चीतहुलसायोशुकतोहिकोअलायोभएवरषअनेकमांसछागकोनखायोहै ॥ तथाशुकमानपुनछागमांसआनतिनभोजनअनेकभाँतिमांसकोवनायोहै ॥ ६ ॥ भोजनकिकाजजववैठमुनिराजतवराक्षससुनीचछलकीनोहैवनाइके ॥ शुकनारिरूपधारमोहीसाविथारनरमांसवहुपकति

नदीयोहरषाइके ॥ पुनाद्दुरगयोक्रपिहेरखुनसयोसुअमेधनर
मांसदीयोशुकमेपकाइके॥ महामेध्यमांसतुमदीयोमतिनाश
भईहोहुशुक्रराक्षससुखाहुतूँअघाइके॥ ७ ॥ दोहा ॥ इहवि
धिदियोसुशापतिनशुकडरभयोमहाँन ॥ कुंभजमुनिकेपास
पुनकीनोशुकहिंवखाँन॥ ८ ॥ मोहिवखान्योछागकेमांसदेहि
विशाल॥ केहआपकेसोदियोदीनोशापकराल ॥ ९ ॥ सुनशु
कवाक्यमुहूरतंधार्योंकुंभजध्यान ॥ राक्षसकोकृतजानसभ
कीनोशुकहिंवखान ॥ १० ॥ अगस्त्यउवाच ॥ कवित ॥
तेरोअपकारीकोईराक्षसविकारीदियोमानुपकोमांसमोसों
ताँहींछलकीनोहै ॥ विनाहीविचारमुनिसत्तमउदारमैंनेधारउ
रक्रोधअतिशापतोहिदीनोहै ॥ वचनहमारोतुमसाचुहीनिहा
रोउरहोइतनुराक्षससुएहीउरचीनोहै ॥ रावणसहाइकररा
क्षसकोदेहधरशापअंतसुनोमुनिआगेजानलीनोहै ॥ ११ ॥
रावणविनाशहितआवहिंसुरामजवलंककेसमीपसभवान
रमिलाइके ॥ रावणपठाइतुमरामकेसमीपजाइहोइदूतभारो
शुकपिखेंमनुलाइके ॥ होइशापअंतभगवंतपदपाइतवराव
णकेपासतत्त्वज्ञानतूंसुनाइके ॥ यौंअगस्त्यकह्योशुकविप्र
दुखलह्योपुनवेगभयोराक्षससुदेहपलटाइके ॥ १२ ॥ रा
वणकोपाइभयोचारोसुखदाइअवसानुजनिहाररामपुजीअ
भिलापीए ॥ रावणकोज्ञानतिनकीनोहैवखानपुनभयोद्विज
राजसुवैखानशिहैसाखीए ॥ मालवाननामआयोराक्षसम
हानमतिमानवड्डुरावणकीमातपितभापीए ॥ रावणकोभा

खिओवनाइउपदेशतिनशांतउरआतमसुनीजेताँकीसाक्षी
ए ॥१३॥ **मालवानउवाच** ॥ ॥**कवित**॥ सुनोदैत्यराजम
मवाक्यहितकाजपुनसुनकेकरीजेजवमनमैसमाइहैं॥ पुरीकि
मझारीजवआईरामप्यारीसुलताँहींतेलगाइयौंनिमित्ततुदि
खाइहैं ॥ तेईमैवखानोंतुमधरोनिजकानोंनतोहोंहिगेविनाश
सभसूखतुनशाइहैं॥ खरघोरतुपुकारेंमेघभीतकारेपुनलंकाकि
मझारेशोणतपवसाइहैं ॥१४॥ लिंगदेवरोवतप्रस्वेदवहुकं
पमानगिरेंवहुभाँतिउतपातकोदिखाइहैं ॥ कालिकासुस्वेतदं
तहासतनिकारआगेगऊअनकेमाँहिंसुतरासभसुजाइहैं ॥
मूपकनिवलमारजारसाथयुद्धकरेंपन्नगगरुडसंगकोपकैल
राइहैं॥विकटकरालमुंडपुरुषविशालपुनकारपीरेरूपगृहओर
निरखाइहैं ॥१५॥ इननेसुआदिलैनिमित्ततुअनेकहोंहिंकुल
रक्षपालहितशांनिअवकीजीए॥ सीयसतकारधनसाथलैअ
पारदशकंठअवहाथजोरराघवकोदीजीए ॥ रामजलशाईहैं
नारायणसुजानउरकहोंदशमौलिसुनहपनाँहिंकीजीए॥ आ
पऔमंदोदरीलवाइमेघनादसुतपाँइँजाइपरोनिजप्राणबख
शीजीए॥ १६ ॥ ॥ **सवैया** ॥ जिनकेपदपंकजपावतही
जनज्ञानितेरंभवनीरधपारे॥ जनरामकिसेवनतेअतिपावन
मानवनावहुरामसुरारे॥भजतूंउरभाववढाइभलेवहुरामवसें
सभचीतमझारे॥दुरचारसुयद्यपित्वंजगमैहरिसेवनतेमिटेंपा
पतुमारे ॥ १७ ॥ ॥ **दोहा** ॥ कीजेमेरेवाक्यकोराजन
कुलहितकाज ॥ तीनभवनशिरताजतुमकीजेलंकाराज ॥

॥ १८ ॥ मालवानहितवाक्यकोधरनरावणकान ॥ दुष्टातमद
शकंठचहुकालउमाबलवान ॥ १९ ॥ कवित ॥ मालवानओ
रकहेवाक्यसुकठोरखलराक्षसकोराजदशकंठखुनसायोहै ॥
मानवअधीनरामताँहींकीवडाईकरेसुनोसभलोकमालवान
सुचौरायोहै ॥ वानरअधीनकहेबलीपरवीनराममहामतिहीन
तातवनकोपठायोहै ॥ तेरीबातपाईकछुरामहैपठाईजरछो
डकुलरीतिपक्षरामकोअलायोहै ॥ २० ॥ जाहिघरमाँहिंअति
वृद्धमतिनाँहिंकछुबंधुजानतेरेसअवाक्यहैंसहारिआ ॥ फे
रनउचारोहाथदंडलैपधारोयहितेरेदुरवाक्यकानजारतहमा
रिआ ॥ ऐसेसुनगुनवानगएमालवानचढरावणमहलकपिसे
नकोनिहारिआ ॥ जेईपासआएभटसकलपठाएसंगरामजाइ
लरोइमरावणउचारिआ ॥ २१ ॥ लक्षमणदीनोधनुरामकरली
नोपुनरावणनिहारहरिक्रोधउरधारिआ ॥ महलउदारशिरछ
त्रतुहजारफिरेंकीटशिरलसेंसुअमातपरिवारिआ ॥ अर्धचंद्रा
कारइकबानसुउदाररघुवीरखुनसाइसुनिखंगतेनिकारिआ ॥
छत्रतुहजारढशमुकटउदारपुनआधेहीनिमेपमाँहिंसभेकट
डारिआ ॥ २२ ॥ रावणअचँभमानभयोसुलजाइमानऊच
वासत्यागवरेभोनकेमझारिआ ॥ मंत्रीसुबुलाएसुप्रहस्तआ
दिआएकरोकपिनलराईरणहेतुवैपधारिआ ॥ भेरीऔमृदंग
वजेयोधिनसनाहसजेगजेरणधीरवजेगोमुखनगारिआ ॥
सिंहद्वीपिखरोंपरिचढकेपधारेकईकईभएमहिपऊठनअसवा
रिआ ॥ २३ ॥ दोहा ॥ खड्गत्रिशूलसुपाशिधनुयष्टीतोमरसांग ॥

लेसभट्टारनकोचलेपुरपालनकशतांग ॥ २४ ॥ सवैया ॥ उतरा
मसुपूर्वहीसभवानरसंगरकेहितप्रेरचलाए ॥ तरुपाडउखाडसु
भूधरकोपुनश्रृंगपहारनहाथउठाए ॥ निकसेकविरावणकीध्व
जनीरणचाहिभरेपुरद्वारनआए ॥ कपिराघवकेहितकाजसभे
चढलंकअवासनपैकिलकाए ॥ २५ ॥ कवित ॥ द्रुमऔपहारपु
नमूठनउभारकपियूथसुहजारकोटियूथशिरदारिआ ॥ कोटि
शतचारपुनऔरकिलकारआएलंकगढघेरलीनोचहेंकपिमा
रिआ ॥ कूदेंबलधारकपिगजेंकिलकारमुखरामजीतकहेंल
क्षमणजीतसारिआ ॥ राजाशुभग्रीवकेसुजीतकेनिशानव
जेहोइबातसाचीरघुनाथप्रतिपारिआ ॥ २६ ॥ दोहा ॥ ऐ
सेमुखमैभापकपिलरेंसुदैतनसाथ ॥ किमनलहेंरणजीतक
पिसाथभएरघुनाथ ॥ २७ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ हनुमानअंगद
कुमुदनीलनलसभशरभसुमैंदद्विविदपहिचानीए ॥ जांबवाँ
नदधिमुखकेसरीसुतारभटऔरबलवंतजेईयूथपवखानीए ॥
गढकेसुद्वारजाइचढकिलकारकपिचारोदिशरोकीदशकंठरज
धानीए ॥ तरुऔपहारकोंउखाररणमारेंकपिकोटेंनखदंतकपि
महाबलवानीए ॥ २८ ॥ राक्षसउदारसभट्टारकोपधार
आएभिंडपालपरुशुत्रिशूलअसिधारके ॥ वानरकीसैन्य
माँहिंआयुधचलाँवेंभलेमहाकायमहाबलहाथनउभारके ॥
वानरसुमारेंरामजीतकोउचारेंखलराक्षसकोपाँहिंकपिभट
किलकारके ॥ मांसश्रोणकीचभयोसंगरकेबीचबहुभयेहीसं
ग्रामसुअभूतहीअकारके ॥ २९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तेगजवा

जिसवारभएरथकांचनकेपुनदैत्यसवारें ॥ राक्षससिंहभिरेंरणमैसुदशोदिशिमारहीमारपुकारें ॥ राक्षसऔकपिवीरवलीउरआपहुँआपनिजीतसुधारें ॥ राक्षसकोकपिवीरहनेकपिवीरनकोपुनराक्षसमारें ॥ ३० ॥ रामनरायणडीठकरीपुनदेवनअंशजएसुभवानी ॥ होतभएवलवंतसभीकपिताँहिंकरेजनुअंमृतपानी ॥ सीयप्रकोपसुपापहनेपुनरावणपालकहैमनिहानी ॥ कांतिहतीवलटूटगएरणराक्षसमारकरीकपिघानी ॥ ३१ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ पादअवशेपनिजसैन्यतुविशेपहनीहेरमेघनादमनक्रोधवहुधारिओ ॥ धातावरदीनोभयोव्योममाहिंलीनोपुनब्रह्मअस्त्रजोईसोईमनमैसंभारिओ ॥ नानाहूँविधानकेसुवानलैकमानतजेवानरअनीकरणमाँहिंमलडारिओ ॥ वाणजालघाएजनुवारिदवसाएसुअचंभकपिमानउररामकोचितारिओ ॥ ३२ ॥ ॥दोहा ॥ ब्रह्मअस्त्रकोजानउररामकीयोतिहँमान ॥ क्षणहरिमौनसुधारपुनअतिकोपेभगवान ॥ ३३ ॥ ॥कवित ॥ ॥ रामकोपधारेसमपावककरारेवलवानरदिखारेहरिवोलेमुसकाइके ॥ चापमोहिल्याइअववेगभ्रातधाइकरमारोंमेघनादब्रह्मअस्त्रसुचलाइके ॥ मेघनादसुनेयहिरामकेवखानेवच्चभयोसावधानउरत्योडरपाइके ॥ मायकसुदैत्यखलकरतअनेकछलभयोडरभारीगढलंकधस्योधाइके॥ ३४ ॥ रामतोनिहारीगिरीवानरकीसेनासारीभयोदुखभारीहनुमानकोवखानीआँ ॥ क्षीरनिधितीरइकद्रोणगिरिवीरदिव्यऔपधिमहानअवसोई

वनेआनीआँ ॥ वेगभय्याजय्योपथिवेरनलगय्योकछुवानर जिवय्योयशहोइतेमहानीआँ॥ वायुकेकुमारचलेवेगसोंपधा रपथिरामचंद्रआइसुसुशीशपरमानीआँ ॥३५॥ द्रोणद्वीप हारसुउखारकपिआन्योसभवानरजीवाइगिरितहाँपठुचायो है॥पूरवसमाननादभैरवमहानकपिगाजेवलवानदशकंठसुन पायोहै ॥ विस्मयअपारभयोरावणमझारउरपाइदुखभारीमु खवाक्ययौंअलायोहै ॥राघवमहानमेरोवैरीवलवानजगदेव तावनायोगढलंकचढआयोहै ॥ ३६ ॥ ममसैन्यकेसिदारसभ चढेनविचारकरेंरामवधकाजएहीउरआनीआँ ॥ मंत्रीअर भाईमेरेजेईसुखदाईसभसंगरनिमित्तजाँहिंआइसुकोमानी आँ॥ जेईनाँहिंजाँहिंरणभूमितेडराँहिंपुनरहेंपरमाँहिंनिजप्रा णहितठानीआँ ॥ तिनकोसुमारोंनिजदेशतेनिकारोंमतिभई तिनहानममआइसुनमानीआँ॥ ३७॥ सुनकैभवानीसभ्भट रेदशकंठवानीकोविदसुधीररणचलेअसिधारीआ॥ अतिका यसुप्रहस्तमहानादमहोदररावणकीसैन्यकेजेभापीएसिदारी आ ॥ देवशत्रुएकपुनदूसरोनिकुंभसुनतीसरोसुरांतकनरांत कहैंचारीआ ॥ औरजेईवीरवलवंतरणधीरकपिसाथखेतहेत चलेसैकेहहजारीआ॥ ३८॥ वानरकीसैन्यधसराक्षसअपार वलमारेंकपिधाइखलआयुधचलाइहैं ॥ शूलभिंडपालवा नखडगकरालसुविशालभुजनानतानपरशुवगाइहैं॥ औरसु अनेकभाँतिअस्त्रनकोघातकरेंमारकपियूथपसुभूमिमैगिरा इहैं॥ वानरउखारकेपहारतरुशृंगमारेमूठकेप्रहारनखकाटका

दखाईहैं॥ ३९॥सवैया॥नखदंततमुष्टिनधाइघनेवरराक्षस
केकपिप्राणनिकारें ॥ पुनरामहनेरणराक्षसकेचितकचितसूर
यकेसुतमारे॥हनुमानहनेपुनऔरकपीशनराक्षसकेशिरमैत
रुझारें॥रघुनायकतेजसुपाइभलेकपिहोइवलीरणमैकिलका
रें ॥ ४० ॥ ॥ दोहा ॥ रामप्रभावविहीनजेराक्षसउमाम
लीन ॥ कपिनतुल्यकिमहोंहिंवलिभएसुसंगरदीन॥४१॥सर्वे
श्वरपुनसर्वमयसर्वविधाताजोइ ॥ मायामानुपवेपधरकरें
विडंवनसोइ ॥ ४२ ॥ सदासच्चिदानंदमयरामवखानेवेद ॥
मायारणलीलाकरेंसदारहेंनिरखेद ॥४३ ॥इतिश्रीमदध्यात्म
रामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेपंचमोऽध्यायः ॥ ५॥
॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ सुनकरणमंडलसै
न्यहतीअतिकायसुँआदिमहावलधारी॥मनरावणकेदुखता
पभयोउरभीतरक्रोधभयोपुनभारी ॥ पुरपालनकेहितथापध
रेमघवाजितपूतसुलंकमझारी ॥ भिरणेरणरामसोंआपग
योसंगराक्षसलैसुवडेवलकारी॥ १॥स्यंदनमाँहिंअरूढभयो
करआयुधऔसभअस्त्रसँभारे॥राघवऊपरदौरपर्योदशकंध
रमारहिंमारपुकारे॥ भीमभुजंगमसेशरलैकपिवीरवलीरणमं
डलमारे॥ औरनकीगतिकौनगनेशुभग्रीवगिरेरणभूमिमझा
रे॥ २॥पाणिगदारणमाँहिंखडेसुविभीपणरावणनैननिहारे॥
दानवदाजदईशकतीसुविभीपणओरहनीरुपभारे॥पावकको
मुखमाँहिंवमैजनुआजुविभीपणप्राणनिकारे॥ रामअभैइन
कोसुदियोवधलायकनालक्ष्मनविचारे॥३॥ शंकरछंद ॥

पिखआवतीवहुशक्तिलक्षमणऐसवदनवखान ॥ धरधीर वीरयवंतलक्षमणहाथलीनिकमान॥ झटरामभक्तविभीषण केखरोआगेजाइ ॥ विनकंपमेरुसमानसुंदरऐसडीलसुहाइ ॥ ४ ॥ साशक्तिलक्षमणदेहमैंसुअमोघपैठीधाइ॥ सभशक्ति मायाईशकीक्षणमाहिलेइउपाइ ॥ प्रभुसर्वशक्तिअधारलक्ष मणहैपरातमरूप ॥ क्याकपटशक्तिसुकरसकेतिहँशेपहरितनु रूप ॥ ५ ॥ सुतथापिमानुपरूपलीनोभएतत अनुसार ॥ तन भईगिरिजामूरछावहुगिरेभूमिमझार॥ दशकंठधायोलेनको नहितोलिओकरजाइ ॥ वललाइरावणहारिओपुनरह्योउर विस्माइ ॥ ६ ॥ प्रभुसर्वजगकोसारजोपरमेशआहिविरा ज॥किहँभाँतिताँकोतोलईलघुराक्षसनकोराज॥सुग्रहीतका मंलक्षमणंपिखरावणंहनुमान ॥ कुपमुष्टिछातीहनीताँको लगीवज्रसमान॥७॥ अतिमुष्टिकेसुप्रहाररावणगिर्योभूमि मझार ॥ मुखनयनकानसुजाइलोहूझरेमनोपहार ॥ दशकं ठनयनसुविभ्रमैंपुनखडोरथढिगजाइ ॥ हनुमानलक्षमणधा इकेझटलिएहाथउठाइ ॥ ८ ॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ सुराम केसमीपबाहुमाँहिंधारआनिओ ॥ हनूमतंसुहारदंसुभक्त शिष्यजानिओ ॥ लघुत्वभावपायजोअजन्मभारभारीया ॥ नरायणांशजानकैभईसुशक्तिन्यारीया ॥ ९ ॥ भुजासुवी शस्यंदनेधसीसुवेगधाइके ॥शनैसुपाइहोशराक्षसंपकोपपा इके ॥ सुचापहाथमैलियोसुरामओरधाइओ ॥ निहाररा मकोपकेउमाहनूबुलाइओ ॥ १० ॥ हनूमतंअरूढरामस्यं

क्ष्मणंजिवाइये ॥ महौषधीसुआनवेगढीलनालगाइये॥ सु
वानरोंजिवाइफेरऔषधीलिआइके ॥ तथेतिभाषमारुतीच
लेसुवेगधाइके ॥ १९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वायुवेगगयोजल
सागरकेपारपयोयहीसमाचारहलकारेलखपायोहै ॥ रांजन
केराइरघुवीरहितभाईसुवुलाइहनुमानक्षीरसागरपठायोहै ॥
भ्रातकोजिवाइसुमहौषधीअनाइयहिसुनीदशकंठहलकारेसु
सुनायोहै॥भयोडरभारीगयोरातिकेमझारीकालनेमीकेभवा
ससुउदासदुखपायोहै ॥ २० ॥ एकलोनिहारआयोभौनके
मझारदशकंठशिरदारकालनेमीविसमायोहै ॥ ज़ोरेकरदोऊ
पुनडरेउरसोऊकरपूजाअरचादिठाढोआगेयौंअलायोहै॥ रा
क्षसकेराजकरोंकौनअबकाजतुमरातिकोइकेलोगृहकाहेम
मआयोहै॥दुखीअतिदीनमनरावणमलीनसुनवाक्यकालने
मिकोहिमालजाअलायोहै ॥ २१ ॥ कालवलवानममदु
खतोमहानभयोमाररणसाँगरामभ्रातमोहिमारिओ ॥ महा
वेगवानलेनऔषधीमहानपुनताँहिकेजिवानहितहनुहैपधा
रिओ ॥ विघनजिहोइतिहँकरोकाजसोइतुममहामतिमान
काजवनेगोसवारिओ ॥ मायामुनिभेषधरहनुमानमोहकर
कालकोवितावाइआउमंदिरमझारिओ॥ २२ ॥ रावणकीसुनी
वानीकालनेमीहूँवखानीसुनियेलंकेशवाततोहिकोउच्चारहों॥
काजतेसवारोंनाहिंआपनोविचारोंकछुतोहिहितकाजनाहिं
प्राणनिजधारहों॥ होइगोमारीचवनहालसोहवालममविना
हींसंदेहपथितांहींकेपधारहों॥वुरोजिनमानकछुकरतवखान

हिनहोइगोतुमारोमनऐसेहीविचारहों ॥ २३ ॥ हनेसुलभाईकु
लराक्षसकीघाईअवजीवनसोंकाजदशकंठननिहारिये ॥ जा
नकीसुराजतेरेकाजनाँहिंकितेसुनआपनोशरीरजडरूपकैवि
चारिये ॥ सीयरामदीजियेविभीषणकोलंकराजतपोवनवीच
दशकंठजूपधारिये ॥ प्रातजलनय्येकृत्यनित्यकीकमय्येअव
डाररराजसाजमुनिभेषकोसवारिये ॥ २४ ॥ शंकरछंद ॥ एकां
तठौरसुवैठनीकेआसनंकुशधार ॥ गुणविषयजेप्रतिबंधकास
भदेहिउरतेटार ॥ सभरोकइंद्रयआपनेमनआनआतममाँहिं ॥
इहभाँतिकीजैलंकपतिसभपापतेमिटजाँहिं ॥ २५ ॥ गुणप्रकृ
तिन्यारेआतमानिपपापलेहुविचार ॥ संसारथावरजंगमोत
नबुद्धिइंद्रयधार ॥ आब्रह्मात्रिणपर्यंतसुनिएदेखिएपुनजोइ ॥
सभप्रकृतिमायाभाखियेइहताविनानहिंकोइ ॥ २६ ॥ जगज
न्मऔस्थितिनाशकायाआहिकरणेहार ॥ शुभरक्तश्वेतकृ
ष्णप्रजाविरंचेवहुविस्तार ॥ मदकामक्रोधसुलोभआदिक
अहंपूतमहान ॥ हिंसासुत्रिष्णाकंन्यकादशकंठलेहिपछान
॥ २७ ॥ निजगुणदिखाइसुआतमाकोमोहदेवेडार ॥ आरो
पहैपुनआतमामैआपनेसुविकार ॥ वशिआपनेकरताँहिंको
पुनक्रीडहैमिलताँहिं ॥ अतिशुद्धआत्मसुजोमिलेदुखपेखहैनि
जमाँहिं ॥ २८ ॥ सुभुलाइआपनआपकोनिजआतमासुपरे
श ॥ मायास्वगुणकृतमोहतेवहुपाइजगतकलेश ॥ जवमि
लेसाचेगुरूकोवहुकरेवोधउदार ॥ सुनिदत्तदृष्टिनिजातमा
दशकंठलेननिहार ॥ २९ ॥ दोहा ॥ जीवनमुक्तसुहोवईत्या

गेबंधनसोइ ॥ प्राकृतजेगुणभाखियेरहेनताँमैकोइ ॥ ३० ॥
शंकरछंद॥ दशकंठतूँनिजआतमाकोएवलेहिविचार॥ सभ
शोकइंद्रयआपनेअवतजोसगलविकार ॥ निजप्रकृतिभिन्न
स्वआतमाकोंपेखहैंमनलाइ ॥ दशकंठसाचीभापहोंसभबंध
तेमिटजाइ॥३१॥ **गीयामालतीछंद॥**ध्याइनिर्गुणनाँसकेंत
वंसगुणध्यानहिंकीजिए ॥ लंकेशतेहितभापहोंअवमानसोई
लीजिए॥ हृदिपद्मकोशसुहेमपीठेजडेमणिगणशोभहीं॥ मृदु
विछेस्वच्छविछावणेपिखदेवतामनलोभहीं ॥३२॥ ॥ **शं
करछंद॥** तहँजानकीसहरामबैठेदामनीघनश्याम॥शुभवीर
आसनकंजद्रिगपटचंचलाअभिराम॥ शिरकीटहारकियूरकौ
सुभनूपरेझनकाँहिं॥ करकटकसुंदरशोभहींवनमालगललश
काँहिं॥३३॥लक्षमणलियेकरदोधनूरघुवीरसेवेनीत॥इहभाँ
तिरावणध्याइतूँपरमातमाकोचीत॥ प्रभुपराभक्तिसुकीजिए
सभबंधतेमिटजाइ॥ शुभचरितसुनतूँरामकेदशकंठनिजमन
लाइ ॥३४॥इहभाँतिपूर्वसुपापतेक्षणएकमैंमिटजाइ॥अति
अग्निमेंजिमतूलराशीपडीनाठहिराइ॥भजरामपूर्णसुएकतूँपु
नत्यागवैरमहान॥निजभक्तियुक्तसुरामभजिएपुरुपजौनपुरा
ण ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे
युद्धकांडेषष्ठोऽध्यायः॥ ६ ॥ ॥**श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥
॥.॥ **दोहा** ॥ ॥ कालनेमिकेवाक्यसुनकहेमहाम्रतसार ॥
रावणकेदुखभयोउरक्रोधभयोपुनभार ॥ १॥ **कवित**॥ करे
हगलालउरकोपतोविशालभयोतातेघृतमाँहिंजनसंवरसुडा

रिओ ॥ हनोंअबितोहितेनेआइसुनकीनीमोहिरामकछुदियो
ताँतेऐसेसुउचारिओ ॥ राघवकोदासभयोमोहितेपलाइगयो
कस्योकालनेमिदव्रकोधवनेडारिओ॥ बातनसुहाइतवकरोंते
सहाइमुखऐसेतुअलाइकालनेमीतुपधारिओ ॥२॥ रावणके
वाक्यमानगिरिजापयानकियोहनुमतविघनसुकालनिजका
योहै ॥ हिमगिरिजाइउमाकियोहैउपाइइकबडोविसतारव
नतपकोबनायोहै ॥ मुनिभेपधारेबहुशिष्यपरवारेकरलईअ
क्षमालडीमडामतुसुहायोहै ॥ पथिहनुमानतिनकीयोहैअडा
नइमअंजनीकुमारतहाँवेगयुतआयोहै ॥ ३ ॥ देख्योहनुमा
नइकआश्रममहाँनबहुचिंतगलितानमनएहुहैविचारिओ ॥
मंडलनवीनोंतपवनहैनवीनोजबआगेहमआएतबएहुननि
हारिओ॥मारगभुलानोममचित्तभ्रमसानोकिधोंधसोंवनवी
चयहिआश्रमअपारिओ ॥ देखमुनिधीरपीवोंशीतलसुनीर
पुनद्रोणगिरिजाँउँहनुमाननिरधारिओ॥४॥ ऐसेतुवखानवरे
वीचहनूमानवनयोजनमहानइकआश्रमसुहाएहैं॥कदलीख
जूरपुनपनसगरूरफलपाकेअतिभारेतरुभूमिलटकाएहैं ॥ त
पवलहेरमृगशेरसुचुफेरचरेंभएमीतभारेवैरभावविसराएहैं॥
ताँहिंवनवीचकालनेमिखलनीचइकआश्रमबनाइठाटनूतन
बनाएहैं ॥ ५ ॥ इंद्रयोगधारकरगोमुखीसवारशिवलिंगहैउ
दारतहाँपूजेमनलाइकै ॥ क्षीरसोंनवाएपत्रकुसुमचढाएधू
पदीपलेवेफेरीमुनिगालकोवजाइकै ॥ भोगकोलगाएमुख
मंत्रतुअलाएपुनकरेशिवध्यानदोऊनैनकोमिलाइकै ॥ हनु

मानपेखमुनिजानिओविशेषपुनकरीअभिवंदनाभवानीढि
गजाइके ॥ ६ ॥ भगवनरामकोसुदूतपहिचानोमोहिहनुमान
नाममेरोलोकमैवखानीए ॥ रामकाजहैमहानोक्षीरसिंधुमैहै
जानोभईत्रिषभारीकहींपायतहैपानीए ॥ सुयथेष्टपानजल
कीजिएवखानमुनिवेगमोहिजानोंउरयहीपहिचानीए॥ सुनी
हनुमानवानीकालनेमिहूँवखानीसुनीएभवानीवातवहीनिज
कानीए॥७॥ कमंडलुनीरतुमपीवोकपिधीरयहिपाकेफलभारे
अवनीकेमुखदीजिए ॥ आश्रमनिवासकरोमनकेकलेशहरो
सोइरहोनीकेउरचिंतनाँहिंकीजिए॥ भूतऔरभावितप्रवलकै
पछानोसभभईवातलंकअवसोईसुनलीजिए ॥ लक्षमणहैंउ
त्थानेवानरजिवानेसभरामकेनिहारेकपिउरमैपतीजिए॥८॥
॥सवैया॥सुनकैहनुमानकह्योमुनिकोसुकमंडलुकेजलनात्रि
पजाए॥ जलकोसरमोहिदिखाइदिजेजलप्यासभईमुनिमेअ
धिकाए॥सुतथामुखभाषमहाँकपटीकपटीइकशिष्यसुताँहिंवु
लाए॥वटुवायुकुमारकुजाइभलेअवनीरतलावसुदेहिदिखाए
॥९॥ नैनमिलाइसुनीरअचोपुनआवहुवेगसुपासहमारे॥ मं
त्रकरोंउपदेशतुमेसुमहौषधिजाँकरनैननिहारे॥भाषतथाहनु
मानगएद्रिगमीटधसेजलतालमझारे ॥ पीनलगेजलकोजव
हीमकरीइकआइगहेकपिभारे ॥ १० ॥ घोरस्वरूपमहानति
सेपिखताँहनुमानभयोरुपभारी ॥ दोकरमाँहिंगहीमकरीमु
खफारभलेमकरीवहुमारी॥ दिव्यअपच्छररूपधरेहनुमानव
हीनभमाँहिंनिहारी॥ हैनभतेअवहीउतरीजनुरूपविराजतताँ

निऔषधीधीररघुपतिसंगसुपेणके ॥ करीचिकित्सावीरलक्ष
मणलिएजिवाइकै॥ १८॥ ॥ सवैया ॥ सुपतोत्थितज्यौंल
क्ष्मंनउठमुखभीतरयाँविधिबैनअलाए ॥ कहँजाहुरहोरण
ठाँढअबैदशकंठदिऊँयमलोकपठाए ॥ इहभाँतिकह्योलक्ष्मं
नजवैसुनकैरघुनंदनजूहरपाए ॥ शिरचूमउमाउरप्रेमभरेर
घुनायकभ्रातसुकंठलगाए ॥१९॥ कवित ॥ ॥ कह्योभगवा
नसनमानहनुमानकरतेरेहीप्रसादसभहोंहिंकाजमेरिआ॥ ल
क्ष्मणभाईकेमिटाइदिएघाइसभतेरेहीप्रसादआजुजीवतनि
हारिआ॥ऐसेपुनभाषरघुनाथकपिसाथलिएऔरकपिनाथपु
नसाथहीपधारिआ ॥ चढेसुसंग्रामतेजधामभगवानपुनसा
थसुविभीषणकेमंत्रहैविचारिआ ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ले
पाथरपादपघनेवानरवेरणधीर ॥ समरभूमिसनमुखचले
महावलीभटवीर॥ २१॥ सवैया ॥ इतवानरलेकरआयुधको
रणमंडलमैचढकेभटआए॥ उतरावणरामकिवानहत्योगढलं
कविखेसुमहादुखपाए ॥ गजराजयथामृगराजकिघावन
पंनगज्यौंखगराजकिघाए ॥ दशकंठहरेरणराघवतेतिमवैठस
भासददैत्यबुलाए ॥ २२ ॥ बैठसभासभैदतनकोतबरावण
याँविधिवैनअलायो॥ मानुषकैमरणोहमरोसुपितामहिंपूरव
आपवतायो ॥ मानुपनामुहिमारसकेयहिआपनरायणभूत
लजायो॥मानुपदाशरथीहरिहोइसुमारणमोहिइहैचढआयो
॥ २३॥ अनरंण्यमहीपतिशापदियोमुहिपूरवसोसुनियोमन
लाई ॥ उपजेममवंशविषेपरमातमनावरणीजिनकीछवि

जाई ॥ तवपुत्रसपौत्रसबांधवकोतुहिमाराहिंगेरणमंडलआ
ई ॥ इमभापमहीपगयोक्षणमैजहँआपविराजतहैंसुरराई ॥
॥ २४ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ उपजेरामसुगूढनिश्चयमोकोमा
रहैं. ॥ कुंभकर्णअतिमूढनिद्राकेवशिहैभयो ॥ २५ ॥ ॥ दो
हा ॥ ॥ ल्यावहुताँहिजगाइकेमेढिगलाउनढील ॥ यौंसु
नगएजगावनेबडेजिनोकेडील ॥ २६ ॥ कवित ॥ वरेजवभौ
नतवस्वासनकोलगेपौनचलेतुउडतठहिराँहिनाँहिमंदिरे ॥ के
चितपलाँहिपुनकाहूँकीउडतपागभागचलेकेईकेईधसेगृहकंद
रे ॥ केचितउडानेतरुशाशलपटानेतोरखाँहिफलपाकेजनुकूद
कूदबंदरे ॥ केचितसुवीरधरधीरभटआएफिरओटदेदिवारन
कोधसेजाइअँदिरे ॥ २७ ॥ सवैया ॥ सुसुमेरुसमानसुभोज
नकेतहँआनघनेढिगपुंजबनाए ॥ मृगऔमहिषाअतिसूरघने
तहँकोटिनकोटिसुराक्षसल्याए ॥ ढिगशोणितकेबहुकुंभभरेम
दकेकलसेनहिंजातगिनाए ॥ चंदनसोंतनलीपतहैंढिगकोटिन
कोटिसुधूपजगाए ॥ २८ ॥ घनसेढिगराक्षसगाजतहैंपुनहाथ
नसोंतिहँकोतनघाएँ ॥ घटकाननकेपुनकाननमैवलवंतसभै
ध्वनिशंखसुनाएँ ॥ ढिगआनअनेकसुभेरिररेंपुनकोटिनकोटि
सुदुंदुभिवाएँ ॥ इहभाँतिसमीपसुआइसभेसुजगावनहेतम
हाँवललाएँ ॥ २९ ॥ खरऊठतुरंगमताडकशागजअंकुशताँ
तनमाँहिचलाए ॥ इकताडतताँहिगदागहिकैइककाष्टसुदंडअ
नेकलगाए ॥ इकशैलनकोशिरमारतहैंइकमारतमूशलकोढि
गआए ॥ इकखैंचतकेशनकोवलकैइककाननकाटतकोपव

ढाए ॥ ३० ॥ इहभाँतिरहेपचहारसभेनहिंजागतसोउलटो
अलसाए ॥ तवफेरविचारकीयोसभहूँढिगनारिनकेवहुझुंड
बुलाए ॥ अहिराक्षसदेवनकीदुहितानरकिंनरकीसगलीपु
नआए ॥ ढिगनाचतगावतआइसभैकरकंकणचंदनलेपल
गाए ॥३१॥ गलफूलसुगँधसुमालधरीद्रिगवारिजकीछवि
दूरनिवारी ॥ तनकांचनसीद्युतिछाजतहैपदनूपुरकीसुनियेझ
नकारी॥ विसतीरणजंघसुरंभसमाघनपीनपयोधररूपकुमा
री ॥ अतिकुंचितहैंअलिकाँजिनकीअतिनीलशिरोरुहसोहित
सारी॥ ३२॥ तिनकोमलहाथसुगातलगेध्वनिनेवरकीजवही
सुनपाई॥ द्रिगनींदघटीसुजगेतवहीघटकाननआननलीनजँ
भाई ॥ वडवानलसोमुखशोभितहैभुजऔरभुजंगमसीछवि
पाई॥ तवगागरकोटिपखारमहाँमुखमाँहिंपतारमनोजलजा
ई॥ ३३॥ मुखमांसधरेमदपानकरेदधिसोंपुनमेदघनोतिनखा
यो ॥घटशोणितकेवहुपानकरेमहिपामृगशूकरदाढचवायो॥
जवलोगनताँवहुभाँतिकस्योचलआपतवैढिगरावणआयो
॥ अभिवंदनरावणपादकरीगहिवाँहिदशाननपासविठायो
॥ ३४ ॥ रावणदीनगिरामुखवोलतभ्रातसुनोअवतोहि
सुनाऊँ ॥ भवमंडलकष्टभयोहमकोघटकाँननताँहिततोहिज
गाँऊँ ॥ ममशूरमहासुतपौत्रहनेपुनवांधवरामहनेदुखपाँऊँ
॥ मरणोअवआइसमीपभयोशिरकालगहेकृतकौनकमाँऊँ
॥ ३५॥ दाशरथीयहिरामभिलेशुभग्रीवकिसंगसमुद्रतरेहैं ॥
काटतमूलवलीहमरोरणमंडलराक्षसपुंजदरेहैं॥वानरनाशपि

खोंनकवीरणमंडलगाजतवीरखरेहैं ॥ याँहिततोहिजगाइलि
योअरिमारहुजेगढलंकभिरेहैं ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ भ्रात
निमित्तसुकोजियेदुपकृतकर्ममहाँन ॥ रावणकोसुविलापसु
नहसबोल्योघटकाँन ॥३७॥ सवैया ॥ पूरवमंत्रविचारकियो
तबहीनृपमैहिततोहिबतायो ॥ पापकरेभवमंडलमैतिनको
फलरावणतेंअबपायो ॥ रामनरायणहैपरिपूरणमैदशकंठसु
तोहिजनायो ॥ सीयअहेसभकीजननीइहभाँतिकह्योतवना
मनआयो ॥ ३८ ॥ एकसमेनिशिकोबदरीवनमैमुनिनारदजू
सुनिहारे ॥ मैहुँकह्योकरजोरदोऊकिहँठौरकहोमुनिआपप
धारे ॥ देवनमंत्रकरेमिलकैतिहँठौरहुतोइमताँहिंउचारे ॥
देवनमाँहिंसुन्योहमहूँतिहँठौरभएसुउदंततुमारे ॥ ३९ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ तुमदोनोपीडादईदुखीभएसुरभार ॥ विष्णुस
मीपसुजाइकैदेवनकरीपुकार ॥ ४० ॥ भक्तिभाइसुस्तुतिकरी
देवनकीनंबखान ॥ तीनलोककंटकबलीरावणहनभगवान
॥ ४१ ॥ मानुषकैमरणातिनैब्रह्माकीनबखान ॥ यातेंमानु
षरूपधरहनोताँहिंभगवान ॥ ४२ ॥ ॥ सवैया ॥ विष्णुक
ह्योसुरमंडलकोइमहींसुकरोंनहिंढीललगावों ॥ मैरघुभू
पतिकीकुलमैउपजोंपुनरामसुनामकहावों ॥ रावणकोरण
माँहिंहनोंतुमरेउरकेसभदूखमिटावों ॥ नारदयोंमुहिभाषगयो
दशकंठवहीअबतोहिसुनावों ॥ ४३ ॥ रामसनातनब्रह्मपिखो
अबवैरदिवोउरतेसभडारी ॥ मानुषरूपलियोहरिसुंदरसोभ
जियेउरप्रेमविथारी ॥ रामभजेंउरभीतरजेतिनहोतप्रसन्नसु

राममुरारी॥ भक्तिजनेउरभीतरज्ञानसुज्ञानहिबंधनदेतनिवा
री॥ ४४ ॥ ॥कवित॥ ॥भक्तितेविहीनजोईकीजियेसु
व्यर्थसभसुनोमनलाइअवसारकोवखाँनिए ॥ लीलाअनु
कारअवतारहैंअनेकहरितिनकेहजारपुनएकओरठाँनिए॥ रा
मअवतारपुनएकओरधारआहिताँहिकेसमानज्ञानरूपशिव
जाँनीए ॥ रामहिंजेध्यावेंतेईजाँवेंभवसिंधुपारपावेंपदह
रिकोसुचीतमैपछाँनिए ॥ ४५ ॥ सवैया ॥ जाँमनउज्वल
हैजगमैपुनतेजनरामकुनीतसुध्यावें ॥ रामचरित्रसुपाठकरें
भवबंधनतेक्षणमाँहिंमिटावें ॥ सीयपतीहरिरामहिंकोपदपूर
णवेसुखसोंजनपावें॥राघवकीयहिपुण्यकथाकविसिंहगुला
वसदामुखगावें ॥ ४६ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउ
मामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेसप्तमोऽध्यायः॥ ७ ॥ ॥ श्रीमहा
देवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ घटकाननकेयहिवाक्यसुनेभ्र
कुटीकुटिलादशकंठअलाए ॥ गिरआसनतेजनुभूमिपरेत
कियाइततेउतआपहलाए ॥ मुहिज्ञानजनावनकेहितनाघट
कानसुनोतुमपासबुलाए॥ सुनमोहिकियोउरमानभलोरुचि
होइभिरोअवसंगरजाए ॥ १ ॥ नहिंतोअवजाहुवरोघरमै
द्रिगनींदभईतुमकोअतिभारी ॥ सुनरावणकेयहिवाक्यउमा
घटकाननयोंमनमाँहिंविचारी॥दुष्टअहैदशमौलिबलीइहजाँ
नगयोरणभूमिमझारी॥वहुलाँघप्रकारगयोक्षणमैसुसपक्ष
वडोजनुभूधरकारी॥ २॥ निकस्योपुरितेइहभाँतिवलीसभवा
नरसैनकहेरडराए ॥ मुखभीतरयोंपुनगर्जितहैध्वनिसोंसभ

सागरतौंहिंनदाए ॥ कपिपुंजनकोदुखदेवतहैभुजमाँहिगहेमु
खभीतरपाए ॥ सहपक्षमनोगिरिआवतहैघटकाननपेखसु
कीशपलाए ॥ ३ ॥ कवित ॥ तकीराजधानीकपिडरेहैंभवा
नीलिएमुद्गरकोहाथमानोआपकालआएहैं ॥ फिरेकपिसैन्य
माँहिंवानरपलौंहिंआगेदौरनेनपाँहिंकीशघेरघेरखाएहैं ॥ मु
द्गरसोंमारेकरपाइनसोंडारेमलजंघनकेतानकपिसागरवगा
एहैं ॥ कुंभकानपेखहाथगदालैविशेषसुविभीषणप्रणामक
रीभ्रातवडेआएहैं ॥ ४ ॥ सवैया ॥ ॥ सुविभीषणहोतुम
रोलघुभ्रातमहामतिमोहिदयाअबकीजे ॥ हमरावणकोवहु
भाँतिकह्योतुमभ्रातसुमेअववाक्यसुनीजे ॥ यहिरामनराय
णहैजननीजगजानकीआपतिसेपुनदीजे ॥ सुनिओनकह्यो
करलैतरवारवखानतयाँहिंकिप्राणवधीजे ॥५॥ ॥ नराज
छंद ॥ ॥ सुफेरमेधिकारकैवखानिओसुनीजिए ॥ सुयाहि
लंकत्यागमेपुरीनवासकीजिए ॥ उभारहाथमैगदासुलंकतेप
लाइओ ॥सुचारलैप्रधानसाथरामपासआइओ ॥६॥ सुनेसु
कुंभकानवाक्यभ्रातजानआइओ॥ अलंवरामपादजीवकंठ
मैलगाइओ ॥ कुलंसुरक्षराक्षसंसुभ्रातमेविशारदे ॥ सुभ
क्तहैंमहाँनतूँकह्योसुमोहिनारदे ॥७॥ ॥ सवैया॥ ॥ अव
याहिविभीषणत्वंइहतेसुनमेदगनाँहिंसुरंचनिहारे ॥ इहहैअप
नोकिअहेपरकोरणमाँहिंभएमदसोंमतवारे ॥ इहभाँतिक
ह्योदगनीरवहेसुविभीषणभ्रातकेपादजुहारे ॥ ढिगरामकि
आइखडोहटकैवहुचिंतभईतिहँचीतमझारे ॥ ८ ॥ कीशन

कोकरपादहनेघटकानभयोरणमैहगराता ॥ मारतहैकपिसै
ननकोजनुकंजनकोसुदरेगजमातो ॥ रामनिहारसुक्रोधकि
योपुनअस्त्रसंभारलियोतिनवातो ॥ कानलुतानकमानवही
घटकाननकीभुजमैकियघातो ॥९॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मुद्गरस
हितसुदक्षकरगियोसुभूमिमझार ॥ कुंभकर्णरिसमानकेकी
नोनादअपार ॥१०॥ ॥सवैया ॥ ॥ करजाइपर्योरणमंड
लमैकपिऔरअनेकतिनेहनडारे ॥ कपिकूदपहारनजाइचढे
जनुकंपतसीतसुव्यारकिमारे ॥ घटकानसुरामभिरेरणमैक
पिमंडलऊरधहोइनिहारे॥ करक्षीणभयोघटकाननकोतरुशा
लसुदूसरहाथउभारे ॥ ११ ॥ रणराघवमारणदौरपर्योतवरा
मसुवासवबानलियोहै ॥ तरुशालसमेतसुवामकरंहरिवाण
चलाइसुकाटदियोहै ॥ युगक्षीणभईभुजतौखलकीपुनधावत
आवतनादकियोहै ॥ शरआधशशीयुगरामवलीधनुतानदुहूँ
पदमाँहिंदियोहै ॥ १२ ॥ काटदियेपददोतिहँकेवकुलंककिद्वा
रमैजाइपएहैं॥ पादभुजाविनभोपणसोमुखवाडवमानहुँव्या
तधएहै ॥ मानहुँचंद्रहिंराहुधएमुखरामशिलीमुखपूरदएहैं ॥
पूरततुंडनिखंगभयोअतिक्रोधतभीमसुनादकएहैं ॥ १३
॥ ॥ कवित ॥ ॥ स्वरेश्वरवानइकसूरजसमानरामकाढ
सोनिखंगतेशरासनचढायोहै ॥ वज्रकेसमानतेजतीक्षणम
हानघटकाननकेनाशकाजवहीतुचलायोहै ॥ भूधरविषाण
केसमानशिरभारीअतिदाडवडीलाँवीयुगकुंडलसुहायोहै ॥
वृत्रासुरशीशज्योंसुरेशवज्रमारकाटरामवानमारशीशकाट

त्योंवगायोंहै ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शीशलंककेद्वारमेंका
याजलधिमझार ॥ शिररोक्योंपुरिद्वारकोकायहनेजलचार
॥ १५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ देवऋषीश्वरगंधवऔपुनसिद्ध
विहंगमपंनगआए ॥ गुह्यकयक्षसुदेववधूमिलराघवकेय
शमंगलगाए॥ माँहिंअकाशविमानफिरेंसुरराघवहेरसुफूलव
साए ॥ देवऋषीतवदेखनरामहिंनारदताँहिंसमेचलआए
॥ १६ ॥ ॥ तोटकछंद ॥ ॥ मुनिनारदजूनभतेउतरे ॥ नि
जतेजप्रभादिगभासकरे ॥ पिखरामसुनीलसरोजसमं ॥ ध
नुहाथसमस्तसुवैरिदमं ॥ १७ ॥ कछुतांम्रसुनैनविशालल
से ॥ भुजदंडनऐंद्रसुअस्त्रवसे॥हृदिआरदवानरकोनिरखैं॥ श
रपीडमनोतिनकीकरखैं॥१८॥ पिखनारदसुस्तुतिआपकरी॥
सुगदागदवाकविभक्तिभरी ॥ जगनाथसुदेवनदेवहरे॥ पर
मातमराममुकुंदवरे ॥ १९ ॥ सुनरायणविश्वअधारव
ली ॥ जगसाक्षिणवंदनपादकली ॥ घनज्ञानसुलोकनपा
लकरें ॥ निजमायकमानवदेहधरें ॥ २० ॥ सुमनोसुखदुः
खअकारगहे ॥ निजमायकिनातसुतानरहे ॥ सभकेहृदिअं
तरशोभितहो॥निजज्योतिप्रभाजनुमोहितहो॥२१॥अमलात
मकोहृदिभासतहो ॥ सभबंधनमूलविनाशतहो ॥ निजनै
नउघारतहोजवही ॥ त्र्यलोकवनावतहोतवही ॥२२॥ सभ
कोतममाँहिंसँहारकरो ॥ जवरामसुनैनमिलाइधरो ॥ जिन
मैजगपूरणएक्कुरहे ॥ सभलोकचराचरजाँहिंकहे ॥२३ ॥ जि
हँमाँहिंनकिंचितलोपकरे॥ अभिवंदनब्रह्मसुतोहिहरे॥ पुरुषंसु

प्रधानसुकालअहैं ॥ तवव्यक्तअव्यक्तस्वरूपकहैं ॥ २४ ॥ इम जानतजेमुनिवृंदवरे ॥ अभिवंदनतेरघुनाथहरे ॥ तवशुद्ध स्वरूपविकारनहै ॥ घनज्ञानस्वरूपसुवेदकहै ॥२५॥ श्रुतिविश्वअकारसुतोहिभने॥तवभीतरनाँहिंविरोधगने॥यहिवादविरोधनिहारतजो ॥ तवमाँहिंनहींनरभापतसो ॥ २६ ॥ **गीयामालतछिंद** ॥ प्रभुविनातोहिप्रसादनिश्चयनाकदाचितपेखिए॥ निजमायखेलेंदेवतूँसुविरोधनाकछुदेखिए॥रविरश्मिजालविचारविनजिमनीरलोकनिहारही॥अज्ञानकरतिमरामतोमैंभ्रांतिजगतउचारही॥२७॥जिहँकोनवाणीकहिसकेमनजाँहिंनाँहिंनिहारहै॥नाहिंविपयतेरोरूपनिर्गुणरामवेदउचारहै ॥ प्रभुद्रिश्यनावहुहोवईकिहँभाँतिताँहिंनिहारहैं॥ विनपिखसेवेंताँकथंविनसेवनानिरधारहैं॥ २८॥ हरियाँहितेअवतारतैंभवरूपसुंदरधारिआ ॥जगभजेंबुद्धिसुवानतोकोंतरेंभवनिधिपारिआ॥वहुकामक्रोधादिकसुतसकरसदाचीतडराइहैं॥मार्जाररजिमजगमूपकनकोत्यौंसदाविलखाइहैं ॥ २९ ॥ तवनामसिमरणजेकरैंतवरूपउरमैंध्याइहैं ॥ तवकरैंपूजारामजेपुनकथाअम्रतसुगाइहैं ॥ तवभक्तसंगतिरामजेजगनीतचीतकमाइहैं ॥ जगसिंधुकोकरगोप्यदंसुखसंगतेतरजाइहैं॥ ३० ॥ ॥ **दोहा** ॥ याँतेसगुणस्वरूपतेमैउरभजोंअभेव ॥ मुक्तफिरोंसभलोकमैपूजेंममसभदेव॥ ३१ ॥ **कवित** ॥ देवनकोकाजरामकीनोहैमहानतुमभारघटकानभारभूमिकोउतारिओ॥लक्ष्मणहाथपुनभ्रातरघुनाथरणरावणकोपूतइंद्रजीतपेखमा

रिओ ॥ मारोगेसुरामतुमयाँहीतेअगारीदिनरावणजुलंकप
तिसाचुमैउचारिओ ॥ सिद्धनकेसाथरणदेखोरघुनाथसभच
रितविचित्रजाइगगनमझारिओ॥३२॥ दयामोहिकीजियेसु
रामचिरजीजियेसुदेवलोकजाउँमोहिआइसुसुदीजिये॥ ऐसे
तुवखानपुनआइसप्रमाणकरगएभगवानकृपानारदभनीजि
ये॥चलेपथिजाँहिंदेवपूजतसुताँहिंपुनगयोब्रह्मलोकजहाँपाप
सभछीजिए॥भ्रातघटकाननदशाननसुमूओसुनभयोउरता
पअवसोईसुनलीजिये॥३३॥ रावणकोशोकभयोसुखतोप
लाइगयोभईतन्मूरछासुभूमिमैगिरायोहै॥उठकैसंभारदोऊ
हाथनउभारमारमुखकेमझारहाइहाइविललायोहै॥कुंभकान
मूओपुनतातहैविहालहूओऐसीसुनिवातइंद्रजीतआपआयो
है॥तातमहामतितुमशोककोकरोविगतजीवतहीमेघनादको
हेदुखपायोहै॥३४॥देवनकेनाशकहोतेजकेप्रकाशकहोसाव
धानहूजेअवदुखकोमिटाइकै॥शांतिजपकरोंसभवैरिनकेशी
शहरोंकरोंअवहोमसुनिकुंभिलामैजाइकै॥होवेंगोअजीतस
भवैरिनतेजीतकरौंस्यंदनतेआदिवरपावकतेपाइकै ॥ ऐसे
तुवखानशुभहोमग्रहमाँहिंपुनगयोहैभवानीवद्धमेघनादधाइ
के॥३५॥लालपाटलालमाललालहीसुपागभाललालतनचं
दनकेलेपकोलगायोहै ॥ माँहिंसुनिकुंभलाकिमौनतिनधारी
पुनहोमकेनिमित्ततहाँपावकजगायोहै॥करेइंद्रजीतपुनबैठकै
निचीतहोमयहीसमाचारसुविभीषणनेपायोहै॥समाचारपा
इपुनरामकेसमीपजाइइंद्रजीतहोमउमारामकोअलायोहै ॥

॥ ३६ ॥ ॥ **विभीषणउवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सुनोरा
मतुमसोंकहोंमेघनादकेकाज ॥ अपनीजीतनिमित्तवह्निकर
तहोमखलराज ॥ ३७ ॥ निकसेगोरथअश्वपुनआयुधध्व
जासुचीर ॥ द्वइसंपूरणहोमजवमेघनादरघुवीर ॥ ३८ ॥ दे
वदैत्यनाहिंजितसकेंफेरतिसेजगमाँहिं ॥ याँतेलक्ष्मणहाथ
तिंहँवेगहनोंरणमाँहिं ॥ ३९ ॥ आज्ञामोसँगदीजियेल
क्ष्मणबलविख्यात ॥ निरसंशयघननादकोमारेगोतवभ्रा
त ॥ ४० ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ मैंहींचलोंसुआप
तहइँद्रजीतबलवंड ॥ पावकअस्त्रसुमारकैताँहिंकरोंशतखंड
॥ ४१ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ सुविभीषणफेरकह्योरघुनाथहिं
औरनमारसकेतिंहँकोई ॥ जिनद्वादशवर्षअहारतजेपुननाँ
हिंकदीदृगनींदसुजोई ॥ चतुराननआपकह्योमुखतेइहको
मरणोपुनताँहिंतिहोई ॥ लक्ष्मंनतजीजवऔधपुरीतवनींद
अहारतजेतिनदोई ॥ ४२ ॥ पदपंकजतेइननीलभजेयहिजान
लईसगलीहमरामा ॥ अवआइसुयाँहिंसुवेगदिजेअरिमार
करेतवपूर्णकामा ॥ निहचेयहिमारहिगोतिंहँकोसुधराधरशेष
महावलधामा ॥ हननहैदशकंधरकेसुतकोसभरोवहिंराक्षसकी
घरवामा ॥ ४३ ॥ **दोहा** ॥ ॥ जगतअधीश्वररामतुमनाराय
णभवहार ॥ लक्ष्मणशेषभनीजिएनिखिलधरणिअधार
॥ ४४ ॥ धरणीभारनिवारहिततुमलीनोअवतार ॥ जगना
टककेसूत्रकोतुमहोधारणहार ॥ ४५ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्म
रामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥सुनतविभीषणवाक्यपुनबोलेश्रीभगवान॥ ताँहिंरौद्रमायासकलजाँनोंमीतसुजान॥१॥ ब्रह्मअस्त्रवित्शूरअतिमायावीवलवान॥ ऐसोदैत्यवलिष्टअतिजोतैंकोनवखान॥२॥ अडिल॥ जानोंलक्ष्मणरूपसुनोमनलाइकै॥ ममसेवकपरवीनमहासुखदाइकै॥ भावीकार्यसुजानमोनउरमैगहो॥ होआजनदियोनमोहिसुमोरगोवहो॥३॥ ऐसेरामसुभापसुभ्रातवखानई॥ गिरिजावैभगवानसभीकछुजानई॥ लक्ष्मणसंगसुसैन्यवडीअवलीजिए॥ होजाइदशाननपूतवेगवधकीजिए॥४॥ हनुमतलौशिरदारसंगसभलीजिए॥ जांबुवानरिक्षेशसहाइककीजिए॥ लैसुप्रधानविभीषणसहतवजाइहै॥ होजानतसभैसुदेशविवरसुवनाइहै॥५॥ रामवचनसुनलक्ष्मणसंगविभीषणे॥ औरशरासनलियोबाणअतितीक्षणे॥ रामपदांबुजहाथसुशीशझुकाइकै॥ होलक्षमणकरतवखानसुनोमनलाइकै॥६॥ आजुशरासनबाणमोहिछुटिकाँहिंगे॥ मेघनादतनुफोडपतालधसाँहिंगे॥ भोगवतीकेनीरभलीविधिन्हाइकै॥ होपरहिंनिखंगहिंआइसुश्रोणमिटाइकै॥७॥ ऐसीलक्ष्मणवातसुमुखोंउच्चारकै॥ रामभ्रातकीतीनप्रदक्षणधारकै॥ इंद्रजीतवधचाहिसुमनमैहैधरी॥ होचलेउताइललक्षमणरणकीमतिकरी॥८॥ लक्षमणपाछेचलैसुहनुमतधाइकै॥वानरवहुतुहजारसुसंगलवाइकै॥सचिवविभीपणलीनमहाबलजेवरी॥ होचलेशीघ्रसभदौरढीलनहिं

कछुकरी ॥ ९ ॥ जांवुवानसभलोनेऋक्षवुलाइकै॥ लक्ष्म
णकसंगचलेसुहरपवढाइकै॥जाइनिकुंभलदेशलक्ष्मणपेखि
ओ॥होराक्षससैन्यअपारमहागणपेखिओ॥१०॥लक्ष्मण
खैंचशरासनशरहिंसुधारकै ॥ सावधानतवहोएवलसंभार
कै ॥ अंगदवीरसहाइकलक्ष्मणकेभए ॥ होजाँवुवानक
पिमेलिसंगसभहीलए ॥ ११ ॥ तवैविभीपणराजसुवैनउचा
रिआ ॥ सुनियेलक्ष्मणआजुसुवचनहमारिआ॥ घनसीरा
क्षससैन्यएहुपिखलीजिए ॥ होयोंकेभेदनमाँहिंयत्नवहुकीजि
ए ॥ १२ ॥ ॥ **तोमरछंद** ॥ अवसैन्ययाँहनडार ॥ तवमेघ
नादनिहार ॥ अववेगकीजेसोइ ॥ नहिंहोमपूर्णहोइ ॥ १३ ॥
दोहा ॥ ॥ हिंसाधरमकदुष्टअतिरावणकोसुतवीर ॥ तिंहँमा
रोधनुतानकैलक्ष्मणअतिरणधीर ॥ १४ ॥ ॥ सुनतविभी
पणवातकोलक्ष्मणक्रोधअपार ॥ खैंचशरासनवेगसोंत्या
गेविशखअपार ॥ १५ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ मघवाजितहोमकरे
जिंहँठौरसुवानअनेकतहाँतिनमारे ॥ पुनभूधरशृंगनवृक्षनले
कपियूथपवेघनसेकिलकारे ॥ सभदैतिनकेशिरमैमिलमारत
मारशिलानखसोंतनुफारे ॥ उरराक्षसकोपभरेतवहीअसि
तोमरवाननकीशविदारे ॥ १६ ॥ वानरऔपुनराक्षसकोगिरि
जाअतिभेरभयोतहँभारी ॥ गाजतयाँविधिशूरमनोनिधिक्षी
रमथावतफरमुरारी॥रावणकेसुततांहिंसमैनिजसैन्यदलीरण
माँहिंनिहारी॥होमनिकुंभलदेशतज्योनिकस्योअतिवेगमहाव
लधारी ॥ १७ ॥ स्यंदनमाँहिंअरूढभयोकुपिताँहिंलईकरमाँ

हिंकमाने ॥ दौरपर्योरणमंडलमैगिरिजाइहभाँतिसुबैनवखा
ने ॥ हौंघननादलरोरणमैलक्ष्मंननछूटसिजीवतजाँने ॥ ता
तकुभ्रातसुताँहिंपिख्योघननादसुनिपुरवाक्यअलाने ॥ १८ ॥
निपजेइहठौरवधेसुइहाँजगख्यातसुमेपितुकेतुमभाई ॥ रण
औसरबंधुतजेअपनेपरभृत्यभयोहमतेसुपलाई ॥ सुतभ्रात
किसाथसुद्रोहकरैअतिमूरखलाजनरंचकआई ॥ इहभाँति
वखानहनूमतपीठपिखेलक्ष्मंनकमानचढाई ॥ १९ ॥ ती
क्षणशस्त्रनअस्त्रनअंचितस्यंदनमैघननादसुहाए ॥ हाथलि
योधनुताँनुतिसोजिंहँहेरसुरेश्वरचापलजाए ॥ आजपिवें
कपिप्राणनमेशरयाँविधिकेमुखवैनअलाए ॥ ताँहिंसमेल
क्ष्मनंमहाबलआपशराशनमैशरलाए ॥ २० ॥ नराज
छंद ॥ तवैसुरामभ्रातवानमेघनादमारिओ ॥ फुंकारसर्पसे
रुपेतिनेसुक्रोधधारिओ ॥ सुलालनैनमेघनादरामभ्रातहेर
ई ॥ सुवज्रकेसमानवानहैंलगेनटेरई ॥ २१ ॥ ॥ सवैया ॥
दोघटिकातनुमूरछतामघवाजितफेरसुनैनउघारे ॥ रावणके
सुतताँहिंसमेरणदाशरथीरघुवीरनिहारे ॥ लालभएदृगताँभ
टककरमाँहिंशरासनताँहिंसँभारे ॥ धारशरासनमैशरतीक्ष
णरामकिभ्रातसुँबैनउचारे ॥ २२ ॥ पूरवयुद्धविषेहमरेजवनाँ
हिंपराक्रमनैननिहारे॥ठाढरहोरणमंडलमैअवतोहिकुवेगसुदें
उँदिखारे ॥ ऐसेवखानलिएशतवानसुतानकमानअहेश्वरमा
रे ॥ फेरलिएदशवानहनेपुनताँनकमानसुवायुकुमारे ॥ २३ ॥
॥ ॥ अडिल ॥ तीक्षणजिनहिंपिकामसुसानसवारिआ ॥

इंद्रजीतशतबाणसुवहीनिकारिआ ॥ चाचानामविभीषणर
णेप्रचारिआ ॥ होकोपहिगुणबलधारताँहिंउरमारिआ ॥
॥ २४ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ लक्ष्मंनलिएशरंजालतवेघनसे
मघवाजितकोवरषाए ॥ तनुत्राणसुकांचनकोरंणमैमघवा
जितकोअतिसैलशकाए ॥ तिलसेवहुखंडभएतिंहँकेरथते
महिमाँहिंपरेचमकाए॥ जनुलोहफुलिंगसुभूमिगिरेसुमनोपट
वीजंनहैंमिलआए॥ २५ ॥मघवाजितबानहजारलिएउरको
पभरेलक्ष्मंनप्रहारे ॥ सियदेवरकेतनुत्राणतुटेवहुजाइपरेपु
नभूमिमझारे ॥ युगवीरकरेंप्रतिघातउमापुनआपसमैरण
घातनिवारे॥ रसवीरभरेरणफुंकतयौंसुमनोअहिराजभुजंग
मकारे ॥ २६ ॥ युद्धअनूपमताँहिंभयोशरकृतताँहिंभएसर
बंगा ॥ शोणितधारअपारछुटेतनवीरभएरणमाँहिंसुरंगा ॥
दीर्घसुकाललरेरणमैशरआपसमाँहिंचलाइनिशंगा ॥ जीत
भईरणमाँहिंनकाहुंकिनाँहिंसँग्रामभयोतिनभंगा ॥ २७ ॥
पुनताँहिंसमैअतिकोपभएलक्ष्मंनशिलीमुखपंचनिकारे ॥
मघवाजितसारथिस्यंदनऔध्वजकाटतुरंगमदूरविदारे॥ पुन
काटशरासनवेगदियोकरकीफुरतीरणमाँहिंदिखारे॥ मघवा
जितऔरशरासनकोगुणरोपलियोनलगीकछुवारे ॥ २८ ॥
सोवहुचापसुफेरकटेलक्ष्मंनवलीशरतीनचलाए ॥ फेरअने
कलिएशरताँमघवाजितकेउरभीतरलाए॥ कोपभरेमघवाजि
तसंगरभीमकुवंडसुऔरचढाए ॥ ताँनकमाँनदशाननकेसुत
धानसुराघवभ्रातलगाए॥ २९ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ वानरनि

खिलपताकिनीहनीशरासनतॉन ॥ दुखपायोकपियूथपनभ
घोसुवदनमलान ॥ ३० ॥ ॥ कवित ॥ ॥ ऐंद्रबाणलीनों
लक्ष्मनवंलवानपुननिष्ठुरकमानमाँहिंदियोंहैलगाइकै॥ कान
केप्रमाणलौसुतानकैकमानतांहिंरामपादकंजकोचितारिओ
अलाइके ॥ धरमस्वरूपसत्यसंधशूरअतुलितदशरथपूत
जगऐसेसुखदाइकै ॥ तीनलोकमाँहिंजबरामकोअरातिनाँ
हिंरावणकेपूतकोतुहनोबानजाइकै ॥ ३१ ॥ ॥ सवैया ॥
इहभाँतिवखानसुतानकमानसुवानजबैलक्ष्मनचलायो ॥
सुमनोमुखपावककोउगरेमघवाजितओरसुयौंशरआयो ॥
शिरत्राणसुकुंडलऔकलगीइहभाँतिउमाशिरतांहिंसुहायो ॥
धरतेशिरकाटधराधरमैंशरचंद्रमनोनभभूमिगिरायो ॥ ३२
देवप्रसन्नभएसंगलेमुखमैंलक्ष्मनकिकीरतिगाई॥ वारहिंबा
रसराहकरेंसुरफूलनकीवरषावरषाईं ॥ शक्रमहाकपितोहर
षेपुनकोटिअपछरनृत्यदिखाई ॥ माँहिंअकाशमुनीसगले
मिलेदेवसमूहनदुंदुभिवाईं ॥ ३३ ॥ नभउज्वलऔधरकं
पमिटेरणरावणकेसुतमारगिराए ॥ श्रमदूरभएलक्ष्मनउ
मामुखभीतरजैसबवाक्यअलाए॥ मुखसिंहसमानगजेगिरि
जालक्ष्मनतवैरणशंखवजाए॥धनकोटणकारकरेंरणमैसुन
वानरसैन्यसभेहरषाए॥३४॥संगवानरकेशिरदारवडेउतआ
वतहैंमनमोदवढाए॥लक्ष्मनसुआवतहैंतिनवीचसुचंदमनो
घनमाँहिंसुहाए॥ इतहैंहनुमानविभीषणजूसहआवतहैंअति
नम्रसुभाए॥ इहभाँतिअएलक्ष्मनबलीशिररामकिपाइनमाँ

हिद्भुकाए॥३५॥तोहिप्रसादहनेमघवाजितरामसुनोरणभूमि
मझारी॥ योंसुनप्रेमप्रवाहछुटगेललाइलिएरघुनाथमुरारी॥
मोदसनेहभयोमनमैशिरचूमउमाहरिबातउचारी॥ धंन्यअ
हैंलक्समंनतुँहींजगतोहिकरेममकारजभारी॥३६॥ ॥दोहा॥
इंद्रजीनकेनिधनतेजीतेसगलअराति॥ लक्समणतोहिसमान
जगभयोनकैहैभ्रात॥३७॥ ॥सवैया॥ तीनदिनानिशितीं
नविपैसुकथंचिततोहिहन्योबलधारी॥ आजनिवैरकयोंहम
कोअबआवहिरावणबाहिरद्वारी॥ मैहनहोंतिहँकोरणमैउर
पूतकुशोकभयोतिहँभारी॥ रावणकोउतसारगईलक्षमंनलि
योमघवाजितमारी॥३८॥सुनरावणभूमिगिर्योतनमूर्छितफे
रउठ्योनिजदेहसँभारे॥ उररावणकेसुतशोकभयोसुविलाप
करेकरमुंडनमारे॥सुतकेगुणऔपुनकृत्यनकोमुखरोवतहीम
नमाँहिंचितारे॥मघवाजितआजहत्योसुनकैमघवापुरदेवव
जाँहिंनगारे॥३९॥यमसूरकुवेरसचीपतिलौसुरआजुमहाक्र
पिजूहरपाँवें॥मघवाजितआजुहतोसुनकैडरडारसुखेनसवेंत
रुछाँवें॥सुतराक्षसनारिसुरोवतिहैंअबदेववधूमिलमंगलगाँ
वें॥ सुतशोकसुयोंविलपैदशकंधरनीरविनाझषज्योंदुखपावें
॥४०॥पुनक्रोधभयोउररावणकेवहुराक्षसराजवडोविलखाँ
नों॥सभराक्षसकेवधकाजतिनेरणजाहुइहीमुखवाक्यवखाँ
नों॥ सुतकेवधकोउरतापभयोवहुशूरभयोरुपमैगलताँनों॥
अवमोचकुशोशकटोक्षणमैतिनरावणयोंमनमैठहिरोंनों॥
॥४१॥ करकाढकृपाणसुदौरगयोपिखसीयडरीमनमैअकु

लानी ॥ वहुराक्षसनारिकिमध्यहुतीडरशोककिमाँहिंभईग
लतानी॥ इकआहिअमातसुरावणकोपुनताँहिंसमैवहुसाथ
भवानी ॥ तिहँनामसुपारशपासरहेदशकंधरकोतिनएहुवखा
नी॥४२॥त्वंधननायककोलघुभ्रातसुक्यौंदशकंठनएहुविचा
रो ॥ वेदपठेव्रततोहिकरेशुभकर्मनमैयशआहितिहारो॥ त्वं
गुणसिंधुवडोजगमैअवयोपितकोवधदूरविसारो॥ युद्धकरो
हमसंगचलोतुमसानुजराघवकोरणमारो॥४३॥ जानकिनो
घरमाँहिंअहेइहभाँतिवखाननिवारनकीनो॥ धर्मकह्योसुअ
मातजयैदशकंधरसोउरअंतरकीनो॥ सोघरमाँहिंगयोहटकै
मतिमूढमहाअतिशोकसुजीनो ॥फेरसभामहिंआपगयोदश
कंधरसाथअमातप्रवीनो॥४४॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउ
मामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेमेघनादवधनामनवमोऽध्यायः ९॥
॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **कवित** ॥ सभाकेमझारतिनकीनोंहै
विचारसभराक्षसअमातलैसंग्रामहेतसोगयो ॥ शेपजेअ
नायेऔरखासगीजेसाथहुतसर्वकोलवाइतिनझुंडएकहैक
यो ॥ सोपतंगराजऔमिलाइकैपतंगसंगपावककरालको
स्वनाशहेतुहैधयो ॥ रावणकेसंगजोईराक्षसपतंगदलराम
शरपावकजलाइसवहीदयो ॥ १ ॥ रामकीकमानतेतीक्ष
णदशकंठवानलागउरपाटफोरपारपर्योजाइकै ॥ भईदशकं
ठपीरधीरजपलाइगयोछोडरणभूमिधर्योलंकमाँहिंधाइकै॥
मानुपमैहोइनाँहिंएसोवलराममाँहिंपवनकुमारवलपिखेम
नलाइकै ॥ शुक्रकेसमीपजाइहाथनमिलाइदोऊपृछनभवा

नीदशकंठशिरनाइकै ॥ २ ॥ भगवनरामलंककरीहैविराम
सभरक्षशिरदारमेरेथडेहीखपाएहैं ॥ वडदैत्यमारेघरसवहूँके
गारेतिनमेरेसुतवांधवसुसर्वतिनघाएहैं॥गुरुहोउदारतुमआ
पहीविचारकरोआपढिगहुतेमोहिकैसेदुखआएहैं॥ऐसीसुनि
दैत्यवाणीभाखिओभवानीतिनजीतकोउपायअवसोईतोव
ताएहैं ॥ ३॥ शुक्रोवाच ॥ ॥सवैया ॥ ॥ वैठइकंतभली
विधिसोंअवरावणहोमकरोघरमाँहीं ॥ विघनानहिंहोंहिंसु
जोकवहीतवहोमकिपावकतेनिकसाँहीं ॥ रथवाहनचापनि
खंगशरांगहिहोंइअजीतसुतूँरणमाँहिं ॥ अभिचारकमंत्रनं
लेहमतेचलहोमकरोधरकंदरमाँहीं ॥ ४ ॥ ऐसिकह्योजवशु
क्रगुरूतवरावणराक्षसकोवडराई॥जाइस्वमंदिरमाँहिंउमासु
गुहातिंहँतुल्यपतालवनाई ॥ दैत्यचहूँदिशिथापधरेपुनलंककि
द्वारनपाटलगाई ॥ जेअभिचारकद्रव्यहुतेसभहोमनिमित्तसु
लीनमँगाई ॥ ५ ॥ जाइगुहादशकंठधसेहितहोमकरेमुखमौन
विधारे ॥पावकधूमवडोनिकस्योसुविभीषणनैननआपनिहा
रे॥होमकुधूमनिहारडयोंसुविभीषणराघवपासदिखारे॥ राम
पिखोदशकंधरजोवहुहोमकरेनिजभौनमझारे ॥ ६ ॥ होमस
मापतिहोइजवैतवनाथनरावणजीतिओजाई॥होमविनाश
नकाजप्रभोअववानरयूथपठेहुपठाई॥ रामतथामुखभाषत
वैशुभग्रीवकिसंगसलाहमिलाई॥ अंगदऔहनुमानपठेवल
वंतसभीकपिसंगलवाई॥७॥ वहुलाँघप्रकारगएक्षणमैपुनरा
वणमंदिरमाँहिंधसाए ॥दशकोटिगएपलवंगमजेगृहपालक

तेयमलोकपठाए ॥ घरमाँहितुरंगमचूरणकैगजमारसभैधर माँहिंरुलाए ॥ सरमातवहाथनसैननसोंतिनहोमकिठौरजि दीनदिखाए॥८॥ सुविभीषणकीवहुनारिहुतीतिनहोमकुथा नजबैदिखलाए ॥ तबअंगदजाइगुहानिरखीदरपाथरपादन तोडवगाए ॥ शिलफारउघारकिवारनकोयुवराजवलीगुह माँहिंधसाए ॥ सुपिखेदशकंधरजाइतिनेद्दढआसनहोमत नैनमिलाए ॥ ९ ॥ अंगदआइसपाइसभैकपिधाइवरें मुखमैकिलकारे ॥ रावणकेढिगजाइतिनेपुनरावणकेवहु सेवकमारे ॥ कुंभउठाइलिएघृतकेपुनडारदिएतिनआगम झारे ॥ रावणजोमुखमंत्रपढैकपिहासततांढिगदांतनिकारे ॥ १०॥ स्रुवछीनलियोकरतेहनुमानंसुरावणकेमुखऊपरमा र्यो॥ कहिपावकतोहिप्रसंनभयोवरदेवतयौंमुखमाँहिंउचार्यो ॥इकदंतनसोंइकदंडनसोचहुँओरहनेंशशिज्योंपरवार्यो ॥ र णजीतनकीउरचाहिधरीनहिंध्यानछुटेद्रिगनैकउघार्यो॥११॥ ॥ दोहा ॥ अंगदवहुरविचारकरगयोसुभौनमझार ॥ केश नतेगहिआनीआँतहँमंदोदरिनारि ॥ १२॥ ॥ गीयाछंद॥ दशकंठआगेविलपतीसुअनाथज्योंतिहँनारिया॥रत्नभूषिनकं चुकीउरहारअंगदफारिया॥ मोतीगिरेतिहँमाँगतेसभरत्नमा लखिसानीआँ॥श्रोणिसूत्रंटूटिओमुखभयोताँहिंमलानीआँ ॥ १३॥दोहा॥रावणदेखतहीगिरीकटितेनीवीनाँहिं॥ भूषण सर्वशरीरकेगिरेधरणिकेमाँहिं॥ १४॥ सवैया॥ गंध्रवदेवन कीदुहितासगलीकपिकेशनतेगहिआनी ॥ रोवतिरावणअग्र

खरीगिरिजावहुरावणकीपटराणी॥दीनपुकारकरेमुखतेपुनरा
वणकोतिनएहुवखानी॥मोहिअनाथनिज्योंकपिमारतनांहिछु
डावतलाजपलानी॥१५॥त्वंनिरलज्जभयोजगमेंतवहेरतना
रिहनेंकपिथारी॥ जीवनतेमरणोसुभलोजिनपेखतयोंविल
पेंजिननारी॥ हामघवाजितनाँहिंपिखोकपिमारतहेंअथतेम
हतारी॥तेजगजीवतयाँविधिकेदुखपावतनाँहिंसुमाततिहारी
॥ १६ ॥नारिकिलाजभतारतजीनिजजीवनकीउरअंतरधा
री ॥ योंमयकीदुहिताविलपेदशकंठसुनीवहुकानमझारी ॥
अंगदछाडकस्योदशकंधरऊठखडोकरखङ्गसँभारी ॥ कोप
भरेदशकंधरदौरसुअंगदकेकटिभीतरमारी॥ १७॥ तववानर
कूदगएसगलेपुनहोमकुकुंडसुनाँहिंविडारे॥वहुरामसमीपसु
जाइखरेमनमाँहिंभएसगलेहरपारे॥ नवरावणशांतकरीनिज
भामनिसुंदरवाक्यनताँहिंउचारे ॥ यहिदैवअधीनसुजीवनहै
कलयाननिश्चैंनहिंआपनिहारे॥ १८॥दोहा॥ विशालाक्षि
तजशोककोज्ञानअलंवनधार॥ अज्ञानजसभशोकहैज्ञानसु
देतनिवार ॥ १९ ॥ देहअनातममाँहिंजोअहंवुद्धिनरहोइ॥
अज्ञानीपहिचानिएहेमंदोदरिसोइ ॥ २० ॥ तन्मूलकसुत
दारलौवंधनभाषेवेद॥हर्षशोकभयक्रोधप्रियलोभमोहमदखे
द ॥ २१ ॥ उपजेंसर्वाज्ञानतेजन्मजरातनुहान ॥ आत्माके
वलशुद्धहैसदाअलेपकजान ॥ २२ ॥ ज्ञानानंदस्वरूपसतभा
वाभावविहीन॥नाँतिहँयोगवियोगकछुचेतनअद्वयचीन ॥
॥ २३॥ याँविधिआत्माजानउरदीजेशोकनिवार॥ अथहीआ

वेंवेगमैरामलक्ष्मणहिंमार॥ २४॥ नातररामसुवज्रशरजव
मुहिडारेमार॥ तौवैकुंठसुपाइहोंतांपदपरमउदार॥ २५॥तबम
मअंाइसुकीजियोक्रियासुनिखिलहमारि॥ सीताकोहनसाथ
मेपरीयोअग्निमझारि॥ २६॥ रावणकेयहिवाक्यसुनभईदुखि
तउरमाँहिं॥ मघवाजितजननीवहुरकहितभवानीतांहिं॥ २७॥
॥ गीयामालतीछंद ॥ नाथमेरवाक्यसुनउरसाचतिमहीं
कीजिये ॥ नहिंरामजीत्योजाइतुमतेसाचचीतपतीजिये ॥
पुनऔरआंवेंकोटितिसमरामनहिंतौमारिये॥साक्षातरामसुदे
वेहेंसुप्रधानपुरुषउचारिये ॥ २८॥ पूर्वकल्पसमत्स्यहोकरसू
रसुतमनुकोहरी ॥ भक्तवत्सलपालिओसभआपदातिनकी
हरी॥ लक्षयोजनरूपवांनेंकमठप्रथमसवारिओ ॥ सामुद्रम
थनेपीठमैइनकनकभूधरधारिओ॥ २९॥ हिरण्याक्षदैत्यसुयाँ
हत्योबलकोलरूपसवारकै॥जलहरीअवनीआनीआँरघुराज
फेरउधारकै॥सुहिरण्यकशिपुसुदैत्यजोंत्रैलोककंटकभारिओ
॥ नरसिंहरूपसुधारयाँनेनखनसाथविदारिओ॥३०॥ बलिरा
जवाँध्योयाँहिनेत्रैलोकत्रयपदमापिआ॥बलिराजपठेपताल
मेंदेराजसुरपतिथापिआ॥ राजन्यकेआकारधरणीभाररक्ष
सजेभए॥ धरपरशुरामस्वरूपकोइनरामक्षत्रीवेहए॥ ३१॥
सभजातकरअवनीइनेमुनिकश्यपहिंदानंदिओ ॥ रघुराजवं
शविशालमेअवतारअबतांनेलिओ॥तवमारणेकेकाजराघ
वरूपमानुपधारिआ॥ सिंहंनारिसीतातेंहरीसभकाजतोहिवि
गारिआ॥३२॥ममपूतऔनिजनाशहिततेंहरीसीतारानिआ॥

अबदेहिसीतारामकोलैबातमेरीमानिआ ॥ दलंकराजविभी
पणेचलआपवनमैजाइये ॥ धरचीरअंबरनीरऔफलखाइह
रिजीध्याइये ॥ ३३ ॥ मंदोदरीकेवाक्यसुनदशकंठएहुउचारि
आ ॥ सुनभामिनीरणमाँहिमेरेपूतबांधवमारिआ ॥ सभराम
तेहनवाइकैकिंहँभाँतिवनमैमैफिरों ॥ याँहेतुवानकमानलैसं
ग्रामराघवसोंभिरों ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ रामबाणतनफारहैं
मेरोसमरमझार ॥ विष्णुपरमपदमैलहोंउतरोंभवनिधिपार ॥
॥ ३५ ॥ जानोंराघवविष्णुहैंलक्ष्मीसीताआहि ॥ जानबूझ
करमैहरीसीतातांवनमाँहि ॥ ३६ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ पाँवों
ताँपदसोइरामहाथमरणोलहों ॥ जाँवोंढीलनकोइतजगवं
धमिटाइकै ॥ ३७ ॥ ॥ अड़िल ॥ ॥ परानंदमयशुद्धमुमो
क्षीध्याइहैं ॥ ताँगतिकोअबिजाँउँरामरणघाइहैं ॥ रामबान
जलधारसुपापमिटाइहों ॥ होदुर्लभभाखेंमोक्षवेगमैपाइहों
॥ ३८ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ पंचकलेशतरंगवडेभ्रमहैंधन
बांधवऔसुतदारा ॥ रोगवडेवडवानलसेअतिग्राहअनंग
सुजाँहिमझारा ॥ हैसुअज्ञानअथाहजिसेजलपाय्यतनाँहिं
कहूँतिहँपारा ॥ वेगतरोंजगसिंधुअवैपुनपावहुँमैहरिपारकि
नारा ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तीनलोकप्रभुताजिसहिंकांच
नधामप्रकाश ॥ कवीसिहदशकंठवहुअबउरभएनिराश ॥
॥ ४० ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयु
द्धकांडेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ सवै
या ॥ इहभाँतिवखानमँदोदरीकोदशकंधरक्रोधभयेउरभा

रे ॥ निकसेरणराघवसोंलरनेअतिघोरबलीसहदैत्यपधारे ॥ शुभंचक्रविराजतषोडशजाँहढस्यंदनमाँहिंभएअसवारे ॥ ध्वजउच्चपताकलशोजिहँपैंहढकूबरऔवररूपउदारे ॥ १ ॥ दोहा ॥ ॥ मुखपिशाचवाहनलगेरासभघोरसुजाँहिं ॥ अस्त्रसुशस्त्रअनेकपुनधरेसुताँरथमाँहिं ॥ २ ॥ ॥ सवैया ॥ निकसेइहभाँतिसुरावणजोअतिभीषणजाँहिंअकारविराजे ॥ पिखआवततोँहिंडरीध्वजनीकपिसायुधसंगरतेउठभाजे ॥ हनुमानगएकुदकेभिरनेदशकंधरसोंघनसेमुखगाजे ॥ मुष्टिप्रहारकरीउरमैंदढवासवआयुधजाँपिखलाजे ॥ ३ ॥ जानुनिभारपर्योरथमैंगिरमूठप्रहारलगोअतिभारी ॥ मूर्छितएकमुहूरतरावणफेरउठेतिनदेहसँभारी ॥ शूरअहैंहनुमानबलीदशकंधरयाँविधिबातउचारी॥त्वंदशकंधरजीवतहैंहनुमानकह्योअधिमोहिधिकारी॥ ४ ॥ त्वंदशकंधरमुष्टिप्रहारसुकोपबढाइकेलाइहमारे ॥ फेरहनोंतुमकोदशकंधरहोवहिंतेतनुप्राणनिआरे॥ भाषतथादशकंधरताँउरमाँहिंदियोअतिमुष्टिप्रहारे ॥ घूरणनैनभएकपिकेधरमाँहिंगिरेतनुनाँहिंसँभारे ॥ ५ ॥ फेरभईसुधिताँकपिकुंजरकोपभयोउरभीतरभारी ॥ रावणमारणकेहितताँअतिउद्यमकीनसुमुष्टिसँभारी॥ राक्षसराजपलाइगयोवहुठौरतजीडरचीतमझारी॥ अंगदऔहनुमानतथानलनीलमिलेरणमैंतहँचारी ॥ ६ ॥ ॥ तोमरछंद ॥ ॥ इहभाँतिचारसिदार ॥ तिनपेखराक्षसचार ॥ इकअग्निवर्णसुजान ॥ इकसर्परोमपछाँन ॥ इकखड्गरोमसुहाइ ॥ इकरोमवि

छूकहाइ ॥ तहँघोरसंगरकीन ॥ खलचारमारसुलीन ॥ ७ ॥
दोहा ॥ ॥ चारेराक्षसचारकपिक्रमक्रमहनेबनाइ ॥ सिंह
नादकरचारकपिगएरामढिगआइ ॥ ८ ॥ सवैया ॥ तबरावणकोपकियोमनमैनिजदांतनसोंनिजहोठचबाए॥दृगलालसुक्रूरविशालभयोरघुनंदनओरपर्योअतिधाए॥ रथबैठसुरामहिंदेखभलेशरवज्रसमानसुतानचलाए ॥ सुमनोघनसावनकोउमड्यौजलधारनकीवरपावरपाए ॥ ९ ॥ रामसमीपखरेकपिजेशरमारसभेतिनपीडतकीने ॥ पावकसेचमकेरणमैशरकांचनभूपितऑहिंनवीने ॥ रामशरासनतानतबैशररावणकेउरभीतरदीने ॥ रावणस्यंदनमाँहिंपिखेपुनभूपररामसुरेश्वरचीने ॥ १० ॥ मातलिकोसुबुलाइपुरंदरएकुकह्योमुखमाँहिंउचारी ॥ स्यंदनलैरघुनंदनकीढिगजाइशितावसुभूमिमझारी ॥ काजकरोहमरोभुविमंडलराघवकोरथमाँहिंविठारी॥ योंसुनमातलिदेवपतीमुखशीशनिवाइसुवंदनधारी॥
॥ ११ ॥ पुनस्यंदनमाँहिंतुरंगमताँक्षणभीतरपारवतीगहिलाए ॥ रघुनंदनदूखनिकंदनकोकरजोरदोऊपुनताँहिंअलाए रथरामसुतेरणजीतनकोस्वरराजइहैममहाथपठाए॥ मघवातुमकोनिजचापपठेयुगएहनिखंगसुनूतनल्याए ॥ १२ ॥ तनुत्राणअभेदसुएकुपठेतलवारइहैसुरराजपठाई ॥ दशकंधरकोरणमाँहिंहनोरथभीतरबैठसुनोरघुराई ॥ वृत्रासुरइंद्रहन्योजवहीममसारथितातिहँठौरकमाई ॥ सुनकेअभिवंदनदैसुप्रदक्षणरामचढेजिनविश्वबनाई ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ लोक

मिलाएलक्ष्मीरामचंद्ररथमाँहिं ॥ गिरिजातिंहँसंग्रामकोदेव
पिखैंनभमाँहिं ॥ १४॥ सवैया ॥ युद्धभयानकताँहिंभयोपि
खरोमतनीँगिरिजाहरपाए ॥ धीमतिरावणराममहातमदोउ
लरैंबलबाहुदिखाए ॥ पावकअस्त्रहनेहनपावकदेवनकेप्रतिदे
वचलाए ॥ याँविधिराक्षसराजनकेसभअस्त्रसुराघवकाटव
गाए॥ १५॥ तवक्रोधभरेदशकंधरताँरणमैइकअस्त्रसुऔरच
लाए॥ सुमहाविषसापशरीरभएशररावणकेधनुतेनिकसाए॥
शरकाँचनपंखलशैंजिनकेसुचहूँदिशिराघवऊपरआए ॥ शर
सर्पनकेसमफुंकतहैंमुखआगवमैंदिशिआठजलाए ॥ १६ ॥
परिपूर्णरामपिखैंरणमैदिशिआठनमाँहिंभुजंगमछाए ॥ तव
कोपभरेरघुनंदनजूगरुडाशरताँरणमाँहिंचलाए॥ पुनरामश
रासनतेनिकसेशरपंनगवैरिचहूँदिशिआए ॥ रणमाँहिंजिते
अहिफुंकतथेसभपंनगवैरितितेचुनखाए ॥ १७ ॥ याँविधि
अस्त्रहनेरघुनंदनताँदशकंधरकेरणमाँहीं ॥ घोरशिलीमुखताँ
वरषेअतिरावणक्रोधभयोमनमाँहीं ॥ फोरसुराघवकेतनको
पुनऔरदिएतनमातलिमाँहीं॥काटिदईध्वजस्यंदनकीवहुकां
चनकीसुगिरीधरमाँहीं ॥१८॥ फेरतुरंगमवासवकेरणरावण
बाननसाथविदारे ॥ गंध्रवदेवसभेपितरापुनचारणचीतभए
दुखिआरे॥ दुःखिभएसुमहानकपीजवआरतकारसुरामनि
हारे॥ चीतविभीषणदुःखभएगिरिजाविलपेकपिकेशिरदारे ॥
॥ १९ ॥सुदशाननवीशभुजादमकैसुशरासनहाथनमाँहिंलि
एहैं ॥ इहभाँतिफिरेरणमंडलमैजनुआपसपक्षमिनाकअए

हैं ॥ भ्रकुटीदृढरामठठीरणमैंदृगलालकरालसुकोपभएहैं ॥ सुमनोअविजालतराक्षसकोधनुरामपुरंदरहाथलएहैं ॥ २० ॥ बाननिकारसुरामलियोपिखकालकुपावकजाँहिलजाई ॥ नैननसोंजनुजालतहैंकुपरामपिखेंअरिहैनिकटाई॥ तेजकिज्वालछुटेतनतअबिरामपराक्रमदेतदिखाई॥ कालस्वरूपधरेअरिपैसुरपेखतमेघनओटबनाई ॥ २१ ॥ तानकमानलईहरिजीपुनरावणकेउरमैंशरमारे ॥ राघवअंतकसेरणशोभितपेखभएकपिताँहरपारे ॥ धावतहैंअरिपैहरिजीअतिक्रोधभरेमुखराम निहारे ॥ काँपउठीसगलीधरणीत्रसभूतदशोदिशिमाँहिंपधारे ॥ २२ ॥ रामकुरौद्रस्वरूपनिहारभएउतपातदशोदिशिमाँहीं ॥ रावणकेउरमाँहिंभयोडरभूतडरेसगलेजगमाँहीं ॥ गंध्रवसिद्धसुकिंनरदेवनिहारतबैठविमाननमाँहीं ॥ संगरताँहिंभयोसुप्रलैसमशूरनकेमनमैंभ्रमनाँहीं ॥ २३ ॥ वासवकोशरलैकरमैरणरावणकेशिरकाटवगाए॥ रामकटेरणरावणकेशिरशोणितताँरणमाँहिंचुचाए ॥ यॉविधिशीशगिरेनभतेफलतालमनोअतिपौनझुलाए ॥ नाँदिननाँहिंनिशापिखियेकछुसांझसुप्रातनहींसुधपाए॥२४॥ इहभाँतिभयानकयुद्धभयोकछुदेतनसंगरमाँहिंदिखाई॥बहुकालभयोरणमैलरतेविसमैपुनराघवकेमनआई ॥ शतएकसुवारकटेशिरमैतिननकीनहिआजुसमापतिआई ॥ बलनाँहिंलटेरणमंडलमैपुननाँहिंदशाननआयुघटाई ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तबसभअस्त्रनवितहरीकौसल्यानंदधाम ॥ अस्त्रबहुतसंभारकैचिंतवतभएसुराम ॥ २६ ॥

॥ ॥ सवैया ॥ ॥ जिनबाननसोंवलवंडवडेव्रनसंगरमैह
मदैत्यसुमारे ॥ वहुबानभएदशकंधरकेवधमाँहिंसुनिष्फल
आजंहमारे॥इहचिंततव्याकुलरामभएढिगआहिविभीषणनै
ननिहारे॥ चतुराननयाँहिंदियोवररामसुआजसुनोतुमवाक्य
हमारे ॥ २७॥भुजशीशविछिनभएतुमरेउपजेंपुनसोधरतेत
नमाँहीं॥ इहभाँतिकह्योचतुराननजूतुमरामसुनोनिजकानन
माँहीं ॥ अहिकुंडलकारसुअंमृतकुंडदशाननकेअहिनाभिसु
माँहीं ॥ वहुपावकअस्त्रतिदाहकिजेदशकंठमरेतवहीरणमाँ
हीं॥ २८॥-सुविभीषणकेयहिवाक्यसुनेसुपराक्रमवंतसुराम
मुरारे ॥ शरपावककोदशकंधरकेपुनरामहनेतननाभिमझारे
पुनरामशरासनतानमहावलरावणकेशिरकाटउतारे ॥ दश
कंधरकेभुजशीशपरेधरमाँहिंसुरामशिलीमुखमारे ॥ २९ ॥
घोरलईशकतीकरमेंसुविभीषणओरतजीखुनसानो॥ रामक
टीपथिभीतरसापुनतीक्षणएकचलाइसुबानो ॥ शीशकटेद
शकंधरकेपुनतेजउमातिनतेंनिकसानो ॥ जाइपरेधरभीतर
जौशिररावणरूपभयोसुमलानो ॥३०॥ एकप्रधानरह्योध
रमैशिररावणकीभुजदोइभवानी॥फेरकुप्योदशकंधरसोतिन
वाननेकीवरषावरषानी ॥ रावणराघवराघवरावणमारत
तीरमहारुपमानी ॥ युद्धभयानकताँहिंभयोसुमनोयुगघोर
घटाउमडानी ॥३१॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥
शूरनकेपदकोभटजानतऔरनजानतभाटभटोरे ॥ रामदशा
ननवीरवलीतनघाउवंहेसुलरेंमुखजोरे ॥ आजदशाननचा

हितहैजगवंधनवाननसोंरणतारे ॥ शूरअनेकभएजगभीतर
रावणसेभटहैंजगथोरे ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मातलिपुनसि
मराइओराघवकोसमझाइ ॥ रावणकेवधकाजअवअस्त्रसुब्र
ह्मचलाइ ॥ ३३ ॥ नाशकालदेवनकह्योसोअवआयोवीर ॥
उत्तमअंगनकाटियेरावणकोरणधीर ॥ ३४ ॥ शीशनकांटो
याँहिंकोमरमकरीजेघात ॥ मातलिवाक्यचितारहरिरावण
कीवधवात ॥ ३५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तवरामलियोकरमैश
रदीपतपंनगज्यौंमुखमैफुँफकाए ॥ जिहँकेपुनपासनपौनरहे
रविपावकजाँफलमाँहिंलगाए ॥ तनुवानकुआहिअकाशम
यंपुनगौरवमंदरमेरुसुहाए ॥ सभलोकनकेसुरपालकजेवहु
ताँशरसंधनमाँहिंवसाए ॥ ३६ ॥ दमक्योशरसूरजसोरणमैस
भलोकनकोडरआजमिटाए ॥ शुचमंत्रपढ्योरघुनंदनजूपुन
जोविधिवेदनमाँहिंवताए ॥ पुनताँविधिसोंसुमहाशरलैकररा
मशरासनमाँहिंलगाए ॥ धरणीसगलीडमडोलउठीपुनभूतस
भैजगमाँहिंकँपाए ॥ ३७ ॥ रावणकेवधकाजवहीशररामशरा
सनमाँहितनायो ॥ क्रोधभयोरघुनंदनकोउरघातकसोशररा
मचलायो ॥ वज्रमनोरणमंडलमैउरकोपभरेसुरनाथवगायो ॥
कालपसारपरेमुखज्यौंइमरावणकेउरमाँहिंलगायो ॥ ३८
गाढगयोउरभीतरसोशररावणशोणितपानकरेहै ॥ फाटगयो
उररावणकोगिरिजातनकेशरप्राणहरेहै ॥ रावणमारसुफारध
राशररामनिखंगकिमाँहिंपरेहै ॥ रावणकेकरचापमहागिरिजा
सहवाननभूमिपरेहै ॥ ३९ ॥ प्राणगएदशकंधरकेरणमाहिगिर्यो

बहुराक्षसराईं ॥ रावणभूमिगिर्योलखकैहतशेषसुराक्षससैन्य पलाईं ॥ भागचलेसुदशोदिशिकोअबभूपविनाकरेकौनलराई ॥ रावणमारजितेरघुनंदनवानरयौंविधिदुंदुभिवाई ॥ ४० ॥ जयराघवकीदशमौलिहनेसुरमंडलयौंनभमाँहिंवखानी ॥ नभमंडलदेवनिशानवजेंअरफूलनकीवरषावरषानी ॥ मुनिसिद्धसुचारणदेवसभैमुखराघवकोयशगाँहिंभवानी ॥ तबबीच अकाशसुमोदबढ्योशुभआइअपछरनृत्यसुठानी ॥ ४१ ॥ रावणकेतनतेनिकसीरविज्योतिसमानसुज्योतिभवानी ॥ देवनकेपुनपेखतहीरघुराघवकेतनमाँहिंमिलानी ॥ भागअहोदशकंधरकेसभदेवनयौंमुखमाँहिंवखानी ॥ रावणकेसमऔरमहानसुनाँहिंकहूँजगमैंहमजानी ॥ ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यद्यपि सात्विकदेवहमहरिकरुणाहममाँहिं ॥ तदपिदुःखभयव्यासहमफिरेंजगतकेमाँहिं ॥ ४३ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ दशकंधरराक्षसक्रूरवडोपुनविप्रनकोगहिकेशनमारे ॥ हरिकेसहद्वेषकरेमुनिहिंसकऔररमेपरदारमझारे ॥ इनरामकिमाँहिंप्रवेशकियोसभभूतनयौंविधनैननिहारे ॥ इहभाँतिकहेंसुरआपसमैंहसनारदताँप्रतिबैनउचारे ॥ ४४ ॥ सुनहोसुरधर्मविचक्षणहोतुम रावणकीयहिवातचलाई ॥ यहिद्वेषबडेउरभीतररावणनीतचितारतथोरघुराई ॥ भृत्यनसंगसदामिलकैअरिरामकथामुखभीतरगाई ॥ इनराघवहाथसुनामरणासभठौरनमैतिनतेसुडराई ॥ ४५ ॥ स्वपनेदिनरात्रिविपेदशकंधररामसदाउरमाँहिंधिआई ॥ गुरुकेसमबोधकआजुभयोयहक्रोधवडोजगराक्ष

सराई॥ पुनअंतमयौंहरिकेकरतेसुगएइनकेसभपापमिटाई ॥
सभवंधटुटेदशकंधरकेइनरामकिआजसुसायुजपाई॥ ४६॥
सुदुरातमयद्यपिपापकरेपरकेधनदारनमैलपटाई ॥ उरप्रीति
जगेयदिवाडरकैरघुनंदनअंतसमैनरध्याई॥ वहुहोवतशुद्धस
दाजगमैजनमांतरकोटिनदोपमिटाई ॥ सुरसत्तमजाँहिंप्रणा
मकरेंसुरमेहरिलोकविकुंठहिजाई ॥ ४७ ॥ ॥ शंकरछंद
त्रैभुवनविपमदशास्यकोजेमारकैरणमाँहिं ॥ शुभवामकरध
नुटंकधरशरदक्षहस्तफिराँहिं ॥ दृगप्रांतदेशसुलालहैशरद
लितजाँहिंशरीर॥ रविकोटिकेसमशोभईरणमाँहिंसोरघुवीर
॥ ४८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रक्तबिंदुतनशोभईसुरपतिकरेप्र
णाम ॥ मेरीवैरक्षाकरेंबीरसदाश्रीराम ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमद
ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेरावणवधोनाम
एकादशोऽध्यायः॥ ११ ॥ ॥श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ स
वैया ॥ ॥रामविभीपणऔहनुमानसुअंगदभ्रातकपीशनि
हारे ॥ भालकराजतथानलनीलप्रसन्नभयेरघुनाथउचारे॥
मैतुमरेभुजदंडनकेवललंकपतीरणभीतरमारे ॥ सूरजचंद्रर
हेंजवलौतवलौतुमरोयशभौनमझारे ॥ १ ॥ पुण्यकथातु
मरीजगभीतरगावहिंगेजनप्रेमवढाई ॥ मोहिमिलीगतिपाँ
हिंपराजनयाँकलिकेसभदोपमिटाई ॥ यौंवरदानदियोसभ
कोपुनसंगररंगमहीरघुराई॥ ताँहिंसमेरणमाँहिपर्यौनिरख्यो
पतिकोमघवाजितमाई॥ २॥दोहा॥ रावणकीसभनारिजेमं
दोदरितेआदि ॥ उरताडतमुखरोवतीरावणकेढिगपाद ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥ कांचनकीजिनकीनगरीगजझूलततांदरपैमतवा
रे ॥ पावकपाककरेजिनकेपुनवेदपढेचतुराननद्वारे ॥ छत्रधरे
शिरमैसवितानिशिनाहभलीविधचौरझुलारे ॥ सोपतिआजु
पर्‌रणमैमुखधूरभरेशिरक्रीटविसारे ॥ ४ ॥ जिनकेभुजतेयम
राजडरेमघवापरपाइनवंदनधारे ॥ अहिराजडरेजिनकेबलते
जलनायकजाँपदकंजपखारे ॥ सुरआइसुपाइअधीनरहेंजि
नकीपुनसेजवसंतसवारे ॥ सोदशमौलिरुलेधरमैरघुनायक
बाननकेरणमारे ॥ ५ ॥ सुविभीपणरोइचलेदृगनीरसुशोकभ
योतिहँकेउरभारी ॥ दशकंधरकेपदपासपर्योगिरिजाशिरपाग
सुदूरनिवारी ॥ सुविभीषणआजसुबोधकरोरघुनायकभ्रातकु
एहुउचारी ॥ सुलगावहिरावणकोअगनीअनकाहिनिमित्त
लगावतवारी ॥ ६ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ मंदोदरीतेआ
दिविलपैंलंकपतिकीरानिआँ ॥ सुनिवारयाँहिंपठाइलंकाकरे
ताँसनमानिआँ ॥ इहभाँतिरापवजौकह्योतवगएलक्ष्मणधा
इकै ॥ शवपासपरेविभीपणाजतुगएप्राणविलाइकै ॥ ७ ॥
उरशोकपेखविभीपणेलक्ष्मनएहुवखानिआ ॥ इहकौनतेरो
आहिजाँकोशोचहैदुखमानिआ ॥ याँसृष्टिपूर्वसुकौनयेतुमयाँ
हिकोयहिभाखिये ॥ अवकौनआगेहोइगोयाँमाँहिंकोहैसाखि
ये ॥ ८ ॥ सुननदीकेसुप्रवाहसिकताजाँहिंजिमवशपानिये ॥ तेमि
लैंकवहूँनाँमिलैंतिमएहुदेहीजानिये ॥ जिमवीजवीजनसोंमि
लेपुनकवहुँनाँहिंमिलाइहैं ॥ तिमभूतभूतनमाँहिंमायाईशवश
सुभ्रमाइहैं ॥ ९ ॥ तुमएहुऔहमऔरसगलेकालवशउपजाइहैं ॥

जवजन्ममरणोजाँहिंतेतवताँहिंतेसुउपाइहैं ॥ अजसर्वभूतन
कोरचैंपुनहनेईशसुपालका॥ नहिंजीवकेवशहैकछूनिरपेक्षह
रिजिमवालका॥ १०॥देहदेहनतेभएजिमवीजवीजनजाइहैं॥
देहीनिरालेहैंसदानहिजन्ममरणोपाइहैं ॥ देहजीवविभागहै
अज्ञानसर्ववनाइआ ॥ जन्मजराविनाशनानाक्रियाकेफल
जाइआ॥ ११॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दारुक्रियाजिमअग्निमैतिम
यहिआत्मामाँहिं ॥ धर्मअनात्मअरोपहैंमूढभ्रमेजगमाँहिं॥
॥ १२ ॥ तेयहिदेहसुयोगतेभासेंआत्मामाँहिं ॥ असद्रूपजग
विपयकोध्यावेजौमनमाँहिं ॥ १३ ॥ ॥ अडिल ॥ सुनिमाँ
हिंहंकारजवैमिटजाइहै ॥ संस्रतिनाँहिंविभीपणतवदिखला
इहै ॥ जाग्रतमोऽहंकारयदापुननारहे ॥ होमुक्तविभीपण
जीवजगतमेंतवकहे॥ १४॥मिथ्याहंममभ्रांतिविभीपणडारि
ये॥ रामनरायणमाँहिंचित्तअवधारिये॥सर्वभूतकोआत्मारा
मपछानिये ॥ होमायामानुपभेपभ्रांतिनहिठानिये ॥ १५ ॥
वाहिरइंद्रियअरथसुवंधनछोरिये ॥ दोपनिहारतजगतचित्त
कोतोरिये ॥ रामनिरंजनमाँहिंचित्तकोजोरिये ॥ होपारपरो
जगसिंधुनआतमवोरिये॥ १६ ॥ तनुमैआतमवुद्धिजवैपुन
ठानिये॥ मातभ्रातपितुमीततवैपुनजानिये॥ देहविलक्षणआ
त्माजवैसुपेखिये॥होमातभ्रातपितुवंधुनकहुँकोलेखिये॥ १७
दारादिकसुतगेहाज्ञानउपाइआ ॥ शब्दादिकवहुविपयवहुत
भ्रममाइआ॥ सैन्यकोशभ्रतराजभूमिसुखठानीए॥ होभ्रात
जनेक्षणभंगुरसर्वपछानिए ॥ १८ ॥ शोकनिवारसुउठोरा

मउरध्याइये ॥ निजप्रारब्धकिवलअबराजकमाइये ॥ भूत भावित्यजवर्त्तमानमैंवर्त्तिये ॥ होनीतकरोव्यवहारलेपन स्पर्शिये ॥ १९ ॥ रघुवरआइसुमानक्रियाअबकीजिये ॥ अग्निदाहदेभ्राततिलोदकदीजिये ॥ रोवतिरावणनारिमहामति वारिये ॥ होवरेंलंकगढजाइनलाउसुवारिये ॥ २० ॥ लक्ष्मणआपेवाक्यविभीषणधारिआ ॥ रामसमीपसुआयोशोकनिवारिआ ॥ करविचारधरमज्ञवचनतिंहँआखिओ ॥ होरामप्रीतिहिततांहिंसुउत्तरभाखिओ ॥ २१ ॥ रावणहुतो नृशंसधर्मनहिलागिओ ॥ क्रूरझूठमुखबोलव्रत्तसभत्यागिओ ॥ परदाराअभिसेवीमुनिगणहिंसको ॥ होसंसकारनहिंकरोंसुरघुवरतांहिंको ॥ २२ ॥ सुनविगसेरघुनाथसुवचनअलाइओ ॥ मरणअंतथोवैरसुसर्वपलाइओ ॥ संसकारअबकीजेयाँहिंबनाइकै ॥ होआइसुमेरीआहिवेदविधिपाइकै ॥ २३ ॥ तथाआपमँदोदरिराणिप्रबोधिआ ॥ संसकारहिततांहिंवस्तुसभसोधिआ ॥ बांधवलीनेसर्वसुतांहिंबुलाइकै ॥ होचितारचीतिंहँठौरसुचंदनपाइकै ॥ २४ ॥ करपितृमेधविधानचितामहिंडारिओ ॥ आहितअग्नीकाजसुसर्वसवारिओ ॥ करीविभीषणक्रियासुसर्वबनाइकै ॥ होरावणकीसभमंत्रीबंधुसहाइकै ॥ २५ ॥ पावकअपनेहाथविभीषणलाइओ ॥ फेरभवानीजाइसुनीरहिंन्हाइओ ॥ तिलअरुदर्भसुनीरजुतांहिंमिलाइकै ॥ होरावणकोतिनदिएवेदविधिपाइकै ॥ २६ ॥ फेरकरीसुप्रणाम सुशीशनिवाइकै ॥ नारिनकीनसुतोपसुवचनसुनाइकै ॥ लं

कातुमअबजाहुसुफेरवखानिआ ॥ होगईलंककेमांहिंसुरा
वणरानिआ ॥ २७ ॥ रामसमीपसुवहुरविभीपणआइकै॥
दीनसमानसुबैठोशीशनिवाइकै ॥ रामसुसेनासहितमहाव
लिछाजई ॥ होकपिनायकपुनलक्ष्मणसंगविराजई ॥ २८॥
जिमवृत्रासुरमारसुइंद्रसुहाइओ ॥ तिमअरिकोरणमारराम
हर्षाइओ ॥ मातलिकरीप्रदक्षणपुनशिरनाइकै ॥ होराम
अनुज्ञागयोस्वरगमैधाइकै ॥ २९ ॥ तबरघुवरहर्षाइवचन
अनुजैंकियो॥पूर्वसुलंकाराजविभीषणमैदियो॥अवत्वंलंका
याहिसुविप्रवुलाइकै ॥ होराजविभीषणदेहिवेदविधिपाइ
कै ॥ ३० ॥ यॉविधिसुनकैलक्ष्मणगएसुधाइकै ॥ वानरके
शिरदारसुलिएवुलाइकै ॥ हेमकलशभरनीरसमुद्रोंआनिआ
॥ होराजतिलकशुभभालविभीपणठानिआ ॥ ३१ ॥ पुरिजन
लीनेसंगउपाइनपाणिमैं ॥ मिलेविभीषणलक्ष्मणगेरणघा
णमै ॥ करीसुदंडप्रणामरामढिगजाइकै॥ होपेखविभीपणरा
जरहेहर्षाइकै ॥ ३२ ॥ कृत्यकृत्यअवहोएरामसुजानिआ॥
उरमैलाइकपीशहिंरामवखानिआ ॥ वीरसहाइततेरीरावण
घातिआ ॥ लंकविभीपणराजआजमैथापिआ ॥ ३३ ॥ फे
रकह्योहनुमानहिंरामविचारकै ॥ दोकरजोरेपाससुखरोनि
हारकै ॥ आइसुपाइविभीपणलंकाजाइये ॥ होरावणके
वधआदिसुसीयसुनाइये ॥ ३४ ॥ ॥ सवैया ॥ जोकछुसी
यकहैमुखतेपुनवेगसुमेढिगआइवखानो ॥ आइसुरामवि
भीपणकेमतलंकगयोहनुमानसिआनो ॥ लंकधसेहनुमान

जवैतवपूजतराक्षसजानमहानो ॥ रावणकेगृहबागविपेतरु
शिंशपमूलगयोनअजानो ॥३५॥ तरुमूलविखेसियजाइपि
खीसुकुशाअतिदीनअनिंदितसारी ॥ ढिगराक्षसियाँपरिवार
रहीउरमाँहिंभजेरघुनाथखरारी ॥ अतिनम्रस्वभावधरेमनमैं
पुनमारुतनंदनवंदनधारी ॥ ढिगजोरउभैकरनम्रखरोरघुनंद
नकोवहुदूतउदारी ॥ ३६ ॥ पिखजानकिताँमुखमौनभजी
पुनपूरवसिम्रतिताँउरआई ॥ लखराघवदूतप्रसंनभईहनु
मानपिखेमनमैंविगसाई ॥ तववायुकुमारजुरामकहीवहुभू
मिसुताढिगबातचलाई ॥ सुविभीषणऔशुभग्रीवमिलेमम
मातसुनोकुशलीरघुराई ॥ ३७ ॥ लक्षमंनविराजतसंगसदा
कपिकीध्वजनीपुनआहिअपारे ॥ रणरावणपूतसमेतहनेवल
बांधवऔरअमातविदारे ॥ सुविभीषणकेभुजराजदियेपुन
तोप्रतिरामसुक्षेमउचारे ॥ इहभाँतिसुनेपतिवाक्यजवैहरपी
सियज्यौंससिपाइसुवारे ॥३८॥ दोहा ॥ गदगदवाणीसीयपु
नलागीकरनवखान ॥क्याप्यारोअवतोहिकोदेवौंमैहनुमान
॥३९॥तेरवाक्यवरोवरेतीनलोककेमाँहिं॥ रत्नअभूषणनापि
खोंहनूमानमनमाँहिं॥४०॥ ॥ सवैया ॥ ॥ इहभाँतिसुने
सियवाक्यजवैगिरिजाहनुमानसुवातअलाई ॥ रतनौघनते
सुरराजहुँतेअवमोहिलस्योजगमैअधिकाई ॥ हनशत्रुभईर
णजीतवडीइहभाँतिपिखोंरणमैरघुराई॥ हनुमानकिवाक्यसु
नेजवहीमिथलापतिकीदुहिताहरपाई ॥ ४१ ॥ तवसीयक
ह्योसभसौम्यगुणासुतसौम्यसुतोमहिंआइवसाए॥ अववेग

पिखौंरघुनंदनकोहनुमानसुराघवआइसपाए॥ हनुमानतथा
अभिवंदनकेसुरघूत्तमपेखनकोपुनआए ॥ जनकात्मजामु
खवाक्यकहेवहुरामसमीपसुआनसुनाए॥ ४२॥ जाँहिंनिमि
त्तसुसेतुरचेजलसागरवानरसैन्यमिलाई ॥ जाँहिंनिमित्तहने
दशकंधररावणकीसभसैन्यखपाई॥ सोसियहैअवलौंदुखसों
पुनशोककिपावकमाँहिंतपाई ॥ मेमनमैइमआवतहैअववे
गपिखोसियकोरघुराई ॥ ४३ ॥ यौंसुनकेहनुमानमतोरघु
नायकश्रीमतिमानउदारे ॥ मायकसीयसुडारदिजेममसीय
अहेवहिआगमझारे ॥ ताँहिंलिजेइमधारमनेरघुनाथविभीष
णवाक्यउचारे ॥ याहिविभीषणवेगअबैजनकात्मजाढिग
ल्याउहमारे॥ ४४ ॥ शुभनीरन्हवाइपटंवरलाइसुभूषणपाइ
सभैतनमाँहीं ॥ सुनकेइहवातविभीषणसोसहपौनकुमारग
योपुरिमाँहीं॥अतिवृद्धसुराक्षसियाँसियकोसुन्हवाइतवैविग
सीमनमाँहीं ॥ पटभूषणपाइचढीशिविकाजनुचंदकलापिखी
येनभमाँहीं॥४५॥ यपटीजिनहाथविराजतहैंशिरपागसुकंचु
केहैंतनलाए॥ शिविकाढिगआवतचारदिशावहुरावणकेचुब
दारसुहाए॥ ढिगसीयगएकपिदेखनकोतिनमारछटीअतिदूर
हटाए॥ मुखमाँहिंकुलाहलकीशकरेंगिरिजाफिरराघवकीढिग
आए॥ ४६ ॥ कवित॥ दूरतेनिहारीसीयपालकीमझारीपुनरा
मसुखकारीसुविभीषणउचारेहैं॥तेरेयहिचोवदारमेरोअपका
रकरेंकाहेकोविभीषणकपीशनकोमारेहैं॥माताकेसमानयहि
वडेवलवानपुनजाइकैसमीपकपिजानकीनिहारेहैं ॥ पालकी

छुडाइपुनपाइनसोंआइसीयमेरीढिगवेगरामऐसेहीउचारेंहैं ॥४७॥ सवैया॥ सुनरामकिवाक्यतजीशिविकापुनपाइनसों हरुएचलआई ॥ तवरामसमीपसुआइखरीपिखराघवयौंमनमैंठहिराई॥यहिकारजकेहितमोहिरचीअवमायकसीतहिंदेउँतजाई॥पिखरोपभयोरघुनंदनतांपुनवाकअनेकअवाच्यअलाई॥४८॥वहुसीयसुनाँहिसहारसकीलक्ष्मंनवुलाइसुएहुउचारी॥इककाष्टनकोरचपुंजकरोपुनपावकलाइसुताँहिंमझारी॥ अवलोकसभेनिजनैनपिखेंविसवासकरेंरघुनाथमुरारी॥ लक्ष्मंनतवैउठ्ठाढिभयेरघुनायककीमतिएहुविचारी॥४९॥ लक्ष्मंनसुकाष्टनपुंजकियोपुनपावकताँहिलगाइदई ॥ पुनरामसमीपसुआइखड़ोलक्ष्मंनतवैमुखमौनलई ॥ पुनजानकिरामप्रदक्षणदैढिगपावकसाचलआपगई॥ सहनारिनदेवअदेवपिखेंमुखभापतहोवतवातनई॥५०॥देवनकोअभिवंदनकैपुनविप्रनकोअभिवंदनधारी॥पावककेढिगजाइतवैकरजोरउभेइमसीयउचारी॥ जौममचीतनऔरभजेरघुनंदनछोडसुराममुरारी॥ तौअगनीसभलोकनकीयहिसाक्षिकरक्षकहोइहमारी॥५१॥ इहभाँतिउचारप्रदक्षणधारसुसीयधसीतहँपावकमाँहीं॥ अतिदीपसुपावकमैअभयावहुशुद्धउमासुसदाजगमाँहीं॥ पिखदेवअदेवसभैडरपेसुभयोदुखसिद्धनकेमनमाँहीं ॥ पिखसीप्रविशीतहँपाँवकमैसभवोलउठेतवआपसमाँहीं॥५२॥ ॥दोहा॥ ॥जाँसीताहितसैन्यलैघोरकियोसंग्राम ॥ अहोसुप्यारीजानकीकिंहँविधितजीसुराम

॥ ५३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्ध
कांडेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥
॥सवैया॥ ॥इंद्रसुऔवरुणोयमजूवृषवाहनसाथकुबेरसु
आए ॥ श्रीकमलासनआइतहाँमुनिचारणसिद्धसुसंगसु
हाए ॥ पित्रऋषीसुरगंधरवासुअपच्छरकेगनकौनगनाए॥
औरसभैसुरवैठविमाननरामजहाँसुतहाँचलआए ॥ १ ॥
॥ दोहा ॥ परमानंदपरातमावेदवखाँनेजाँहिं॥ सुरसमूहक
रजोरकैकरैंसुस्तुतीताँहिं ॥ २ ॥ कर्त्तात्वंसभलोककोसा
क्षीज्ञानस्वरूप ॥ वसुनमाँहिंपुनअष्टमोभाख्योतेरोरूप॥ ३॥
रुद्रनमैशंकरतुहींभाख्योवेदनमाँहिं ॥ कर्त्ताआदिसुलोकको
त्वंचतुराननआँहिं॥४॥ ॥कवित॥अश्वनीकुमारतेरोनाकहै
उदारप्रभुचंद्रमादिनेशतेरेनैनजगजानीये॥ लोकनकीआदि
पुनअंतमध्यतूँहींएकतेरोहीस्वरूपनित्यउदितपछानीये॥ सदा
अतिशुद्धबुद्धमूरखनपाइसुधमुक्तसुखरूपतेरोवेदमैवखानी
ये ॥ मायाकेभुलानेजोईमानुपपछानेतोहीवहीजगमाँहिंज
नमूरखसुठानीये॥५॥अडिल्ल॥तेरोनामसुजोजननित्यचिं
तारही॥ चेतनरामस्वरूपसुतोहिनिहारही ॥ रावणहरेसथान
सुतेजहमारिआ॥होदुष्टवहीअभिमानीतैंरणमारिआ॥६॥
पाएपदहमयकुरप्रसादतुमारिआ ॥ याँविधदेवनवाक्यसुज
वैउचारिआ॥ करिअभिवंदनआगपितामहआययो ॥ होरा
मधर्ममगमाँहिंसुब्रह्मअलाययो॥७॥ब्रह्मोवाच॥शंकरछं
द ॥ हेदेवतोकोवंदनात्वंविष्णुजगतअधार॥ ध्यावहिंसुतो

कोज्ञानिजनधरप्रीतिचीतमझार॥ हरिहेयऔरअहेयद्वंद्वविहीनहैंपरएक ॥ सत्तास्वरूपसुसर्वत्वदिथितसर्वदृष्टाटेक ॥ ८ ॥
प्रभुप्राणऔरअपाननिश्चयबुद्धिकैत्वदिधार॥ मुनिकाटसंशयबंधनाजगविषयदूरनिवार ॥ वरयतीपेखेंजाँहिंकोनिजमोहकोकरनाश॥श्रीरामरत्नकिरीटकोममवंदनारविभास॥९॥
जगदादिमाधवमायतेसुअतीतजोत्वंआँहिं ॥ मुनिवंद्यमोहविनाशकोपुनमानजाँकोनाँहिं ॥ त्वंयोगिध्येयसुयोगभर्त्ताअहेंपूरणधाम ॥ हैलोकरंजितरूपजाँतिहँरामकोसुप्रणाम॥ १०॥ जिहँभावऔरअभावप्रत्ययहीनजेशिवआदि॥ तेभोगसर्वसुत्यागकैउरभजेंपंकजपाद ॥ नित्यंचशुद्धसुबुद्धऔरअनंतप्रणवस्वरूप ॥ वरवीररामसुवंदनावनदैत्यदावारूप॥ ११॥ त्वँनाथमेरोरामजीसभकरेंकाजहमार॥ सभमानतेसुअतीतमाधवरूपनिखिलअधार ॥ तेभक्तिगम्यस्वरूपभावितरूपत्वंभवहारि॥ करयोगसेवेंतोहिकोतिनचीतकोसहचारि॥ १२॥ त्वंआदिअंतसुलोकततिकोपरमईश्वरआँहिं॥ हेलोकनाथजिमानलौकिकगम्यत्वंजगनाँहिं ॥ अतिभक्तिश्रद्धाभावकैभजनीयतेरोरूप ॥श्रीरामसुंदरवंदनावरनीलकमलस्वरूप॥ १३॥ अतिमानत्वंगतमानहैंकोसकेतोहिपछान॥ पुनमानमाधवशक्तत्वंमुनिकरततेरोमान॥ वृंदावनेवृंदारकागणकरेंपदसुप्रणाम ॥ शिवआदिवंदनतेकरेंसुखकंदवंदोंराम॥ १४॥ सभशास्त्रवेदकदंवनानाकरेंतेप्रतिपाद॥ निर्विषयज्ञानानंदत्वंनितरामआँहिंअनादि॥ ममसेवनेकेकाजमानुष

भावलीनोधार ॥ मथुरेशमरकतवरणरघुवरवंदनासुहमार ॥
॥ १५ ॥ अतियुक्तश्रद्धास्तोत्रयहिजोपढेगोमनलाइ ॥ भुविमाँ
हिंमानवब्रह्मकोवहुज्ञाननीकेपाइ ॥ सभकामकामितरामश्या
मसुदैनहारेआँहिं ॥ सदध्याइध्यातातांहिंजोसभपापताँमिट
जाँहिं ॥ १६ ॥ दोहा ॥ याँविधिसुस्तुतिलोकगुरुकरीजबैमन
लाइ ॥ जनकसुताकोगोदलैनिकसेपावकआइ ॥ १७ ॥ विमल
अरुणद्युतिभ्राजईरक्तपटंबरधार ॥ दिव्यविभूपणसीयहैजाँ
कीप्रभाअपार ॥ १८ ॥ जगसाक्षीवहुपावकोरघुवरकरतव
खाण ॥ वनमैअरपीमोविपेसोश्रीरामगृहाण ॥ १९ ॥ सवैया ॥
सुदशाननकेवधकाजरचीवहुमायकसीयसुतैंहरिरामा ॥ प्र
भुसोदशकंठहन्योरणमैसुतबांधवनाँहिंरहेनिहँधामा ॥ भव
भारउतारदियोसगलोकछुरंचकनाँहिंरत्योअवकामा ॥ कृत
कारयहोइदुरीअगनीप्रतिबिंबसियावहुराघववामा ॥ २० ॥
तवपावकपूजसुसीयगहीरघुनाथउमामनमैहरपाए ॥ अन
पायिनिअंकनिवेशधरीपुनतीनहुँलोकजिनेसुतजाए ॥ पिख
रामसियाइकआसनमैदमकैसुरनायकताँक्षणआए ॥ सुगदा
गदवाकसुरेश्वरकीकरजोडउभेहरिकोयशगाए ॥ २१ ॥ इंद्र
उवाच ॥ १ ॥ भुयंगप्रयातछंद ॥ भजेहंसदानीलकंजंसुरा
मं ॥ भवारण्यदावानलंजाँहिंनामं ॥ भवानीस्वदाभावितानं
दरूपं ॥ भवाभावहेतुंभजेशंभुभूपं ॥ २२ ॥ सुरानीकदुखौघ
जानेखपाए ॥ नराकारदेहंनिराकारगाए ॥ परेशंपरानंदरूपंवि
शिष्टं ॥ भजेभारनाशंप्रभारामइष्टं ॥ २३ ॥ प्रपंनाखिलानंददा

तेसुरामं ॥ अपंनारतीहाकहेंतोहिनामं॥तपोयोगयोगीसुसेवें
सुनीतं ॥ कपीशादिमीतंभजेराममीतं ॥ २४॥ सदाभोगभा
जांसुदूरेप्रकाशं ॥ सदायोगभाजांसमीपेविभासं ॥ चिदानं
दकंदंसदाराघवेयं॥विदेहात्मजानंदरूपंभजेयं॥ २५॥ महा
योगमायायदाईशधारें ॥ नराकारलीलातदात्वंदिखारें ॥
तवानंदलीलाकथापूर्णकाना ॥ भवंतीहलोकेसदानंदमाना
॥ २६ ॥ अहंमानरूपासुरापीवमातो ॥ नवेदाखिलेशो
अहंभोगरातो ॥ कृपापादतेरेकरीमेवरिष्टा॥ निहूँलोकरा
जाभयोमाननष्टा ॥ २७॥ लसेहारकेयूररामाभिरूपं ॥ ध
राभारदैतंवनंअग्निरूपं ॥ लसत्पद्मनेत्रंमुखंशश्वकारं ॥ भ
जेराघवेशंदुरापारपारं ॥ २८ ॥ सुराधीशनीलाभ्रनीलांग
कांतं॥विराधादिदैतंवधेलोकशांतं ॥ किरीटादिशोभंभजेशं
भुईशं॥भजेरामचंद्रंरघूणामधीशं ॥ २९ ॥ मनोचंद्रकोटी
लसेपीठमोहै ॥ तहाँरामसीताभलीभाँतिसोहै ॥ लसेहेमव
र्णांतडित्पुंजभासं ॥ भजेरामचंद्रंसदारातिनाशं॥ ३० ॥
॥ **दोहा**॥ ॥ याँविधसुरपतिभाषिओरघुपतिरूपअशेष ॥
बहुरभवानीसहिततहँआएआपमहेश ॥ ३१ ॥ तीननै
नसुखदैननितनभमेंबैठविमान ॥ रामकमलदलनैनकोकी
नोएहुबखान ॥ ३२ ॥ राजतिलकजबहोइगोतोहिअयो
ध्याधाम ॥ तबमैआवोंगोतहाँदेखनतोकोराम ॥ ३३ ॥
अबयाँतनकेपिताकोदेखोराममहान ॥ तबनभरामनिहारि
ओदशरथमाँहिंविमान॥ ३४ ॥ ॥ **सवैया**॥ ॥ सानुज

रामप्रणामकरीपदभूपतिप्रीतिभरेगरलायो ॥ राघवकोशि
रचूमतवैनृपआनँदसोंयहिवाक्यअलायो ॥ मैभवसागरमाँ
हिंहुतोसुतथीरवलीतुममोहितरायो ॥ रामसुपूजनताँहिंकि
योइमभापअलिंगसुभूपसिधायो ॥ ३५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दे
वराजपिखजोरकरभाष्योवहुरसुराम ॥ मोहिनिमित्तसुधरप
रेमारेकपिसंग्राम ॥ ३६ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ अमृतवसाइकपि
दीजिएजिवाइअवकीजियेसुरेशयहिआइसहमारीआ ॥ तथे
तिउचारपुनअमृतकीधारकैजिवाइकपिलीनेनाँहिंलागीकछु
षारीआ ॥ जेईरणमारेतेईसभहीजिवारेतिनसोएजतुउठेकपि
भएहरषारीआ ॥ कुदेंहरषाएपुनरामढिगआएकपिपूरवसमा
नभएवडेवलधारीआ ॥ ३७ ॥ करकेप्रणामसुविभीषणकि
योवखानदेवममप्रीतिहितकरुणासुधारिये ॥ मंगलसना
नभगवानसहसीयकरभ्रातकेसमेतसभभूषणसवारिये ॥ प्रा
तकीजियेपयानइमसुनभगवानविभीषणवाक्यपररामयौं
उचारिये ॥ भक्तसुउदारमेरोभरतकुमारभाईरहेनिजदेशप
थमेरोहीनिहारिये ॥ ३८ ॥ शत्रुनाशसाथतनचीरजटामा
थअवमंगलसनानविनताँहिंकैसेठानिये ॥ सुग्रीवप्रधान
कपियूथपउदारअवयाँहींकोविभीषणसुकरोसनमानिये ॥
कपिशिरदारजवपूजितउदारभएभईममपूजानसंदेहकछुआ
निये ॥ रामयौंवखानीसुविभीषणपछानीगतिहेमऔपटंवर
सुरतनमहानिये ॥ ३९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ सुयथारुचिपि
खकपीमनकीसुविभीषणत्यौंवरपावरपाए ॥ इकधारपटंवर

कूदितहैंइकमौलिमणीधरकीशसुहाए ॥ इहभाँतिपिखेंकपिपुं
जनकोरघुनंदनतौगिरिजाहरषाए॥ अभिनंदनकैरघुनंदनजी
कपिमंडलकोतवदीनविदाए ॥ ४० ॥ सूरयकेसमतेजलसेइह
भाँतिविमानविभीषणल्याए ॥ रामचढेतिहँऊपरजौवहुपार
वतीसुविमानसुहाए ॥ अंकनिधाइसुसीयलईयशपुंजवडी
उरमाँहिंलजाए ॥ भ्रातचढेलक्ष्मंनतवैकरमाँहिंशरासनती
श्फिराए ॥४१॥ चढमाँहिंविमानसुरामवलोसभवानरकोइ
हवातउचारी ॥ शुभग्रीवसुअंगदऔरविभीषणजेकपिऔर
वडेशिरदारी ॥ तुमनेजगमीतकिकाजकरेरणवानरसैन्यमि
लाइअपारी ॥ अवआइसमोहिदईसभकोतहँजाहुजहाँरु
चिहोइतुमारी ॥ ४२ ॥ ॥दोहा॥ ॥सैन्यसुग्रीवमिलाइ
कैत्वंकिष्किंधायाहि ॥ भक्तविभीषणराजतुमकरोलंकके
माँहिं ॥ ४३ ॥ इंद्रआदिसभदेवतातोहिनधरपेकोइ ॥ पितु
रजधानीजाँउँमपुरीअयोध्यासोइ ॥ ४४ ॥ ॥ शंकरछं
द ॥ ॥इहभाँतिरामउचारिओतवकहेंकपिशिरदार ॥ करजो
रवहुरविभीपणेपुनएहुकीनउचार॥ सभपुरिअयोध्याजाँहिंगे
हमसंगतेरेराम ॥पिखराजतिलकसुभालतेकरमातपादप्रणा
म ॥ ४५ ॥ प्रभुफेरआइसुकरेंगेहमदेशअपुनेराज ॥ तेसंग
चालैंरामजीहमदेहिआइसआज ॥ सुतथेतिरामवखानकैपु
नभापिओरघुराइ ॥ सुग्रीवऔरविभीषणंहनुमानकोसम
झाइ ॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेनासहितसभेचढेपुष्पक
याँहिंविमान ॥ चढेकपीश्वरसहितसुविभीपणसहितप्रधान

॥ ४७ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ गिरिजाइहभाँतिचढेसभहीसु
कुबेरकिआसनमाँहिंसमाए ॥ रघुनायकआइसपाइउमा
सुविमानतवैनभमाँहिंउडाए ॥ सहहंसविमानलसेनभमैज
नुमाँहिंअकाशद्वितीरविआए ॥ चतुराननसेरघुनाथशुभेंचढ
माँहिंविमानमहाहरपाए ॥ ४८ ॥ ॥ **अडिल** ॥ ॥ रविकविं
वसमानविमानसुशोभई ॥ तपकरलब्धोकुबेरचित्तपिखलो
भई ॥ सानुजसीयसमेतरामसुखदाइके ॥ होअतिशयशुभेवि
मानताँहिंकोपाइके ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउ
मामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥
श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ चहुँओरनिहारसु
रामवलीगिरिजासियकोरघुनाथउचारी ॥ त्रयशृंगधराधर
शीशविपेयहिलंकपुरीसियलेहुनिहारी ॥ इहनैननकेरणभू
मिपिखोकिलमासकिपंकसुव्यापतसारी ॥ इहठौरभयोकपि
राक्षसकोमिथलादुहिताअतिसंगरभारी ॥ १ ॥ इहठौर
विपेदशकंठहनेजुकहावतराक्षसकोजगराई ॥ मघवाजितयों
धरमाँहिंहतेजिहँकेहितरोवतलंकसवाई ॥ इहठौरविपेघट
कानहनेममओरघनीअरिसेनखपाई ॥ इहसेतुरचेजलसा
गरमैकपिकीध्वजनीजिहँमाँहिंलँघाई ॥ २ ॥ इहतीरथसा
गरकोपिखियेजिहँसेतुसुबंधहिनामकहाए ॥ इहतीरथसागर
तीरभयोपुनपूजहिजाँहिंत्रिलोकसुआए ॥ अतिपावनतीर्थएे
पिखियेजगदेखनतेसभपापमिटाए ॥ इहठौररमेश्वरदेवमहा
अवनीदुहिताहमशंभुपुजाए ॥ ३ ॥ इहठौरविभीपणसागरके

तटसंगप्रधानमिल्योमुहिआनी॥घनसेजिंहिंकीढिगकाननहैं
इहहैकपिनायककीरजधानी॥तहँआइसरामप्रधानवडीशुभ
अंगदमातमुखाकपिरानी॥कपिनायकसर्वबुलाइलईपिखसी
यउमातिनकोविगसानी॥४॥तिनसंगविमानउठनभकोपुन
सीयनिहारसुरामअलाए॥ ऋपमूकपहारसुएहुपिखोइहअं
गदकोपितमैरणघाए॥इहपंचवटीपिखियेजिहँठाहरराक्षसमो
हिअनेकखपाए॥ सुअगस्त्यसुतीक्षणआश्रमएपिखियेचहुँ
ओरसुरंभसुहाए॥५॥शंकरछंद॥ ॥इहतापसीवरवर्णि
नीद्रिगपेखियेसुखदाइ॥ इहचित्रकूटनगोतमोवहुभाँतिर
ह्योसुहाइ॥इहठौरआयोकैकईकोपूतभरतकुमार॥सुप्रसन्नक
रणमोहिकोवहुआहिभक्तउदार॥६॥भरद्वाजआश्रमपेखसी
तेएहुयमनातीर॥ भागीरथीयहिपेखियेअतिपावनीजिहँनी
र॥सरयूनदीयहिपेखियेतटयज्ञयूपअपार॥ कौसलपुरीयहिपे
खियेअभिवंदनातिहँधार॥७॥ ऋपिभरद्वाजसुआश्रमेइह
भाँतिआएराम॥दशचारपूरणवर्षमेतिथिपंचमीसुखधाम॥
पिखभरद्वाजमुनीशकोसहभ्रातवंदेपाइ॥पुनपूछिओमुनिरा
जकोरघुनाथनम्रसुभाइ॥८॥सहभ्रातभरतसुकुशलहैतु
मसुनेमुनिविख्यात॥ सुसुभिक्षआहिअयोध्ययापुनजोव
तीममभात॥सुनरामवाक्यप्रसंनमुनिवरएहुकीनवखान॥स
भकुशलहैंनिजनगरमैपुनभरतजोमतिमान॥९॥ फलमू
लकरतअहारऔतनजटावल्कलआहि॥ तवपादुकाकोरा
जअर्प्योहैरतोतवराहि॥ जेकर्मतेवनदंडकेशुभकरेहैंरघुराइ

सियहरणराक्षसमारणंपुनलंकमारीजाइ ॥ १० ॥ ॥ दो
हा ॥ ॥ तपकरतोहिप्रसादतेसोसभजाँनेंमोहि ॥ त्वंपरब्रह्म
सुप्रगटजगआदिअंतनहींतोहि ॥ ११ ॥ ॥ **सवैया** ॥ तुम
पूरवनीररचेप्रभुजीसभकारणत्वंतिनमैसुपतायो ॥ सुनरा
यणविश्वस्वरूपतुहींनरअंतरआतमत्वंहिकहायो ॥ सभलोक
नकोकरताचतुराननताभिसुवारिजतेउपजायो ॥ इहतेसभ
वंदनतोहिकरेंप्रभुत्वंजगअंतरईशसवायो ॥ १२ ॥ ॥ **गी
यामालतीछंद** ॥ त्वंविष्णुजनककुमारियायहिलक्समीपहि
चानिए ॥ लक्समंनजगतअधाररघुवरशेपनामवखानिये ॥ तैं
आपअपनीमाययाकरनिखिलजगतवनाययो ॥ चितशक्ति
साक्षीसर्वकोनभजिवेंनाँहिंलिपाययो ॥ १३ ॥ वहिरंतरेत्वं
सर्वकेरघुनंदपूरणहैंतुहीं ॥ जेमूढदृष्टिविभिंनतोकोंपिखेंजाँ
नहिंतेनहीं ॥ त्वंनिखिलजगतअधारगायोत्वंहिजगप्रतिपा
लहैं ॥ त्वंनिखिललोकनभोगतापुनभोग्यत्वंसुविशालहैं ॥
॥ १४ ॥ जोकानसुनियेसिमरियेपुननयनकरजोदेखिये ॥ त्वंए
वसर्वसुरामजीविनतोहिनाकछुलेखिये ॥ अहमादिगुणकर
माययातैंजगतनिखिलवनाययो ॥ तवशक्तिप्रेयोंलोकसग
लेरामतोहिसुहाययो ॥ १५ ॥ चुंवकमणीकेसंगतेजिमलो
हजगतिचलाइहै ॥ मायासुजडतिमरामजीतवसंगजगतव
नाइहै ॥ हरिविश्वरक्षणहेतत्वंनिर्देहतनद्वैधारिआ ॥ सूक्षम
स्वरूपीसूत्रत्वंवैराटथूलउचारिआ ॥ १६ ॥ सुसहस्रहीअव
तारतेवैराठतेउपजाइहैं ॥ करकाजहरधरभारकोवैराठमाँहिंस

माइहैं ॥ अवतारतेरेकीकथाशुभसुनेंजेजगगाइहैं ॥ सुअनन्य मनजगअंदरेवहुमुक्तरामकहाइहैं॥ १७॥ ॥ अडिल ॥ ॥ ब्रह्माकरीसुविनतीपूर्वहिंथारिया ॥ भूकोभारउतारोअखिल मुरारिया ॥ दशरथपूर्वसुतपसापिखविगसाइकै ॥ होरघुकुलमैअवतारलियोनैंआइकै ॥ १८ ॥ देवनकेतैंकार्य्यसुसर्व सवारिआ ॥ मानवतनुहरिधारेवर्षहजारिआ ॥ लोकदुहूँ हितकाजकर्मतुमकरोगे ॥ होपापहरणयशभवनसंपूर्णभरोगे ॥ १९ ॥ विनतीकरैंसुरामकानमैधारिये ॥ मेरोगृहअब पावनकरोमुरारिये ॥ सेनासहितहमारेभोजनलीजिये ॥ होकालसवेरेप्रातगमनपुनकीजिये॥ २० ॥ दोहा ॥ रामतथामुखभापकैआश्रमकीननिवास ॥ सेनासीयसुभ्रातसहपूजेमुनिसुखरास ॥२१॥ ॥ अडिल ॥ रघुवरयौंमनमाँहिंसुवहुरविचारिओ॥अबहीवनेसुदूतजुतहाँपधारिओ॥हनुमतकह्यो सुरामअयोध्याजाइये॥ होराजाकेघरजाइसुकुशलसुनाइये ॥ २२ ॥ शृंगवेरपुरजाइसुगुहसुधलीजिये ॥ सानुजसियहरिआएताँहिंभनीजिये॥ नंदग्राममैजाइभरतकोहेरियो ॥ हो सानुजसीयसमेतकुशलममटेरियो ॥ २३ ॥ ॥ सवैया ॥ सीयहरीदशकंधरनेसुवहीदशकंधरराघवघाए॥ जोकछुमैसु करीचरियाभरतैंसभजाइसुदेहिसुनाए॥ जीतलियेअरिपुंजसभेपुनरामसियालक्षमंनसुआए ॥ कोशसवाहनसंगवडेकपि ऋक्षनकीध्वजनीवहुल्याए॥ २४॥ ॥ अडिल ॥ यौंविधताँ कपाससुकहोवखानकै ॥ भरतकहीमुखबातहृतांतसुजान

कै ॥ वेगसुआवोमेढिगरामवखानिओ ॥ होभापतथाहनुमा
नसुनरवपुठानिओ ॥ २५ ॥ शृंगवेरढिगआयोप्रथमसु
धाइकै ॥ मीठीवाणीकहीसुहर्षवढाइकै ॥ दशरथकेसुतरा
मसखातेप्यारिआ ॥ लक्षमणसीतासहितसुकुशलउचारि
आ ॥ २६ ॥ भरद्वाजकीआइसगुहपुनपाइकै ॥ आवहिं
गेतवपासपिखोमनलाइकै ॥ ऐसेमुखोंवखानरोमहर्षानि
आ ॥ होवायुवेगहनुमानवहुरपुलतानिआ ॥ २७॥ दोहा॥
तीरथरामसुपेखकैपुनःचल्योवलधार ॥ वहुरजाइसरयूनदी
पेखीपवनकुमार ॥ २८ ॥ नंदग्रामवहुरोगयोसरयूउतरसु
पार ॥ अवधपुरीतेक्रोशइकजहाँसभरतकुमार ॥ २९ ॥ सवै
या ॥ कृपणाजिनचीरपिखेभरतेंमुखदीनकृशाश्रममाँहिंव
साए ॥ मलपंकशरीरसुशीशजटाद्रुमछालनकेतनुपाटवनी
ए ॥ फलमूलअहारकरेनिशिमैंनिशिवासररामसदाउरध्याएं॥
रघुनाथसुपाइनपावरिकेढिगजाइवसुंधरन्यायचुकाए॥३०॥
पौरअमातवजीरवडेढिगहेंसभहीभगवेंपटधारे ॥ धर्ममनो
शुभमूरतिहैइहभाँतिरघूत्तमभ्रातनिहारे ॥ जोरउभेकरपौनकु
मारसुरामकिभ्रातकुएहुउचारे ॥ जेरघुवीरहुतेवनदंडकतूँजि
नकोउरमाँहिंचितारे ॥३१॥त्वंजिनकीउरशोचकरेंतिनरामसु
तेप्रतिक्षेमउचारे॥तोहिरिदंगमभापतहोंअवशोकतजोभवभी
तरभारे ॥ याँहिमुहूरतरामभिलेंउरसाचगहोयहिवाक्यहमा
रे ॥ कैकइनंदनरामअहेयमुनातटपैक्रपिभौनमझारे॥ ३२॥
हनरावणरामसुसीयलईरघुनाथवलीअबलैयशआए॥ अर्थ

नकैपरिपूरणहैंलक्षमंनसियासहरामसुहाए ॥ सभराक्षसओ
कपिसंगलिएभटकोटिनकोटिनजातगिनाए ॥ इहभाँतिकह्यो
हनुमानजबैसुनकैसुतकैकइकेहरपाए ॥ ३३ ॥ अडिल ॥ हर्षमू
रछाआईभरतकुमारको ॥ गिरेभूमिपरजाइनरहीसँभारको ॥
बहुरभरतधरउठेसुदेहसँभारिआ ॥ होलिएहनूगललाइसुभ
लोउचारिआ ॥ ३४ ॥ आनंदकोवहुनीरनयनतेआययो ॥ हनू
मानकोभरतसुताँहिंन्हवायओ ॥ देवकिंधोंपुनमानुपत्वंजग
आययो ॥ होकरुणाकरीरिदंगमवाक्यसुनाययो ॥ ३५ ॥
॥ ॥ गीतामालतीछंद ॥ ॥ तैंकहीप्यारीवातमोकोतोहि
क्याअवदीजिये ॥ शुभशतसहस्रसुधेनुनीकेताँउपाइनलीजि
ये ॥ शतग्रामनीकेजोरुचैनवसातकन्याशोभिनी ॥ आभरण
सोंपरिपूरणाचुनलीजियेमनमोहनी ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥
ऐसेभरतवखानकरवहुरोकीनवखान ॥ उमापवनसुतको
तवैबहुविधदैसनमान ॥ ३७ ॥ वहुतवर्षमुनिभएथराम
गएवनमाँहिं ॥ रामकथाप्यारीसुनीआजसुकाननमाँहिं ॥
॥ ३८ ॥ तोहिवखानीमोहिकोकल्याणीसुखरूप ॥ आजु
सुसाचीमैपिखीलौकिककथाअनूप ॥ ३९ ॥ वर्षसैकडे
जाँहिंभीजीवतजोनरहोइ ॥ कहितपुरातनवातजनपावत
आनंदसोइ ॥ ४० ॥ कहिविधभयोसमागमोकौशनसों
रघुवीर ॥ तत्ववखानोमोहिकोहोइप्रतीतिसुधीर ॥ ४१ ॥
॥ अडिल ॥ ॥ भरतमहातमयाँविधजवैसुभानिओ ॥ राम
चरितहनुमानसुसंगलवखानिओ ॥ कपितेरामचरित्रजवैसु

नपाययो॥ होभयोप्रसन्नसुभरतभ्रातसमझायियो ॥ ४२॥
देवनकेसुस्थाननगरमैंजेतिआ॥नानावलिउपहारपुजावहुते
तिआ॥ सूतवितालकवंदीसुस्तुतिपाठका ॥ होवारमुखीसभ
चलैंरामकीवाटका ॥ ४३ ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ सुराजदा
रऔअमातरामहेरहैंभले ॥ सुसेनअश्वनागकोरथीपदाति
याचलें ॥ सुविप्रपौरभूपतीसमागतासमस्तजे ॥ चलैंसुराम
चंद्रआस्यकेचकोरसंमते ॥ ४४ ॥ सुभूपवाक्यप्रेमपूरश्रोत्र
मैपरेजवे ॥ निदेशशत्रुसूदनेकलोलशर्मभेतवे ॥ सुमंतआ
दिवेगवंतधाइसर्वसाधने ॥ अलंकृतासुकौसलालगेसुवाज
बाजने ॥ ४५ ॥ सतोरणापताकिकाविचित्रहीरिऔंजरी॥
लगेसमस्तमंदिरावलीविचक्षणाकरी ॥ चलेसमस्तवृंदवै
सुरामपेखनेभले ॥ तुरंगसौहजारऔसुनागआयुतंचले ॥
॥ ४६ ॥ रथासहस्रवैदशासुहेमसूत्रभूपिता ॥ चलेसमस्त
द्रव्यलैउपायनंअदूषता ॥ चलीसमस्तराणिऔंसुवैठपाल
कीवरी ॥ भरत्तहाथजोरकैसुमूँडपादुकाधरी॥ ४७ ॥ सुश
त्रुनाशभ्रातसाथपादचारहींचले ॥ तवैसुदूरदेशतेविमानदे
खिऔभले ॥ सुचंद्रसूरकेसमंविमानसोसुहाययो ॥ विमा
नब्रह्मदेवनेसुमानसंवनाययो ॥४८॥ सुताँहिंमाँहिंभ्रातदो
विदेहकीकुमारिया॥ सुग्रीवऔविभीषणादिमंत्रिहैंउदारिया
॥ सुदेखियेपिखोजनोहनूमतेप्रभानिओ ॥ सुवासुबालवृद्ध
नारिरामएवखानिओ ॥ ४९ ॥ ध्वनीअकाशपूरिओसुरा
मएकत्योभले॥ तुरंगकुंजरारथासुछोडभूमिमैंचले ॥ विमा

नरामहेरिओअकाशचंद्रमायथा॥ भरत्तहाथजोरकैपिखेसुह पिंओतथा ॥५०॥ विमानअग्ररामकोभरत्तवंदिओतथा ॥ सुमेरुश्रृंगसूरकोसुलोकवंदहैंयथा ॥ तवैसुरामआज्ञयावि मानभूमिआययो ॥ भरत्तसानुजंसुरामताँहिंमैबिठाययो ॥ भरत्तरामपाइकैसुफेरवंदनाकरी॥ उठाइरामताँलियोचितार पेखिओहरी॥ सुरामअंकरोपकैलियोगरेलगाइकै ॥ तवैभ रत्तसीयभ्रातलक्ष्मणंअलाइकै ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दोनोंकेपदवंदनाकरीसुभरतवनाइ ॥ प्रेमसुव्याकुलभरतजी सुखसुमुद्रमैनाइ ॥ ५२ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ शुभग्री वऔयुवराजअंगदजांववानउचार ॥ मैंदवद्विविदसुनील ऋषभंमिलेभरतकुमार ॥ गंधमादनऔगवाक्षसुपणऔन लवीर ॥ शरभपनसप्रधानकौपुनमिलेभरतसुधीर ॥ ५३ ॥ ॥ अडिल ॥॥ सभकपिमानवरूपतवैशुभधारकै ॥ कुश लक्षेमसभपूछ्योभरतकुमारकै ॥ तवसुग्रीवालिंग्यसुभरत उचारिओ॥ होतोहिसहाइतरामलंकपतिमारिओ ॥ ५४ ॥ चारभ्रातहमयाँजगमाँहिंवखानियें ॥ पंचमतूँसुग्रीवनभेद पछानियें ॥ रिपुहनकरीप्रणामसुवहुरोरामको ॥ होपुनःक रीसुप्रणामशेशसुखधामको ॥ ५५ ॥ पुनदोनोकरजोरसि याढिगजाइकै ॥ विनैयुक्तअभिवंदनकरीवनाइकै ॥ पूजित रामखडाँउँभरतलेआययो ॥ होरामपादमैजोरवहुतविगसा ययो ॥ ५६ ॥ रामअमानतराजआपकोमैदयो ॥ अवमे जन्ममनोरथसफलोसभभयो ॥ नैननिहार्योतुमेअयोध्या

आवते ॥ होदशगुणसेनाकोशकीयोतवभावते ॥ ५७॥ तेज
तुमारेरामसुमैप्रतिपारिआ॥ अवपालोनिजनगरसुदेशउदा
रिआ ॥ ऐसेंभरतकुमाररामप्रतिभानिआ ॥ हांपेखकपी
श्वरसगलतबैविसमानिआ ॥ ५८ ॥ भरतवडाईकरेंजा
इजलनयनते ॥ भरतरामगललायोसुंदरमैनते ॥ ताँविमा
नकैयानतहाँसभआयया ॥ होआश्रमभरतपुनीतसुदूखग
वायया ॥ ५९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ताँविमानतेउतरकररा
ममहीतलआइ ॥ पुष्पकपरमविमानकोआपतरामसुनाइ
॥ ६० ॥ धनदसमीपंयाहित्वंहमरीआइसमान ॥ धनदवे
श्रवणनामजोत्वंताँआँहिंविमान ॥ ६१ ॥ ॥ अनंगशेख
रछंद ॥ गुरूवसिष्टकेपदारविंदरामचंद्रजीनिवाइशीशआ
पनोसुहेमआसनंदयो॥ वृहस्पतीपदारविंदकोसुरेशज्योंनमे
सुरामचंद्रवीरताँहिंभाँतिताँतबैनयो ॥ गुरूवसिष्टपेखरामचं
द्रकीसुरीतिकोप्रसन्नराघवेशकोविठाइपासतालयो॥गुलाव
सिंहरामकोविछोहदुःखजोहुनोनिहाररामचंद्रकोपलायआ
जसोगयो॥६२॥इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवा
देयुद्धकांडेचतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥ श्रीमहादेवउवाच॥स
वैया॥ कैकइनंदनजोरउभेकररागकिपासमुवातउचारी ॥
राजदियोहमकोरघुनायकआदरकैतुममातहमारी ॥ आज
दियोममराजवहीतुमलेहुरूपाकररामसुरारी ॥ यौंमुखभाप
भयोअतिनम्रसुराघवकेपदवंदनधारी ॥ १ ॥ शंकरछंद॥
वहुभाँतिविनतीताँकरीलैमातनिजगुरुसंग॥सुतयेतिराजसु

ताँलियोपिखभरतप्रीतिअभंग ॥ निजमाययाकेसंगमिलन
रखेलपूरणधार ॥ निजराजअनुभवजाँहिकोसुखज्ञानघनअ
वतार॥ २ ॥ सुनिरस्तअतिशयसुखसदापरमातमाश्रीराम॥
मानुष्यकोयहिराज्यसोजगदीशकेकिहँकाम॥ भ्रूभंगकैक्षण
एकमैत्रयलोकदेतखपाइ ॥ कृपादृष्टिनिमेखतेपुनलेतसभउप
जाइ॥३॥ लीलाचहेउरमैकरीतवरचतसृष्टिमहान॥किहोययाँ
नरराजकरतिंहँरमापतिभगवान॥ जोजोभजेजिहँभाँतिहरि
तिमकरेताँकेकाम॥नरदेहलीलाधारकैसभकरतहैश्रीराम॥४॥
शत्रुघ्ननिपुणसुनापतापुनलिएसर्वबुलाइ ॥ संभाररराघवतिल
ककेतवलिएसर्वमगाइ॥भरतपूर्वस्नानकरसुस्नातलक्ष्मणवी
र॥सुग्रीवऔरविभीषणासुस्नानपहिरेचीर ॥५॥ सुविशुद्धज
टाकलापकैसुस्नातभेश्रीराम॥वहुमदनमोहनसुंदरोजनकरत
पूर्णकाम॥शुभधारचित्रितमालिकापुनलेपचंदनलाइ॥ पुन
धारवहुविधअंबराश्रीमंतसर्वसुहाइ॥६॥प्रतिकर्मलक्ष्मण
रामकोपुनभरतकरेंश्रनाइ ॥ जानकीकोभूपपत्नीकरेंपट
पहिराइ ॥ सीमंतमणिपदनेवरनपुनसर्वमंडनधार ॥ पुनःस
गलनवाइकैतहँवानरनकीनारि ॥७॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामसु
प्यारेजाँहिको अस कौसल्यामात ॥ पटभूषणकपिनारिनहिं
दीनेअतिहितसाथ॥ ॥८॥ छप्पैछंद ॥ रिपुसूदनमतिमान
सुस्यंदनआपमगायो॥ सूरयकेसमशोभसुजाडसुमंतलिया
यो ॥ धर्मपरायणरामचंद्रशुभस्यंदनमाँहीं ॥ कोशपती
युवराजहनुमूनसंगसुहाँहीं ॥ पुनराक्षसराजविभीषणोहैरथ

राजसवारभट ॥ कपिआगेपाछेरामकेवाहनपरमनचों हिंठट॥ ९ ॥ दोहा ॥ ॥ कौशनारिसीतातवैबैठिपालकी जाँहिं ॥ नगरअयोध्यासुंदरेमहिमानहिंकविपाँहिं ॥ १० ॥ ॥ कवित ॥ ॥ हरेरंगघोरेगहिमातलिनेजोरेरथवैठसुरराज मानोदेवनसोंजातहै॥ रामरथमाँहिंपुरिपथिमैचलाँहिरथभई छवभारीपुरितैसेहीसुहातहै॥ सारथिभरतऔप्रवालुदंडहाथलै सुछत्रशीशमाँहिंरिपुसूदनझुलातहै॥ व्यजनउदारेशुभलक्ष्मै णधारेकरचामरकपीशअसुरेशजूफिरातहै॥ ११ ॥ सवैया॥ सिद्धसँबूहसभैसुरमंडलऔरऋषीश्वरजेमुनिज्ञानी ॥ गाव तराघवकेयशकोमधुराध्वनिहोवततहिंमहानी ॥ नागतुरं गमऔरथमैकपिजाँहिंचढेनररूपभवानी॥ भेरिमृदंगसुशंख नकीपणवानककीध्वनिभूरसुहानी॥ १२॥ इहभाँतिगएरघुनं दनजीपुनऔधपुरीसुअलंकृतसारी॥ सभसौधनमैचढदेखतहैं पुरवासिजनागिरिजानरनारी ॥ नवदूरवश्यामसुकीटलसेत नमंडितभूपणराममुरारी ॥ अरुणायतलोचनरामपिखेंअति मोदबढेसभचीतमझारी ॥ १३ ॥ रतनागणकेसुजराउजरे कटिसूत्रसुजाँकटिमाँहिंविराजे॥ अतिपीनभुजांनरपीतपटल सकैपिखजाँघनदामनिलाजे॥ उरहारमहामुकताफलकेपिख रामप्रजासभहीदुखभाजे॥ शुभग्रीवमुखाअतिशांतवडेकपि सेवतरामरवीअतिछाजे ॥१४॥ सुरवृक्षनफूलनकीतनमा लसुचंदनऔक़सतूरिलगाए॥ इहभाँतिसुनेरविरामअयेमुख नारिजनारिनकेविगसाए ॥ धरमंडनसौधनशीशचढीपरके

सभकारयदूरभुलाए॥ मुसकावतिरामनिहारतिहैंशिरफूलन
कीवरपावरषाए॥ १५॥ मननैनरसायणराघवकोद्रिग
पानकरेंइहभाँतिनिहारें॥ मनकेसभरामकिअंगमिलीअति
आनंदमूरतिचित्तचितारें॥ करुणाद्रिगरामनिहारप्रजासुवि
छोहनकेदुखदूरनिवारें॥ सुउमाब्रहमंडअनंतनकोममना
थमनोअवफेरसंभारे॥ १६॥ ॥ कवित॥ ॥ इंद्रभौनके
समानभौनजोमहानपितुशोभितअपारतहाँगएरघुनंदना॥
करेंहैंप्रवेशसभलोकनकलेशहरेमातनकेपादकरजोरकरीवंद
ना॥ जेइंपितुनारिसभवंदितसंभारकरीकेतुरघुवंशकेसुकरे
दुखकंदना॥ फेररघुनाथसुभरतकोबुलाइकहामेरोघरमारो
अवलीपोलाइचंदना॥१७॥संपदाअपारवरमंदिरउदारअति
मीतशुभग्रीवकोसुतहाँहीवसावना॥सभसुखवासहितमंदिर
निवासदिजेकरोअववेगकछुकालनहींलावना॥ रामज्यों
वखानीसोईकरकेभवानीपुनभरतकपेशकह्योसुनोमनभाव
ना॥ रामअभिषेककाजसुनोकपिराजअवचारोहीसमुद्रको
सुनीरअहेल्यावना॥१८॥दूतजेईवेगधारीकरकैविचारअव
पठियेकपेशकाजतेरभुजआएहैं॥जांववंतहनुमानअंगदसुषे
णजानयहीवलवंतकपिरायनेपठाएहैं॥हेमघटलयेपुनवायुवे
गगयेजलसागरकेपूरदूततूरणलिआएहैं॥तीर्थननीरजवआ
नेकपिधीरपिखशत्रुहनवीरसभमंत्रिनबुलाएहैं॥१९॥राम
अभिषेकअवकीजियेविशेषद्विजजोरेदाऊहाथसुवसिष्टको
सुनाएहैं॥ महामुनिराईद्विजलियेहैंवुलाईसभरतननसिंहासन

सुरामसीचिठाएँहैं॥ गुरुवामदेवपुनगोतमजवालिवालमीक रामभालराजतिलकचढाएँहैं ॥ तुलसीसुगंधवारिदाभनकी धारवसुवासवकीन्याँईशुभराघवसिंचाएँहैं ॥ २० ॥ ऋत्वग उदारशुभब्राह्मणहजारवहुकंन्यकाअपारसभमंत्रीशुभछाए हैं ॥ औपधीमिलाएभालतिलकचढाएसभआएनभदेवताविमाननसुहाएँहैं॥ चारोलोकपालगुनगावतविशालपुनआइनभवीचसुरदुंदुभीवजाएँहैं॥ भरतकुमारउरप्रेमद्रिगवारिजाइ रामपादकंजहितनीरभरल्याएँहैं ॥ २१ ॥ प्रेमनैनवारिमिले जाँहिकेमझारपुनभरतकुमाररामपादयोंपखारिओ॥ मरदन चैलसोंवनाइकरेपादकंजफरउरमाँहिपदभरतसुधारिआ॥चंद्रकेसमानजोइछत्रहैमहानपुनप्रेमकैअधीनशत्रुहनसोउभारिआ॥ कपिनकेराईऔविभीपणसुआईतहाँस्वेतयुगचामरसुहाथनउलारिआ॥ २२॥कांचनकीमालवायुदईहैविशालशुभवासवकेप्रेरेगलरहीछवपायकै॥रतनअपारमणिजरीजाँमझारहाररामनरनाहकोसुरेशदियोआयकै ॥ दुंदुभीवजाइसुअपछराँनचाइशुभगंधवसुनाँहिरामचंद्रयशगायकै॥ फूलनवसाइवलिहारजाएँहेरछवकहाँलौवखानेंकविरहेविसमाइकै॥२३॥सवैया॥ नवदूरवकेसमश्यामतनूपदमायतलोचनहैंविगसाए॥रविकोटिप्रभाशिरकीटलसेशुभकोटिमनोजलावण्यसुहाए ॥ विजुलीसमपीतदुकूललसेछविमंडनकीकविकौनवताए ॥ मुखशारदचंद्रसुहाइघनोतनऊपरिचंदनलेपलगाए॥ २४॥आयतसूरसमानविराजितरामउभेभुजहैंसुख

दाई॥ कांचनकीजनुदेहवनीढिगवामसियाइहभाँतिसुहाई ॥ भूषणहैंतनमाँहिंधरेकरपल्लवलालसरोजसमाई ॥ अंगसुवामथिराजतसीतिहँनाँहिंप्रभावरणीमुखजाई ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥रामसियापिखआययोगिरिजासहितमहेश ॥ सर्वदेवगणयुक्तशिवसुस्तुतिकरतविशेप ॥ २६ ॥ ॥ सवैया ॥ सीयसमेतसुरामतुमेअभिवंदनआहिसुनीतहमारी ॥ नीलसरोजसुश्यामतनूनवनीतहुँकोमलदेहतुमारी ॥ क्रीटसुअंगदहारलसेसुनृपासनमाँहिंप्रभाविसतारी ॥ लोकनकेकरताहरतोकछुआदिसुअंतनआहितिहारी ॥ २७ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ निजमाययाकररचेंसभकोलेपनातवहोइ ॥ प्रभुरमेंत्वं निजसूखमेंतेदोपनाँहींकोइ ॥ गुणसंगलीलारचेंत्वंबहुभाँतिकरुणाशील॥ निजशरणआएभक्तजेतिनहेतसुंदरडील ॥२८॥सुरऔरमानुपआदिलेतुमलियेबहुअवतार ॥मूढतोकोंनापिखेंज्ञानीसुलेंहिंनिहार॥निजअंशकरसभलोककोतुमकीनरचविस्थार ॥ धरशेशरूपसुरामत्वंपुनभयोलोकअधार॥२९॥सभऔपधीकेपुष्टहितरविवायुवृष्टिनिशेश॥ यहिधाररूपसुपालकरप्रभुहरेजगतकलेश ॥ तनुधारियोंकेदेहमैंत्वंजठरअग्निस्वरूप ॥ प्रभुभुक्तपीतसुअन्नजलकोपाककरंहिंअनूप ॥३०॥करिप्राणपंचकआपनेसहकारिकरेंविशाल ॥इहभाँतिराघवजगतकीत्वंकरेंनितप्रतिपाल ॥ जोचंद्रसूर्यसुवह्निमैसभतजनेरोआहि ॥ सभदेहधारीमाँहिंचेतननेविनाकछुनाहि ॥३१॥ धृतिशूरतातनुधारियोंकीआयुसगलीजोइ ॥ इहसत्वतेरेतभईइम

भापतीश्रुतिसोइ ॥ त्वंविष्णुशिवकमलासनोशशिसूरकर्मसु
काल॥इहभेदवादीपेखहेंइकत्यागब्रह्मविशाल ॥ ३२ ॥ म
त्स्यादिरूपअनेकत्वंजगलेंहिंरामसुधार॥ सभलोकऔरपुरा
णसगलेवेदकरतउचार ॥ तिमसर्वसत्यअसत्यत्वंतुमतेविना
कुछुनाँहिं॥ जोभयोजोपुनहोइगोजोदेखियेजगमाँहिं॥३३॥
॥ **दोहा** ॥ प्रकृतीपरेवखानियेपरतेपरत्वेआँहिं॥ स्थावरजंग
ममाँहिंप्रभुतोविनापिखियेनाँहिं ॥ ३४ ॥ **गयामालतीछं
द** ॥ तवमाययाजनमोहिआनहिंतत्वतेरोजानई ॥ तवभक्तसे
वसुअमलमनपरमीशतोहिपछानई ॥ श्रीरामतेच्चितरूपको
ब्रह्मादिनाहिंपछानेहें ॥ वहुअर्थमेंमनलागिआजगरचनमें
गलनानेहें ॥ ३५ ॥ मतिमानजेवडभागजनवहुभजेंतेमन
लाइकै॥ वहुमुक्तयाँजगहोइहेंसभदुःखपुंजमिटाइकै ॥ मिल
उमाकेसहमाँहिंकाशीवासमैनितधारहों॥ भलवैठगंगातीरमैं
तवरामनामउचारहों॥ ३६॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ मरणकालज
नकानमेंदवोंमंत्रविशाल ॥ रामतुमारोनामकहिमुक्तकरों
ततकाल॥ ३७॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ स्तोत्रसुयाँहिंसुनेंनरजे
पुनहोइअनंन्यभलेमनगावें ॥ जेजनयाँहिलिखेंमनसोंपुनते
जनसूखसँपूर्णपावें ॥ वंधतजेंभवमंडलकेपुनतोहिप्रसादसु
तेपदपावें ॥ पूरणतेसुखसिंधुविपेजनन्हातनहींभवसागरआ
वों॥ ३८॥ ॥ **इंद्रउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ कमलासन
केवरदेवनकेसुखराक्षसराजसभेहरिलीने ॥ ममसूखहरेदश
कंठवलीवलिदेवकरेसभपाइअधीने ॥ सुरकोअरिरावणवी

रघलीतुमसायकमारकर्योरणक्षीने ॥पुनतोहिप्रसादांमेटदुख पुंजसुरामतुमेसुखदेवनदीने॥३९॥देवाऊचुः॥भुजंगप्रयातछंद॥ ॥ हरेयज्ञभागाधरादेवदीए॥सुलंकेशविष्णोमहातापकीए ॥ इदानींतुमेनाथलंकेशमारे ॥ लहेयागभागाक्तपापादथारे॥४०॥ ॥पितरऊचुः॥ ॥ हन्योदुष्टदैतंतुमेलैकमानं ॥ गयामाँहिंदीयेनरैःपिंडदानं ॥ वलंबाहुभारीसभैदेवताए ॥ सभीखोसखाएइदानींसुपाए ॥ ४१ ॥ यक्षाऊचुः॥ सुलंकेशदुष्टोगृहीताविगारे॥फिरेंताँउठाईसहेंदुःखभारे ॥तुमलंकजीतीसुलंकेशघाए॥ वयंदुःखपाशीपरेतेछडाए ॥४२॥गंधर्वाऊचुः॥अडिल॥तेरीकथारसाम्रतपूर्वसुगावते॥हमसंगीतकनिपुणानंदसुपावते॥पुनःपडेवेगारदुरातमरावणे॥ होरावणकेवशिभएलगेतिंहँगावणे॥४३॥ निशिदिनपकडगवावैसभामँझारिआ॥तुमअवहरेकलेशसुरावणमारिआ ॥ सिद्धमहोरगआयरामयसगायथो ॥ होकिंनरमारुतआयसुतथाअलायथो ॥४४॥ वसुमुनिगावागुह्यकऔरविहंगमा ॥ प्रजापतीसभआएअपसरसंगमा ॥ व्योमविमाननआयसुरामनिहारहीं॥ होभिन्नभिन्नयशसर्वसुरामउचारहीं ॥४५॥ रामदियोअभिनंदनसर्वपधारिआ॥ शिवब्रह्मादिकगएसुभौनमझारिआ ॥ जावतपंथनमाँहिंरामयशगायेहें ॥ होराजतिलकसियलक्ष्मणसहतसुध्यायेहें ॥ ॥४६॥ ॥दोहा॥ ॥ पिखराजेंद्रसुरामकोसिंहासनकेमाँहिं ॥ देवगएनिजलोकमैध्यावतताँउरमाँहिं ॥ ॥४७॥ क

वित ॥ देवविगसाँवेंनअवाजनेवजावेंमुखरामयशगाँवेंबहु
फूलकोवसाइहैं ॥ मुनिजेमहाँनरामयशकोवखाँनकरेंरामघ
नश्याममुखकंजमुसकाइहैं ॥ तेजहैमहानसूरकोटिकेसमान
ढिगसीयहनुमानबहुभाँतिसुखदाइहैं ॥ लक्ष्मणमुनिगणवा
नरअनेकगणसेवेंपादकंजरामचंद्रयौंसुहाइहैं ॥ ४८ ॥ ॥ क
विरुवाच ॥ ॥ तोटकछंद ॥ तजक्षीरसुसागरभूमिअए ॥
रघुवंशविषेअजरामजए ॥ जिनकेपदकंजमहेशभजे ॥ मृदुसे
जनिरंतरशेषसजे ॥ ४९ ॥ जयतारणरामरमारमणं ॥ भवताप
दवानलकोशमनं ॥ धृतसायकचापनिखंगवरं ॥ शुभशंखग
दांबुजचक्रवरं ॥ ५० ॥ अलिकाश्रुतिऊपरश्याममहा ॥ हरहारत्र
शेवरआहिकहा ॥ अधरोअरुणासमविंबफला ॥ रदपांतिह
रीछवकुंदकला ॥ ५१ ॥ मकराकृतकुंडलकानविखे ॥ सुर
मोहरहेजिहँओरपिखे ॥ मुखशारदचंद्रविशालभले ॥ भुज
अंगदऔकरमाँहिवले ॥ ५२ ॥ करसागरसेतुसुलंकजिनी ॥
शरतीक्षणकैअरिसैन्यहनी ॥ खलरावणकदशशीशकटे ॥ शुभ
भक्तविभीषणठाटठटे ॥ ५३ ॥ भ्रिकुटीकुटिलाद्रिगकंजखिरे ॥
गजमोतिनकेबहुहारगरे ॥ कचघुंघरवंतकपोललटे ॥ मु
खकंजमनोदलभ्रिंगटुटे ॥ ५४ ॥ अवनीदुहितापतिनाथहरे ॥ सु
रराजनकेदुखदूरकरे ॥ तवकीरतिगंगउदारमहाँ ॥ कृतमज्जन
कोदुखआहिकहाँ ॥ ५५ ॥ पदआइविभीषणसामलई ॥
हनरावणनाथसुलंकदई ॥ शुभवीरदयालुउदारमहाँ ॥ रघु
नाथघरोवरआँहिकहाँ ॥ ५६ ॥ मृगराजसुअंतगुलाबकहे ॥

पठतोटकछंदहिंदोषदहे ॥ हरिरूपमहाँइनमाँहिंकहे ॥ नरनारि
पढेफलचारिलहे ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमाम
हेश्वरसंवादेयुद्धकांडेपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ श्रीमहादेवउ
वाच ॥ ॥ सवैया ॥ तबराजभएरघुनंदनकेहरिहैंसभलोकन
केहितकारे ॥ वसुधासभसस्यसपंनभईफलवंतभएसुमहीरुह
सारे ॥ निरगंधसुफूलहुतेजगजेपुनगंधभईंतिनमाँहिंउदारे ॥
कचकंचुकमैतबबंधभएपुनदंडयतीकरभीतरधारे ॥ १ ॥
॥ कवित ॥ ॥ मारयहिशवदनिशाननमँझारगएबडेउतसा
हसुअचौरतामैंआएहैं ॥ वैरगजसिंहओहुताशनप्रसिद्धज
लऔरइरनाँहिंजनपापतेडराएहैं ॥ रामराजपाटभएलोग
नकेदूखगएधनमैनलोभगुणपुण्यमैलुभाएहैं ॥ नाशतम
भोरचक्रवाककोबिछोरानिशिजाँहिंनविदेशजनसूखसोंमि
लायेहैं ॥ २ ॥ विप्रनकोलाखरामदियेहैंतुरंगवडलाखधेनु
दईगऊलाखपहिचानिये ॥ एकशतवृषभसुतोंशकोटिसुइ
नादियोग्रामपटभूषणसुरतनपछानिये ॥ दीपतमहानसूरते
जकेसमानजिहैंरतनसुमालकरलईहैमहानिये ॥ शुभग्रीवग
लेडारीभयेप्रीतसोमुरारीलियोगरेमाँहिंलायदियोसनमानिये
॥ ३ ॥ अंगदकोअंगदअनूपरघुनंददियोफेरएकहाररघुना
थहाथलियोहै ॥ चंद्रकोणकेसमानमणीजाँमहानलगीहाइ
कैप्रसंनरामजानकीकोदियोहै ॥ कंठतेनिकारहारजानकीनि
हारकपिरामओरवारवारपिखेतनुपीयोहै ॥ राममतिमानताँ
हिंजीयकीपछानकह्योदेहिसीयहारजाँपैखुशीतेरोहीयोहै ॥

॥ ४ ॥ रामकेनिहारतहीदियोहनुमानहारहारगलडारहनुमानसुसुहायोहै ॥ जोरदोऊहाथरघुनाथकेसमीपठाढोपेखरामचंद्रहनुमानकोअलायोहै ॥ भक्तितेमहानहनुमानमैप्रसंनभयोमाँगोवरनीकेजोईमनमैसुभायोहै ॥ तीनभौनमाँहिंजोईदेवतानपावेंवरदेउँहनुमानममऐसेमनआयोहै ॥ ५ ॥
॥ सुनहरपाइशिरन्यायरामचंद्रकोसुवोलेहनुमानरघुवीरमैउचारहों ॥ सिम्रतसुतेरोनाममननअघाइमेरोवसोधरमाँहिंनामतेरोहीचितारहों ॥ जौलौतेरोनामजगमाँहिंसुखधामरहेतौलौरामचंद्रसुकलेवरकोधारहों ॥ राजनकेराईरघुवीरसुखदाईमोकोंयहीवरदीजेमनयहीमैनिहारहों ॥ ६ ॥
रामतथाकह्योवंधतेरोहानभयोनित्यसुखहींसोंरहोयाँहिंजगतमँझारिये ॥ कलपकेअंतकपिसंतमेरेरूपमिलपावेंगोसायुज्यनसंदेहकछुधारिये ॥ तवतोभवानीताँहिंजानकीवखानीजहाँवसोहनुमानवनगिरितटवारिये ॥ भोगजेअपारीसभजाँहिढिगथारीजगसुखसोंसुरहोसदाआइसहमारिये ॥ ७ ॥
ऐसेरामसीयतिहँभाखिओभवानीजवईश्वरस्वरूपतिनपेखहरपायोहै ॥ करीपदवंदनासप्रेमकपिवारवारआनंदकोनीरतिहँनैनमाँहिंआयोहै ॥ महामतीहनूमानधीरजमहानधरतपकेनिमित्तहिमवंतकोसिधायोहै ॥ जोरदोऊहाथरघुनाथकेसमीपखरेरामचंद्रपेखतचगुहकोअलायोहै ॥ ८ ॥ सखे तुमजाइनिजपुरसुखपाइपुनहमकोचितारोघरमाँहिंमनलायक ॥ भोगोसुखपायनिजसंचितसुध्यायमोहिअंतमेरेरूप

माँहिंमिलोगेसुआयकै ॥ ऐसेतुवखाँनींतिहँअंबरमहाँनदिये
भूषणअपाररामदियेविकसायकै ॥ रामगललायोपुनघरको
सिधायोगुहदियोहरिज्ञानराजदियोहैवढायकै ॥ ९ ॥ और
जेईवानरअयोध्याशिरदारआएरामपटभूषणसंवूहपहिराए
हैं ॥ शुभग्रीवविभीषणमंत्रिनसमेतसभरामपरमातमासुपू
जकैमनाएहैं ॥ गयेसभदेशसभचीतकेकलेशहरेरामसनमा
नपेखमनविगसाएहैं ॥ किषकिंधानामसुखधामहैअपारव
डोकपिनसमेतशुभग्रीवतौवसाएहैं ॥ १० ॥ राक्षसभ्रवी
नराजपाय अरिहीनरामपूज्योसुविशेषजाइलंकमैवसायोहै॥
रामजगप्यारेराजकरतउदारेराजचहेनाँहिंलक्ष्मणसोईतौवु
लायोहै ॥ युवराजटीकोतिहँभालमैसुदीनोनीकोलक्ष्मणम
नरामसेवामैलगायोहै ॥ रामपरमातमासुकारयअनेककरे
निरमलचीतनाँहिरंचकलिपायोहै ॥ ११ ॥ कर्त्तव्यविहीनरा
मरंचकविकारनाँहिंआपनेआनंदरामसदाविकसाइहै ॥ करे
अश्वमेधयज्ञदक्षणाअपारदीनीरामनरदेहधरलोकनसिखा
ईहै ॥ रामराजभयोसभदूखमिटगयोनाँहिंविछूआसुव्याल
नतेलोकदुखपाईहै ॥ व्याधिनकोनाँहींडरभयोजवरामराज
चोरनकोनाँहिंडरपापनकमाईहै ॥ १२ ॥ वृढनकेजीवतन
वालजगमाँहिमरेराघवकीपूजासभरामयशगाईहै ॥ जैसे
रुचिहोइपुनजाँहींक्षणजहाँजगआयतवमेघतहाँतैसेहीवसा
ईहै ॥ वरणसुआश्रमकेगुननसमेतभयेप्रजासभरामकीसुध
रमकमाईहै ॥ औरसनपूतनसमानभगवानपितुप्रजाप्रति

पालकरेंवडेयशपाइहैं ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धर्मपराय
णरामजीशुभलक्षणतनधार ॥ दशसहँस्रसंवत्सरनकीनोरा
जमुरारि ॥ १४ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ इदंअतिगोप्यधनधान्यकी
समृद्धिकरेंदीरघअरोगआयुपुण्यउपजायहै॥पुण्यसुअध्यात्म
पुराणशुभनामयाँहिंऔरनकीकहाँमुखआदिशिवगायहै॥रा
मभक्तिसहितजुसुनेमनलाइनरपढेपुनयाँहिमनमाँहिंविकसा
यहै ॥ कोटिवडुपातकमिटायातिंहँताँहींक्षणवाँछितअपारफ
ललोकमैंसुपायहै ॥ १५ ॥ धनअभिलापीजगमाँहिंधनघनो
लहेरामराजतिलकजुसुनेमनुलायकै ॥ सुतअभिलापीसुत
आरयसुपायजगसुनेजुरामायणकोआदितेलगायकै ॥ भूप
तिजुसुनेकरजोरकैरामायणकोसंपदासुपायअरिपुंजरणघा
यकै॥वैरीनाँहिंजीतेंताँहिउरमैंडराँहिंसभदूखमिटजाँहिंजीतव
सेभुजआयकै॥१६॥सुनेजेईनारिमनलायकैरामायणकोजी
वतसुहायसुतपूजितासुहायहै॥वंध्यासाजासुनेमनलायकैरा
मायणकोकहौंसतभायसुतसुंदरसुजायहै॥श्रद्धाकेसमेतजो
ईसुननरामायणकोमतसरडारउरकोपनवसायहै ॥ राघवकी
भक्तिसुउदारचित्तधारजनपायसुखभारसभदूखकोमिटायहै
॥१७॥सुनतरामायणसुदेवताप्रसन्नसभविघ्नसुसमस्ततिंहँव
सेमनआयकै॥संपदासमस्तहीसुवसेघरआयतिंहँसुनतरामा
यणजोआदितेलगायकै॥रजस्वलानारिसुनेपूर्णरामायणको
बैठकैएकाग्रचित्तराममनलायकै॥जीवेंचिरजोईसुतउत्तमसु
पावेसोईआपतोपतिव्रतासुरेहयशछायकै॥१८॥भक्तिकेस

मेतजेईपूजतरामायणकोनीतमनलायभलेवंदनासुधारहैं ॥
पदजोपुरातनहैविष्णुजूसनातनकोपावेंजनतेईपापपुंजको
निवारहैं॥ अध्यातमरामायणसुनतसमस्तजनहोयवाएकाग
रसुमनमैविचारहैं॥ रामसुखधामतिनपूर्णसुकामकरेंहोंहिंगे
प्रसंनरामवडेहीउदारहैं॥ १९ ॥ रामहीपरातमासुब्रह्मजवतुष्ट
भएवेदऔमुनीशअखिलातमावतायेहैं ॥ धरमपदारथसुका
ममोक्षजोईजोईचाहितजुलोकफलसोईसोईपायेहैं ॥ सुनत
रामायणकोनमधारजेईजनपूरणअखंडनाँहिंखंडकछुपायेहैं
॥वाजपेयसोमऔतुरंगमेधयागनकोपायफलनीकेनायपाप
कोमिटायेहैं ॥ २० ॥ कल्पकोटिअघकोविनाशक्षणमाँहिंकरे
आयुषअरोगसभेदववितसाईहैं ॥ खेटऔकपीशतोपमा
नहोंहिंसुनतहीपितरप्रसंनहोंहिंवडेसुखपाईहैं ॥ यहिजोअ
ध्यातमरामायणवैरागज्ञानआयनपुरातनपुराणऋषिगाय
हैं ॥ पठन्तिशृण्वन्तिजेलिखन्तियाँहिमालजातेमेटअघभारी
भवफेरनाँहिंआयेहैं ॥ २१ ॥ ॥**सवैया**॥ ॥ श्रुतिपुंजम
हेशमथेवहुवारसुतारकब्रह्मरहस्यनिकारे॥ जगतारकब्रह्मसु
रामअहैइहभूतपतीमनमाँहिंविचारे ॥ यहिराघवतत्वसुगूढम
हासभवेदनकोशिवसारनिहारे ॥ ऋषिमंडलजूउरमाँहिंधरो
यहिपारवतीप्रतिशंभुउचारे ॥ २२॥ **अनंगशेखरछंद**॥ मि
लायकोटिकीशजाँपटायनीरासिंधुकोलरायवीरधीरजाँहिंकी
नमासघानियाँ ॥ सुलंकराजशीशकाटराजदाशथाथिओवि
मानमोविठायजाँहिजानकीसुआनियाँ॥सुदेवदुंदुभीवजाँहिं

गाँहिपासकिंनरालियोसुजाँहिंराजफेरतातराजधानियाँ ॥ सुताँहिंरामचंद्रकीसुयुद्धकांडकीकथागुलाबसिंहदासयाँहिं भाँतिहैवखानियाँ ॥ २३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥



॥ इती युद्धकांडसमाप्तः ॥





श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ उत्तरकांड प्रारंभः

॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ मानवदेहमनोहरलैजिहँराजकरेमुनिके दुखटारे ॥ शेषसुरेशमहेशभजेचतुराननजाँपदकंजजुहारे ॥ कीटपतंगविहंगमऔगृहगोधिकसेसगलेजिनतारे ॥ ताँपर मातमराघवकोकरजोरदोऊअभिवंदहमारे॥ १ ॥ ॥ **दोहा** रघुकुलतिलकजयतिरामकौसल्याह्लदिनंद ॥ दशमुखनाश ककंजहगदाशरथीसुखकंद ॥ २ ॥ ॥ **पारवत्युवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ मातानंदवधावनहारे ॥ दाशरथीश्री राममुरारे ॥ रावणलौराक्षसवलधारी ॥ हनेरामरणभू मिमझारी ॥ ३ ॥ वैठराजसिंहासनरामा ॥ औधपुरीजन केसुखधामा ॥ मायामानवदेहबनायो ॥ कितिकवर्षभूमाँ हिंरहायो॥ ४॥ वेपरमातमलीलाधारी ॥ मानवदेहकथंपुन डारी ॥ श्रवणचाहिमेउरहर्षानो ॥ रामकथातुमबहुरवखा नो ॥ ५ ॥ रामकथाअंमृतकोपाई ॥ त्रिष्णाभईसुमेअधि काई ॥ भगवनमोहिअनुग्रहधारे ॥ कहोरामकीकथाविथारे ॥ ६ ॥ ॥**श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ राक्षसमारसुसंगरमाँ

हीं ॥ बैठेरामसिंहासनमाँहीं ॥ सीयरामअभिनंदनकामा ॥ वं
नवासीमुनिआयेधामा ॥७॥ विश्वामित्रअसितमुनिराऊ ॥
कण्वऋषीतपतेजप्रभाऊ ॥ रविसीद्युतिदुर्वासाआए ॥ भृगू
अंगिराउभयसुहाए ॥ ८ कश्यपवामदेवमुनिज्ञानी ॥ अत्री
आएऋषीमहानी॥ सप्तऋषीश्वरअमलसुहाए ॥ शिष्यनसहि
तअगस्त्यसुआए ॥ ९ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ द्वारहिमैमुनिजाय
खरेपुनद्वारपकोयहिवाक्यअलाए ॥ राममहीपसमीपकहोसु
खरेमुनिमंडलबाहिरआए ॥ आदिअगस्त्यसुदेहिंअशीशकरैं
अभिनंदनआइसपाए॥ द्वारपजाइसुराघवकोढिगपारवतीव
हुवाक्यसुनाए ॥ १०॥ **छपैछंद** ॥ मुनिमण्डललेसंगअगस्त्य
मुनीश्वरआए ॥ पावकसेतनतेजदिशातमदूरमिटाए ॥ तवदे
खनकीचाहिवडीतिनकेउरमाँहीं॥ धीरवडेमतिमानखडेऋषि
द्वारेमाँहीं ॥ सुनद्वारपालकेवाक्ययहिरामवखानेआपमुख ॥
अवरत्नभवनमहिंपूजकरमुनिगनल्यावहुयथासुख ॥ ११ ॥
॥ **चौपाई** ॥ राममुनिनकोपेख्योजवही ॥ शीघ्रहिंउठेजोर
करतवही ॥ अर्घ्यादिकपूजाविधिकरी ॥ मीठीवाणीमुखउच्च
री ॥ १२॥ बहुररामअभिवंदितकीने॥ यथायोग्यसभआस
नदीने॥ बैठेमुनिगनतहँहर्षाई ॥ पूजेरामरमापतिराई ॥ १३ ॥
पूछ्योरामअनामयतिनहीं ॥ कुशलकह्योमुनिगणसभविन
हीं ॥ महाबाहुरघनंदनथारे॥ कुशलकुशलगृहदेशमझारे ॥
॥ १४ ॥ भलोभयोअरिगणसभमारे ॥ सिंहासनमैराम
निहारे ॥ रावणराक्षसकोजोराजा ॥ ताँकोवधनाहिंकठिन

सुकाजा ॥ १५॥ त्वंकरमैलेधनुषमुरारी ॥ जितोत्रिलोकीक्षण मैसारी ॥ भलोभयोसभराक्षसमारे ॥ रावणलौजेहुतेविका रे ॥ १६ ॥ महाबाहुहरिरावणजोई ॥ ताँवधसहिजकठनन हिंकोई ॥ मेघनादकोवधथांजोई ॥ हुतोकठिनपरहोयोसोई ॥ १७ ॥ कुंभकरणलौखलबलवान ॥ शूरवडेवहुकालसमा न ॥ अंतकप्रतिमबाणतुममारे ॥ हनेसगलरणभूमिमझारे ॥ ॥ १८ ॥ हमकोअभयदक्षणादीनी ॥ पूर्वसरामसपूर्णकीनी ॥ अरिसंवूहसगलतुममारा ॥ कृत्यकृत्यअवजीवनथारा ॥ १९ ॥ अैसैमुनिगणजबैवखान्यो ॥ सुनकरउमारामविसमान्यों ॥ वि स्मयमानजोरद्वैहाथ ॥ बोलतभयेबहुररघुनाथ ॥ २० ॥ रावण कुंभकर्णलौजेते ॥ जिनेंत्रिलोकीक्षणमैतेते ॥ तिनकोंकिंअ तिलंघनकरहो ॥ इंद्रजीतयशकिंविस्तरहो ॥ २१ ॥ यांविधि सुनरघुवरकीवानी ॥ बोलेकुंभयोनिऋपिज्ञानी ॥ प्रीतिस हिततिनवचनउचारे ॥ सुनराजनअवकहोंमुरारे ॥ २२ ॥ मे घनादरावणवृत्तांत ॥ भाखोंसगलसुनोएकांत ॥ जन्मकर्मजे सेवरदान ॥ सभसंक्षेपतिकरोंवखान ॥ २३ ॥ प्रथमेसतयुगमै श्रीराम ॥ भयोपुलस्त्यपुत्रअजधाम ॥ मेरुसमीपगयोमतिमा न ॥ तपकेकाजपुलस्त्यमहान ॥ २४ ॥ सोत्रिणविंदुकिआश्रम मॉंहीं ॥ मुनिनिवस्योसुखसोंवनमॉंहीं ॥ महातेजतपसाअति धारी ॥ जलअहारमुखवेदउचारी ॥ २५ ॥ सुरगंधर्वकंन्यका जेती ॥ तॉंवनमॉंहिंसुआँवेंतेती ॥ नाचेंहसेंऊचस्वरगावें ॥ केलकरेंवहुवाद्यवजावें ॥ २६ ॥ ऋषीपुलस्त्यकरेतपजोई ॥

ताँमैंकरैंविघ्नअतिसोई ॥ भयोक्रोधउरऋषिकेभारा ॥ निज
मुखतेयहिवाक्यउचारा॥ २७॥ मेरीदृष्टिविषयजोहोई ॥ धारै
गर्भकन्यकासोई ॥ यहिसुनशापभईभयमान ॥ आवहिंन
हिंपुनतिहँअस्थान ॥ २८ ॥ दोहा ॥ राजऋषीतृणविंदुकी
कंन्यासुन्योनसोइ॥ मुनिआगेविचरतिभईखेलतिनिर्भयहोइ
॥ २९ ॥ चौपाई ॥ पांडुरवरणसुतनकोभयो ॥ भईविरूप
गर्भनिर्मयो ॥ देहविवरणपिख्योतिनजवही ॥गईपिताढिगह
रीसुतवही॥ ३०॥निजकन्यातृणविंदुनिहारी॥ राजऋषीतप
जाँहिंअपारी ॥ ज्ञानचक्षुतिनधार्योध्यान ॥ मुनिकृतसकल
सुताहिंपछान॥ ३१ ॥ वहुरपिताकंन्यासंगलीनी ॥ विधिव
तजाइपुलस्त्यहिदीनी ॥ कंन्याकोमुनिकरगहिलीनो ॥ अंगी
कारउचारणकीनो ॥ ३२ ॥ प्रीतभयोपिखटहिलपरायण ॥
वोल्योमुनिकरुणाकोआयन ॥ दोनोवंशवधावैजोई ॥ देउँ
पूतइकतोकोसोई ॥ ३३ ॥ तवकंन्याइकपुत्रसुपायो ॥ दियो
पुलस्त्यमहासुखदायो ॥ताँहिंविश्रवाराख्योनाम॥ब्रह्मज्ञानी
तपकोधाम ॥ ३४ ॥ नवताँशीलधर्मकोपेख ॥ भरद्वाजमु
निजानविशेष ॥ भरद्वाजनिजकंन्यादीनी ॥ आदरसहितवि
श्रवालीनी॥३५॥ ताँमैंतिनइकसुतउपजायो॥ पौलस्त्यजलो
कनमैगायो॥ पितातुल्यवैश्रवणसुभयो ॥ ब्रह्मातिहँअनुमो
दनदयो॥३६ ॥ वहुतवर्षताँनेतपकीनो ॥ व्हैप्रसन्नब्रह्मव
रदीनो ॥ धनाध्यक्षताँकोविधिकीयो ॥ पुष्पकयानमहा
वरदीयो ॥३७॥ याँविधिवरकुवेरजवपायो ॥ पितानिहारण

केहितआयो ॥ ब्रह्मादियोविमानसुजोई ॥ ताँमैचढआयो
हैसोई ॥ ३८ ॥ आयपितापदमैशिरधार्यो ॥ तपकोफलपा
योसुउचार्यो ॥ पिताविधातावरमुहिदयो ॥ वासस्थाननताँ
नेकह्यो ॥ ३९ ॥ आपक्रुपाकरभाषोसोई ॥ जहाँनहिंसाकोँ
कीहोई ॥ पिताबहुरतिंहँभाषयोराम ॥ पुरीआहिइकलंका
नाम ॥ ४० ॥ दैत्यनकेवहुवासनिमित्ता ॥ विश्वकर्मणारची
सुचित्त॥नारायणडरलंकात्यागी॥दैत्यगएसुरसातलभागी॥
॥ ४१ ॥ परदुर्धर्षपुरीवहुआहि ॥ सागरमध्यवैरिडरनाँहिं ॥
तहाँवासतुमनीकेकरो ॥ औरनसाधेमतउरडरो ॥ ४२ ॥ ऐ
सेंसुनिनिजपितुकीवानी॥वसेताँहिंमैधनदभवानी ॥ चिरत
हँवस्योबहुतसुखपायो ॥ पितातांहिंपिखअतिहर्षायो ॥ ४३॥
दैत्यसुमालीजोवलधारी॥सोआयोयाँधरणिमझारी॥ पिशि
ताशीवहुनिकसपताल ॥ मर्त्यलोकमैफिरेविशाल ॥ ४४ ॥
कन्याअपनीसंगसुलीनी ॥ मनोअहेपदमारसभीनी ॥ तवै
सुमालीधनदनिहारा ॥ फिरेविमानतेजअतिभारा ॥ ४५ ॥
सभराक्षसकोहितउरधारा ॥ करतभयोमनमाँहिंविचारा ॥
कन्यानामकैकसीआहि ॥ ताँकेप्रतिपुनभाख्योताँहिं ॥ ४६ ॥
कालविवाहपुत्रितेभयो ॥ यौवनतेतनमैनिर्मयो ॥ निंदातेउ
रमाँहिंडराँहीं ॥ यातेवरनहिंतोहिवराँहीं ॥ ४७॥ ब्रह्मकुलोद्भ
वमुनितपधाम॥ याँहिंविश्रवाभाषैंनाम॥याँकोवरोआपतुम
जाई ॥ होवेंगेसुतबलअधिकाई ॥ ४८ ॥ धनदसमानकांति
अतिधारे ॥ होवेंगेसुतसुतातुमारे ॥ कंन्यामुखतेतथावखाँ

न ॥ गईजहाँमुनिआहिमहाँन ॥ ४९ ॥ आगेखडीअधोद्रि
गदोऊ॥ लिखेधरणिपदनखसोंसोऊ॥पूछितभयोमुनीश्वरताँ
हीं ॥ कवनसुकन्यात्वंवनमाँहीं ॥५० ॥ कन्यासांजुलिकीन
बखाँन ॥ ध्यानधारमुनिलेहुपछाँन ॥ तवमुनिध्यानधारस
भजाँन ॥ कीनोताँप्रतिएहुवखाँन ॥ ५१ ॥ तेअभिलापामैं
सभपाई ॥ मोतेसुततूँचहेंउपाई ॥ दारुणसायंवेलाआई ॥ सु
तअभिलापारूपसुहाई ॥ ५२ ॥ दारुणदोसुतराक्षसभारी ॥
होवेंगेतेउदरमँझारी ॥ कन्यामुनिशार्दूलअलाए ॥ तुमतेयाँवि
धिकेसुलपाए ॥ ५३ ॥ तवताँकोमुनिकियोवखाँन ॥ पश्चमसु
तह्वैहैमतिमाँन ॥ महाभागवतयशकोआयण ॥रामभक्तिमैंप
रमपरायण॥५४॥ऐसेमुनिवरभाख्योजवही ॥ कालपाइसुत
उपजेतवही ॥ प्रथमैंरावणभयोमहाँन ॥ वीशभुजादशशिरप
हिचाँन ॥५५॥ रावणजयोभवानीजवही ॥ पृथिवीकंपभयो
जगतवही ॥ जगतविनाशनकारणजेई ॥ भएनिमित्त
अखिलपुनतेई ॥ ५६ ॥ कुंभकरणपुनजयोमहाँन ॥ जाँको
देहपहारसमाँन ॥ उपजीरावणवहुरसहोदरि ॥ शूर्पणखाति
हैंनाममहोदरि ॥ ५७ ॥ वहुरविभीषणजन्मसुपायो ॥ शां
तआतमापरमसुहायो ॥ कर्मपरायणनियतअहार॥निशिदि
नवेदसुपढेउदार॥५८॥कुंभकर्णदुष्टातमजोई॥ चुनचुनखाइ
द्विजातीसोई ॥ ऋषींसर्वजिहँठौरनिहारे ॥ दारुणतिनहिंपक
रमुखडारे ॥ ५९ ॥ रावणभयोमहाँवलधारी ॥ लोकनको
डरदेवेभारी ॥ रावणजीवनरोगसमाँन ॥ लोकनाशहितव

धेमहाँन ॥ ६० ॥ सभकेउरमैअर्थसुजोई ॥ रामसकलतुम
जानतसोई ॥ ज्ञानदृष्टिसाक्षीत्वंआँहि ॥ वसेंसर्वकेत्वंहृदि
माँहिं ॥६१॥ त्वंपरमेश्वरनिर्मलरूपा ॥ नित्यउदितहैतोहिस्वरू
पा॥तुमलीलामनुजाकृतिधारी॥ निजमहिमागुणमायमुरारी
॥ ६२ ॥ लीलाहिततुमप्रेर्योमोही ॥ राक्षसजन्मकर्योमैतो
ही॥ केवलरामस्वरूपतुमारा ॥ मैजाँनोंजोअहउदारा ॥६३॥
शक्तिअचिंतअनंतचिदातम ॥ अजअक्षरविदतातमआतम
॥ त्वंनिजरूपपरायणदेव ॥ गूढरहेंजगअलखअभेव ॥ ६४ ॥
॥ **दोहा** ॥ तोहिरूपातअटोंमैजगमैसुखीमुरारि॥ औरसुफो
कटधरमहैतेरोसिमरणसार ॥ ६५ ॥ **सवैया** ॥ इहभाँतिक
र्योमुनिजौगिरिजानवआपरघूत्तमवाक्यअलाए ॥ इनंव
शपविप्रसुकीरतिजाँघटकेसुतकोहसरामबताए॥इहमायकहै
सभजोपिखियेजनहोइअनन्यसुमेयशगाए॥ मुनिपुंगवमेयं
शगायनजोक्षणएकविपेसभपापमिटाए ॥६६॥ इतिश्रीमद
ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकांडेप्रथमोऽध्यायः॥
॥ १ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ रामवचनसुनहर्पभरकहैअगस्त्यव
खाँन ॥ सभामाँहिंसभकेसुनतसुनतरामसुखमाँन ॥ १ ॥
॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ वहुरधनेश्वरदे
वकुवेर ॥ किसीकालतहँआयोफेर ॥ पुष्पकमैआरूढसुहायो॥
पितुपेखनहितसोतहँआयो ॥ २ ॥ ताँहिंकैकसीनयननिहा
रा ॥ आहिमहौजसतेजअपारा ॥ पुनसमीपवहुसुतकेगई॥
रावणकोइमभाषतभई ॥३॥ पूतधनेश्वरदेवनिहारो॥ ज्वलत

१ दर्य.

तेजदशदिशिउजियारो॥ त्वंसुतजिहँविधिअसोभ्राजें॥ तैसो
यत्नकरोसुखिछाजें ॥ ४ ॥ सुनरावणहिंरोपवहुमाना॥ वेग
प्रतिज्ञाकरीमहाना॥ धनदसमानअधिकवामाय ॥ होवेंवेग
तापतेजाय॥५॥ मातसुव्रतेपिखततकाल ॥ ऐसेमुखतेभाप
विशाल॥ दुष्करतपकरणोउरमाँन ॥ उठ्योसुरावणशूरमहाँ
न॥ ६ ॥दोहा ॥ फलकेसिद्धनिमित्तपुनरावणसानुजबीर॥
तीरथगोकरणंगयोलगोकरणतपधीर॥ ७॥ चौपाई॥ अप
नोअपनोनियमसुधार ॥ लागेतपसाकर्णउदार ॥ कुंभकर्ण
तपघोरक्योंहै॥ लोकनकोबहुतापभयोंहै ॥८॥ दशसहस्रव
र्षनबलवाँन ॥ कुंभकर्णतपकर्योमहाँन ॥ धर्मस्वरूपविभीप
णजोई॥सत्यसुधर्मपरायणसोई॥९॥पंचसहस्रवर्षतपधार॥
ठाँढोभयोएकपदभार ॥ रावणकरीतपस्याजोई॥अवसुनिये
नीकेउरसोई ॥१०॥ दिव्यसहस्रवर्षतपधार॥ रह्योइकंतनकी
नअहार ॥ पूरणवर्षसहस्रसुजवही॥ भयोकाटशिरहोम्योत
वही ॥ ११ ॥ नवसाहस्रवर्षइमगयो ॥ नवशिरकाटसुहोम
तभयो ॥ दशमसहस्रवर्षजवआयो ॥ रावणतौमनमैवि
कसायो ॥ १२॥ काटनलगोदशमशिरजवही ॥ आपप्रजा
पतिआएतवही ॥ पूतपूतदशकंठउदार ॥ मैंप्रसन्नइमकीनउ
चार ॥ १३ ॥ वरमाँगोउरचाहोजोई ॥ देंउँपूतक्षणभीतर
सोई ॥ रावणयोंविधजौसुनपायो॥हर्षभयोउरवचनअला
यो॥ १४ ॥ जौतुमहौवरदेवनहारे ॥ वरोंअमरतादहुउचारे
नागसुपरणसुरासुरजेते ॥ मोकोंमारसकेंनहिंनेते ॥ १५॥

मानवहैंजगभीतरजेई ॥ मेरेआगेत्रिणसमतेई ॥ याँविध
रावणवरहिंसुनायो ॥ ब्रह्मातांकोतथाअलायो ॥ १६ ॥ पुन
कमलासनभाख्योवेई ॥ अग्निमाँहिंशिरहोमेजेई ॥ यथापूर्व
उपजेंगेतेई ॥ असुरोत्तमजानोमनमेई ॥ १७॥ रावणकोइ
हभाँतिवखाँन॥रामप्रजापतिदेवमहाँन ॥ गयोविभीपणकी
ढिगजवही ॥ करीविभीषणवंदनतवही ॥ १८ ॥ तवब्रह्मा
यहिवचनउचार्यो ॥ वत्सविभीषणतुमतपधार्यो ॥ धर्मनि
मित्तवडोतपधारा ॥ त्वंजगमैंहैंपरमउदारा ॥ १९ ॥ अभि
मततोकोंहितवरजोई ॥ माँगोपूतदेउँतेसोई ॥ पुनपदवंध
विभीषणवोला ॥ करअंजुलिशुभवचनअमोला ॥ २० ॥ दे
वसदामेरीमतिजोई॥ धर्ममाँहिंदृढनीकेहोई॥ रुचिअधरममे
कदानधारे ॥ जहँजहँरहोंसुजगतमझारे ॥ २१ ॥ भयो
प्रसन्नप्रजापतिधीर ॥ कह्योविभीपणकोरघुवीर ॥ धर्मशी
लत्वंजसजगमाँहीं॥ होवेंगोतैसोभवमाँहीं॥ २२॥ विनमाँगे
अमरत्वसुजोई॥ तोकोंदियोविभीषणसोई ॥ कुंभकरणकोव
ह्रुरवखाँन्यो ॥ माँगोवरजाँहिततपुठाँन्यो ॥ २३ ॥ वाणीतौ
मुखमाँहिंसमाँनी॥ कुंभकर्णइहुकीनवखाँनी ॥ षटमासनसो
वोंजगमाँहीं ॥ भोजनकरोंएकदिनमाँहीं ॥ २४ ॥ ब्रह्मा
ताँकोतथावखाँन्यो॥ देवनसहितहर्षउरमाँन्यों॥ निकसशारदा
जवमुखगई ॥ स्वर्गलोकसाजावतभई ॥ २५ ॥ दुष्टसुकुं
भकर्णथोजोई॥ चिततभयोदुखितउरसोई॥ वलीविधाताकी
विधिआहि॥ अनवाँछितनिकस्योमुखमाँहिं॥ २६॥ दौहित्र

नवरलब्धपछाँन ॥ नामसुमालीदैत्यमहाँन ॥ संगप्रहस्ता
दिककोल्यायो ॥ पातालहिंतेबाहिरआयो ॥ २७ ॥ राव
णकोउरमाँहिंलगायो ॥ वचनस्वमुखतेएहुअलायो ॥ भलो
भयोसुततुमवरपाए ॥ वांछितमोहिमनोरथआए ॥ २८ ॥ जाँ
केभयकरलंकात्यागी ॥ गएरसातलमैहमभागी ॥ महाविष्णु
कोडरथोजोई ॥ भयोनिवत्तमहाभुजसोई ॥ २९ ॥ लंकानगरी
आहिहमारी ॥ पूरववसेंसुजाँहिंमझारी ॥ धनदतुमारोजोयहि
भाई ॥ ताँहिंदवाईलेहुछडाई ॥ ३० ॥ सामपराक्रमजाँविधि
वने ॥ भूपतिबंधुसुल्हदनहिंगने ॥ ऐसेजवैसुमालीभाँन्यो ॥ रा
वणताँहिंनिषेधसुठाँन्यो ॥ ३१ ॥ ऐसोकथननलायकतेरे ॥ धनद
भ्रातहैगुरुजगमेरे ॥ ऐसीसुनरावणकीवानी ॥ वहुरप्रहस्त
सुताँहिंवखानी ॥ ३२ ॥ शूरहोंहिंजगभीतरजेते ॥ भाईबंधुन
माँनेंतेते ॥ वचनकहोंसुनियेअवसोई ॥ वहुरकरोजोउररुचि
होई ॥ ३३ ॥ सुरअरुअसुरअहेंजगजेते ॥ कश्यपकेसुतसगलेत
ते ॥ लरेंपरस्परआयुधमारें ॥ भावसुल्हदनहिंमनमेंधारें ॥ ३४ ॥ न
हिंराजनयहिवादनवीनो ॥ देवनदैत्यनवैरजुकीनो ॥ सुन्योप्रह
स्तवाक्ययहिजवही ॥ रावणकेमनआयोतवही ॥ ३५ ॥ रावण
मुखतेतथावखाँन ॥ क्रोधकियेउरमाँहिंमहाँन ॥ ताम्रसुनयन
क्रोधकरभए ॥ चढलंकाकेपर्वतगए ॥ ३६ ॥ दूतप्रहस्तप
ठायोजवही ॥ धनदनिकारलंकलीतवही ॥ रावणलिएवजी
रसुसाथा ॥ लंकवासकीनोरघुनाथा ॥ ३७ ॥ धनदपिताके
वाक्यनमान ॥ लंकाछोडीवैठविमान ॥ शिखरजाइकैलाश

प्रवीनो ॥ तपकरशंभुप्रसन्नसुकीनो ॥ ३८ ॥ ताँकासखासु भयोनवीनो ॥ शिवताँकोअभिनंदनकीनो ॥ नगरीअलिकानामसुहाई ॥ विश्वकर्मणातेंनिर्माई ॥ ३९ ॥ नगरी दईकयोंदिगपाला ॥ शिवताँकीकीनीप्रतिपाला ॥ रावणराक्षससहितसुहायो ॥ सानुजलंकाराजसुपायो ॥ ४० ॥ राजकियोतिनअसुरनकेरो ॥ दानत्रिलोकीकोदुखभेरो ॥ भगिनी विकटरूपनिर्मई ॥ कालखंजवंशीकोदई ॥ ४१ ॥ विद्युतजिव्हानाममहाँन ॥ महाबलीसुनिशाचरजाँन ॥ रक्षनविश्वकर्महैजोई ॥ मयनामादितिकोसुतसोई ॥ ४२ ॥ दुहिता ताँमंदोदरिनामा ॥ यौवनरूढरूपकीधामा ॥ रावणकोतिन आपसुदीनी ॥ सफलशक्तिदेप्रीतिसुकीनी ॥ ४३ ॥ वैरोचनकीपुत्रीअहे ॥ नामवज्रज्वालातिंहँकहें ॥ कुंभकर्णसोंव्याहनकीनी ॥ रावणआपपितातिंहँदीनी ॥ ४४ ॥ गंधर्वनराजाशैलूषा ॥ ताँकीसुतारूपगुणभूपा ॥ धर्मशीलिमतिमानप्रवीनी ॥ रावणब्याहविभीषणदीनी ॥ ४५ ॥ सरमानामवडीसुखदाई ॥ सुभलक्षणगुणरूपसुहाई ॥ मंदोदरीभईसुप्रसूत ॥ मेघनादजायोतिनपूत ॥ ४६ ॥ जन्मसमेवङ्कगाज्योअैसे ॥ नादकरेसावनघनजैसे ॥ सर्वलोकबोलेतवराम ॥ मेघनादयाँकोहैनाम ॥ ४७ ॥ कुंभकर्णपुनकह्योनरेश ॥ निद्रामोकोंदेतिकलेश ॥ तवइकगुहाकरायविशाल ॥ अतिलाँबीपुनधसोपताल ॥ ४८ ॥ निद्रापायमूढअतिहोयो ॥ ताँमैकुंभकर्णजबसोयो ॥ रावणलोकरुवावण

हारे ॥ कीनउपद्रवलोकमझारे ॥ ४९ ॥ ब्राह्मणऋपीसर्व सुरदानव ॥ किंनरदेववधूपुनमानव ॥ महाउरगलौंहैंजग जेते ॥ मारदुखायेसगलेतेते ॥ ५० ॥ सुनीकुवेरजवैयहिवा त ॥ रावणकीनसुबहुउतपात ॥ तबकुवेरनेदूतपठायो ॥ करोअधर्मनएहुअलायो ॥ ५१ ॥ सुनदशग्रीवभयोरुपआ रा ॥ वेगगयोचढधनदअगारा ॥ जीतधनेश्वरकोवशिकी नो ॥ पुष्पकतांहिंविमानहिंलीनो ॥ ५२ ॥ पुनःकरीयमपुर परधाई ॥ धर्मरायसोंकरीलराई ॥ सभयमदूततहाँपुनधाए॥ धर्मरायकोदीनभगाए ॥ ५३ ॥ वहुरवरुणकोजीत्योजाई ॥ स्वरगलोकपुनकरीचढाई॥देवराजमारणकीचाहि॥ चढीदशा ननकेमनमाहि॥५४॥ घोरयुद्धअमरापुरिभयो ॥ देवनसाथ दशाननकयो ॥ बहुरसुरेश्वरयुद्धसुकीनो ॥रावणकेशनतेग हिलीनो॥५५॥अमरापुरिमैंवाँध्योतात॥मेघनादयहिसुनीसु बात॥वेगप्रतापवानचढगयो॥देवनसाथबडोरणकयो॥५६॥ जीतसुरेश्वरबाँध्योजवही॥वेगछुडाइपितानिजतबही॥देवेंद्र हिंलंकागहिल्यायो ॥ कारागृहकेवीचहिंपायो ॥५७॥ ब्रह्मा आपतहाँचलआए ॥ मेघनादतेइंद्रछडाए॥ मेघनादकोबहु वरदए ॥ब्रह्मावहुरभुवननिजगए ॥५८॥ रावणलोकनजी तनभयो ॥ क्रमहीक्रमकैलासहिंगयो ॥ महाभुजाकेअंतर धार॥ तोल्योतिंहँकैलासपहार ॥५९॥ तवनंदीश्वरदीनोशा प॥ वानरतेरोहरेंप्रताप॥ मानवतोहिहनेंसंग्राम ॥ नंदीश्वरकु पभाख्योराम ॥ ६० ॥दोहा॥ भयोशापनहिंगनेसठरावण

उरगवाँइ ॥ सहसबाहुकेनगरप्रतिगयोलरनहितधाइ ॥ ६१ ॥
॥चौपाई॥ ताँपुरनिकटनर्मदातीर ॥ डेराकियोदशाननवीर ॥
रावणतहाँनर्मदान्हाए ॥ शिवपूजनहितफूलमँगाए ॥ ६२ ॥
कुशआसनपरडारपटंबर॥कीनोशिवपूजनआडंबर ॥ हेमलिं
गदशपरमसुहाए ॥ पंचामृतसोंताँहिंन्हवाए ॥ ६३॥ ताँहिंस
मेअर्जुनबहुवीरा ॥ नारिनसहितनर्मदातीरा ॥ न्हावतताँभु
जदंडपसारे ॥ थाँभ्योसकलनर्मदावारे॥६४ ॥ उलटेनीरती
रनिकसाने ॥ रावणआसनफूलवहाने ॥ भोजनवारिप्रवा
हवहाए ॥ पुजीनपूजाशंभुउठाए ॥ ६५ ॥ रावणदूतपठाएज
बही ॥ पेखसहस्रभुजानृपतबही ॥ रावणपासनिवेदनकी
नो ॥ रावणजायतहाँरणलीनो ॥६६ ॥ बाँधदशाननकोंघर
ल्यायो ॥ तहँपुलस्त्यमुनिजायछुडायो ॥ पुनकिष्किंधाबा
लीसाथ ॥ सबलगयोलरनेरघुनाथ ॥६७॥ ताँनेकक्षमाँहिं
गहिलीनों॥चतुरसमुद्रहिंभ्रामणकीनो ॥ बहुरआनघरत्या
गनकयो ॥ रावणताँहिंसखातबभयो ॥ ६८ ॥ रावणगयो
बहुरबलिद्वारे ॥ वामनपादअँगूठामारे॥ दशयोजनमैपर्यो
सुजाय ॥ घरआयोउरमैविस्माय ॥६९ ॥ महाबलीरावण
याँरीति ॥ सगललोकवशिकीनेजीति ॥ भोगेभोगसर्वज
गमाँहीं॥रावणबैठलंकपुरिमाँहीं॥७०॥रावणसुतमहेंद्रजित
केरो ॥ याँविधिरामप्रभावसुहेरो ॥ रावणलोकरुवावणहा
रा ॥ रामतुमेरणभीतरमारा ॥ ७१ ॥ मेघनादअतिबलिथो
जोई ॥ रणमहिँमार्योलक्ष्मणसोई ॥ कुंभकर्णसमशैलअ

कार ॥ तुमरणभीतरडार्योमार ॥ ७२ ॥ नारायणसाक्षात
भवादि ॥ जगतरूपत्वंप्रभूअनादि ॥ स्थावरजंगमजोजग
माँहीं ॥ रामसुनोहिविनाकछुनाँहीं ॥७३॥ प्रभुतुमनाभिकम
लनिर्मयो ॥ ब्रह्मालोकपितामहभयो ॥ वाणीसहितअग्नि
पुनजोई ॥ तवमुखतेउपजीहरिसोई ॥ ७४ ॥ लोकपालसभ
भुजतेभए ॥ नयनहुँतेरविशशिनिर्मये ॥ दिशाविदशाज
नीतवकान ॥ तवघ्राणनतेउपज्योप्राण ॥ ७५ ॥ औरअश्वनी
केसुतजेई ॥ उपजेतवघ्राणनतेतेई ॥ जंघाजानूरूजघनात ॥
भयेभुवादिकलोकशुभात ॥ ७६ ॥ कुक्षिदेशतेहेभगवान ॥
चारोसागरभयेमहान ॥ इंद्रवरुणहस्तनतेभए ॥ बालखिल्यरे
तहिंनिर्मए ॥ ७७ ॥ मेढ्रहिंतेयमतुमउपजायो ॥ गुदतेमृत्युज
न्मपुनपायो ॥ क्रोधहिंतेत्र्यनयनउपाए ॥ हाडनतेपर्वतप्रभु
जाए ॥ ७८ ॥ केशनतेघनसंततिभई ॥ औषधिसभरोमननि
मई ॥ नखतेभयेखरादिकदेव ॥ विश्वरूपत्वंअखिलअभेव
॥ ७९ ॥ मायाशक्तिमिलेरघुराय ॥ नानागुणव्यत्ययदेखाय ॥
तेआलंब्यविबुधसभजीवें ॥ यज्ञनमाँहिंअमृततेपावें ॥ ८० ॥ वि
श्वस्थावरजंगमजेती ॥ नारायणतवरचीसुतेती ॥ स्थावरजंग
मजीवसुजेई ॥ तवअवलंबनजीवेंतेई ॥ ८१ ॥ तवसंयुक्तसु
निखिलविहार ॥ तेविनरामसुसगलअसार ॥ क्षीरहिंव्यापक
जिमहैघीउ ॥ तिमत्वंरामसर्वकोजीउ ॥ ८२ ॥ **दोहा** ॥ तेरे
भासप्रकाशहैंनभमेंरविअरुचंद ॥ तेनहिंतोहिप्रकाशहैंपूरण
परमानंद ॥ ८३ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ इकसर्वज्ञनित्य

हें ॥ ज्ञानचक्षुविरलाकोलहे॥ नयनाज्ञाननतोकोंलखें ॥जिम द्रिगअंधनसूरयपेखें ॥ ८४ ॥ योगीजेउरज्ञानउदारे ॥ तो कोंपेखेंदेहमझारे ॥ वेदशीशवेदांनसुजेई॥ ताँकरतोहिनिहारें तेई ॥ ८५ ॥ तेपदभक्तियुक्ततेराम ॥ ढूँढततोहिपिखेंचिद धाँम ॥ तुमसर्वज्ञसर्वप्रभुजाँनें॥ तवआगेमैवचनवखाँनें॥ ॥ ८६ ॥ सोतुमक्षमाकराअरिगाँजन॥ तोहिअनुग्रहकोमै भाँजन ॥ कालदेशदिगनाँहिंतुमारे ॥ त्वंइकचेतनरूपमुरारे ॥ ८७ ॥ अजअक्षरचलनादिकनाँहीं ॥ त्वंसर्वज्ञजगतकेमाँ हीं ॥ तुमरेगुणप्रभुआँहिंअनंता॥ त्वंईश्वरजगमैभगवंता॥ ॥ ८८ ॥ **दोहा** ॥ कपटनमायकजाँहिंमैभजोंनिरंतरराम॥ सेवकसाथअभिन्नजोकरेजननकेकाम॥८९॥ इतिश्रीमदध्य त्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउतरकांडेद्वितीयोऽध्यायः॥२॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ बालीऔसुग्रीवकेजन्म सुननकीचाहि ॥ सुनेसुरेश्वरभानुमैभएकपीजगमाँहिं॥१॥ ॥ **अगस्त्यउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ मेरुनामजोहेमपहा रा॥ बीचशृंगमणिलगीअपारा ॥ ब्रह्माकीतहँसभाउदारा ॥ शतयोजनजाँकोविस्तारा ॥ २ ॥ चतुराननप्रभुकाहूँका ल॥ ताँमैकरीसमाधिविशाल॥ दिव्यानंदनयनजलआयो॥ नयननतेकरमाँहिंगहायो ॥ ३ ॥ ब्रह्माधारताँहिकरमाँहीं ॥ ध्यानकर्योकछुताँमनमाँहीं ॥ भूमैत्याग्योसलिलमहाँन ॥ ताँतेउपज्योकपिबलवाँन ॥ ४ ॥ ताँकोभाख्योवद्धुरविधाता॥ किंचितकालवसोइहताता ॥ उत्तममोहिसमीपस्थान ॥ व

हुरोतवहुइहैकल्यान ॥ ५ ॥ ऐसेब्रह्माभाष्योजबही ॥ वास
कियोवनरतहँतबही ॥ यांविधबीतेबहुतसुकाल ॥ ऋक्षरा
जतहँरहेविशाल ॥६॥ एकसमेफलहितकपिगयो ॥ वापीए
कनिहारतभयो ॥ दिव्यशिलामणिलगीअपार ॥ निर्मलतौं
मैहेयोंवारि ॥ ७ ॥ पानीपीवनकेहितगयो ॥ तहँछायाक
पिदेखतभयो ॥ तांकोऔरकपीश्वरमाँन ॥ कूदपर्योंजलमाँ
हिंमहाँन॥८॥ तांमैंऔरनवानरपायो॥ निकसवेगजलवाहि
रआयो ॥ निजतनुसुंदरनारिनिहारी॥ विस्मयभयोसुखीति
मझारी॥ ९ ॥ ताँहिंसमेस्वरनायकआयो ॥ पूजपितामहिंपु
नःसिधायो ॥ मध्यदिवसपेखीतहँनारी ॥ मनोरमातनप्रभा
अपारी ॥ १० ॥ मनमथवानसुरेश्वरलागे ॥ पीडितहोयसुवी
रयत्यागे ॥ वीरयवालनमाँहिंगिराए ॥ वालीजन्मसुतांतेपा
ए ॥ ११ ॥ शक्रसुतुल्यपराक्रमभयो ॥ देखपुरंदरतांविक
सयो ॥ स्वर्णमालतांकगलडारी ॥ आपगयोस्वरलोकमंझा
री ॥ १२ ॥ ताँहिंसमेभानुतहँआयो ॥ देखभामिनीबहुत
लुभायो ॥ भामिनिनिकटजवैरविगयो ॥ ग्रीवामाँहिंरेत
गिरपयो ॥ १३ ॥ ताँहिंरततेवेगमहान ॥ वानरएकभ
योवलवाँन ॥ ताँहिंसहायकदेहनुमान ॥ आपगयोनभमं
डलभानु ॥ १४ ॥ दोनोसुततहँतलैभामिनि ॥ गईकछुपु
नऔरेकानन ॥ तहाँजायबहुसोईराति ॥ बहुरजागतनपि
ख्योप्रभाति॥ १५॥ पूर्वहिंजिमतनुकपिव्हैगयो॥ हेरअचंभा
ताँउरभयो ॥ फलमूलादिकबहुतमिलाय ॥ पूतदोऊपुनसंग

लवाय ॥ १६ ॥ ब्रह्माकोंअभिवंदनधार ॥ आगेखडोऋक्ष
शिरदार ॥ ब्रह्मातांआश्वासनकेरिओ ॥ कपिकुंजरकोएहुउ
चरिओ ॥ १७॥ राजदियोतोकोंधरमाँहीं ॥ सुखीवसोअपने
घरमाँहीं ॥ तहँदेवतादूतवुलायो ॥ ब्रह्मातांकोएहुअलायो ॥
॥ १८ ॥ दूतंयाहिममआइसमाँन ॥ संगलिजावोकपिबल
वाँन ॥ किष्किंधापुरिदिव्यसुहाई ॥ विश्वकर्मनिजहाथबना
ई ॥ १९ ॥ सबसौभाग्यअहेजाँमाँहीं ॥ देवनकीगमजाँमेंनाँ
हीं ॥ ताँमेंडारसिंहासनलीजो ॥ राजतिलकयाँकपिकोदी
जो ॥ २० ॥ सप्तद्वीपगतवानरजेई ॥ महाबलीअतिदुर्जय
तेई ॥ तेसभयाँकेहोंहिंअधीना ॥ याँविधमोहिवचनअबकी
ना ॥ २१ ॥ जबनारायणनरअवतार ॥ धारेंगेताँधरणि
मझार ॥ दशरथकेघरनीकेआवें ॥ रामनामजगमाँहिंकहा
वें ॥ २२ ॥ धरणीभारअसुरबलधारी ॥ ताँनाशनहितहोंहिं
मुरारी ॥ तबकपिताँहिंसहाइतधरें ॥ लंकाजाइलराईकरें ॥
॥ २३ ॥ ऐसेकहिविधिदूतपठायो ॥ देवदूतमतिमंतसुआयो ॥
जिमजिमब्रह्माआइसदीनी ॥ तिमहींतिमसभताँहिंसुकीनी ॥
॥ २४ ॥ देवदूतबहुरोंफिरगयो ॥ ब्रह्मापासनिवेदनकयो ॥
ताँदिनतेंकिष्किंधाराम ॥ वानरभूपनकीसुखधाम ॥ २५ ॥
सर्वेश्वरत्वंराममुरारे ॥ ब्रह्माविनतीकरीसुधारे ॥ भूकोनि
खिलसुभारउतार्यों ॥ लीलाकरनरतनुतुमधार्यो ॥ २६ ॥ स
र्वभूतहृदिअंतरराम ॥ नित्यमुक्तत्वंचेतनधाम ॥ रूपाखंडानंद
तुमारे ॥ क्याबलएहजुराक्षसमारे ॥ २७ ॥ चरयातेरीसंतसुगा

वें ॥ लीलामानुपदेहबनावें ॥ तेरोयशसभपापसुहरे ॥ सभलो
कनको अतिसुखकरे ॥ २८ ॥ ॥ अडिल ॥ ॥ बालीऔ
सुग्रीवजन्मनरगावई ॥ मर्त्यलोककेमाँहिंपरमसुखपाव
ई ॥ जन्मसुपावनहोइमिलेवहुसंगमुरारी ॥ होमुक्तहोइजग
माँहिंमिटेतिहँपातकभारी ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ अबमैंकथाब
खाँनोंराम ॥ तोहिमिलीपरमातमधाँम ॥ जाँहितसीताहरीद
शानन ॥ सोअबबातसुनोनिजकानन ॥ ३० ॥ प्रथमहिं
सतयुगराममुरारि ॥ ब्रह्माकोसुतसनतकुमार ॥ कहुँएका
तहुताबहुकानन ॥ ताँकीढिगचलगयोदशानन ॥ ३१ ॥ नम्र
भावपदवंदनकरी ॥ मुखतेएहुसुप्रश्नउचरी ॥ कोबलवंतसुदे
वनमाँहीं ॥ जाँकेआश्रयदेवरहाँहीं ॥ ३२ ॥ काँकेबलसुररण
अरिदरें ॥ काँहिंद्विजातीयजनसुकरें ॥ काँकोंयोगीधरतेध्यान ॥
यहिसंदेहसुमोहिमहान ॥ ३३ ॥ याँकोउत्तरदेवभनीजे ॥ मोसं
देहनिवारणकीजे ॥ सनतकुमारधारउरध्यान ॥ ताँहिंरिदेकीनी
केजान ॥ ३४ ॥ रावणकोतिनएहुबखानी ॥ सुनोपूतअबमेरी
वानी ॥ जोसभजगकोभर्त्ताआहि ॥ जन्मजरादिकजाँकोना
हि ॥ ३५ ॥ सुरअरअसुरनुतःसुखरासी ॥ हरिनारायणहै
अविनाशी ॥ जाँकेनाभिकमलनिर्मयो ॥ ब्रह्मालोकपिता
महभयो ॥ ३६ ॥ स्थावरजंगमजगतसुजोई ॥ जाँनेनिखि
लउपायोसोई ॥ ताँअवलंबनकोसुरधारें ॥ रणमंडलअरिपुंज
विदारें ॥ ३७ ॥ योगीताँकोधारेंध्यान ॥ ताँहिंयजेंसभविप्रमहा
न ॥ याँविधसुनमुनिवरकीवानी ॥ रावणप्रश्नबहुरइहुठानी

॥ ३८ ॥ दानवदैत्यरक्षहरिमारे ॥ कागतिपावेंजगतमझारे ॥
वहुरमुनीश्वरएहुअलाई ॥ सुनरावणराक्षसकेराई ॥ ३९ ॥
विष्णुभिन्नदेवनकेमारे ॥ दैत्यजाँहिंसुरलोकमाझार ॥ भोगन
भोगसुकृतक्षयकरें ॥ गिरेंस्वर्गतभूमैपरें ॥ ४० ॥ पूर्वसुकर्मन
केआधीन ॥ जन्मेंमरेंहोंहिंअतिदीन ॥ विष्णुजाँहिंनिजहा
थनमारे ॥ हरिकीगतितेलहेंउदारे ॥ ४१ ॥ मुनिकेवाक्यसुने
यौंकाँन ॥ रावणहर्षभयोसुमहाँन ॥ हरिकेसंगसुकरोंलराई ॥
यहिचिंतामनमैउपजाई ॥ ४२ ॥ रावणकेउरकीसभजाँन ॥
कीनोसनतकुमारवखाँन ॥ पूततुमारोवांछितजोई ॥ होवेगो
विनसंशयसोई ॥ ४३ ॥ किंचितकालप्रतीक्षणकरो ॥ सुखी
दशाननयाँजगफिरो ॥ याँविधताँमुनिशापमहाँन ॥ बहुर
कियोतिनएहवखाँन ॥ ४४ ॥ अतिमायकहरिआहिअनूप ॥
कहोंदशाननताँकोरूप ॥ अहेस्थावरजंगममाँहीं ॥ नदिअन
अरुपुनकाननमाँहिं ॥ ४५ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ हैओंकारस्वरूप
हरितथासत्यपहिचान ॥ पृथवीसावित्रीतथावपुनारायणजा
न ॥ ४६ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ सर्वजगतअधारसुजोई शेषरूप
हरिजाँनोसोई ॥ सर्वदेवअरसागरजेते ॥ हरिकोरूपपछानों
तेते ॥ ४७ ॥ स्वर्गचंद्रसूर्योऽसौकाल ॥ देवराजयमवायुविशाल ॥
अग्निमृत्युवसुवारिदजान ॥ जलपतिब्रह्ममहेश्वरमाँन ॥ ४८ ॥
औरसुरासुरहैंयेजेते ॥ हरिकोरूपपछानोंतेते ॥ ज्वलतितेज
जगपालेदेव ॥ हरेविश्वपुनकरेअभेव ॥ ४९ ॥ अच्युतदे
वकरेजगलीला ॥ विष्णुसनातनसुंदरडीला ॥ ताँकरव्याप

त्रिलोकीसारी ॥ स्थावरजंगमजगतमँझारी ॥ ५० ॥ नीलक
मलसमृदेहसुहाए ॥ दामनिसेपटतनपहिराए ॥ जांबूनदतनप्र
भाअपारी ॥ वाँमअंगश्रीवसेउदारी ॥ ५१ ॥ नित्यअनाशिनी
देवीजोई ॥ तिहँआलिंग्यनिहारेसोई ॥ दानवदेवसुपंनगजेते
॥ ताहिंनिहारसकेंनाहिंतेते ॥ ५२ ॥ यागपाठतपतीरथदान ॥
ताँकरभासेनहिभगवान ॥ जाँपरआपप्रसादसुधारे ॥ सोई
ताँकोरूपनिहारे ॥ ५३ ॥ अमलदृष्टभवभीतरजेई ॥ विष्णु
नरायणपेखेंतेई ॥ अथवादेखनकीतवचाहि ॥ भाखोंरूपसुनो
अबताँहिं ॥ ५४ ॥ त्रेतायुगआवेगोजवही ॥ नरपतरूपधरेगोत
वही ॥ देवमनुष्यनकोहितधारे ॥ लेइक्ष्वाकुवंशअवतारे ॥
॥ ५५ ॥ दाशरथीवहुरायकहैहैं ॥ महापराक्रमभूमैंऐहैं ॥
पितुआइसधारहिंनिजशीश ॥ रामदशाननवेजगदीश ॥ ५६ ॥
भ्रातहिंसहितसहितनिजवामा ॥ आवहिंगेदंडकवनरामा ॥
वेधरमात्मारामअनूप ॥ निजमायाकरजगतस्वरूप ॥
॥ ५७ ॥ याँविधमैंतेकोनवखाँन ॥ सहविस्ताररूपभगवाँन ॥
पद्मासहितरामजवहोई ॥ भजियोभक्तिभावकरसोई ॥
॥ ५८ ॥ याँविधिसुन्योअसुरपतिजवही ॥ ध्यायविचार
कियोतिनतवही ॥ तेरेसंगवैरउरधार ॥ रावणभयोप्रसन्न
अपार ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ रणनिमितसभलोकमैअटतभयो
लंकेश ॥ मारेजीतेलोकतिनदीनेवहुतकलेश ॥ ६० ॥
॥ ॥ चौपाई ॥ तवलरनेहितहेभगवाँन ॥ रावणवीरवडो
मतिमाँन ॥ सीताताँवनमाँहिंचुराई ॥ तोतेनिजवधम

नहिंवसाई ॥ ६१ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ याँहिंकथासुनहैंपठहैं
पुनऔरनकानरभापसुनावें ॥ आयुपऔरअरोगतनुधनधा
न्यमहापुनताँघरआवें ॥ दूखअनंतमिटेंतिनकेपुनसूखअनंत
उमाजगपावें॥बंधमिटेंजगमंडलकेधरकैतनुयाँजगफेरनआ
वें॥ ६२॥इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तर
कांडेतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥ **अगस्त्यउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ए
कसमेचतुराननकेपुरतेभुविमंडलनारदआए॥ रावणलोकन
माँहिंफिरेंपिखवंदितकेदशकंठअलाए॥ हैंकिंहँठौरमहाबलवं
तलरेंसहमोमुनिदेहिबताए ॥ त्वंजगतीनहुँजानतहैंबलिसंग
लरोंभुजमोहिखुजाए ॥ १ ॥ ॥ **कवित्त** ॥ धारमुनिध्यान
पुनकीनहैबखाँनश्वेतदीपकेनिवासीजनबडेबलधारिया॥ ब
डेरणधीरपुनबडेहीशरीरतिनतहाँतुमजाहुबानमानकैहमारि
या॥ विष्णुपूजाजेईजनकरतसुलाइमनमारेंरणबीचनिजहा
थंजेमुरारिया॥ तेईतहाँजाँहिंजगमाँहिंसुखपाँहिंबडेजिनेना
हिंदैत्यनाँहिंजिनेअसुरारिया॥ २॥ ऐसेसुनकान.तेनलीनोहै
विमानपुनमंत्रिनबुलाइवेगकरीहैतयारिया॥युद्धहूँकीचाहिम
नमाँहिंगयोश्वेतदीपतहाँकेनिवासीतेजप्रभाहैंअपारिया. ॥
फूलनविमानकेमलानसभतेजभएभईगतिकुंठितनचलतअ
गारिया ॥ छोडकैविमानपुनरावणपयानकीनोमंत्रिनकेसा
थंधसेदीपकेमँझारिया ॥ ३॥ करतप्रवेशतिनदीपमैकलेशपा
एनारिनसुहाथमाँहिंलीनोंगहिरावण॥ पूछेंताँहिंनारिकिनभे
ज्योतूंउचारकरकौनहैंसुबोलकहाँभयोतेरोआवन॥डारेंहाथो

हाथतिंहँरावणकेसाथपिखभापेंदशशीशयहिवडोहीखिलाव
ना ॥ हासितसुवारवारनारीऑउदारपुनकरतउचारअहेवा
लमनभावना ॥ ४ ॥ वडोदुखपायतिनहाथतेंछुडायोकिंवें
नारिबलहेरगृहलंकपतिआयोहै ॥ दुरमतिखोटोउरमोटोहीवि
चारकरेंआयोघरमाँहिउरमाँहिंविसमायोहै ॥ ईश्वरकेहाथसु
कटाइनिजमाथरणजाउँमैवैकुंठउरऐसेहीठरायोहै ॥ कोपें
हरिजाँतिवातसोईउतपातकरौंऐसेउरधारतिनवैरकोलगायो
है ॥ ५ ॥ ऐसेमनधारतिनजानकीचुराईवनतोहिकोपंरात
मासुताँहिंउरधारिओ ॥ तोहीतेसुचाहीनाशवैरकोप्रकाश
कियाजानकीकोमातसमताँहिंप्रतिपारिओ ॥ ज्ञानदृकराम
भूतभव्यत्वंपछानेसभतुहींपरमेश्वरसुवेदमैउचारिओ ॥ का
लकलनाहैजोईताँकिसाक्षीरामसोईपूरणआनंदसुविकल्पन
विकारिओ ॥ ६ ॥ दोहा ॥ भक्तनकेअनुरागहितकृत्यकरे
सभराम ॥ मनुजाकृतितवयशकथासुनतहोंहिंसभकाम ॥ ७ ॥
सकललोकपूजाकरैंपायविकुंठमहाँन ॥ मुनिअगस्त्यइहभाँ
तितवकीनोउमावखाँन ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ याँविधसुनमु
निवरतेवानी ॥ पूज्योताँकोरामभवानी ॥ मुनिगणताँहिंस
कलसंगलए ॥ मुनिवरनिजआश्रमकोगए ॥ ९ ॥ सीता
सहितरामविकसाए ॥ भाईमंत्रीसंगसुहाए ॥ संसारीजि
मपद्मानाथ ॥ रमणलगेगृहमैरघुनाथ ॥ १० ॥ विषयन
मैहरिसदाअसंगा ॥ भोगेंभोगजानकीसंगा ॥ हनुमतलौ
शुभवानरजेते ॥ रामरहेंपरिवारेतेते ॥ ११ ॥ एकसमे

बहुसुमनविमान ॥ आयोजहँबैठेभगवान ॥ कह्योविमा
नकुबेरपठायो ॥ तानेरामतोहिढिगआयो ॥ १२ ॥ ॥ दो
हा ॥ प्रथमेरावणजीतकरतोहिलेगयोधाम ॥ बहुरराम
जितआनिओरावणहतसंग्राम ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ताँ
तेधारोरामकोजबलगताँधरवास ॥ रामजाँहिंबैकुंठजबत
बआवोममपास ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ याँविधिसुनवि
मानकीवानी ॥ हसकरबोलेरामभवानी ॥ सूर्यसमानजुसुम
नविमान ॥ ताँकोरामसुकीनबखान ॥ १५ ॥ तोकोंयादकरों
गोजबही ॥ मेरीढिगआवोतुमतबही ॥ अबतूमेरीआइस
मान ॥ नभमेलीनसुहोहुविमान ॥ १६ ॥ याँविधरामसु
ताँहिंबखान ॥ पुरकार्यमेलगेमहान ॥ भाईमंत्रीसंगलवाय ॥
पुरकार्यसभकरेंसुन्याय ॥ १७ ॥ रामरमापतिराजाभए ॥
वसुधासकलसस्यनिर्भए ॥ पादपभएसुफलकेआयन ॥
जनसभभएसुधर्मपरायण ॥ १८ ॥ नारीभईपतिव्रतसारी ॥
पतिकोभजेंसुलाइपियारी ॥ सुतकोमरणनहेरेकोई ॥ राम
भएराजाहरिसोई ॥ १९ ॥ सीतासहितसुबैठविमान ॥ वान
रभाईसहितप्रधान ॥ उमामहीमेंरामसुफिरें ॥ बहुतअमा
नुपकारयकरें ॥ २० ॥ ब्राह्मणकोसुतएकसुबाल ॥ रामपिख्यो
बहुमुयोअकाल ॥ शोचतविप्ररामसोपेखा ॥ जाँन्योभयो
अधर्मविशेखा ॥ २१ ॥ शूद्रसुपिख्योएकवनमाँहीं ॥ तपसा
करेवडीजगमाँहीं ॥ तरुकेसंगअधोमुखडारे ॥ मंत्रगुप्तजपर
हितअहारे ॥ २२ ॥ धमनीव्याप्तसुताँतनलहे ॥ रामकह्योय

हिपातकअहे॥ ताँकोमार्योरामदयालु॥ लियोजिवाइविप्रको
बाल ॥ २३॥ शूद्रहिंदियोरामस्वरलोक ॥ रामविप्रकोकीन
अशोक॥रामपरात्माताँजगमाँहीं॥ लोकनकोउपदेशकराँहीं
॥ २४ ॥ शिवकेलिंगसुकोटिउदार ॥ थापेरामहिंजगतमझा
र ॥ सीतासहितरमेंसुखधाम ॥ भोगेंभोगअमानुपराम ॥
॥ २५ ॥ धर्मसहितधरराजसुकीने॥रामधर्मकीगतिसभची
ने ॥ सर्वलोकमलहरणेहारी ॥ कथारामजगमैविस्तारी
॥ २६ ॥ दशसहस्रवर्षरघुराई ॥ मायामानुपदेहवना
ई ॥ विधिवतराजकियेरघुनाथ॥लोकनिवावेंजाँपदमाथ॥
॥ २७ ॥ पतिनीएकव्रतंहरिधारे ॥ राजऋपीशुचिराममुरा
रे ॥ गृहमेधीकेधर्मगुपावन ॥ रामकरेजगकरेसिखावन ॥
॥ २८ ॥ सीताप्रेमराममैधारे॥ नम्रभावसभकाजसवारे॥
लज्जाभयपतिभावपछाने ॥ ताँकोपेखरामविकसाने ॥
॥ २९॥ एकसमेउपवनकेमाँहीं॥ सर्वभोगजाँमाँहिंसुहाँहीं ॥
दिव्यभवनएकांतसुधीर ॥ सुखसोंवैठेश्रीरघुवीर॥ ३०॥नी
लमणीसमदेहसुहाई ॥ भूपणदिव्यधरेरघुराई ॥ मुखप्रसन्न
उरशांतमुरारे ॥ दामनिपुंजसमांवरधारे ॥ ३१ ॥ कमल
पत्रसमनयनउदारी॥सीतासर्वसुभूपणधारी॥ रामपदांबुज
हाथलडाए॥ राघवप्रतियहिवैनअलाए ॥ ३२॥ देवदेवज
गनाथसुस्वामी॥परमात्मासभअंतरयामी॥ चिदानंदपरवी
नसनातन॥ आदिमध्यविनअंतप्रकाशन॥ ३३॥ त्वंअशेश
जगकारणराम ॥ तुमविनसरेनरंचककाम ॥ सुरएकांतठौ

रसभआए ॥ मोप्रतिअैसेवचनअलाए ॥ ३४॥ वहुतभाँति
सुरविनतीकरी ॥ वैकुंठहिंआवेंअवहरी ॥ तुमरेसङ्गितवसें
धरमाँहीं ॥ हमचाहैंताँकोमनमाँहीं ॥ ३५॥ ॥ दोहा ॥ ॥
अपनोधामविकुंठतजहमकोत्यागमुरारि ॥ जगतमाततव
संगहरिविचरैंधरणिमझारि ॥ ३६ ॥ ताँतेआगेतुमचलोताँ
विकुंठकेमाँहिं ॥ पाछेरामसुआइहैंहमसनाथहुइजाँहिं॥
॥ ३७॥ ॥चौपई॥ ॥यहिविनतीदेवनमुहिगाई ॥ मैंह
रिजीतवपाससुनाई ॥ युक्तहोइसोकरोमहाँन ॥ नहिंआइ
समैकरोंवखाँन ॥ ३८॥ सीतावाक्यसुनेयहिजवही ॥ ध्यान
धारहरिभाख्योतवही ॥ देवीमैंसगलीविधिजाँनों॥ ताँमाँहिंए
कउपायवखाँनों ॥ ३९॥ देवीएकसुमिसहिंचनाँऊँ ॥ लोक
नतेअपवादकराँऊँ ॥ लोकनतेजनुडरउरमाँन ॥ त्यागोंतो
कोंविपनमहाँन ॥ ४० ॥ वाल्मीकिआश्रमकेतीरा ॥ दोकु
मारहोवेंतववीरा ॥ अवतेगर्भसुदेतदिखाई ॥ उपजेंगेभुज
वलअधिकाई ॥ ४१॥ मोहिसमीपवहुरत्वंअैहैं॥ लोकनकौ
परतीतिसुदैहैं ॥ आदरशहितशपतूँदेहैं ॥ भूमिविवरवैकुंठ
हिंजैहैं ॥ ४२ ॥मैपाछैआवोंसुखदाई ॥ योंमनमाँहिंसुमैंठ
हिराई ॥ अैसेरामसुकीनवखाँन ॥ गईजानकीभौनमहाँन
॥ ४३ ॥ ज्ञानस्वरूपरामहैंजेई ॥ वैठसभामाँहिंपुनतेई ॥ मं
त्रीमंत्रविशारदधीरा ॥ सेनापतीमहाँवलवीरा ॥ ४४ ॥ औ
रमहाजनहोतेजेते ॥ रामसमीपसुवैठेतेते ॥ ताँहिंसुहिरदउपा
सनकरें ॥ वहुविधहासकथाविस्तरें ॥ ४५ ॥ हास्यक

थाजबवढीअपारी ॥ सुनसुनहसेसुराममुरारी ॥ सभामाँ
हिंइकविजयसुनाम॥कथाप्रसंगतिपूछ्योराम॥४६॥पुरिअ
रदेशनिवासीजेते ॥ किंहिंविधिभापेंमोकोंतेते ॥ सीताऔर
मातममभ्राता ॥ कैकेईजगमैविख्याता॥ ४७॥ किंहँविध
तिनकोकरेंउचार ॥ साचकहोउरमोडरडार ॥ मोपरआहि
सुगंदमहाँन ॥ अैसेरामसुकीनवखाँन ॥ ४८ ॥ विजयव
खाँनेसुनोनरेश ॥ लोककरेंजोजोनिर्देश ॥ भूपतिरामवडे
सद्ज्ञान ॥ कीनेरामसुकर्ममहान ॥४९॥रावणकोरणमंड
लमारे॥ सीताकोतहँकर्योंउधार ॥ यहिइककर्मअसंगति
करिओ॥सीताकोगृहभीतरधरिओ॥५०॥क्रोधरामअवपृ
पृसुकीनो॥सीतासंगरमेरसभीनो॥सीतासंगमसुखहैजोई॥
कैसरामचीतमैहोई ॥ ५१ ॥ रावणहरीविजनवनमाँहीं ॥ व
र्पदिनाराखीघरमाँहीं ॥ अकस्मातकछुखोटोकरहै ॥ नारि
कर्मपिखपतिरुपधरहै ॥ ५२ ॥ भूपतिजोजगकर्मकमैहैं ॥
प्रजानाँहिपथिमाँहिंचलैहैं ॥ अैसेरामसुन्योतहँजवही ॥ नि
जजनकोहरिपूछ्योतवही ॥ ५३ ॥ तिनभीरामहिंवंदनधार॥
विनसंशयअसकीनउचार ॥ विजयसुहृदअपिऔरवजीर॥
विदाकरेसगलेरघुवीर॥५४॥लक्ष्मणकोंपुनलीनबुलाए॥रा
मसुयाँविधिवचनअलाए॥सीतामाँहिंसुदोपवखाँन॥मेरोभ
योअयशहिमहाँन॥५५॥सीताकोतुमवेगसकारे॥लेजावो
ताँविपनमझारे ॥ वाल्मीकिआश्रमढिंगजाय ॥ आवहुछो
डसुरथहिंविठाय ॥ ५६ ॥ याँपरजोकछुकरेंवखाँन ॥ मो

हिहननतवपापमहाँन ॥ अैसेरामवखाँन्योजवही ॥ डरयो सुलक्ष्मणउरमैंतवही ॥ ५७ ॥ उठकरप्रातसुमंतबुलाई ॥ जनकसुतारथमाँहिंबिठाई ॥ जातभयेताँवनकेमाँहिं ॥ वाल्मीकिऋषिजाँवनमाँहिं ॥ ५८ ॥ आश्रमकीढिगशीघ्रउतार ॥ लक्ष्मणमुखतेकीनउचार ॥ जनअपवादडरेमनमाँहीं ॥ रामतजीतूँयाँवनमाँहीं ॥ ५९ ॥ मातनकश्चितमेरोदोष ॥ जावहुमुनिआश्रमत्यजरोष ॥ असकहिलक्ष्मणरामसमीप ॥ आयेशीघ्रमहाकुलदीप ॥ ६० ॥ सीतादुखिततपीअधिकाई ॥ मुग्धनारिसमअतिविलपाई ॥ वाल्मीकिकेशिष्यसुजेई ॥ समिधाकोआएथेतेई ॥ ६१ ॥ वाल्मीकिप्रतिकीनवखाँन ॥ सुनकरवाल्मीकिभगवाँन ॥ सीताताँहिंरमापहिचानी ॥ वाल्मीकिऋषिदिव्यसुज्ञानी ॥ ६२ ॥ अर्घ्यादिकपूजाकोधार ॥ सीताकोवहुदियोपिआर ॥ भावीबातजानमुनिचीता ॥ ऋपिवनिताकोअरपीसीता ॥ ६३ ॥ तेसियकीपूजावहुकरहीं ॥ भक्तिसहितसेवाविस्तरहीं ॥ दिनदिनमेंअैसीविधरहे ॥ सीतादूखनकोईलहे ॥ ६४ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ मुनिकेवाक्यसुधारउरजानपरातमनारि ॥ मुनिनारीसेवाकरेंताँकीवहुतप्रकार ॥ ॥ ६५ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ रामपरातमज्ञानस्वरूप ॥ केवलआदिसुदेवअनूप ॥ सीताविनसभभोगनत्याग ॥ धारेरामसुदृढवैराग ॥ ६६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ मुनिपदपंकजसेवहींमुनिव्रतधारेराम ॥ सिंहगुलाबसुजोरकरकरतसुसदाप्रणाम ॥ ६७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहे

श्वरसंवादेउत्तरकांडेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अथरामगीतामू
लभाषालिख्यते ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **कवित्त** ॥ तवहरिरा
मचंद्रजगतआनंदकंदकीरतिरामायणसुउत्तमविथारिया ॥
पूरवआचारसुरघूतमविचारकरराजक्रपिकीनेजैसेजगतमँ
झारिया॥लक्ष्मणभ्रातमतिमानसुविख्याततवपूछिओसुराम
चंद्रउत्तरउचारिया ॥ नृगभूपकीकहानीरामभाषीजोपुरानी
भयोमतवारोद्विजभयोशापभारिया ॥ १ ॥ ब्राह्मणकीगाइति
निदईथीप्रमादकरसरटास्वरूपतिनकूपमाँहिंपायोहै ॥ ब्राह्मण
केधनतेविमुखरहोसदाभ्रातऐसेरामचंद्रनिजभ्रातकोअला
योहै ॥ कहूँएककाललक्ष्मनजोविशालउमारामकेसमीपसो
एकंतचलआयोहै ॥ ऐसेरघुवीरजाँकोधीरक्रपिगानकरेंजाँ
हिंकोपदारविंदपदमालडायोहै ॥ २ ॥ आयकेसुमित्रापूतशु
द्धभावनासुचीतभयोनम्रभावतिनकरीपदवंदना ॥ त्वंहिशुद्ध
बोधसभजीवनकोआतमानिराकृतस्वरूपरामईशरघुनंदन॥
तवपदकंजनकेभृंगनकेसंगकरेंपिखेंतवतेईजिनज्ञानद्रिगअं
जना ॥ आएपदपंकजकीशरणसुनाथहमभजतयोगीशपदते
रेभवभंजना ॥ ३ ॥ तमसिंधुभारोजिमतरोंमैसुखारोप्रभुभा
खीयेनरेशबातसोईसुखकारिये ॥ सुनकैसुभ्रातबातभएपुल
कातहरिजाँहिंकीशरणउमादूखपुंजहारिये॥कीनोहैवखाँनरा
मज्ञानहीअज्ञानहनेंऔरनाँहिंकोईजोईवेदेकउचारिये॥भूमि
पालजेईजेईभएहैंविशालजगतिनकेभवानीरामभूषणसुधा
रिये॥ ४ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ **कवित्त** ॥ वरणसुआश्रमकीक

हैंकृतिजेईश्रुतिआदिमैसुकरेभ्रातसोईमनलायकै॥ पापमल
धोयजवशुद्धमनहोयतवतजैकृतसोईचारसाधनकोपायकै॥
गुरुकीशरणजायआतमकोज्ञानपायभजेपदपंकजसुमान
कोमिटायकै॥ ज्ञानकोउपायपुनज्ञानसुखदायसभवेदनको
सारतवकहोंसमझायकै॥५॥ चौपाई॥ आदरसहितक्रियाहै
जोई॥ जगमैतनउपजावेसोई॥ पुनतनमैंनररागसुधारे॥ ताँ
तेप्रियअप्रियसुनिहारे॥ ६॥ धर्माधर्मताँहिंतेहोई॥ वहुरोतन
उपजावेसोई॥ वहुरक्रियाइमचक्रसमाँन॥ भाख्योलक्ष्मणज
गनमहाँन॥ ७॥ मूलसुयाँकोहैअज्ञान॥ ताँहींकोअवर्कोजेहा
न॥ नाशाज्ञानजुकीनवखाँन॥ ताँमैविद्याचतुरपछांन॥ ८॥
अज्ञानजसुकरमहैंजेई॥ नाहिंअज्ञानविनाशकतेई॥ जन्यव
स्तुजगभीतरजेती॥ हैअज्ञानजनीसभतेती॥ ९॥ विद्याभ
ईजन्यअज्ञान॥ सोकैसेतिहँकरहैहान॥ उत्तर॥ जन्यजनक
भावहैजोई॥ नाँहिंअनाशकहेतूसोई॥ १०॥ जगमैहोइविरो
धीजेतो॥ होइविनाशकसगलोतेतो॥ पावकदारुज
न्यजगअहे॥ ताँहींकोपुनउलटीदहे॥ ११॥ करकटआदिक
वहुदृष्टांत॥ याँहिंविषेवुधकेंहइकांत॥ विद्याऽज्ञानविरोधी
अहे॥ याँहींतेताँकोंपुनदहे॥ १२॥ कर्मनाँहिंअज्ञाननि
वारे॥ नाँहिंरागकोमूलउखारे॥ ताँतेकर्मसदोपसुहोई॥ पु
नसंसारउपावेसोई॥ १३॥ ताँतेजोनरवुद्धिउदार॥ करेनि
रंतरज्ञानविचार॥ कर्मनकोउरेसाधनमान॥ लक्ष्मणशंकाक
रतवखान॥ १४॥ ननु॥ क्रियासुवेदवखाँनीजोई॥ विद्यासम

साधनपुनसोई ॥ पुरुपार्थसाधनउरमान ॥ वेदस्वमुखते करेवखान ॥ १५ ॥ हैकर्त्तव्यप्राणिकोसोई ॥ विधिसोंवेद वखानेजोई ॥ विद्यासंगसहाइतपावे ॥क्रियाज्ञानमिलमोक्ष उपावे ॥ १६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ द्वेछदवंतविहंगजोजिम नभभीतरजाइ॥ज्ञानकर्मतिमहीमिलेलेवेंमोक्षउपाइ॥१७॥ ॥ **चौपाई** ॥ कर्मनकोजोदेवेडार ॥ श्रुतिकरेंतिहँदोपउचा र ॥ अग्निहोत्रकोत्यागेजोई ॥वीरहासदेवनकाहोई ॥ १८॥ तांतेहोइमुमुक्षूजोई ॥ कर्मनिरंतरकरेसुसोई ॥ करुणासिं धसुराभउदार ॥ उत्तरयाँकोकरेंउचार ॥ १९॥ आहिस्वतंत्रसु विद्याभ्रात ॥ निश्चलकार्यकरविख्यात ॥ विद्याअहेस्वतंत्रसु भ्रात ॥ मनकरकिंचितचहेनसाथ ॥ २० ॥ ॥ **ननु** ॥ ॥ नि श्चलकार्यसुजिउँक्रतुअहे ॥ कारककोफलहितवहुचहे ॥ तिम विद्याजगभीतरजोई ॥ त्याहेकर्ममुक्तिहितसोई ॥ २१ ॥ के चितऐसेकरेंवखाँन ॥ सोअसत्यउरलक्षमणजाँन ॥ इमवि तर्कवादीवचजोई ॥ दृष्टविरोधत्वनेनहिंसोई ॥ २२ ॥ ननु अभिमानप्रथमनरधारे ॥ पाछेयागहोमविस्तारे ॥ निरहं कारहोइनरजोई ॥ विद्याव्रह्मताँहिंनरहोई ॥ २३॥ अतिविशुद्ध विज्ञानसुजाँते ॥ वचवेदांतालोचनताँते ॥ चरमावृत्तिउदय ज्ञाहोई ॥ आतमविद्याभापेसोई ॥ २४ ॥ अनुयाजादिक कारकजेई ॥ कर्मस्वजनिहितचाहेतेई ॥ विद्यानिखिल स्वकारकमारे ॥ ताँतेसुधीकर्मसभडारे ॥ २५ ॥ संगसुवि द्याकर्मनकेरो ॥ तेजतिमरजिमउरमेंहेरो ॥ आत्मअनुसंधा

नपरायण ॥ इंद्रयविषयतजेदुखदायण ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥
जौलोआत्मावुद्धिहैमायाकरतनुमाँहिं ॥ तौलौकर्मंवखानहैं
विधिवतनिगमसुताँहिं॥२७॥नेतिनेतियहिवाक्यकरनिखिल
निषेधेजोइ॥जानपरातमतत्वउरतजेक्रियासभसोइ॥२८॥
भेदपरातमजीवकाभेदकजोविज्ञान॥जौआत्ममहिंहोइशुभ
जैसेभासुरभान ॥ २९ ॥ होवेमायालीनतबवेगसकारकसो
इ॥ आत्माकेसंसारकोभापीकारणजोइ॥३०॥ वेदप्रमाणसु
जोहनोनिखिलअविद्यावीर ॥ किसीनकारयकारिणीहोवेव
हुरसुधीर ॥ ३१ ॥ अमलाद्वयविज्ञानतेनाशितसाजबहोइ॥
भासितआतमभानह्वैकैसेउपजेसोइ ॥ ३२॥ नष्टभईउपजे
नहींअजाअविद्यावीर ॥ मैकरतायहिमतिकहोकैसेहोवेधीर
॥ ३३ ॥ तातेअहेस्वतंत्रसाविद्याचहेनआँन ॥ मोक्षउपा
एकेवलाबंधकरेसभहान ॥ ३४ ॥ तैत्तिरीयआदरसहित
श्रुतीकहेसंन्यास ॥ निखिलकर्मकोत्यागकरधरेज्ञानउरआश
॥३५॥ वाजसनेयीश्रुतितथाऐसेकरेवखाँन ॥ तँतकर्मनमो
क्षहितज्ञानएकपहिचाँन ॥ ३६ ॥ विद्याकेसमयागकोत्वंमुख
कीनवखाँन ॥ नहिदृष्टांतसुभाखिओतामैकोउसमान ॥ ३७॥
बहुकारकफलभेदैहयाँविधियागसुहोइ॥ विनकारकफलएक
हैज्ञानविलक्षणसोइ॥३८॥कर्मनत्यागनमाँहिंसुनपापकह्यो
श्रुतिजोइ ॥ सोअज्ञानीमूढकोज्ञानीकोनहिंहोइ ॥ ३९ ॥
॥ **चौपाई** ॥ माँहिंअनात्मआत्ममतिजोई॥ हैसुप्रसिद्धअ
ज्ञकोसोई॥ तत्त्वंज्ञानीभवमैजेते॥ पिखेंअसंगआतमातेते॥

॥ ४० ॥ ताँतेक्रियासुनिखिलहित्यागें ॥ तत्त्वंज्ञानीजेवडभागे ॥ कर्मविधानकहेंश्रुतिजेई ॥ हेंअज्ञानीजनप्रतितेई ॥ ४१ ॥ तत्त्वमसीयहिवाक्यउदारे ॥ श्रद्धाताँहिंमुमुक्षूधारे ॥ गुरुप्रसादसुनेवचवेद ॥ जीवपरातमलखेअभेद ॥ ४२ ॥ मेरुसमानअकंपसुहोई ॥ सदासुखीदुखलहेनकोई ॥ तत्त्वंपदकोअर्थसुजोई ॥ प्रथमपछानेंसम्यकसोई ॥ ४३ ॥ ॥ दोहा ॥ वाक्यार्थकोज्ञानजोताँतेहोवेधीर ॥ तत्त्वंपदकेअर्थहेंजीवपरातमवीर ॥ ४४ ॥ असीपदारथएकतादोनोकीपहिचान ॥ पिखेपरातमएकताहोंहिंवंधसभहान ॥ ४५ ॥ प्रत्यकऔरपरोक्षताजीवसुब्रह्मविरोध ॥ ताँतजलखेचिदेकरसकरेभलीविधिशोध ॥ ४६ ॥ तत्त्वंपदकेअर्थमैकरेलक्षणावीर ॥ लखेचिदात्माएकरसद्वैतरहितक्रैधीर ॥ ४७ ॥ ॥ चौपाई ॥ वीजलक्षणाकोभगवान ॥ जाँतेकरोलक्षणाभान ॥ तातपर्यअणवणोजोई ॥ वीजलक्षणाजानोसोई ॥ ४८ ॥ ॥ दोहा ॥ आकांक्षापुनयोग्यतासंन्निधानपहिचान ॥ तातपर्यचौथोमिलेहोवेशाव्दसुज्ञान ॥ ४९ ॥ ॥ चौपाई ॥ वाक्यमाँहिंपदहोंवेंजेते ॥ परस्परंवद्धुचाँहेंतते ॥ ताँविनअर्थजनाँवेंनाँहीं ॥ यहिआकांक्षाहेपदमाँहीं ॥ ५० ॥ जिमकोघटपटमुखोंअलाए ॥ आनयनहिंतिनसंगमिलाए ॥ तौकछुअर्थजनाँवेंनाँहीं ॥ ताँतेताँहिंचहेंउरमाँहीं ॥ ५१ ॥ याँविधएकपदार्थसुजोई ॥ द्वितियपदार्थसुचाहेसोई ॥ जाँविनअर्थनअपनोहोई ॥ ताँपदकोपदचाहेसोई ॥ ५२ ॥ पुरुपमहीरुहनहींप्रमाण ॥ विना

अकांक्षाकीनवखाँन ॥ अर्थअबाधपदनमैंजोई ॥ कहैंयोग्य
ताकोविदसोई ॥ ५३ ॥ नीरसिंचतरुयहीप्रमाण ॥ अर्थअ
बाध्ययाँहिंमैंमान ॥ अग्निसिंचतरुकोइनमानें ॥ अर्थबाधयाँ
माँहिंपछानें ॥ ५४ ॥ विनविलंबपदभापनजोई ॥ संन्निद्धी
बुधभाषेंसोई ॥ घटमानययहिवाक्यप्रमाण ॥ सन्निधानपद
कीनवखान ॥ ५५ ॥ प्रथमप्रहरनरघटयहिआखे ॥ द्वितीप्रहर
मुखआनयभाखे ॥ तौनहिंहोइवाक्यसुप्रमाण ॥ सन्निद्धीभई
जाँतेहान ॥ ५६ ॥ तत्प्रतीतिकरभापणजोई ॥ तातपर्य
इहभाष्योसोई ॥ केचितऐसेकरेंउच्चार ॥ कहिवेदांतीऔरप्र
कार ॥ ५७ ॥ परस्परंजिज्ञासाजोई ॥ ताँविपयत्वयोग्यपुनहो
ई ॥ यहिपदअर्थअकांक्षाहय्ये ॥ शाब्दसुबोधताँहिंतेपय्ये ॥ ५८ ॥
क्रियासुश्रवणकरेनरजबही ॥ कारकश्रवणचाहिपुनतबही ॥
तातपर्यकोविपयसुजोई ॥ ताँकोबाधनजाँमैंहोई ॥ ५९ ॥
यहीयोग्यताकरेंवखान ॥ जाँकैलखेहोइनरज्ञान ॥ पदतेज
न्यपदार्थज्ञान ॥ विनव्यवधानहोइजोभान ॥ ६० ॥ यहिआस
त्तीकरेंउच्चार ॥ तातपर्यमिलकारणचार ॥ ननु ॥ तत्प्रतीतिक
रभापणजोई ॥ जोपुनतातपर्ययहिहोई ॥ शुकसुअपंडितपाठन
माँहीं ॥ शाब्दसुबोधहोइनरनाँहीं ॥ ६१ ॥ यहीसुदूपणमनमै
धार ॥ कहिवेदांतीऔरउच्चार ॥ ६२ ॥ ॥ दोहा ॥ तत्प्रतीति
केजननकीआहियोग्यताजोइ ॥ तातपर्यपुनवाक्यमैंकहिवेदां
तीसोइ ॥ ६३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ याँविधिपदकोअर्थवि
चारे ॥ वहुरोवाक्यअर्थनिर्द्धारे ॥ वरणपुंजपदकरेंवखाँन ॥

पदसमुदायवाक्यपहिचान॥ ६४ ॥ पदकेमाँहिंवृत्तिद्वैअहें॥श
क्तिलक्षणानामसुकहें ॥ करसंक्षेपकरेउच्चार ॥ शक्तिअहेपु
नवीनप्रकार॥ ६५॥ योगाएकरूढिपुनदूजी॥ योगारूढीभाखें
तीजी ॥ शक्त्यवयवपदभीतरजोई॥ योगाकहेंसुकोविदसो
ई ॥ ६६ ॥ समुदायहिंरूढीसुवखाँने ॥ उभयस्वरूपतीसरी
माने ॥ शक्त्यवयवपंकजपदरहे ॥ पंकजनीकरताँकोक
हें॥ ६७॥ द्वितियशक्तिकरपद्मजनावे ॥ सभलोगनकेमनमें
आवे ॥ उभयशक्तितिनकोंहेंजोई ॥पद्ममाँहिंप्रकटीजगहोई
॥ ६८ ॥ दोनोमेंरूढीहैजोई ॥ अतिशयवलीपछानोंसोई॥ यों
विधिशक्तिभलेनिरधार ॥ वहुरलक्षणाकरेंविचार ॥ ६९ ॥
॥ **ननु** ॥ अंशविकारजीवकोमान ॥ वाक्यअर्थकोहोवेज्ञा
न ॥ ताँमेंदूपणवहुतप्रकार ॥ आरयजनजगकरेंउचार ॥
॥ ७० ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ **दोहा** ॥ मोक्षपंथपरकाशमें
भाखेमेंविस्तार ॥ याँहिंपक्षमेंदूपणाताँमेंलेहुनिहार॥ ७१ ॥
॥ **चौपाई** ॥ ताँतेंलक्षणायाँकमाँहीं ॥ औरप्रकारवनेको
नाँही ॥ होवेशक्यसँवंधीजोई ॥ आईइहआवस्यकसोई ॥
॥ ७२ ॥ एकातमकरजहतीजोई॥ गंगाघोपसमानसोई ॥
वाचनमाँहिंविरोधसुजाँते ॥ वनेअजहतीनाँहिंताँते॥ ७३ ॥
॥ **दोहा** ॥ काकनतेदधिराखनोश्रोणोधावतिआहि॥ यहीअ
जहतीनाँहिंयहिमहावाक्यकेमाँहिं ॥ ७४ ॥ ॥ **चौपाई** ॥
भागत्यागलक्षणाजोई॥ सोऽयंदेवदत्तवतसोई ॥ तत्त्वंपदमे
जोडेसोई ॥ दोपनताँमेंआवतकोई ॥ ७५ ॥ मायादेहउपा

धिसुदोई ॥ तजेलखेइकचेतनसोई ॥ भूमादिकपंचीकृतभूत ॥
ताँहींतेजोभयोप्रसूत ॥ ७६ ॥ पूर्वकृतकर्मनफलजोई ॥ सु
खदुखहोइइहाँपुनसोई ॥ भोगालयतनुजाँनोंवीर ॥ आदि
अंतवतअहेशरीर ॥ ७७ ॥ कर्मनतेउपज्योतनुजोई ॥ स्थूल
उपाधिआत्मकोसोई ॥ मनोबुद्धिदशइंद्रयजोई ॥ पंचप्राणसू
क्षमतनुहोई ॥ ७८ ॥ सुखदुखकोसाधनहैजोई ॥ भोक्ताको
पुनहोवेसोई ॥ आत्माकोयहिद्वितीशरीर ॥ भ्रातवखाँनैकोवि
दधीर ॥ ७९ ॥ मायानादिअविद्याजोई ॥ कारणदेहवखाँ
नीसोई ॥ हैसउपाधिभेदतेन्यारो ॥ आत्माकोउरअंतरधारो ॥
॥ ८० ॥ कोशनमाँहिंआतमाजोई ॥ भासतदाकारपुनसो
ई ॥ स्फटकमणीजिमफूलनसंगा ॥ भासेफूलसमानसुरंगा
॥ ८१ ॥ एकअसंगरूपअजजोई ॥ करविचारलखियेपुनसो
ई ॥ त्रिधाबुद्धिकीवृत्तिपछाँनों ॥ जाग्रतस्वप्नसुपुप्तिसुमाँनो
॥ ८२ ॥ सात्विकराजसतामसजोई ॥ तीनोंगुणतेउपजीसो
ई ॥ तीनोंआपसमैव्यभिचारी ॥ मिथ्यातांतेभ्रातनिहारी
॥ ८३ ॥ दोहा ॥ ॥ नित्यशुद्धपरमात्मशिवकेवलब्रह्मसु
जोइ ॥ वाधअवधिपहिचानियेउरमैलक्ष्मणसोइ ॥ ८४ ॥
तनुइंद्रयमनप्राणचितमिलैंजवैअज्ञान ॥ तबलोकनकीम
तिविखेहोइजगतकोभाँन ॥ ८५ ॥ चौपाई ॥ तामसिमू
लवृत्तिहैजोई ॥ चिहनाज्ञानपछानोंसोई ॥ जौलौंहैवहुवृत्ति
विकार ॥ तौलौउपजेसभसंसार ॥ ८६ ॥ नेतिनेतिसुप्रमाणन
पाइ ॥ करेनिपेधभलेमनलाइ ॥ चिदघनअमृतअहेपुनजोई ॥

स्वादनकरेरस्तदकरसोई ॥ ८७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तजेनिखिल
संसारकोकरेनहीरतिसोइ ॥ नारिकेलनारंजरसपीत्यागे
फलसोइ ॥ ८८ ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ नम्रीयतेनजाय
तेनक्षीयतेनवर्धहै ॥ नवोनरूपसर्वतेसुआतमाअगाधहै ॥
स्वयंप्रकाशहैसदासुखंस्वरूपजानिये॥ अहेसुसर्वठौरमैअद्वै
तरूपभानिये॥ ८९ ॥ इसेसुज्ञानसूखमैपरेस्वरूपपावने ॥ क
थंजगत्तदुःखमैपिखेनिहारभावने ॥ अबोधतेअध्यासतेसखे
सुज्ञानकैजवै॥ क्षणेकमाँहिंसर्वसोविलीनहोइहैतवै ॥ ९० ॥
अज्ञानकेअधीनध्यासहोइहैसुनोयथा॥ सुमोक्षपंथमैकह्यो
विथारकैसभाकथा॥ भ्रमातऔरऔरमैजुहोइकैदिखाइहै॥
अध्यासरूपकोविदोइसोजगत्तगाइहै ॥ ९१ ॥ असर्परूप
रज्जुमैयथाअहीतिभासहै॥ प्रपंचतापरेशमैतथासुभ्रातभास
है॥ विकल्पमाययाविनाचिदातमावखाँनिये॥ अहंअध्यास
ताँहिंमैभयोसुआदिमानिये ॥ ९२॥ अध्यासझूठहैसभोप
रेशब्रह्मकारणे ॥ शिवेसुकेवलेपरेसुआतमाविचारणे ॥
प्रकामरागदुःखज्ञानआदिधर्मबुद्धिके ॥ प्रपंचसिंधुहेतुहैंपरे
शब्रह्मशुद्धके॥ ९३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ होइसुपुप्तिअवस्थाज
वही॥ इच्छादिकनहिंहोंवेंतवही॥ सुखस्वरूपपरमातमसार॥
हमतवलक्ष्मणलेंहिंनिहार ॥ ९४ ॥ बुद्धिअनादिअविद्या
जाई ॥ चितिप्रतिबिंबितभीतरभाई ॥ वहीसुजगमैजी
वउचारे ॥ सूखदूखबहुपायसुभारे ॥ ९५॥ आत्माशुद्धअहे
इहजोई ॥ साक्षीबुद्धिपछानोसोई॥ आदिपरात्मापूर्णजोई॥

बुद्ध्यवछिन्नभयोपुनसोई ॥ ९६ ॥ चिप्रतिबिंबसाक्षिमति
जोई ॥ जवयहितीनइकत्रसुहोई ॥ तपतअग्निजगलोहसमा
न ॥ अन्योअन्याध्यासपछान ॥९७॥ ॥ दोहा ॥ ॥जड
चेतनताधर्मजेचितअरआतमकेर ॥ बंधहोंहिंजनलोकमैं
उलटेदोनोहेर ॥ ९८ ॥ गुरुतेवेदसुवाक्यसुनकरविचारवहु
भाँति ॥ विद्याअनुभवहोइजनआत्मापिखेइकांत॥९९॥निरो
पाधिपिखआत्मकोतजेसुनिखिलविकार ॥ आतमगोचरज
डजितोदेवेदूरनिवार ॥ १०० ॥चौपाई॥मैंप्रकाशअजरू
पअनाशी॥अद्वैनिर्मलसर्वप्रकाशी ॥शुद्धज्ञानघननिर्मलरू
प॥पूर्णअक्रियआनँदभूप ॥ १०१ ॥ सदामुक्तमैजगतमझा
री॥अहेअचिंत्यसुशक्तिहमारी ॥ ज्ञानअतींद्रियअचलस्वरू
प॥पारअनंतसुअहंअनूप ॥१०२ ॥ वेदवादिजगभीतरजे
ई॥ निशिदिनभजेंसुमेउरतेई॥ याँविधिआतमकरेविचार॥अ
हेअखंडितशुद्धउदार॥ १०३॥ विद्यातोँकोहोइउदारे॥ कारक
सहितअविद्यामारे॥यथारसायनविधिसोंखावे ॥ निखिलरो
गनिजवहीमिटावे॥१०४॥ बैठइकांतसुइंद्रियजीत॥ जिनेनि
जात्मानिर्मलचीत॥याँविधिआत्मामनमैंधारे॥बाहिरसाधन
सभपरिहारे॥१०५॥ज्ञानदृष्टिउरमाँहिंसुध्यावे॥दृढासुस्थिती
आत्मनिपावे॥आतमदरशनविश्वसुजोई॥लीनकरेआतममैं
सोई॥१०६॥सभकारणनिजआतमजोई॥ताँमैंलीनजबैय
हिहोई ॥ पूरणचिदानंदमयहोवे ॥ बाहिरभीतरकछूनजोवे
॥१०७॥ ॥दोहा॥पूर्वहिंचित्तसमाधितेअखिलविचिंतेसो

इ ॥ ओंकारनिजरूपहैजगतचराचरजोइ ॥ १०८ ॥ ॥ चौपाई ॥ जगतनिखिलयहिवाच्यपछानों ॥ प्रणवताँहिंकोवाचकमाँनों ॥ वशअज्ञानविभावनऐसो ॥ बोधुपरंतकरेनहिंतैसो ॥ १०९ ॥ दोहा ॥ प्रथमअकारउकारदोत्रितीमकारपछान ॥ अर्द्धविंदुचौथोमिलेसोओंकारवखाँन ॥ ११० ॥ ॥ चौपाई ॥ वर्णअकारसुवाच्यकहीजे ॥ लक्ष्मणकानभलेसुनलीजे ॥ विश्वविराटजगतजोजागर ॥ वर्णअकारवाच्यसुउजागर ॥ १११ ॥ तैजसहिरनगर्भस्वपनाई ॥ वाच्यउकारयहीहैभाई ॥ प्राज्ञसुईशसुषुप्तीजोई ॥ कहेंमकारवाच्यपुनसोई ॥ ११२ ॥ रीतिसमाधिप्रथमयहिजोई ॥ तत्वविचारकरेनहिंहोई ॥ वाचकवाच्यअकारसुजोई ॥ करेविलीनउकारेसोई ॥ ११३ ॥ वाचकवाच्यउकारसुजेतो ॥ करेविलीनमकारेतेतो ॥ वाचकवाच्यमकारसुजोई ॥ माँहिंचिदात्मविलापेसोई ॥ ११४ ॥ अर्धविंदुकोलक्ससुजोई ॥ चिदघनब्रह्मपछानोसोई ॥ कारणप्राज्ञअंतहैंजेते ॥ जाँमेलीनभयेसभतेते ॥ ११५ ॥ सोपरब्रह्मसुमैचिद्रूप ॥ सदामुक्तिमतज्ञानअनूप ॥ मुक्तउपाधिविमलचिदजोई ॥ लखेपरात्माउरमैसोई ॥ ११६ ॥ याँविधिकरेपरात्माभावन ॥ निजआनंदतुष्टमनपावन ॥ वाहिरहैंसुपदारथजेते ॥ सनेसनेविसरेंसभतेते ॥ ११७ ॥ सुखप्रकाशनिजआतमरूप ॥ सुस्थितहोवेवहीस्वरूप ॥ सदामुक्तपुनअचलसुऐसो ॥ वारिसिंधुजगभीतरजैसो ॥ ११८ ॥ यौंसमाधियोगीश्वरकरे ॥ इंद्रयगोचरस

भपरिहरे ॥ निर्जितअखिलरिपूहजोई ॥ ताँकोदृस्यहोउँमैं सोई॥ ॥११९॥ दोहा॥ ॥ सकलज्ञानपुननित्यतास दात्रनिअरुज्ञान ॥ सदास्वतंत्रअलोभिताआनंदपटपहिचान ॥ १२० ॥ पटगुणआतमकेजिनेऐसोनिर्मलचीत ॥ ऐसो योगीमोहिकोपिखेभ्रातजगनीत ॥ १२१॥ ॥ चौपाई॥ याँविधिनिशिदिनआत्माध्यावे ॥ होइमुक्तमुनिबंधमिटावे॥ परारब्धफलभोगनकरे ॥ नाहिंअभिमानसुरंचकधरे॥१२२॥ प्राणअंतऐसोनरजोई ॥ मेरेमाँहिंलीनवहुहोई ॥ आदिम ध्यअंतजगजोई ॥ भयोदूखकोकारणसोई ॥ १२३ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ याँविधिजाँनसमस्तपुनतजेकर्मविधिसोइ॥ भजे सुआतमबीचउरअखिलातमहैजोइ ॥ १२४॥ आतममाँहिं अभेदकरपिखेनिखिलपुनजोइ ॥ मोहिपरातमसाथपुनवहुर अभेदसुहोइ॥१२५॥चौपाई॥जिमजलसागरजिमपयक्षी रे ॥ नभमेंजिमनभअनिलसमीरे ॥ याँविधिमोमैजाइसमा इ ॥ जगतसगलमिथ्याहुइजाइ ॥१२६॥ मिथ्याजगतवि भावनकरे ॥ याँविधिज्ञानजवैउरधरे ॥ यद्यपिलोकमाँहिंमु निरहे ॥ तदपिसुबंधननावहुगहे॥१२७॥ ॥दोहा॥ ॥श्रु तीयुक्तिपुनमानतेजगननिषधेजोइ ॥ चंद्रभेददिगभ्रमजिवें वहुरनताँकोहोइ॥१२८॥जबलगदेखेनाजगतअखिलसुमे रोरूप ॥ तबलगभजेलगाइमनमेरोरूपअनूप॥१२९॥ श्र द्धालूअतिभक्तिमतयाँविधिकोजोहोइ ॥ हृदेनिहारेमोहिको निशिदिनलक्ष्मणसोइ॥ १३० ॥ ॥ सवैया॥ ॥ श्रुति

सारसँक्षेपसुगोप्यमहानिशचेकरकेममतोहिबताए ॥ मति
मानअलोचनजोइकरैरक्षणभीतरपातकराशिमिटाए ॥ सुन्ह
पाजगएहुनिहारतजोउरभ्रातजितोतवदेतदिखाए ॥ ममभा
वनभावतशुद्धमनासमुखीभवआनंदरोगमिटाए॥ १३१ ॥
॥ छपैछंद ॥ मेनिर्गुणकोसेवतजोगुणपारस्वरूपं ॥ अथ
वासगुणस्वरूपभजेमनलाइअनूपं ॥ सोनरमोहिस्वरूपनअं
तररंचविचारो ॥ ताँपदपंकजरेणुसुपरमपुनीतनिहारो ॥ पद
रेणुस्पर्शसुलोकत्रयकरेपुनीतसुपापहर ॥ जिमसविताजग
पावनोकरेसुमिखिलअंधेरदर ॥ १३२ ॥ ज्ञानअखिलश्रुति
सारभ्रातमैतोहिसुगाए॥शुभदांतवेसुवेघचरणमैंदीनबताए
॥ जोश्रद्धाकरपठकरेगुरुभक्तिनिरंतर॥सोममरूपसमाइरहैन
हिरंचसुअंतर॥सुनजोममवचननमाँहिंपुनभक्तिहोइजगंताँ
हिंउर ॥ निजभ्रातवखान्योरामजीसिंहगुलाबसुओधपुरि॥
॥ १३३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादउत्तर
कांडेश्रीरामगीतायाँपंचमोऽध्यायः॥ ५ ॥ ॥श्रीमहादेवउ
वाच.॥ चौपाई ॥ ॥ यमुनातीरनिवासीजेई ॥ एकसमेमु
निआएतेई ॥ रामनिहारनहेतुसुआए ॥ लवणासुरतेबहुडर
पाए ॥१॥ भार्गवच्यवनऋषीश्वरजोई ॥ आगेकीनोमुनिग
णसोई॥ चाहेंअभयदानदेराम ॥ मुनिअसंखआएतिहँधाम
॥ २ ॥ परमभक्तरघुकुलकेराई ॥ कीनोपूजनताँहिंवनाई ॥
बहुरोमधुरसुवाक्यअलाए ॥ मुनिमंडलकोहर्षउपाए ॥ आ
वनकोकारणहैजोई ॥ मुनिवरभाखोकरौंसुसोई॥ आजध

न्यममभागसुहाए ॥ तुमकरुणाकरदेखनआए ॥ ३ ॥ दुष्क
रकार्यसुहोवेजोई ॥ आजकरोंतुमरोमैंसोई ॥ आइसकरो
दासमैथारो ॥ ब्राह्मणदेवसुआहिहमारो ॥ ४ ॥ रामवाक्य
सुनअतिहरषाए॥च्यवनऋषीश्वरवाक्यअलाए॥प्रथमैसतयु
गमैसुनरामा ॥ भयोदैत्यजगमैंमधुनामा ॥ ५ ॥ अतिधर
मात्माभयोसुचीत ॥ ब्राह्मणदेवसुपूजेनीत॥ ताँपरतुष्टमहेश्व
रभयो ॥ रामत्रिशूलसुताँकोदयो॥६॥ कह्योयाँहिंकरमारो
जाँही ॥ भस्मीभावकरेगोताँहीं ॥ रावणअनुजाकुंभीनसी॥
सापत्नीताँकेगृहवसी ॥ ७ ॥ ताँमैताँनेसुतउपजायो॥लवणा
सुरतिहँनामकहायो ॥ भीमपराक्रमअतिदुखदाई ॥ दुष्टा
त्मानाहिंजीत्योजाई ॥ ८ ॥ ब्राह्मणदेवसुजहाँनिहारे ॥ रामत
हाँतेवहुचुनमारे ॥ रामसर्वहमताँहिदुखाए ॥ राजनराजश
रणतवआए॥९॥ योंविधिसुनीराममुनिवानी॥वहुरताँहिं
कोकह्योभवानी ॥ मुनिपुंगवभयकरोनकोई ॥ मैंमारोंल
वणासुरसोई॥ १० ॥ मनकेनिखिलसुतापनिवारे ॥ चलिये
सुखसोंभौनमझारे ॥ ऐसेमुनिकोभापभवानी ॥ राजऋषी
हरिभूपमहानी ॥ ११ ॥ भ्रातनप्रतिपुनरामउचारे ॥ कहो
कौनलवणासुरमारे ॥ विप्रनकोसुअभयअतिदाना॥तुममै
कौनदेइबलवाना ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ काँकोयहिशुभ
भागहैकोजेवेगउचार ॥ ऐसेसुनगिरिजातवैबोलेभरतकुमा
र ॥ १३ ॥ हाथजोरकहिभरतजीआज्ञादीजेराम ॥ लवणा
सुरमतिमंदकोमैंमारोंसंग्राम ॥ १४ ॥ तवराघवकेवंदपदरि

पुहनबोल्योएहु ॥ नाथसुमेरेवाक्यकोकरुणाकरसुनलेहु ॥
॥ १५ ॥ **चौपाई** ॥ लक्ष्मणलंकासंगरमाँहीं ॥ काजबडेकीने
जगमाँहीं ॥ नंदग्राममैंभरतउदार ॥ धरसोएदुखसहेअपा
र ॥ १६ ॥ लवणासुरकेमारणकाज ॥ मैंहींजाँउँसुनोरघु
राज ॥ तवप्रसादरघुसत्तमराम ॥ लवणासुरहिंहनोंसंग्राम
॥ १७ ॥ ऐसेरामजवैसुनपायो ॥ लैशत्रुघ्नअंकबैठायो ॥
मथुराराजतिलककैहजोई ॥ तेरेभालकरोंअबसोई ॥ १८ ॥ स
भसंभारसुरामअनायो ॥ लक्ष्मणहाथसुतिलककरायो ॥ नहिं
शत्रुघ्नचहेउरराज ॥ करसुस्नेहदियोरघुराज ॥ १९ ॥ बहु
रोदियोदिव्यकरबाँन ॥ मुखतेरामसुकीनबखाँन ॥ लोकनकं
टकलवणसुजोई ॥ याँहिंवानकरहनोसुसोई ॥ २० ॥ दियोम
हेशत्रिशूलसुजोई ॥ पूजततांहिंनिरंतरसोई ॥ ताँकोपूज
थापघरमाँहीं ॥ आपजाइपुनकाननमाँहीं ॥ २१ ॥ जंतूखा
ननिमित्तसुजाए ॥ तहाँजाइबहुजीवनघाए ॥ जौलौबहुघ
रआवेनाँहीं ॥ प्रथमैंहीतुमद्वारेमाँहीं ॥ २२ ॥ धारशरासन
करमैंवीर ॥ ठाढेरहोतहाँरणधीर ॥ कोपकरेतवसंगलराई ॥
तवहीमरेअसुरकोराई ॥ २३ ॥ ताँकोमारभलेरणमाँहीं ॥ पुन
मधुसंज्ञकवनकेमाँहीं ॥ पाइनगरतहँवासमुकरियो ॥ मेरी
आइसकोउरधरियो ॥ २४ ॥ पंचसहस्रतुरंगमवीर ॥ शतपची
शरथअतिगंभीर ॥ पटशतगजसुमहाँबलवाँन ॥ तीशहजार
पिआदेजाँन ॥ २५ ॥ तुमराक्षसचलहनोंअगारी ॥ पाछै
सेनाऐहैथारी ॥ शिरचूँम्योंमुखऐसअलायो ॥ रामभ्रातमुनि

संगपठायो ॥ २६ ॥ बहुताशीरवादहरिदीनो ॥ रिपुहनको अभिनंदनकीनो ॥ गयोशत्रुसूदनतहँधाई ॥ रामकह्योति मकियोसुजाई ॥ २७ ॥ मधुसुतकोरणभीतरमारी ॥ मथु रापुरीसुतहाँसवारी ॥ वडेवडेतहँदेशवनाए ॥ दानमानदैलो कवसाए ॥ २८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ ॥ कथाशत्रुघ्न इमकहीसुनोकथाअबऔर ॥ वाल्मीकिआश्रमविपेज नेजनिकजाकौर ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वाल्मीकिऋ पिनामसुठाँने ॥ ज्येष्ठोकुशलघुलवोवखाँने ॥ क्रमकरविद्याप ढीअपारा ॥ भएकुशलकुशलवसुकुमारा ॥ ३० ॥ मुनिहँज नेऊतिनकोपाए ॥ वेदपढेमनप्रीतिवढाए ॥ सर्वरमायणकाव्य महाँन ॥ बालनभाख्योमुनिभगवान ॥ ३१ ॥ त्रिपुरारीशंक रभगवान ॥ पूर्णसुकियोउमाव्याख्यान ॥ सोवहुकाव्यमहासु खदाई ॥ वेदवधावनहितमुनिगाई ॥ ३२ ॥ सीयकुमारनऋ पीपठायो ॥ रागतानबहुभाँतिसिखायो ॥ नूतनवयअति रूपसुहाई ॥ ताँकीप्रभानवरणीजाई ॥ ३३ ॥ ॥ कवित ॥ स्वरमेंउदारदोऊसुंदरकुमारजनुअश्वनीकुमारसेस्वरूपमेंसु हाएहें ॥ तंतरीवजाँहिंमुनिसंघनमेंजाँहिंपुनफिरेंवनवीव रागऊचस्वरगाएहें ॥ गावतेनिहारमुनिमंडलउदारमुखकर तसराहमनमाँहिंविसमाएहें ॥ किन्नरगंधर्वनमहीपनकेदे शमैसुरेशकेअगारमाँहिंअैसेनाँहिपाएहैं ॥ ३४ ॥ तल ब्रह्मलोकमैंमहेशहूँकेओकमैंसुहमचिरजीवीदेशदेशहैनिहा रिआ ॥ रागतानकीगंभीरतानअैसीपिखीधीरतानकाहूँका

नमाँहिंआनकेउचारिआ ॥ ऐसीभाँतिकरतएकांततेवडा
ईमुनिवारवारजाँहिंदिनरैनबलिहारिआ ॥ वाल्मीकिआ
श्रमविशालचिरकालरहेसुखसोंएकांतरामचंद्रकेसुचारिआ
॥ ३५ ॥ अश्वमेधयागकेआरंभरामचंद्रकरदक्षणाअपारजाँ
हिंमाँहिंसुसुहाईहै ॥ रामभूपभारोयशतेजउजियोराजग
यागनकेमाँहिंसीयहेमकीवनाईहै ॥ जेईवनवासीऋपिरहि
तउदासीजगरामयागमाँहितिनमंडलीसुहाईहै ॥ यज्ञदेख
नेककाजद्विजराजभूमिपालआईवैश्यमंडलीसुहेरविकसाई
है ॥ ३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वाल्मीकिऋपिराजसुआ
ए ॥ कुशलवदोनोसंगलवाए ॥ पुरिसमीपतरुकीपरिछाँहीं ॥
वैठमुनीवगीचेमाँहीं ॥ ३७ ॥ तहँइकांतहरिसोंमतिजूटी ॥ मु
निसमाधिजाँक्षणमैंछूटी ॥ पायकथांतरपृछयोजान ॥ वा
ल्मीकिकोकुशमतिमान ॥ ३८ ॥ श्रवणचाहिमेउरभैंपथ्ये ॥
संक्षेपहिंप्रभुमोहिवतथ्ये ॥ देहीकोदृढवंधनजोई ॥ किहँविधिउ
पजेजगमेंसोई ॥ ३९ ॥ मुनिसर्वज्ञसुमोहिवखाँनों ॥ मोको
शिष्यचरणकोजानों ॥ ऐसीसुनकुशकीशुभवानी ॥ वाल्मी
किऋपिआपवखाँनी ॥ ४० ॥ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥
वंधमोक्षकोरूपसुजोई ॥ कहुँसंक्षेपसुनोअवसोई ॥ अ
रपुनसाधनकरोंउचार ॥ सुनतेसेपुनकरोकुमार ॥ ४१ ॥
जीवनमुक्तहोंहिंजगमाँहीं ॥ याँभीतरसंशयकछुनाँहीं ॥ चेत
नआत्माअहेअदेहा ॥ ताँकोदेहमहानसुगेहा ॥ ४२ ॥ मंत्री
अहंकारठहिरायो ॥ ताँतेतनुअभिमानउपायो ॥ सोआरोप

आत्मकेमाँहीं ॥ भयोतदात्म्यसुताँकमाँहीं ॥४३॥ अपनेकार
यअहंसुजेते॥आत्मामाँहिंअरोपेतेते ॥अहंकारजगभीतरजो
ई ॥ चिदानंदकरभासेसोई ॥ ४४ ॥ अहंकारसंकल्पउपाए॥
मनोजीवपदसंगलपाए ॥ पुत्रदारगृहआदिकमाँहीं ॥ करत
स्नेहसुनिशिदिनमाँहीं ॥ ४५ ॥ विकलहोंहिंगृहदाराजबही॥
शोककरेउरताडेतबही ॥ अधमोत्तममध्यमपुनदेहा ॥ जाँनों
तिनकीतीनोएहा ॥ ४६ ॥ तमसतरजपुनसंज्ञाजेई ॥ जगत
स्थितिकेकारणतेई ॥ तमोरूपसंकल्पसुजोई॥ तामसिक्रियाउ
पावेसोई ॥ ४७॥ ताँतेबहुततामसीहोवे ॥ कृमिकीटनकीयोनि
नजोवे॥ सत्वरूपसंकल्पसुजोई॥ धर्मज्ञानमेंलावेसोई॥४८॥
॥ **दोहा** ॥ मोक्षअहेसाम्राज्यजोताँतेसोनिजकाइ ॥ दुखसंपू
र्णसमेटकैसुखस्वरूपठहिराइ॥ ४९॥ **चौपाई**॥ रजोरूपसंक
ल्पसुजोई ॥ सभव्यवहारउपावेसोइ ॥ रहेसुजगतमाँहिअति
लाग॥सुतदाराघरमैअनुरागा॥५०॥ त्रिप्रकारसंकल्पसुजो
ई ॥ त्यागेताँहिंमहामतिकोई॥ जोसंकल्पआपनोखोइ॥ सो
परपदकोप्राप्तसुहोइ॥५१॥**दोहा**॥सर्ववृतिकोत्यागकररोको
मनकोवीर ॥ सर्वअर्थसंकल्पक्षयकरोसदामतिधीर॥५२॥
वर्षसहस्रपतालमेंकरेबैठतपजोइ ॥ स्वर्गमाँहिंभूमीविखेउप
शमसमनहिंहोइ॥५३ ॥उपशमविनसंकल्पकेऔरउपायन
कोइ ॥ ताँहींकरसुखपाइयेमोक्षतँहींकरहोइ॥ ५४ ॥ हैअनं
तसुखपावनोंरंचकनाँहिंविकारः॥ पुरुषारथउरमेंधरोदेसंक
ल्पनिवार ॥ ५५॥ तंतूसमसंकल्पमेंनिखिलपदार्थसुजोइ॥

काटेतंतुनजानियेकहाँजाइपुनसोइ ॥ ५६ ॥ भीतरतेसंकल्प तजकरनिखिलव्यवहार ॥ तजसंकल्पसुजीवयहिपावेब्र ह्मउदार ॥ ५७ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ परमारथकोतवपाइसुनो सुविकारनकेसबबीजमिटाए ॥ इहएकअखंडितजोपदहैकुश वेगतुहींअवलेहुसुपाए ॥ मनकोसबवृत्तिसुशुद्धकरोसुख पूरणमाँहिंतवैदुखजाए ॥ कविसिंहगुलाबसुयाँविधिसोंकपि पुंगवतांप्रतिब्रह्मजनाए ॥ ५८ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादेउत्तरकांडेनामपष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीमहा देवउवाच ॥ दोहा ॥ वाल्मीकितेज्ञानसुनकुशउरभ्रांतिनि वार ॥ उरभीतरमुक्ताभयोबहिरकरेव्यवहार ॥ १ ॥ सवैया सीयकुमारनकोमुनिपुंगवएहुतवैपुनयातसुनाई ॥ गानकरो पुरिवीथिनमेंसभठौरनमेंशुभवीनबजाई ॥ रामसमीपसुगान करोजुबुलाइसुनेरुचिसोंरघुराई ॥ जोकछुभूपसुदेरुचिकैतुम नाँहिंगहोकपिएहुसिखाई ॥ २ ॥ इहभाँतिकह्योमुनिपुंगवजोस भठोरनगावतवेमनमाने ॥ चरियासभआपनिपूरविजोवहिरा मसुनीसुनकैविकसाने ॥ यहिआहिंअपूरवछंदभलेसुरमाय णमाँहिंमहाहरपाने ॥ सुनबालनकेमुखकीध्वनिकोनृपकौतक माँहिंभएगलताने ॥ ३ ॥ पुनएकसमेलहिअंतरकोमुनिमंड लभूपतिआपबुलाए ॥ शुभपंडितऔरमहीपसभेपुननैगमऔ रपुराणिकआए ॥ शवदागममाँहिंविशारदजेपुनऔरअएद्वि जजेजरठाए ॥ इहभाँतिभयेसभसंगमजौतवरामसुगायकया लसदाए ॥ ४ ॥ रामसभाजनदेवसभापुनऔरमहीपमहाहर

पाए॥ गायकवालनकोपिखकेअनिभेषसभेउरमेंविसमाए॥
लोकसभेपिखवालनकोइहभाँतिउमामुखमाँहिंअलाए॥ रा
मसमानसुवालउभेजनविंवहिंतेप्रतिविंवसुहाए॥५॥ शीश
जटाद्रुमछालनकेपटजौनहिवालनकेतनहोई॥ तौहमवालन
राघवमाँहिंसुभेदनिहारसकेंनहिंकोई॥ लोकसभेविसमायर
हेइमआपसमाँहिंवखानतसोई॥ सुंदरताँनअलापकरेसुल
गेमुनिदारकगावनदोई॥६॥ ॥चौपाई॥ ॥गावेंराग
वालअधिकाई॥ अतिमानुपनहिंवरण्योजाई॥ सुनअपरा
न्हकालभगवान॥ भरतहिंकीनोंएहुवखान॥७॥ दशहजा
रकांचनदीनार॥ दीजेवालनभरतकुमार॥ दीयोसुवर्णतिनहुँ
नहिंलीयो॥ यांविधिकोपुनवचनसुकीयो॥८॥ हेमनहींनृपका
जहमारे॥ वनवासीफलमूलअहारे॥ याँविधित्यागसकलध
नतहाँ॥ गएवालमुनिपुंगवजहाँ॥९॥ अपनोचरितसुन्योरघु
वीर॥ विस्मितभयेपरमउरधीर॥ सीयकुमारसुरामपछाँन॥
बहुरकियोशत्रुघ्नवखाँन॥१०॥ ॥दोहा॥ ॥हनूमानसुसु
षणपुनऔरविभीपणधीर॥ अंगदअतिमतिमानकोसंगलि
जावोवीर॥११॥ वाल्मीकिभगवानऋषिमुनिसत्तमसुप्रधा
न॥ सीतासहितसुजायकैल्यावोवंदनठान॥१२॥ जनक
सुतानिजशपथकोकरेसुपरिषतमाँहिं॥ करेंप्रतीतिसुलोकस
भेजानेंकलमपनाँहिं॥१३॥रामवचनसुनगएसभेविस्मयउर
मेंमाँन॥ वाल्मीकिभगवानकोंकीनोंजाइवखाँन॥१४॥राम
हृदयकीजानसभकहीमुनीश्वरवात॥सभामाँहिंसोगंदकोक

रहैसीताप्रात ॥ १५॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नारिनकोपतियाँ
जगजोई ॥ निरसंदेहदेवहैसोई ॥ ऐसोसुनमुनिवरकीवा
नी ॥ तिनहूँजायसुरामवखाँनी ॥ १६॥ सुनमुनिवाक्यसुरा
मअलाए ॥ राजामुनिसभलेहुबुलाए ॥ सीताशपथसुनेसभ
आँन ॥ दोषअदोषलेहिंमभजाँन ॥ १७॥ ऐसेरामवखाँ
न्योजवही ॥ लोकसुदेखनआएसवही ॥ ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यअ
पार ॥ शूद्रसुऔरमहाकपिधार ॥ १८॥ वानररीक्षसभैमिल
आए ॥ कौतकदेखनहितहरपाए ॥ वाल्मीकिऋपिवहुरसुआ
ए॥ सीतासहितसुपरमसुहाए॥ १९॥ आगेऋपिपाछेसियआ
ई ॥ अधोमुखीउरमाँहिलजाई ॥ जोरेहाथअश्रुगलआए ॥ य
ज्ञभूमिमेंपरमसुहाए ॥ २०॥ पिखपद्माजिमसीयसुआई ॥ मु
निकेपाछेपरमसुहाई ॥ सीतायशजनकरेंवखाँन ॥ साधुवाद
अतिभयोमहाँन॥ २१॥ वाल्मीकिमुनिपुंगवजोई॥ प्रविश्योस
भाभीतरसोई ॥ सीताजाँकेसंगसुहानी ॥ वाल्मीकिऋपिवो
ल्योवानी ॥ २२॥ दाशरथीतुमरामउदारि ॥ इहहैसीतातुमरी
नारि ॥ ओहिपतिव्रतधर्मपरायण ॥ सुनोरामकरुणाकेआय
न॥ २३॥ विनादोषप्रथमेतुमत्यागी ॥ ममआश्रमढिगसियव
डभागी ॥ जनअपवादमहाडरमाँन ॥ त्यागीसीताविपनमहाँ
न ॥ २४॥ रामसुआइसकरोवखाँन ॥ देइप्रतीतिसुसीयम
हाँन ॥ यहिसीताकेउभयकुमारा ॥ यमलभएताँविपनमझा
रा ॥ २५॥ हैंतवपूतमहाबलवानी ॥ हैसभसाचसुमेरीवा
नी ॥ दशमोसुतप्रचेतसोजोई ॥ मैंहोंरामसुनोउरसोई ॥

॥ २६ ॥ अनृतकह्योनहिंकबीचितार्यो॥ यहितवपृतसुसाच उचार्यो ॥ बहुतहजारवर्षतपभारा ॥ मैंकीनोंयाँजगतम झारा ॥ २७॥ ताँकोफलनहिंमोकोहोई ॥ जौसीतामैंदोषसु कोई ॥ सुनिअसबाल्मीकिकीवानी॥ तबबोलेपुनरामभवा नी॥ २८ ॥ ॥ कवित ॥ मुनिजोबखाँनोंसभसाचउरजाँ नोंमोहिभईसुप्रतीतितववाक्यसुनपाएहें ॥ सीयमेंनदोषय हिभईनिरदोषअबसुनोंमुनिराईसभलोकपतीयाएहें ॥ देव नकेआगेसीयलंकमैप्रतीतिदईयाँहींतेमुनीशहमगेहमाँहिं ल्याएहें ॥ लोकडरमानसीयतजीमैंमहाँनवनअहेनिहपाप दोषरंचनछुहाएहें ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ . ॥ लोकनतेडर कर्योंअकाज॥ सोमुहिक्षमाकरोमुनिराज॥ कुशलवनामबा लद्वैजेई ॥ मोतेभएमुनीवरतेई ॥ ३० ॥ शुद्धसीयमैंजाँनी चीत ॥ ताँमैरहेसदाममप्रीति ॥ तबराघवकउरकीजाँन ॥ सुरसभआएबैठविमाँन ॥ ३१ ॥ कमलासनकोआगेधार॥ सुरवरआएभूमिमझार ॥ प्रजासुसगलरामकीआई॥ यज्ञ भूमिजहँबनीसुहाई॥ ३२॥ सीतायागभूमिमैंआई॥ पाटंब सनतनमाँहिंसुहाई ॥ जोरउभयकरभूमिनिहार॥ सीतामुख तेकीनउचार ॥ ३३ ॥ दोहा॥ रामअन्यजौनात्रहोंमैंधरणी उरमाँहिं ॥ तौदेवीअस्थानत्वंदेहिसुआपनमाँहिं ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई॥ ऐसेसीताशपथउचारी॥निकस्योदिव्यसिंहासं नभारी ॥ सिंहासनअद्भुतहैजोई ॥ भूमिविवरतेप्रकट्योसो ई॥३५॥ सिंहासनरविसमहैजोई॥ नागेंद्रनशिरधार्योसोई॥

भूमीदेवीभुजापसार ॥ सीतामाँहिंस्नेहवहुधार ॥ ३६ ॥
स्वागतप्रश्नसुमुखोंअलाई ॥ सिंहासनमैंलीनविठाई ॥ आ
सनवैठीसीताजवही ॥ चलीपतालविवरकोंतवही ॥ ३७ ॥
सीताशिरसुरफूलवसाँवें ॥ धन्यधन्यमुखमाँहिंअलाँवें ॥ अं
तरिक्षसुरकरेंवडाई ॥ सीतासतवरण्योनहिंजाई ॥ ३८ ॥
स्थावरजंगमसगलेजेते ॥ धन्यधन्यभूभापेंतेते ॥ वानरआँ
हिंजगतमेंजेते ॥ सोचशपथहितआएतेते ॥ ३९ ॥ केचितचिं
तामेंगलतए ॥ केचितध्यानपरायणभए ॥ केचितराघवनय
ननिहारें ॥ केचितसीताचीतचितारें ॥ ४० ॥ एकमुहूर्त्तसुआ
एजेते ॥ भएतूशनीसगलेतेते॥सीयप्रवेशसुहेर्योजवही॥भए
मोहवशसगलतवही ॥ ४१ ॥ कार्यभविष्यतगौरवजोई ॥
रामजाँनसभउरमैंसोई ॥ जनअजानइमशोचेंरामा ॥ लेले
जनकसुताकोनामा ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणऋपिसगलेतवआए ॥ र
घुनंदनकोवोधउपाए ॥ मनोस्वप्नतेजागेहरी ॥ रामअनंतरक्रि
यासुकरी ॥ ४३ ॥ ऋत्विजऋपिजेमखमैंआए ॥ रामसभनको
दईविदाए ॥ धनअररत्नसुवहुविधदियो ॥ रामसुतोपसभन
कोकियो ॥ ४४ ॥ दोनोलिएसुरामकुमार ॥ आएअवधसुभव
नमँझार ॥ ताँदिनतेलेराममुरारे ॥ विपयभोगसभदूरनिवा
रे ॥ ४५ ॥ आत्मध्यानसदाउरधारें ॥ वैठइकंतसुतत्वविचा
रें ॥ ध्यानउत्थानभएरघुराई ॥ एकसमेकौसल्याआई ॥ ४६ ॥
प्रियवादनिकौसल्यामात ॥ रामनरायणपिखसाक्ष्यात ॥ भ
क्तिभाइहरिकीढिगआई ॥ पदवंदनकरअतिहर्पाई ॥ ४७ ॥

रामआदिजगकीत्वंकहिये ॥ आदिमध्यतवअंतनपइये ॥ प
रानंदपरमात्मसुदेव ॥ पूर्णसुईश्वरपुरुषअभेव ॥ ४८ ॥ मेरेपु
ण्यअधिकजगभए ॥ त्वंममगर्भविषेभवलए ॥ अंतसमयमे
रोअवआयो ॥ मोहभयोमेउरअधिकायो ॥ ४९ ॥ अज्ञानज
भवबंधनजोई ॥ अवलौनाँहिंविनाश्योसोई ॥ भवकोबंधवि
नाशकजोई ॥ किंहँविधिममअवज्ञानसुहोई ॥ ५० ॥ कर
संक्षेपज्ञानममकहो ॥ मेरेसुतसंदेहनदहो ॥ अतिशुभजरज
रदेहपुरानी ॥ सुननिर्वेदमाइकीवानी ॥ ५१ ॥ धर्मात्मावहु
रामदयालु ॥ कहितमातप्रतिवाक्यरसाल ॥ मार्गसुनीतत्रय
ममेगाए ॥ साधनमुक्तिपरमसुखदाए ॥ ५२ ॥ कर्मयोगजग
एकभनीजे ॥ ज्ञानयोगदूसरलखलीजे ॥ भक्तियोगतीसरप
हिचाँन ॥ तीनोसाधनकरवखाँन ॥ ५३ ॥ भक्तिपंथतिनती
नोंमाँहीं ॥ परमपूज्यजाँनोंजगमाँहीं ॥ माताभक्तिसुतीनप्र
कार ॥ गुणकेभेदभयोविसतार ॥ ५४ ॥ ॥ दोहा ॥ जैसो
जाँकोहोइपुनयाँजगमाँहिंसुभाइ ॥ तैसीमेरीभक्तिकोयाँज
गमाँहिंकमाइ ॥ ५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जोहिंसाकोमनमेधा
रे ॥ दंभमानमत्सरविसतारे ॥ भेददृष्टिकरमोकोध्यावे ॥ सो
ममतामसभक्तकहावे ॥ ५६ ॥ फलअभिसंधिभोगउरधारे ॥
धनहितममपूजाविस्तारे ॥ भेददृष्टिकरपूजेजोई ॥ राजसभ
क्तकहीजेसोई ॥ ५७ ॥ कर्मबंधकेनाशनिमित्ता ॥ परमा
त्माभेअर्पेचित्ता ॥ वाकर्त्तव्यजाँनमेध्याए ॥ भेदबुद्धिवहुसा
त्विकगाए ॥ ५८ममगुणकथासुनततत्काल ॥ मोमेंउपजेभ

क्तिविशाल ॥ ममअनंनगुणसागरमाँहीं ॥ वृत्तिनिरंतरअं
तरनाँहीं ॥ ५९ ॥ जिमगंगाकीयाँजगधारा ॥ चलेनिरंत
रसिंधुमझारा ॥ निर्गुणभक्तियोगहैसोई ॥ फलनहींचाहेउ
रमैंकोई ॥ ६० ॥ हैवहुतत्वभक्तिममजोई ॥ चारप्रकारदे
इफलसोई ॥ इकसालोक्यऔरसामीप्य ॥ सारूप्यरसायुज्य
प्रदीप ॥ ६१ ॥ परममभक्तनफलकोचहें ॥ मेरासेवनही
उरगहें ॥ महाभक्तिकोमारगजोई ॥ मातपछानोंउरमैंसोई ॥
॥ ६२ ॥ मेरोभावतांहिंकरपाए ॥ गुणत्रयबंधनदूरमिटाए
॥ मनमैंनहिंकछुइच्छाधरे ॥ निजधर्मनकोनिशिदिनकरे ॥
॥ ६३ ॥ उत्तमकर्मयोगविस्तारे ॥ अतिहिंसाकोदूरनिवारे॥
बहिनमाँहिंममदृष्टिनिहारे ॥ पूजाउस्तुतिवंदनधारे ॥ ६४ ॥
ममदृष्टीकरभूतनिहारे ॥ रहेअसंगनझूठउचारे॥ महतनको
अतिमानसुकरे ॥ दुखिअनमाँहिंदयाउरधरे॥ ६५॥ निजस
मानमैंमैत्रीधारे ॥ शमदमादिसाधनविस्तारे ॥ सुनवेदांत
वाक्यमनलाए ॥ मेरानामसदामुखगाए॥ ६६ ॥ सतसंग
तिउररिजुताभजे ॥ अहंभावउरतेंसभतजे ॥ मेरोध्यानसदा
उरधरे ॥ मनकीसगलमैलपरहरे ॥ ६७ ॥ ममगुणसुनेंकान
मैंजवही ॥ मोकोपाइवेगनरतवही ॥ फूलगंधजिमवायुअ
धीनें ॥ धसेंघ्राणमैंसभजनचीनें॥ ६८॥ तिमसभभूतनमैंसु
नमाइ ॥ मैंनिजआत्मारव्योसमाइ॥ मूढवुद्धिनहिंताँहिंपछाँ
नें ॥ वाहिरवहुपूजाविधिठाँनें॥ ६९॥ क्रियाजुवहुप्रकारनर
करे ॥ लाइद्रव्यवहुमखविस्तरे ॥ वहुआडंवरकरजुकोई ॥

ताँकरतोपनमोकोहोई ॥ ७० ॥ भूतनकोअपमानजुकरे ॥ मे
रीपूजाअतिविस्तरे ॥ ताँकरमोहिनपूजनहोई ॥ मूढभयोभ
वभीनरसोई ॥ ७१ ॥ निजकर्मनकरप्रतिमामाँहीं ॥ तबलग
मेपूजेजगमाँहीं ॥ जबलगसभभूतनकेमाँहीं ॥ निजपरमा
त्माहेरनाँही ॥ ७२ ॥ आत्माऔरपरात्मामाँहीं ॥ भेदनिहारेजो
उरमाँहीं ॥ मृत्युताँहिंकोबहुतदुराए ॥ वारंवारदूखबहुपाए ॥
॥ ७३ ॥ ताँतेभिन्नभूनहेंजते ॥ समताबुद्धिपिखेसभतेत ॥
ऐसोज्ञानसदाउरभजे ॥ मोहिअभिन्नजानपुनभजे ॥ ७४ ॥
भूतजितेयाँजगतमँझारे ॥ मनकरसभकोवंदनधारे ॥ मो
कोचेतनलखेअनूप ॥ सभभूतनमेंजीवस्वरूप ॥ ७५ ॥ ताँतेभेद
पिखेनहिंकोई ॥ जीवपरातमएकोदोई ॥ भक्तिसुज्ञानयोगहै
जोई ॥ मातामैभाख्योतेसोई ॥ ७६ ॥ ॥ दोहा ॥ इनदोनों
मैंएकतरकरेअलंबनजोइ ॥ मुक्तहोइनरजगतमैंपाइपरमप
दसोइ ॥ ७७ ॥ ॥ चौपाई ॥ मातामैंसभकेरिदमाँहीं ॥
भक्तियोगकरमोरेमाँहीं ॥ पुत्ररूपवामोहिचितारें ॥ शांतिल
हेंभवबंधनिवारें ॥ ७८ ॥ सुनयाँविधराघवकीवानी ॥ भईमा
तआनंदभवानी ॥ सदारामउरमाँहिंसुध्यायो ॥ जगबंधन
तिनदूरमिटायो ॥ ७९ ॥ तीनगतीतिनदीनीत्याग ॥ पर
मागतिपाईबडभाग ॥ रघुपतिप्रथमबखान्योजोई ॥ कैकेई
धरयोगसुसोई ॥ ८० ॥ श्रद्धाभक्तिशांतिउरनीत ॥ रघु
कुलतिलकभज्योतिनचीत ॥ डारप्राणअमरापुरिगई ॥ दश
रथसहितमोदमनभई ॥ ८१ ॥ श्रीलक्ष्मणकीमाताजोई ॥ अ

तिशयविमलमतीउरसोई ॥ मातलोकमैंतनकोत्याग॥ भरता
पासगईवडभाग॥ ८२ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमाम
हेश्वरसंवादेउत्तरकांडेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ श्रीमहादे
वउवाच ॥ **चौपाई** ॥ यौंविधिवीततभयोसुकाल॥ भीम
पराक्रमभरतविशाल ॥ ताँकोलेनयुधाजितआयो॥ सेनास
हितसुवहुतसुहायो ॥ १ ॥ रामचंद्रकीआइसमान॥ गयोभ
रततहँअतिबलवान ॥ तीनकोटिगंधर्ववलारे ॥ भरततहाँ
रणभीतरमारे॥ २॥ द्वैपुरतहाँसुभलेबनाए॥ तौमैंनिजसुतता
हिंवसाए ॥ पुष्करवतीनामपुरिजोई ॥ पुष्करसुततहँथाप्यो
सोई ॥ ३ ॥ तक्षशिलापुरऔरबनायो ॥ तक्षनामसुततहाँव
सायो ॥ तहँअभिषेकवालद्वैकीनें ॥ धनअरधान्यसंगभटदी
नें ॥ ४ ॥ वहुरभरतनिजपुरिकोआयो ॥ रघुवरसेवामैंमन
लायो॥ वहुरप्रसन्नरामअतिभए ॥ लक्ष्मणप्रतियहिवचनअ
लए ॥५॥ दोउकुमारसंगअबलीजे ॥ पश्चमदेशपयानोकी
जे॥ दुष्टात्मासभकेअपकारी॥तिनभिल्लनकारणमैंमारी॥६॥
अंगदचंद्रकेतुसुतजेई ॥ महापराक्रमजगमैंतेई ॥ दोनोंकेदो
नगरबनीजे ॥ राजतुरगधनरत्नसुदीजे ॥ ७॥ राजतिलक
वालनदेभाल ॥ मेढिगआवोवेगविशाल ॥ रघुवरआइस
शिरपरमाँन ॥ गजतुरंगरथसैन्यमहाँन ॥८॥ लैकरलक्ष्मण
संगसिधारे ॥ अरिसंवूहसभैतहँमारे ॥ राजतिलकसुतभा
लकराए ॥ लक्ष्मणवहुरअयोध्याआए ॥ ९ ॥ रघुपतिपाद
कंजहैजोई ॥ लक्ष्मणभजेनिरंतरसोई॥ वहुतकालजयभयो

वितीत ॥ रामधर्मपथिअतिदृढचीतु ॥ १० ॥ रामनिहारन
काजसुआए ॥ कालकपीश्वरभेषवनाए ॥ लक्ष्मणकोमुख
एहुअलाए ॥ मेरीसारकहोनृपजाए ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ अ
तिवलिकोमैदूतहोंलक्ष्मणजानोवीर ॥ पुरुषोत्तमरघुवीरको
वेगदिखावोधीर ॥ १२ ॥ महाकपीशप्रधानकोवडोसंदेसोआ
हि ॥ जायकहोकरवेनतोरामचंद्रनरनाह ॥ १३ ॥ सुनकैतौ
कवचनकोलक्ष्मणगयोसुधाइ ॥ आयोतपधनद्वारमेंराघव
कह्योसुनाइ ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसेलक्ष्मणभा
ष्योजवही ॥ रामचंद्रवोलेपुनतवही ॥ लक्ष्मणताँकोशीघ्र
सुआँन ॥ वहुतकरोतांकोसनमाँन ॥ १५ ॥ लक्ष्मणमुखते
तथावखाँन ॥ गयोतहाँजहँमुनीमहाँन ॥ मुनितापसकोभौत
लिआयो ॥ तेजप्रभातनमेंलशकायो ॥ १६ ॥ ज्वलतआग
घृतडारजैसे ॥ दीनसुतेजताँहितनतैसे ॥ सिंहासनवैठश्रीरामा ॥
सूरजकोटितेजतनधामा ॥ १७ ॥ मुनिवररामसमीपहिंगयो ॥
मधुरवाक्यमुखमाँहिंअलयो ॥ रामचंद्रवर्द्धस्वसुराई ॥ त्वं
भूपतिसुप्रजासुखदाई ॥ १८ ॥ रामचंद्रमुनिपूजनकरिओ ॥
कुशलक्षेममुखमाँहिंउचरिओ ॥ रामचंद्रपूछ्योमुनिराई ॥
कुशलअहेतुमरेरघुराई ॥ १९ ॥ आसनदिव्यमुनीवैठायो ॥
रामचंद्रमुखवाक्यअलायो ॥ जाँहिंनिमित्तमुनीतुमआए
॥ मोकोकहोसुकाजसुनाए ॥ २० ॥ रामवाक्यमुनिसुन्यो
सुजवही ॥ वोल्योभूपतिकोमुनितवही ॥ रामकाजमेंकरों
वखाँन ॥ याँकोलखेनकोनरआँन ॥ २१ ॥ औरनकोईसुनेसु

कौंन॥रामनकाहूकरोवखांन ॥ जोकोऊजनसुनेनिहारे॥रा
मताँहितुमहारोमारे ॥ २२ ॥ रामप्रतिज्ञातथाअलाइ ॥ ल
क्ष्मणकोपुनकह्योसुनाइ ॥ लक्ष्मणरहुत्वंद्वारमाँहीं ॥ हमइकं
तकोआवेनाँहीं ॥२३॥ जेकोआवेगोइहठाँहीं ॥ विनसंशय
मैंमारोंताँहीं ॥ रामकह्योपुनमुनीसुनाए ॥ किनकेपठेमुनी
वरआए ॥ २४ ॥ जोतेरेमनभीतरवात ॥ मोकोकहोमुनीवि
ख्यात ॥ ऐसेसुनिरघुवरकीवानी ॥ आपमुनीश्वरकह्योभ
वानी ॥ २५ ॥ साचवखाँनोंसुनियेराम ॥ मोहिपठायोब्रह्मा
काम॥ हेप्रभुकंजनयनसुखकारे ॥ मैंआयोइमपासतुमारे॥
॥२६॥ पूर्वजन्योमैंपूततुमारो ॥ रामपरंतपउरमैंधारो॥माया
संगमतमैंभयो॥कालनाममेरोनिर्मयो॥ २७॥ मैंसभजगको
हरनेहारा॥ कालनाममवेदउचारा ॥ देवरूपीजाँपूजनधा
रें ॥ ताँब्रह्मतेयैनउचारे॥२८॥ भगवनअवपालोसुरलोक ॥
हमेरपावनकरोसुओक॥ मायाकरसभलोकसँहार ॥ प्रथम
एकतुमरहेमुरारि ॥ २९ ॥ मायानारिसहितसुखपायो ॥ प्र
थमपूतमोकोतुमजायो ॥ शेषनागदूसरसुतभए॥ जलकेमाँ
हिंशयनजिनकए ॥ ३० ॥ मायाकेद्वसुतउपजाए ॥ महाव
लीजगमाँहिंसुहाए ॥ मधुकैटभदोअसुरसँहारे ॥ मेददईज
लमेंविस्तारे ॥ ३१ ॥ पर्वतसहितमेदनीजोई ॥ ताँतेतुमउ
पजाईसोई॥ तुमस्वनाभितेकमलउपायो॥ ताँकीनाभिविषेमें
जायो ॥ ३२ ॥ प्रजाऽध्यक्षतुममेठहिरायो ॥ सर्वजगतम
मपाछेलायो॥ जवमोतेनहिंपालनभयो॥ मैंतवनाथसुतोहि

अलयो ॥ ३३ ॥ पालोंविश्वहनोप्रभुतेई ॥ ममवीर्यअपहा
रकजेई ॥ कश्यपकेघरतवतुमजायो ॥ वामनरूपविष्णुतुमपा
यो ॥ ३४ ॥ ॥ भूकोभारसुनिखिलउतार्यो ॥ बाँधबलीराक्ष
सगणमार्यो ॥ धरणीधरतुमईशनरायण ॥ प्रजासुजवैदु
खाईरावण ॥ ३५ ॥ रावणकोवधउरमेंधार ॥ मरतलोकतु
मगएमुरारि ॥ दशइकवर्षसहस्रभवान ॥ देवनमेंहरिकीनवखाँ
न ॥ ३६ ॥ तेअबवर्षसगलबितगए ॥ सफलमनोर्थसुतुमरेभ
ए ॥ मानवलोकआयुहैजेती ॥ भईसपूर्णसगलअबतेती ॥ ३७ ॥
तांपसेरूपकालहैजोई ॥ तुमरेपासपठायोसोई ॥ भूमंडलमें
राजकमावन ॥ अबलौजौमतिहैमनभावन ॥ ३८ ॥ तौतु
मराजकरोधरमाँहीं ॥ तबकल्यानरमोसुखमाँहीं ॥ ऐसेकह्यो
पितामहआप ॥ सुनोरामनृपरवीप्रताप ॥ ३९ ॥ जौपुनगम
नविखेमतिथारी ॥ देवलोकमैरामसुरारी ॥ तौसभदेवनकेज्व
रजावें ॥ विष्णुनाथसुरलोकसुआवें ॥ ४० ॥ सुनियाँविधिवि
धिकीशुभवानी ॥ कालउमामुखमाँहिंवखाँनी ॥ हसकरराम
सुकीनवखाँन ॥ सुनोसर्वहरकालमहाँन ॥ ४१ ॥ तोहिवखा
न्योमोकोजोई ॥ अहेइप्तरमोकोसोई ॥ अतिसुतोपमेडर
निर्मयो ॥ तेरोआजुआगमनभयो ॥ ४२ ॥ तीनलोकजे
जगतमंझार ॥ तिनपालनहितमेअवतार ॥ तवकल्यानविकुं
ठहिंआँऊँ ॥ देवनकेसभतापमिटाँऊँ ॥ ४३ तुमआएअतिमे
रेप्यारे ॥ याँभीतरकछुनाँहिंविचारे ॥ ममसेवकसुरकार्यसु
जेते ॥ पूतसवारोंमैसभतेते ॥ ४४ ॥ ब्रह्माजोजोकरेवखाँन ॥

सोसोकारयकरौंमहाँन॥ कालरामइमकरतउचार॥ दुर्वासा
ऋपिआएद्वार ॥ ४५ ॥ लक्ष्मणप्रतितिनवाक्यअलाए॥
शीघ्ररामसेंदेहिदिखाए॥ कार्यसुएकवडोहैमेरो॥ होवेवेगन
लगेअवेरो॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मणसुनमुनिवाक्यको
ज्वलततेजअतिपेख॥ रामसाथक्याकाजहैमोकोकहोअशेप
॥४७॥ कार्यसुतुमरोजोअहैमैंसभकरोंवनाइ॥ राजाकारय
मैंलगेदोघटिकाठहिराइ ॥ ४८ ॥ सुनलक्ष्मणकेवाक्यकोको
पेमुनीविशाल॥ ताम्रवर्णदोनोभएताँकेनयनसुलाल॥ ४९॥
भूपतिकोयाँक्षणविखेलक्ष्मणजौनदिखाँहिं॥ रामदेशरघुवंश
कोभस्मकरौंक्षणमाँहिं ॥ ५० ॥ ॥ चौपाई॥ ॥ याँविधि
घोरवचनसुनपाए॥ मुनिदुर्वासाकोपअलाए॥ लक्ष्मणमन
मैंकीनविचारा॥ वचनअहैमुनिवरकोभारा॥ ५१॥ सर्वना
शतमोवधजोई॥ श्रेष्टअहैजगभीतरसोई॥ ऐसेलक्ष्मणमनमें
धार ॥ गयोतहाँजहँराममुरारि ॥ ५२॥ दुर्वासाआयोजु
महाँन॥ लक्ष्मणरामहिंकीनवखाँन॥ सुनकैरामवचनउरधरि
ओ॥ तपसीकालविसरजनकरिओ॥ ५३॥ शीघ्रहिंराममही
पतिआए॥ अत्रीसुतमुनिदर्शनपाए॥ रामजोरकरवंदनधारी॥
आदरसहितसुप्रश्नउचारी॥ ५४॥ कारयअहैतुमारोजोई ॥
कहोमुनीश्वरकाजेसोई॥ याँविधिसुनिरघुवरकीवानी ॥ दु
र्वासापुनकह्योभवानी॥ ५५॥ वर्षसहस्रभयोंउपवास॥ आ
जविसर्जनकीमनआश ॥ भोजनसिद्धयथेष्टसुदीजे ॥ यही
राममभकारयकीजे ॥ ५६ ॥ सुनीराममुनिवरकीवानी॥ प

रमतोपयुतभयेभवानी ॥ सिद्धअन्नवहुरामभँगायो ॥ मुनि
केआगेआनटिकायो ॥५७॥ मुनिसमअन्नतसभोजनकयो ॥
वहुरमुनीनिजआश्रमगयो ॥ कालकहीसुप्रतिज्ञाजोई॥राम
चितारीवहुरोसोई ॥ ५८ ॥ शोकदुःखआरतमनराम ॥ भए
सुव्याकुलपूरणकाम ॥ मनअतिहीनसुभूमिनिहारें ॥ मुखतेश
मनकछुउच्चारें ॥ ५९ ॥ ॥ दोहा ॥ मनकररामसुजानिओ
लक्ष्मणहैहतरूप ॥ अखिलेश्वरअवनीपिखेंभजीसुमौनअनू
प ॥ ६० ॥ लक्ष्मणरामहिंदेखकरभयोसुदुखीमहान ॥ मौनभ
जोचिंताकरेंस्नेहपाशगलतान ॥ ६१ ॥ लक्ष्मणकह्योसुभोहि
हततजोतापरघुवीर ॥ कालगतीइहभाँतिकीपूर्वहिंरचीसुधी
र ॥ ६२ ॥ रामप्रतिज्ञाजोतजोतौमुहिनरकसुहोइ ॥ जौमोमेंत
वप्रीतिहैकरोरामअवसोइ ॥ ६३ ॥ तजशंकामोकोहनोधर्म
धरोउरमाँहिं ॥ रामसुनतयाँवातकोकरविचारमनमाँहिं ॥
॥६४॥मंत्रिनसहितवसिष्टकोरामसुकह्योसुनाइ॥ मुनिआव
नवचकालकेसगलेदिएजनाइ ॥ ६५ ॥ रामअमातनकोकही
करीप्रतिज्ञाजोइ ॥ मंत्रिनसहितवसिष्टकेसुनेरामवचसोइ ॥
॥ ६६ ॥ मंत्रिनतवकरजोरकैकीनोएहुवखाँन ॥ रामकर्म
अक्लिष्टभूभारहरणसुनकान ॥ ६७ ॥ पूरवहीयहिनिर्मयोल
क्ष्मणसंगवियोग ॥ ज्ञानचक्षुकरजानिओरामनकीजेशोग ॥
॥ ६८ ॥ नाँहिंप्रतिज्ञाछोडियेलक्ष्मणतजभगवान ॥ तुमहिं
प्रतिज्ञाजौतजीधर्महोइतवहान॥ धर्मनाशतेलोकत्रयहोवेंना
शसुधीर ॥ त्वंसभलोकनपालकोअहैंरघूत्तमवीर ॥ ६९ ॥ ल

क्ष्मणएकहिंकानजोसुनोराम दैकान॥ तीनलोकपालनकरोतु
मभूपतिमतिमान ॥ ७० ॥ वचनअनिंदितधर्मयुतसुनेरामति
नकान ॥ सभामध्यरघुवीरतबलक्ष्मणकीनवखाँन ॥ ७१ ॥
॥ **शंकरछंद** ॥ उठयाहिलक्ष्मणवेगत्वंनहिंधर्महोवैहान॥ जो
त्यागऔवधदेहकोजगसंतकहितसमान॥इहभाँतिरघुवरभा
खिओतवदुःखव्याकुलहोइ॥ श्रीरामकोसुप्रणामकरघरगयो
लक्ष्मणसोइ॥७२॥पुनगयोसरयूतीरमेंआचम्यसरयूनीर॥न
वद्वारनीकेरोककरकरजोरकरधरधीर ॥ शिरमाँहिंप्राणसुरो
ककैउरब्रह्मअक्षरध्यान॥वासुदेवस्वरूपअव्ययवेदकरतवखाँ
न॥७३॥पदताँहिंकोपरधामजोवहुचितेचीतमँझार ॥ शुभवा
युरोधनयुक्तलक्ष्मणशेषधरणिअधार॥ सभदेवकिंनरनागव
नितानृत्यमंगलगाँहिं ॥ यशगाँहिंलक्ष्मणदेवऋपिमुनिशीश
फूलवसाँहिं ॥ ७४ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ देवअगोचरहोइकरव
सनसहितशरीर ॥ लक्ष्मणलेसुरपुरगयोइंद्रतहाँसुरभीर ॥
॥ ७५ ॥ विष्णुचतुर्थोभागजोलक्ष्मणआहिप्रवीन॥ देवऋपी
श्वरपेखतिंहँविधिसोंपूजनकीन॥ ७६ ॥ ॥**चौपाई**॥ ॥ल
क्ष्मणदेवलोकमेंआयो॥ समाचारसगलोसुनपायो॥सिद्धलो
कगतयोगीजेई॥ ब्रह्मासहितआयपुनतेई ॥ ७७ ॥ ॥ **दोहा**
प्रीतिसहितलक्ष्मणपिखेधारेशेषस्वरूप॥शोभावरणनकोकरे
भईसुकांतिअनूप॥ ७१ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमाम
हेश्वरसंवादेउत्तरकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥८ ॥ **श्रीमाहादेवउ
वाच** ॥**कवित**॥ लक्षमणत्यागवडभागरामदुखीभयेलक्षम

णरूपमनमाँहिंताँचितारिओ॥नैगमअमातजेवसिष्टगुरुल्या
तपुरिवासकेबुलाइजनरामयौंउचारिओ॥ भरतकोराज़अव
देतमेंसमाजसभमहामतिभ्रातदेशकरेप्रतिपारिओ॥वेगभैंहूँ
जाऊँनहींपुरिमैवसाऊँअवलक्षमणपादजाँहिंदेशमैपधारि
ओ॥१॥ ऐसेजवरामचंद्रमुखमैंवखाँनकीयोदेशपुरिवासी
जनसभैडहिकाएहैं॥ छिनमूलद्रुमकेसमानसुमलानभएगिर
धरमाँहिंउरमाँहिंदुखपाएहैं ॥ रामकीसुवानीसुनीकानमैंभ
वानीजवभरतउदारधरमाँहिंमुरछाएहैं॥पाइकैसंभारतिनकी
नोहैउचारपुनराजनिंदकरीवहुदोपदिखलाएहैं॥ २॥ दोहा॥
साचीशपथसुमैंकरोंलोविनहेरघुनंद ॥ स्वर्गभूमिकोराजजो
चाहोंनासुखकंद॥३॥तवपदकंजनशपथहैराजनचाहोंधीर॥
कुशलवकोअवदीजियेराजसुनोरघुवीर ॥ ४॥ कोसलमैंकु
शटीकियेउत्तरमैलवराम ॥ रिपुहनल्यावनहेतुअवदूतपठोसु
खधाम॥५॥ ॥अडिल॥ ॥हमसभहनकोगमनसुनावेजा
इकै ॥ सुनशत्रुघ्नसुआवेराघवधाइकै ॥ भरतवखाँनेवैनप्र
जासुनपाइआ ॥ हाभएनिराशसुचीतपरमडरपाइआ॥६॥
॥सवैया॥ रामवियोगचितारचितेसभकातररूपप्रजासुनि
हारी ॥श्रीभगवानवसिष्टदयासुतरामसुनाइसुवातउचारी ॥
रामपिखोधरमाँहिंगिरीरिदअंगमआहिप्रजासभसारी ॥जो
इनकेउरमाँहिंरुचेअवसोइप्रसादकरोसुमुरारी॥७॥मुनिपुंग
वकेयहिवाक्यसुनेतवरामप्रजासभआपउठाई॥ कहिकोनहि
काजकरोंतुमराकरप्रीतिकर्योसभकोरघुराई ॥ तवजोरप्र

जानिजहायनकोरघुनायककोयहिबातअलाई ॥ जहँआपच लोरघुनंदनजूहमसंगचलैंसहबांधवभाई ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ हमरीयहीसुप्रीतिहैधर्मअरवैपुनआहि ॥ तवपाछेहमचालणा हमरेदृढमनमाँहिं ॥ ९ ॥ सवैया ॥ सुतदारसबंधुपशूसगले अवरामचलैंहमसंगतिहारे ॥ सुतपोवनवासुरलोकचलोपुरि माँहिंवसोअथवासुखकारे ॥ तिनकेमनकोदृढप्रीतिलखीपुन रामसुकालकिवाक्यचितारे ॥ निजसेवकपेखसुपौरनकोतव रामतथामुखमाँहिंउचारे ॥ १० ॥ निहचेकरताँहिंदिनागिरिजा लवऔरकुशूसुतराजविठाए ॥ रथआठहजारहजारगजापुन साठहजारतुरंगसुहाए ॥ सुतएकसुएकहिंकोरघुनंदनयाँविधि सैन्यसुसंगदिवाए॥रतनाधनपुंजसुरामदियेपुनऔरमहाजन संगलवाए ॥ ११ ॥ अभिवंदनकेहरिकोदुखसोंलवऔरकुशी निजदेशपधारे ॥ अरिहाअनवावनकाजतबैपुनदूतपठेरघुना थमुरारे ॥ तिनजायतहाँअरिनाशनकोरघुनायककेसुवृतांत उचारे ॥ द्विगरामअएपुरिकालवलीमुनिभेशभलेतनमाँहिंस वारे ॥ १२ ॥ अडिल ॥ अन्नीकोसुतबहुरपुरीमहिंआययो ॥ताँ कोचेष्टितसगलसुताँहिंसुनाययो॥लक्ष्मणकोनिरयाणप्रतिज्ञा रामकी॥होरामभूमिसुतटीकेजायेजानकी ॥ १३ ॥ कवित्त॥ रामकरीचहेंजोईदूतवातकहीसोईसुनीशत्रुहनमनमाँहेंघिल खाएहैं॥धीरजकोधारतिनपूतसुबुलाइलिएमथुरामैंराजसुसु बाहुकोदिवाएहैं॥यूपकेतुनामसुतनीकेमतिमानपुनविश्वनाम नगरमैंवहीतुरमाएहैं॥रामदेखनकेकाजराजकेसमाजतजश

त्रुहनवीरसुअयोध्यामाँहिंआएहैं ॥१४॥ पिखेरामचंद्रसुमहातमाआनंदकंदज्वलतस्वतेजपेखपावकलजाएहैं ॥ युगमूदुकूलघनश्यामतनमाँहिंधरेकपिमुनिवृंदआसपासमैसुहाएहैं ॥ जाँहिंनामकोचितारसिंधुजगपारपरेसनतकुमारपुनजाँकियशगाएहैं ॥ शत्रुहनजाइरामचंद्रकोप्रणामकरीहाथजोरदोऊपुनवाक्यसुअलाएहैं ॥ १५॥ वारिजसुनैनवैनसुनियेहमारेअवपूतनकोराजटीकदईराजधानीआँ ॥ जहाँतुमजाउतहाँसंगसुलिजावोमोहितोहिपीछेजाँउँउरयहीमतिठाँनीआँ॥त्यागियेनवीरदासतेरोहोंविशेषधीरशत्रुहरमुखोंसरामऐसेदृढजाँनीआँ ॥ करियेपयानसुमध्यानदिनआवेजचरामनिजभ्रातकोसुयहीहैवखाँनीआँ ॥ १६ ॥ ताँहींक्षणमाँहिंपुनवानरअनेकआएकामरूपवंतवलजिनमैंसुहायोहै ॥ ऋक्षपुनराक्षसलंगूरतोहंजारआएदेवकपिपूतहरिगौनसुनपायोहै ॥ वानरसुराक्षसलंगूरऋक्षजेइआएहाथजोरजोररामचंद्रकोअलायोहै ॥ तोहिपाछेजाँनोंजहाँकरतपयानोप्रभुनीठचीतमाँहिंहमयहीतुठरायोहै ॥ १७॥ ताँहींक्षणआएकपिनायकसुग्रीववीरकरीरघुवीरपदवंदनावनाइकै ॥ राजकोसमाजमोहिअंगदकेभालदियोआयोतवपासइमभाखिओसुनाइकै ॥ जहाँचलोरघुवीरतहाँहीसिधाऊँधीरयहीदृढचीतमाँहिंआयोठहिराइकै ॥ वानरलंगूरऋक्षराक्षसवखांनकरेसुनेरामचंद्रदृढवाक्यमनलाइकै॥ १८॥ विभीषणसादरबुलाइरामचंद्रकहीराक्षसकेराजअवनीकेसुनलीजिए॥आइसकोमान

जोलौभूमिवलवानतुमराक्षसकोराजवीरतौलौजगकीजिये ॥ मेरीहैसुगंदइमभाखिओमुकंदपुनयाँहिंवीचवीरकछुउत्तर नदीजिये ॥ अैसेभगवाँनसुविभीपणवखाँनकरहनूकोवुला योजाँहिंनामभजजीजिये ॥ १९ ॥ अंजनीकुमारचिरजी वबलधारजगभईममआइसनसोईमेटदीजिये ॥ फेरभगवं तजांववंतकोवुलाइकह्योधरणिमँझारवीरधारवलजीजिये॥ द्वापरमँझारएककारणउदारहोइमोहिसोंलराईतवफेरपेखली जिये ॥ करुणाउदारकपिऋक्षनउचारकियोराक्षसनसंग मोहिसंगहीचलीजिये ॥ २० ॥ वारिजसुनैनसुविशालव क्षमैनद्युतिभएसुप्रभातरघुनाथयौंउचारिआ ॥ कुलकोजो इष्टश्रीवसिष्टगुरुरामकह्योकीजियेसुहोमशुभपावकमँझारि आ ॥ सुनकैसुरामवालकरेसविख्यातहोमगौनकोविधानताँ हिंभलेहीसवारिआ ॥ वडेहीपयानहितराममतिमानतवधा रकुशपाणिक्षौमअंवरसुधारिआ ॥ २१ ॥ ॥ सवै या ॥ निकसेपुरितेरघुवीरवलीसितवारिदतेशशिज्योंनिक साए ॥ शशिकोटिसमानसुकांतिलशेदृगवारिजकीछविदूर मिटाए॥ सितवारिजहाथलिएपदमारघुनायकवामसुभागसु हाए॥ तनकांचनसोदृगवारिजसेहरिसंगचलीछविकौनवता ए॥ २२॥ ॥कवित ॥ ॥दाहनेसुभागरामश्यामाहैसुभगा महीवारिजसेनैनछविपरमसुहाएहैं ॥ शस्त्रपुनअस्त्रधनुवा गतनधारआएवेदधरदेहहरिआगेयशगाएहैं ॥ आएमुनि वृंदपुनकपिनकेझुंडधरनभकेनिवासीनहींजातवेगिनाएहैं॥वे

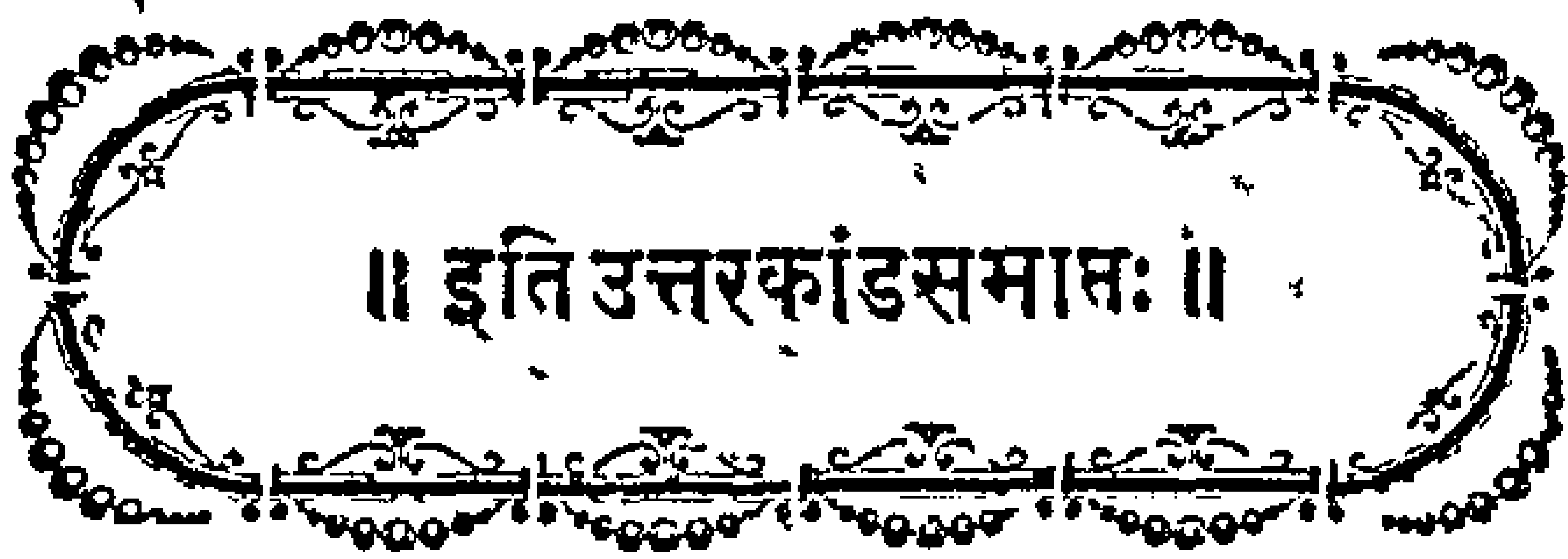
दनकीमातातवप्रणवसमेतआईव्याहृतिसमेतहरिहेरविक
साएहैं॥ २३॥ रामकेसमेतचलेत्यागकेनिकेतजननारिसुतवं
धुझुंडसंगहीसिधारिओ ॥ मनोमोक्षद्वाररामखोलहीकिवार
दिएजाँहिंरामसंगकोऊकरेननिवारिओ॥ सांतःपुरवासअनु
चरनारिसंगलिएअरिहासिधारेपुनभरतकुमारिओ॥ रामको
निहारपुरिवासीसभलारभएपदमासमेतजवरामहीपधारि
ओ॥ २४॥ वालऔयुवानद्विजवृद्धजेमहानवडेमंत्रीसअमा
त्यसभसंगहीसिधाएहैं॥वाहुजसुवैश्यपुनशूद्रसुअनेकचलेअं
त्यजसुभीलनहींजातवेगिनाएहैं ॥ वानरकपीशआदिन्हद्विशु
द्धरूपभएमंगलस्वरूपशुभशब्दससुहाएहैं ॥ भवदुःखदीनम
नकोऊनाँहिंभयोजनवाहिरकेसुखमैंनकाहूँमनलाएहैं॥ २५॥
आनंदस्वरूपअनुगतसुविरक्तभएरामसंगचलेपशुभृत्यनमि
लाइकै ॥ भूतजेअदृश्यपुरीमाँहिंनाँहिंतेईरहेचलेजडजंगमको
सकेनगिनाइकै ॥ शक्तिजाँअंनतजवरामभगवंतचलेचलेसं
गलोकजगसूखनभुलाइकै॥रथ्योनाँहिंजंतुकोअयोध्यामाँहिं
ताँहिंसमैरामम‌तिपाइचलेसंगहीसिधाइकै॥ २६॥ **नराजछं
द**॥ भईपुरीसमस्तशून्यरामभूपजौचले॥गएसुदूरताँहिंतेनदी
निहारियाभले॥भईपरेशनैनतेंसुसारजूमहानदी॥प्रसन्नराम
तौभएसुतीरमैंगएयदी॥ २७॥ चितारजाँहिरामकोसमस्तहों
हिंपावना॥ अशेपविश्वआपमैंपिखीसुरामभावना॥समस्त
देवसंगलेपितामहासुआइओ॥ ऋषीसमस्तसिद्धकेसुझुंडसों
सुहाइओ॥ २८॥ विमानकोटिआइसेअकाशमैलसाइहैं॥ सुदे

वतासमेतनारिताँहिमैंसुहाइहैं ॥ सुगंधिवंतवायुमंदमंदहीसु
आइहैं ॥ आपारफूलदेवताअकाशमैंवसाइहैं ॥ २९ ॥ मृदं
गदेवतावजाँहिगाँहिज्ञानकेधरा ॥ नचैंअपच्छराघनीसुहाँहिं
संगकिंनरा ॥ जुरामपादपावनोसुनीरमैंछुहाइओ ॥ अनंतश
क्तिरामजीउमातवैंसुहाइओ॥३०॥पितामहासुजोरहाथराम
कोवखाँनिओ॥परातमापरेशरामएकत्वंपछानिओ॥सदाअ
नंदविष्णुत्वंसुपूरणोवखाँनिये॥ लखैंसतत्वआपनोअजैकत्वं
सुजानिये ॥ ३१ ॥कवित॥ तथापिसुवाक्यमेरोकीयोहैवनाइ
प्रभुभक्तनअधीनरामतुहींतोनिहारिआ ॥भ्रातनसमेतधारपू
रवस्वरूपतुमधारभुजाचारसुरकरोप्रतिपारिआ॥देवनअधी
शहरितुहींजगदीशप्रभुमोविनानआनजनसकैंतेविचारिआ
॥वंदनाहजारसुप्रसीददेवदेवप्रभोफेरफेरवंदनापछानियेहमा
रिआ॥३२॥सवैया॥विनतीचतुराननकीसुनकैसभदेवनपेख
तहीरघुराई॥तनभूरिप्रकाशतिनैनमुदेकछुदेवनकोनहिंदेतदि
खाई॥धरचक्रगदादरवारिजरामसुताँहिंसमेभुजचारवनाई॥
लक्समंनभयोहरिसेजतवैंअहिनायकरूपसुदेहसुहाई ॥ ३३ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ भरतशंखवपुधारकरहरिकेसंगसुहाइ ॥ चक्र
भयोशत्रुघ्नवमहिमाकहीनजाइ ॥ ३४ ॥ कवित ॥ पदमा
सुभईसीयरामभएविष्णुपीयपुरुपपुरातनजुवेदकेवखाँनि
यें ॥ अनुजसमेतधारपूरवसुदेहहरिभएतेजवंतदिव्यमूरतिप
छानियें॥ ईश्वरकोपाइकैसुरेशदेवसिद्धमुनिकिंनरसुयक्सऔ
रऋषीजेमहाँनियें ॥ पितरसुचारमुखभएसुखवंतसभगाहिं

यशईशकोसुपूजतभवानियें ॥ ३५ ॥ आनंदकेपूरमैंमगनमन
भएसुरपाइकैमनोरथसुरहेहरपाइकै ॥ ईश्वरसनातनसुहात
माभवानीतवआपकमलासनकोभाखिओसुनाइकै॥ आएई
हाँजेईममभगतपछाँनोंतेईहोंहिंअनुगामीममहर्षवढाइकै ॥
तिर्यकशरीरजेईधीरपुण्यवंततेईस्वर्गसमलोकमैंसुदेहिपदुचा
इकै॥ ॥ ३६ ॥ **सवैया** ॥ ॥ सुनकेहरिआइसयाँविधिकी
चतुराननजूकरजोरउचारी ॥ सुसंतानिकनामसुलोकबडे
ममऊपरिदीपतिमानमुरारी ॥ कृतपुंण्यसँवूहसुतेजनजेति
हँमाँहिंचलेंजहँभोगअपारी ॥ सुविकुंठसमानसुलोकनमैं
इहनीतरमैंजिमआइसथारी ॥ ३७॥ जेपुनअंतसमेनरपाव
नरामइहैमुखनामअलाए ॥ जाँनतनाँहिंमहातमकोनरतेपुन
याँविधिलोकसुपाए ॥ लाइसमाधियोगीश्वरजेतवध्यानधरें
जिनलोकनजाए॥ पावननामसुरामइहैइकवारकहेजनपाप
मिटाए ॥ ३८ ॥ **कवित** ॥ सुनीविधिवानीसुभवानीहरपाने
सभवानरसुराक्षससुनीरमाँहिंनाएहें॥ डारयाँहिंदेहकोसुजाँ
हिंसुरअंशजाएवानरभलूकतनतेईतेईपाएहें ॥ वानरप्रवीर
जोसुग्रीवधीरवंतभगवंतरविभएतेजपरमसुहाएहैं॥ सूरयके
वीरयतेभएसुसुग्रीवकपिमिलेपुनताँहिंसुरवृंदयशगाएहैं ॥
॥ ३९॥ ॥**सवैया**॥ ॥ औरसभेसरयूजलमैंनरन्हाइसुमान
वदेहनडारे ॥ वैठविमाननभूपणधारसंतानिकलोकनमाँहिंप
धारे॥ जेपशुकीटपतंगसभेजलन्हाइगएदिविरामनिहारे ॥रा
मनिहारतजेजन्संगगएसुरमैजनदेखनहारे ॥ ४० ॥ **दोहा** ॥

॥ ॥ सिमरपरेश्वरलोकगुरुरामहरीभगवान॥वेगगएस्वरलोकमैंलोकसुवैठंविमान॥ ४१ ॥ ॥**सूतोवाच**॥**सवैया**॥ इहपारवतीप्रतिहेमुनिमंडलउत्तरआपमहेशवताए॥ शुभऔरकथाविसतारघनोकछुअंतनहींकविमंडलपाए ॥इकपादपठेइनमैंनरजोवहुजन्महजारसुपापमिटाए॥मुनिलाइसमाधिसुजाँहिंजहाँसुखसोंवहिताँपदमाँहिसमाए॥४२॥निशिवासरपापअनेककरेपुनएकशलोकपढेमनलाई॥ नरसोइहरामसलोकलहेसभपापनकोजगमाँहिंमिटाई॥ यहिरामकथाशिवआपकहीरघुनाथहिंप्रेरिओताँउरजाई ॥ सुभविष्यतभावकहीचरियासुनहोतप्रसन्नसुश्रीरघुराई॥४३॥ **छपैछंद**॥काव्यरमायणमहामुनीशिवआपउचार्यो॥पारवतीसुनयाँहिंसुचित्तसँदेहनिवार्यो पढेभक्तिसोंयाँहिंसुनेउरप्रेमवढाई ॥ शतजन्मनकेपापदेइक्षणमाँहिंमिटाई ॥ जनपढेसुनेअतिभक्तिसोंलिखेसुयाँहिंलगाइमन ॥ कंअतिप्रसन्नश्रीरामसियश्रेयविथारेंताँहिंजन ॥ ४४ ॥**कवित**॥ रामायणआदिकाव्यब्रह्मलौसुरेशकहेंजाँहिंकीवडाईसुनेचीतहरेप्राणीआँ॥श्रद्धाकेसमेतपढेसुनेरुतशुद्धदेहविष्णुजीकोपाइपदकहेनिरवाणीआँ॥रामअवतारकीउदारकथापुण्यफललोकगुरुशंभुइहभाँतिहैवखाणीआँ॥याँहिंकोमहातमसुशंभुहीपछानेंमुनिसुनतमिटाँहिंपापपुंजनकीघाणीआँ ॥ ४५॥ **कविरुवाच**॥ **दोहा**॥ मनवाणीप्रेरकसदाराघवचेतनधाम ॥ वालकवचनसुफूलपदविकसेंसीताराम॥ ४६ ॥ ॥ **छपैछंद**॥गउरीथी

देउत्तरकांडेवैकुंठनिर्याणोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ संपूर्ण ॥ ॥ शुभम् ॥ संवत् ॥ १९४१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

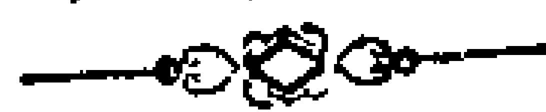


॥ इति उत्तरकांडसमाप्तः ॥

दे उत्तरकांडे वैकुंठनिर्याणोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ संपूर्ण ॥ ॥ शुभम् ॥ संवत् ॥ १९४१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ इति उत्तरकांडसमाप्तः ॥

प्रथमसे ग्रंथ खरीद करनेवाले सद्ग्रहस्थोके नाम.



नाम	प्रती	नाम	प्रती
ठकर. शीवजी रामजी	२५	ठकर कानजी वि परशोतम	२
ठकर त्रीकम नथु	२५	ठकर गोपाल हरचंद	२
मारवाडी हरीपरशाद भागीरथ	२५	ठकर मुरजी चतरभोज	२
मारवाडी गंगाविष्णु खेमराज	२५	ठकर खाटाऊ वीरजी	२
पंडीत जेटाराम मुकुंदजी	२५	नागोरी चापशी खीमराज	२
ठकर लालजी डुगरथी	१०	मटी गुनुमल भोजराज	२
ठकर देवकण वि. काईआ	१०	ठकर सुंदरजी केशवजी	१
शेठ चंदा भाई रामजी	५	ठकर पुजा जीवराज हा. वशराम	१
ठकर रतनशी जाधवजी	५	ठकर चतरभोज लालजी	१
ठकर प्रेमजी केवल	५	शोनी जशराजदेवसी	१
ठकर शवजी प्रागजी	५	ठकर नाराणदोशाणी	१
ठकर मोनजी देवजी	५	ठकर रतनशी ईशर	१
ठकर वागजी ठाकरशी	५	मुलतानी मुलचंद	१
ठकर धारशी नानजी	५	मुलतानी फुलुमल	१
ठकर दोशा अवजी	५	ठकर रागवजीपरमानंद	१
ठकर विरजी हंशराज	२	ठकर सुंदरजी शवजी	१
भणशारी माधवजी शामजी	२	ठकर अरजणशामजी	१
ठकर नाराण सुंदरजी	२	ठकर रवजी रामजी शराफ	१
ठकर दोशा मुरारजी	२	कानजी हीरजीलुवार	१
ठकर प्रेमजी भाई लधा	२	ठकर देवचंद हरीराम	१
ठकर नाराण ऊकेडा	२	ठकर भाणजीतुरशीआ	१
ठकर नरशी नाराण	२	ठकर टलुगोपाळ	१

नाम	प्रती	नाम	प्रती
बाबा हरीदास ऊदासीन	१	ठकर रामदास रतनशी	१
जोशी दामजी हा. जेठा लालजी	१	ठकर नाराणमुरजी	१
जोशी जेठा लालजी	१	ठकर कानजीजेठा	१
ठकर केशवजी रतनथी	१	ठकर देवजीपारपेआ	१
ठकर शवजी रामजी	१	ठकर दामजीलधा	१
ठकर मावजी माधवजी	१	ठकर खीमजीरागवजी	१
दीवान खीमासिंग	१	ठकर जेठाशामजी	१
रागवानंद	२	वेलजी वरांध	१
उपाधीआ अरवेशर चत्रभुज अंजार बुकशेलर	१०	पुजारा तेजपारदेवचंद	१
उपाधीआ केशवजी अंजार बुकशेलर	१०	सुधरजी भीमजी	५